श्री ।

अमरकोशः

श्रीमदमरसिंहविरचितः

श्रीपादकृष्णत्मनामनजकात्तिगणविरचित

भाषाटीका शब्दानुक्रमणिकया च समेत ।

मान्य

पण्डित हरिप्रसाद भगीरथजी

इत्यनेन

जोशीउपाह्व धुण्डिराजात्मज विठ्ठल

शास्त्रिद्वारा संशोधयित्वा

मुम्बापुर्यां

गणपतकृष्णाजीयमुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशित

संवत् १९५३ शाके १८१८

श्रीः ।

अमरकोषः ।

प्रथमं काण्डम् ।

। सुरनापकवन्दितं
ध्वर्ता नारणकारणम् ॥
ात्रहलाधिमुपास्महे
ाद्देदगृद्धिदसंस्मृतिम् ॥ १ ॥

अमरसिंहजी नामलिंगा-
समाप्तिकेलिये ग्रन्थके
।ध्यगणोंकी शिक्षाकेअर्थ म-
हे ६ ॥

ानद्यपातिन्धोरगाधस्यानघा
। सेव्यतामक्षयो धीराः स
मृ स्य च् ।॥१ ॥

ों अगाध अतिगंभीर ज्ञान और
द्र जिनके निर्मल गुण क्षान्त्या-
नाश होनेवाला परमेश्वर
और मोक्षकेलिये सेवित हों
इजी अपने इस
उपदेश करते हैं
प परमश्व नान और द-
र जिसका कोई पार नहीं
र जिनके निर्मल क्षान्त्या-
उसकी तुम सेवा करो क्योंकि
उसकी सेवा सम्पदा और मोक्षके देनेवाली है ॥ १ ॥

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ॥ संपूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्य शास्त्रोंको इकट्ठाकर संक्षिप्त अर्थात् थोडे विस्तार और बहुत अर्थवाले प्रतिसंस्कृत अर्थात् पदपदकेप्रति प्रकृतिप्रत्ययके विचार कर किया है संस्कार जिनका ऐसे वर्ग (सजातीय) समूहोंकर सम्पूर्ण (सांगोपांग) नाम (स्वर्गादिक) और लिंग (स्त्रीपुंनपुंसक) इनका सिद्धकरनेवाला शास्त्र कहा जाता है ॥ २ ॥

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ॥ स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

इस शास्त्रमें बहुधा रूपभेदकर स्त्रीपुंनपुंसक जानने चाहिये यथा—[लक्ष्मी पद्मालया पद्मा] इत्यादिकमें स्त्रीलिंगके रूप हैं और यथा—[पिनाकोऽजगवं धनुः] इत्यादिकमें पिनाक पुंलिंगका रूप है और अजगव धनु यह

नपुंसक लिंगके रूप हैं और किसीएक स्थलमें साहचर्यसें अर्थात् समीपवर्ती शब्दकी समीपताकर लिंग जानना चाहिये यथा– [अश्वयुगश्विनी] इसमें अश्विनी स्त्रीलिंगका रूप है इसकी समीपतासें अश्वयुक्भी स्त्रीलिंगका रूप जानना चाहिये और किसीएक स्थलमें तिस स्त्रीपुंनपुंसकके विशेष विधिसें स्त्रीपुंनपुंसकलिंग जानने चाहिये (भाव यह है कि) कहीं कहीं लिंगकी विशेष उक्तिसें लिंग जानना चाहिये यथा [भेरीस्त्री दुंदुभिः पुमान् । क्लीबे त्रिविष्टपम्] इत्यादिकमें भिन्नभिन्न लिंग प्रकट कर दिखादिये हैं ॥३॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ॥ कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

इस ग्रन्थमें नहीं कहे हुये ऐसे भिन्न २ लिंगवाले नामोंका लिंगभेद जतानेंकेलिये द्वन्द्वसमास नहीं किया यथा [कुलिशं भिदुरं पविः] इसको [कुलिशभिदुरपवयः] ऐसा नहीं किया क्योंकि कुलिश और भिदुर नपुंसकलिंग हैं और पवि पुलिंग है और एकशेष द्वंद्वसमासभी नहीं किया यथा [नभः खं श्रावणो नभाः] इसका [खश्रावणौ तु नभसी] ऐसानहीं किया क्योंकि यह आपसमें पृथक् पृथक् लिंगवाची हैं और क्रमके विना भिन्न लिंगोंकी पदमें मिलावटभी नहीं की साहचर्यकरके लिंगका निश्चय नहीं होता है. किन्तु स्त्रीलिंग पुंलिंग और नपुंसकलिंग क्रमसे पढा है यथा [स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः] इसका [स्तुतिः

स्तोत्रं स्तवो नुतिः] ऐसा
की क्योंकि स्तवके
गका निश्चय नहीं हो
सिद्ध होगयाहै तिन
स्थलोंमें द्वंद्वादिकसमा
द्याधराप्सरोयक्षरक्षोग
कमें भिन्न लिंगवाची
मास हुआ है क्योंकि
रस् शब्दका स्त्रीलिंग
[माता पितरौ] इसका [
वाचियोंका एकशेष द्वं
कि मातृशब्दकाभी लिं

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति
रिति ॥ निषिद्धलिङ्गं
न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

तीनों लिंगोंकेविषे
है (भाव यह है कि)
वाची है उसकेप्रति
है यथा [त्रिषु स्फुलिंग
शब्द तीनों लिंगमें
अर्थात् स्त्रीपुलिंगकेविषे
हा है (भाव यह है कि
गवाची है उसके प्रति
है यथा [वन्हेर्द्वयोर्ज्वा
शब्द स्त्रीपुलिंगमें वर्त्ते है
षार्थवाची है (भाव य
लिंगका निषेध किया
नें चाहिये यथा [व्य
यहां विमान शब्दमें

सें विमानशब्द शेष पुन्नपुसकलिंगवाची (तु) शब्द है अन्तमें जिसके और शब्द है आदिमें जिसके ऐसा शब्द नहीं होता है अर्थात् पूर्वके साथ बद्ध होता है यथा [पुलोमजा शची- नगरीत्वमरावती] यहाँ पर तुशब्दान्त- नगरीशब्द हे यह इन्द्राणीके साथ बद्ध होना चाहिये और [नित्यानवर- ाप्यथातिशयोभर.] यहाँपर अथ श- ची अतिशय शब्द है यह पूर्वपद अ- साथ नही सबद्ध होना चाहिये किन्तु के साथ सबद्ध होना चाहिये ॥ ५ ॥

व्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशाल- । सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

स्वर्ग नाक त्रिदिव त्रिदशालय सुर- द दिव् त्रिविष्टप यह नौ नाम स्व- के है तिसमें स्वर्शब्द अव्यय है य और दिव यह दोनों शब्द स्त्रीलि- ग और त्रिविष्टप शब्द क्लीव (न- लि गमें होता है इस ग्रन्थमें बहुधा त दिखाये हैं कारण कि लिं- थमा विभक्ति होवे है ॥ ६ ॥

निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधा. सुपर्वाण सुमनसस्त्रिदिवेशा र ॥ ७ ॥ आदितेया दिवि- षा अदितिनन्दना ॥ आ- भवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृ- तान्धस' ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ॥ वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवता स्त्रियाम्॥९॥

अमर निर्जर देव त्रिदश विबुध सुर सुपर्वन् सुमनस् त्रिदिवेश दिवौकस् ॥ ७ ॥ आदितेय दिविषद् लेख अदितिनन्दन आ- दित्य ऋभु अस्वप्न अमर्त्य अमृतान्धस् ॥८॥ बर्हिर्मुख क्रतुभुज् गीर्वाण दानवारि वृन्दा- रक दैवत देवता यह छब्बीस नामदेवता- ओंके है तिसम देवतशब्द नपुसकलिंगवाची है परन्तु विकल्पना कर पुलिंगमेंभी होता है और देवताशब्द स्त्रीलिंगमें होताहै इन देव- तावाची शब्दोंमें बहुवचन व्यक्तिस्वरूपकी बाहुल्यतासें किया है ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरा- निलाः ॥ महाराजिकसाध्याश्च रु- द्राश्च गणदेवताः ॥ १० विद्याधरा- ऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ॥ पि- शाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देव- योनय. ॥ ११ ॥

आदित्य विश्व वसु तुषित आभास्वर अनिल महाराजिक साध्य रुद्र यह देवता-

आदित्या द्वादशप्रोक्ता विश्वेदेवा दश स्मृता ॥ वसवश्चाष्टसंख्याता षट्त्रिंशत्तुषितामता १ आभास्वराश्चतुःषष्टिर्वाता पचाशदूनका ॥ महाराजिकनामानो द्वेशते विंशतिस्तथा ॥२॥ साध्याद्वादश विख्याता रुद्रा एकादशस्मृताः॥

१ आदित्य बारह विश्व दश वसु आठ तुषित छत्तीस आभास्वर चौसठ अनिल उनचास म-

ओंके गण हैं ॥ १० ॥ विद्याधर अप्सरस् यक्ष रक्षस् गन्धर्व किन्नर पिशाच गुह्यक सिद्ध भूत यह देवताओंकी योनि हैं पिशाचादिक शब्दजातिवाची हैं इसकारण एकवचन है ॥ ११ ॥

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः॥ शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥

असुर दैत्य दैतेय दनुज इन्द्रारि दानव शुक्रशिष्य दितिसुत पूर्वदेव सुरद्विष् यह दश नाम दैत्योंके हैं ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ॥ समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥ षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ॥ मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥ स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ॥ गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥

सर्वज्ञ सुगत बुद्ध धर्मराज तथागत समन्तभद्र भगवत् मारजित् लोकजित् ॥ १३ ॥ षडभिज्ञ दशबल अद्व[illegible] विनायक मुनीन्द्र श्रीघन शास्तृ म[illegible] बुद्धके नाम हैं जिनसें कि बौद्ध[illegible] भया है शाक्यमुनि शाक्यसिंह स[illegible] शौद्धोदनि गौतम अर्कबन्धु मा[illegible] यह सात नाम बौद्धमतके धारण[illegible] शाक्यमुनिके हैं ॥ १४ ॥ १५

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी[illegible] महः ॥ हिरण्यगर्भो लोकेशः[illegible] भूश्चतुराननः ॥ १६ ॥ धा[illegible] निर्द्रुहिणो विरिञ्चिः कम[illegible] स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधात[illegible] ड्विधिः ॥ १७ ॥

ब्रह्मन् आत्मभू सुरज्येष्ठ प[illegible] तामह हिरण्यगर्भ लोकेश स्वयंभु[illegible] ॥ १६ ॥ धातृ अब्जयोनि द्रुहि[illegible] कमलासन स्रष्टृ प्रजापति वेधस्[illegible] श्वसृज् विधि यह वीस नाम ब्र[illegible]

विष्णुर्नारायणः कृष्णो[illegible] ष्टरश्रवाः ॥ दामोदरो हृ[illegible] शवो माधवः स्वभूः ॥[illegible] त्यारिः पुण्डरीकाक्षो गो[illegible]

हाराजिक दोसौवीस साध्य बारह रुद्र ग्यारह हैं

१ विद्याधर जीमूतवाहनादिक। अप्सरस् देवतोंकी स्त्री। यक्ष कुबेरादिक 'रक्षस् मायावी लङ्कादिवासी। गंधर्व तुंबरुआदिक देवोंके गायक। किन्नर अश्वमुख नरस्वरूप। पिशाच पिशिताश भूतविशेष। गुह्यक मणिभद्रादिक। सिद्ध विश्वावसुआदिक। भूत बालग्रहादिक अथवा रुद्रानुचर यहां जातिमें एकवचन है १

नाभिजन्माण्डजः पूर्वोऽनिधनः [illegible] सदानन्दो रजोमूर्तिः सत्यको हंसव[illegible]

१ यह श्लोक और पुस्तकोंमें [illegible] भिजन्मन् अंडज पूर्व अनिधन कम[illegible] न्द रजोमूर्त्ति सत्यक हंसवाहन [illegible] ब्रह्माजीके और विशेष हैं.

सामन्तों को आधीन करने का विचार किया । महा[illegible]

ड्ध्वज ॥ पीताम्बरोऽच्युत शार्ङ्गी
विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥ उ-
न्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ॥
द्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः
॥ २० ॥ देवकीनन्दनः शौरिः श्री-
पतिः पुरुषोत्तमः ॥ वनमाली बलि-
ध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥
विश्वंभरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सला-
ञ्छनः ॥ पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो न-
रकान्तकः ॥ २२ ॥ जलशायी वि-
श्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः ॥ वसुदेवोऽ-
स्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥२३॥

...ष्णु नारायण कृष्ण वैकुंठ विष्टरश्रवस्
...र हृषीकेश केशव माधव स्वभू ॥१८॥
...र पुण्डरीकाक्ष गोविन्द गरुडध्वज पी-
...र अच्युत शार्ङ्गिन् विष्वक्सेन जना-
... ॥ १९ ॥ उपेन्द्र इन्द्रावरज चक्रपाणि
...ज पद्मनाभ मधुरिपु वासुदेव त्रिविक्रम
...० ॥ देवकीनन्दन शौरि श्रीपति पुरु
... वनमालिन् बलिध्वंसिन् कंसाराति
... ॥ २१ ॥ विश्वम्भर कैटभजित् विधु
...लाञ्छन पुराणपुरुष यज्ञपुरुष नरका-
... ॥ २२ ॥ जलशायिन् विश्वरूप मुकुन्द
...र्दन यह छयालीसनाम विष्णुके हैं इन
...के पिता वसुदेव आनकदुंदुभि हैं॥२३॥

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्र-
जः ॥ रेवतीरमणो रामः कामपालो
हलायुधः ॥ २४ ॥ नीलाम्बरो रौ-
हिणेयस्तालाङ्को मुसली हली ॥ स-
ङ्क-
कर्पणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो
बलः ॥ २५ ॥

बलभद्र प्रलम्बघ्न बलदेव अच्युताग्रज
रेवतीरमण राम कामपाल हलायुध ॥२४॥
नीलाम्बर रौहिणेय तालाङ्क मुसलिन् हलिन्
संकर्षण सीरपाणि कालिंदीभेदन बल यह
सत्तरह नाम बलदेवजीके हैं ॥ २५ ॥

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनके-
तनः ॥ कदर्पो दर्पकोऽनङ्गः का
पञ्चशरः स्मरः ॥ २६ ॥ शम्बरारि
नसिजः कुसुमेषुरनन्यजः॥पुष्पधन्वा
रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः॥२७॥

मदन मन्मथ मार प्रद्युम्न मीनकेतन क-
दर्प दर्पक अनग काम पचशर स्मर ॥ २६ ॥
शंबरारि मनसिज कुसुमेषु अनन्यज पुष्पध-
न्वन् रतिपति मकरध्वज आत्मभू यह उ-
न्नीश नाम कामदेवके हैं ॥ २७ ॥

ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः स्यादनिरुद्ध उषाप-
तिः ॥ लक्ष्मी पद्मालया पद्मा कम-
ला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २८ ॥ इन्दिरा
लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा[१] ॥
शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सु-
दर्शनम् ॥ २९ ॥ कौमोदकी गदा
खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ॥

१ भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका ॥
यह अर्ध श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है भा
र्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका यह तीन
लक्ष्मीके नाम विशेष हैं ॥ १ ॥

तिर्वलारातिः शचीपतिः ॥ जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः ॥ ४६ ॥ संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ॥ आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया ॥ ४७ ॥ पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती । हय उच्चैःश्रवाः सूतो मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४८ ॥

इन्द्र मरुत्वत् मघवन् विडौजस् पाकशासन वृद्धश्रवस् शुनासीर पुरुहूत पुरन्दर ॥ ४४ ॥ जिष्णु लेखर्षभ शक्र शतमन्यु दिवस्पति सुत्रामन् गोत्रभिद् वज्रिन् वासव वृत्रहन् वृषन् ॥ ४५ ॥ वास्तोष्पति सुरपति वलाराति शचीपति जंभभेदिन् हरिहय स्वाराट् नमुचिसूदन ॥ ४६ ॥ संक्रंदन दुश्च्यवन तुराषाट् मेघवाहन आखण्डल सहस्राक्ष ऋभुक्षिन् यह पैंतीश नाम इन्द्रके हैं तिस इन्द्रकी प्रिया पुलोमजा शची इन्द्राणी संज्ञक है और नगरी अमरावती संज्ञक है और हय (घोडा) उच्चैःश्रवस् संज्ञक है और सूत (सारथि) मातलि संज्ञक है और वन नन्दनसंज्ञक है ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः ॥ ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४९ ॥ ह्लादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ॥ शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ५० ॥

और इन्द्रका प्रासाद (महल) वैजयन्त संज्ञक है जयन्त पाकशासनि यह दो नाम इंद्रके पुत्र जयन्तके हैं ऐरावत अभ्रमातंग ऐरावण अभ्रमुवल्लभ यह चार नाम ऐरावत हाथीके हैं ॥ ४९ ॥ ह्लादिनी वज्र कुलिश भिदुर पवि शतकोटि स्वरु शम्ब दंभोलि अशनि यह षट् नाम वज्रके हैं तिसमें ह्लादिनी शब्द स्त्रीलिंग है और वज्रशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होताहै और पवि आदिक शब्द पुल्लिंगवाची हैं और अशनि शब्द पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग दोनोंमें होता है ॥ ५० ॥

व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः सुरर्षयः ॥ स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ५१ ॥ मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ॥ मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ५२ ॥ पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ॥ संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५३ ॥

व्योमयान विमान यह दो नाम विमानके हैं तिसमें विमानशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है नारदादिक सुरर्षि संज्ञक हैं अर्थात् सुरर्षि यह एक नाम नारदादिकदेवर्षियोंका है सुधर्मा देवसभा यह दो नाम देवताओंकी सभाके हैं पीयूष अमृत सुधा यह तीन नाम अमृतके हैं ॥ ५१ ॥ मन्दाकिनी वियद्गंगा स्वर्णदी सुरदीर्घिका यह चार नाम स्वर्गगं-

गाके है मेरु सुमेरु हेमाद्रि रत्नसानु सुरालय यह पाँच नाम सुमेरु पर्वतके है ॥५२॥ यह पाच देवताओंके तरु (वृक्ष) है मन्दार पारिजात सतान कल्पवृक्ष हरिचन्दन तिनमें हरिचन्दन नपुसकलिङ्गवाची हे और विकल्पकर पुलिंगमेंभी होवाहै ॥ ५३ ॥

सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ॥ नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५४ ॥ स्त्रिया बह्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखा ॥ हाहा हूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५५ ॥

सनत्कुमार वैधात्र यह दो नाम सनकादिक मुनियोंके है स्वर्वैद्य अश्विनीकुमार नासत्य अश्विन दस्र आश्विनेय यह छ नाम अश्विनीकुमारके है यह अश्विनीकुमार दो हैं इसकारण द्विवचन है ॥ ५४ ॥ अप्सरस् स्वर्वेश्या यह दो नाम उर्वशी आदिक स्वर्गकी वेश्याओंके है तिसमें अप्सरस्शब्द स्त्रीलिंगमें होवे है यह जातिवाची होनेंसे बहुवचनान्त है हाहा हूहू इत्यादिक देवताओंके गन्धर्व है अर्थात गन्धर्वशब्द हाहा हूहू इत्यादिकोंका बोधक है ॥ ५५ ॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनंजय ॥ कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५६ ॥ बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उपर्बुध' ॥ आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनल. ॥ ५७ ॥ रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ॥ हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५८ ॥ सप्तार्चिर्दमुना. शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ॥ शुचिरप्पित्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानल' ॥ ५९ ॥

अग्नि वैश्वानर वह्नि वीतिहोत्र धनंजय कृपीटयोनि ज्वलन जातवेदस् तनूनपात्॥५६॥ बर्हिं शुष्मन् कृष्णवर्त्मन शोचिष्केश उपर्बुध आश्रयाश बृहद्भानु कृशानु पावक अनल ॥५७॥ रोहिताश्व वायुसख शिखावत् आशुशुक्षणि हिरण्यरेतस् हुतभुज् दहन हव्यवाहन ॥ ५८ ॥ सप्तार्चिष् दमुनस् शुक्र चित्रभानु विभावसु शुचि अप्पित्त यह चौतीश नाम अग्निके है और्व वाडव वडवानल यह तीन वडवानलके नाम है ॥ ५९ ॥

वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेति. शिखा स्त्रियाम् ॥ त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकण सताप संज्वर समौ ॥ ६० ॥

---

१ घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा ॥ सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः ॥

१ उल्का स्यान्निर्गतज्वाला भूतिर्भसितभस्मनी॥ क्षारो रक्षा च दावस्तु दवो वनहुताशनः॥१॥

यह उल्का और [illegible] निकल है उसका यह एक नाम शिखाज्वालाका है भूति भसित भस्मन यह तीन नाम भस्मके हैं और क्षार रक्षा यह दो नाम [illegible] दाव दव वनहुताशन यह तीन नाम [illegible] है

ज्वाल कील अर्चिस् हेति शिखा यह पांच नाम वह्नि (अग्नि) की शिखाके हैं तिसमें ज्वालकीलशब्द स्त्रीपुंलिंगमें होवै हैं और अर्चिशब्द स्त्रीनपुंसकलिंगमें होवे है और हेति शिखा दोनों स्त्रीलिंगमें होवे हैं स्फुलिंग अग्निकण यह दो अग्निके कणकाके नाम हैं और तीनों लिंगमें होवै हैं सन्ताप संज्वर यह दो अग्निके सन्ताप अर्थात् जलनेके नाम हैं और आपसमें समान हैं ॥ ६० ॥

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः ॥ ६१ ॥ कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ॥ राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः॥६२॥रात्रिंचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः ॥ यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६३ ॥

धर्मराज पितृपति समवर्त्तिन् परेतराज् कृतान्त यमुनाभ्रातृ शमन यमराज् यम ॥ ६१ ॥ काल दण्डधर श्राद्धदेव वैवस्वत अन्तक यह चौदह नाम यमराजके हैं राक्षस कौणप क्रव्याद् क्रव्याद अस्रप आशर ॥६२॥ रात्रिंचर रात्रिचर कर्बुर निकषात्मज यातुधान पुण्यजन नैर्ऋत यातु रक्षस् यह पन्द्रह नाम राक्षसोंके हैं तिनमें यातु रक्षस् शब्द नपुंसकलिंगवाची हैं ॥ ६३ ॥

प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्पतिः ॥ श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६४ ॥ पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ॥ समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥ ॥ ६५ ॥ नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः ॥ प्रकम्पनो महावातो झञ्झावातः सवृष्टिकः ॥ ६६ ॥

प्रचेतस् वरुण पाशिन् यादसांपति अप्पति यह पांच नाम वरुणके हैं श्वसन स्पर्शन वायु मातरिश्वन् सदागति ॥ ६४ ॥ पृषदश्व गन्धवह गन्धवाह अनिल आशुग समीर मारुत मरुत् जगत्प्राण समीरण॥६५॥ नभस्वत् वात पवन पवमान प्रभंजन यह वीश नाम पवनके हैं. प्रकम्पन महावात यह दो नाम महापवन अर्थात् आंधीके हैं. और महापवन वर्षासहित हो तौ झंझावात संज्ञिक है ॥ ६६ ॥

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ॥ शरीरस्था इमे[1] रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ॥ ६७ ॥ जवोऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम्॥सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ॥६८॥

प्राण अपान समान उदान व्यान यह पांच शरीरमें स्थितभये वायु हैं अर्थात् यह पांच नाम शरीरमें स्थितभये वायुके हैं रंहस् तरस् रय स्यद ॥ ६७ ॥ जव यह पांच नाम वेगके हैं तिसमें रंहस् शब्द और तरस् शब्द नपुंसकलिंगवाची हैं शीघ्र त्वरित

१ हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले ॥ उदानः कंठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः ॥१॥

लघु क्षिप्र अर द्रुत सत्वर चपल तूर्ण अविलम्बित आशु यह ग्यारह नाम शीघ्र अथवा जल्दीके है ॥ ६८ ॥

सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम्। नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः ॥ ६९ ॥ अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ॥७०॥

सतत अनारत अश्रान्त संतत अविरत अनिश नित्य अनवरत अजस्र यह नौ नाम नित्य अर्थात् लगातारके है अतिशय भर ॥ ६९ ॥ अतिवेल भृश अत्यर्थ अतिमात्र उद्गाढ निर्भर तीव्र एकान्त नितान्त गाढ बाढ दृढ यह चौदह नाम अतिशय अर्थात् बहुधाके है ॥ ७० ॥

क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ॥ कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड्गुह्यकेश्वरः ॥ ७१ ॥ मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ किंनरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥ ७२ ॥ यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः॥ अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ॥ ७३ ॥

शीघ्रादिक दृढपर्यन्त शब्द असत्व अर्थात् विशेष्यवृत्तित्वके न होनेपर क्लीब नपुंसक लिंगमें होवे है भाव यह है कि जो शीघ्रादिक शब्द विशेष्यवृत्ति न हो तो नपुंसकलिंगमें होते है यथा [शीघ्रं कृतवान् भृशं मूर्खः भृशं याति] और इन शीघ्रादिक शब्दोंके बीचमे जो शब्द सत्वगामि अर्थात् विशेष्यवृत्ति है वह तीनों लिंगमें होता है अर्थात् उस द्रव्यका जो लिंग है वह शीघ्रादिक शब्दका होता है यथा [शीघ्रा धेनु शीघ्रो वृष शीघ्रं गमनम्]और अतिशय तथा भर शब्दोंको विशेष्यवृत्ति नही है यह नित्यही पुल्लिंगवाची है कुबेर त्र्यम्बकसख यक्षराज् गुह्यकेश्वर ॥ ७१ ॥ मनुष्यधर्मन् धनद राजराज धनाधिप किन्नरेश वैश्रवण पौलस्त्य नरवाहन ॥ ७२ ॥ यक्ष एकपिंग ऐलविल श्रीद पुण्यजनेश्वर यह सत्तरह नाम कुवेरके है इन कुवेरका उद्यान बगीचा चैत्ररथ संज्ञिक है और पुत्र नलकूबर संज्ञिक है ॥ ७३ ॥

कैलासः स्थानमलका पूर्विमानं तु पुष्पकम् ॥ स्यात्किनरः किंपुरुषस्तुरंगवदनो मयुः ॥ ७४ ॥ निधिर्ना शेवधिर्भेदा[१] पद्मशङ्खादयो निधेः ॥

इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

और कुबेरका स्थान कैलास संज्ञिक है और पुर अलका संज्ञिक है और विमान पुष्पक संज्ञिक है किन्नर किंपुरुष तुरगवदन मयु यह चार किन्नरमात्रके नाम है ॥ ७४ ॥ निधि शेवधि यह दो नाम निधि खजानेके है निधि शेवधि यह दोनों

१ महापद्मश्च पद्मश्च शंखो मकरकच्छपौ ॥ मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयोनव ॥ २ ॥

शब्द नृ (पुंलिंग) हैं नृशब्दका दोनों शब्दोंमें काकनेत्रवत् संबन्ध है और पद्म शंख आदिक निधिके विशेष भेद हैं ॥

इति स्वर्गवर्गः

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् ॥ नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥ वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ॥ विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

द्यो दिव् अभ्र व्योमन् पुष्कर अम्बर नभस् अन्तरिक्ष गगन अनन्त सुरवर्त्मन् ख वियत् विष्णुपद आकाश विहायस् विहायस नाक द्युस् यह उन्नीश नाम आकाशके हैं द्यो और दिव् शब्द दोनों स्त्रीलिंगमें होते हैं और आकाश विहायस् शब्द नपुंसकलिंगवाची हैं परन्तु विकल्पनाकर पुंलिंगमें होते हैं और विहायस और नाक शब्द पुंलिंगमें ही होते हैं द्युस् अव्यय है ॥ १ ॥ २ ॥

इति व्योमवर्गः ।

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ॥ प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥ उत्तरा दिगुदीची स्याद्दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे[1] ॥

दिश् ककुभ् काष्ठा आशा हरित् यह पाँच नाम दिशाओंके हैं. वहही दिशा पूर्व दक्षिण पश्चिम क्रमकर प्राची अवाची प्रतिची संज्ञिक होवे हैं यथा पूर्वदिशाका नाम प्राची है दक्षिणदिशाका नाम अवाची है पश्चिमदिशाका नाम प्रतीची है और जो उत्तरदिशा है वह उदीची संज्ञिक है॥१॥दिश्य यह एक नाम दिशाओंमें होनेवाले पदार्थमें वर्त्ते है. यह तीनों लिङ्गोंमें होता है [यथा दिशो हस्ती दिश्या हस्तिनी]

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥ कुवेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात्[2] ॥

---

१ तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाबिलम्॥ यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है तारापथ अन्तरिक्ष मेघाध्वन् महाबिल यह चार नाम आकाशके और विशेष हैं ।

१ अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् ॥ प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥१॥ यह श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है अवाग्भव अर्थात् दक्षिण दिशामें होनेवालेका नाम अवाचीन संज्ञिक है उदग्भव अर्थात् उत्तरदिशामें होनेवालेका नाम उदीचीन संज्ञिक है प्रत्यग्भव अर्थात् पश्चिम दिशामें होनेवालेका नाम प्रतीचीन संज्ञिक है प्राग्भव अर्थात् पूर्वदिशामें होनेवालेका नाम प्राचीन सज्ञिक है यह अवाचीन उदीचीन प्रतीचीन शब्द तीनों लिंगोमें होवै हैं १

२ रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः॥ बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः १

२ यह श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है रवि (सूर्य) शुक्र महीसूनु (मंगल) स्वर्भानु(राहु) भानुज(शनैश्चर) विधु (चन्द्रमा) बुध बृहस्पति यह क्रमसे पूर्वादिक दिशाओंके इसी प्रकार ग्रह हैं॥

इन्द्र वह्नि पितृपति नैर्ऋत वरुण मरुत॥२॥ कुबेर ईश यह पूर्वादिक दिशाओंके क्रमसें पति है यथा पूर्वका इन्द्र आग्नेयका वह्नि (अग्नि) दक्षिणका पितृपति (यम) नैर्ऋत्यका नैर्ऋत पश्चिमका वरुण वायव्यका मरुत उत्तरका कुबेर ईशानका ईश (महादेव) है ॥

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥ पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक्स्त्रियाम्॥५॥

ऐरावत पुण्डरीक वामन कुमुद अजन ॥ ३ ॥ पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतीक यह क्रमसें पूर्वादिक दिशाओंके धारण करनेवाले गज (हाथी) हैं अभ्रमु कपिला पिंगला अनुपमा ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती अंगना अंजनावती यह क्रमसें दिग्गजोंकी करिणी (हथिनी) हैं अपदिश् विदिश् यह दो दिशाओंके मध्यमें वर्त्ते हैं अर्थात् कोणके नाम हैं तिसमें अपदिश शब्द नपुंसकलिंगवाची है और अव्ययभी है और विदिश् शब्द स्त्रीलिंगमें होवे है ॥ ४ ॥ ५ ॥

अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं तु मण्डलम् ॥ अभ्रं मेघो वारिवाह स्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥ धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ॥घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥७॥ कादम्बिनी मेघमाला त्रिपु मेघभवेऽभ्रियम् ॥ स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च ॥ ८ ॥

अभ्यन्तर अन्तराल यह दो बीचकी जगहके नाम हैं चक्रवाल मण्डल यह दो मण्डल अर्थात् घेरेके नाम हैं अभ्र मेघ वारिवाह स्तनयित्नु बलाहक॥६॥धाराधर जलधर तडित्वत् वारिद अम्बुभृत् घन जीमूत मुदिर जलमुच् धूमयोनि यह पंदरह नाम मेघके हैं ॥७॥ कादम्बिनी मेघमाला यह दो नाम मेघसमूहके हैं अभ्रिय यह एक नाम मेघसें उत्पन्नभये पदार्थमें वर्त्ते है सो तीनो लिंगमें होताहै यथा [अभ्रिया आप अभ्रिय आसार अभ्रिय जलम] स्तनित गर्जित रसित आदिशब्दसें ध्वनितादिक यह तीन नाम मेघके शब्दमें वर्त्ते हैं अर्थात यह नाम गर्जनेके है ॥ ८ ॥

शम्पाशतहृदाह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ॥ तडित्सौदामनीविद्युच्चञ्चलाचपला अपि ॥ ९ ॥ स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो मेघज्योतिरिरंमदः ॥ इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजु रोहितम ॥१०॥

शम्पा शतह्रदा ह्रादिनी ऐरावती क्षणप्रभा तडित् सौदामनी विद्युत् चञ्चला चपला यह दश नाम बिजुलीके है ॥९॥ स्फूर्जथु वज्रनिर्घोष यह दो नाम वज्रशब्द अर्थात बिजुलीकी गर्जनाके हैं मेघज्योतिस् इरंमद यह दो मेघज्योतिके नाम है इन्द्रायुध शक्रधनुष्

ऋजुरोहित यह तीन नाम बादलपर धनुषाकार पडेभये सूर्यके किरणोंके हैं ॥ १० ॥

वृष्टिर्वर्षं तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ॥ धारासंपात आसारः शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥ वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ॥ अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥ अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ॥

वृष्टि वर्ष यह दो नाम मेघवर्षनेके हैं अवग्राह अवग्रह यह दो नाम तिस वर्षाके रुकनेमें वर्ते हैं अर्थात् अवर्षाके नाम हैं आपसमें समान लिंगवाची हैं धारासंपात आसार यह दो नाम मुशलधारवर्षाके हैं शीकर यह एकनाम जलकणिकाओंका है इसको कुहराभी कहते हैं ॥ ११ ॥ वर्षोपल करका यह दो नाम ओलोंके हैं. दुर्दिन यह एक नाम मेघसे ढकेभये दिनमें वर्ते है अन्तर्धा व्यवधा अन्तर्धि अपवारण ॥ १२ ॥ अपिधान तिरोधान पिधान आच्छादन यह आठ नाम ढाकनेके हैं. तिसमें अन्तर्धा व्यवधा दो शब्द स्त्रीलिंगमें होवे हैं अन्तर्धि शब्द पुंल्लिंगमें होवे है ॥

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥ विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ॥ अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः ॥ १४ ॥ द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ॥ कला तु षोडशो भागो बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥

हिमांशु चंद्रमस् चंद्र इन्दु कुमुदबान्धव ॥ १३ ॥ विधु सुधांशु शुभ्रांशु ओषधीशे निशापति अब्ज जैवातृक सोम ग्लौ मृगांक कलानिधि ॥ १४ ॥ द्विजराज शशधर नक्षत्रेश क्षपाकर यह बीश नाम चंद्रमाके हैं चंद्रमण्डलका जो सोलहका भाग है वह कला संज्ञिक है. बिम्ब मण्डल यह दो नाम बिम्बके हैं तिसमें बिम्बशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होवै है और मण्डल शब्द तीनों लिंगमें होवै है ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेंऽशके ॥ चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥ कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ॥ सुषमा परमा शोभा शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥

भित्त शकल खण्ड अर्द्ध यह चार नाम खण्ड अर्थात् टुकडेके हैं. तिसमें भित्त नपुंसकलिंग है और शकल और खण्डशब्दभी नपुंसकलिंग हैं परन्तु विकल्पनाकर पुल्लिंगमें होवै हैं. अर्द्ध शब्द पुल्लिंगमेंही होता है यथा [कम्बलस्यार्द्धः खण्डः] और अर्द्ध शब्द वाच्यलिंगभी है यथा [अर्द्धा शाटी अर्द्धः पटः अर्द्धं वस्त्रम्] और अर्द्ध यह एक शब्द तुल्यभागमें वर्ते है और नपुंसकलिंगवाची है चंद्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना यह तीन नाम चंद्रमाकी प्रभा अर्थात् उजियारीके हैं

प्रसाद प्रसन्नता यह दो नाम निर्मलताके है ॥ १६ ॥ कलक अक लाछन चिन्ह लक्ष्मन् लक्षण यह छै नाम चिन्हके है सुपमा यह एक नाम परमशोभाका है शोभा कान्ति द्युति छवि यह चार नाम शोभामात्रके है ॥ १७ ॥

अवश्यायस्तु नीहारस्तुपारस्तुहिनं हिमम् ॥ प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥ शीतं गुणे तद्वदर्थाः सुपीमः शिशिरो जड ॥ तुपारः शीतलः शीतो हिमः सतान्यलिङ्गकाः ॥ १९ ॥ ध्रुव औत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसंभवः ॥ मैत्रावरुणिरस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी॥२०॥

अवश्याय नीहार तुपार तुहिन हिम प्रालेय मिहिका यह सात नाम हिम अर्थात् ठढकके है हिमानी हिमसहति यह दो नाम महाहिम अर्थात् बडी ठडकके है ॥ १८ ॥ नपुसक लिंगवाची शीतशब्द गुणस्पर्शविशेपमेही होता ह न कि गुणवानमें और सुपीम शिशिर जड तुपार शीतल शीत हिम यह सातों तद्वदर्थ अर्थात् शीत गुणवाले अर्थयुक्त है और अन्यलिगक अर्थात विशेष्यलिगवाची है ॥ १९ ॥ ध्रुव औत्तानपादि यह दो नाम उत्तानपादके पुत्र ध्रुवके है अगस्त्य कुम्भसभव मैत्रावरुणि यह तीन नाम अगस्त्यमुनिके हैं इन अगस्त्यमुनिकी सधर्मिणी जो लोपामुद्रा सनिक है ॥ २० ॥

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ॥ दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥ राधा विशाखा पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ श्रविष्ठया ॥ समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥

नक्षत्र ऋक्ष भ तारा तारका उडु यह छै नाम नक्षत्रमात्रके है उडु शब्द नपुसकलिंग है परतु विकल्पनाकर पुल्लिगमें होता है अश्विनी इत्यादिक नक्षत्र दाक्षायणी सज्ञिक है अश्वयुज् अश्विनी यह दो नाम अश्विनी नक्षत्रके है ॥ २१ ॥ राधा विशाखा यह दो नाम विशाखानक्षत्रके हैं पुष्य सिध्य तिष्य यह तीन नाम पुष्य नक्षत्रके है श्रविष्ठा करकेसमान धनिष्ठा है अर्थात् श्रविष्ठा धनिष्ठा यह दो नाम धनिष्ठानक्षत्रके है प्रोष्ठपदा भाद्रपदा यह दो नाम पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदाओंके है यह स्त्रीलिंग है ॥ २२ ॥

मृगशीर्ष मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ॥ इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥ बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः ॥ जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिज ॥ २४ ॥

मृगशीर्ष मृगशिरस् आग्रहायणी यह तीन नाम मृगशीर्ष नक्षत्रके है तिस मृगशीर्षके शिरोदेशमें जो पाच तारा निवास क-

रते हैं वह इल्वला संज्ञिक हैं ॥ २३ ॥ बृहस्पति सुराचार्य गीष्पति धिषण गुरु जीव आंगिरस वाचस्पति चित्रशिखण्डिज यह नौ नाम बृहस्पतिजीके हैं ॥ २४ ॥

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ॥ अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥ रौहिणेयो बुधः सौम्यः समौ सौरिशनैश्चरौ ॥ तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुंतुदः ॥ २६ ॥

शुक्र दैत्यगुरु काव्य उशनस् भार्गव कवि यह छै नाम शुक्रके हैं अंगारक कुज भौम लोहितांग महीसुत यह पांच नाम मंगलके हैं ॥ २५ ॥ रौहिणेय बुध सौम्य यह तीन नाम बुधके हैं सौरि शनैश्चर यह दो नाम शनैश्चरके हैं आपसमें समान हैं तम राहु स्वर्भानु सैंहिकेय विधुंतुद यह पांच नाम राहुके हैं ॥ २६ ॥

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः[1] ॥ राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥ सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ॥ भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥२८॥ भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ॥ विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥२९॥ द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ॥ विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषां पतिरहर्पतिः ॥३०॥ भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः[2] ॥ माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्वकाः ॥ ३१ ॥

मरीचि अत्रि आदिक सप्तर्षि चित्रशिखण्डिन् संज्ञिक हैं राशियोंका उदय लग्न संज्ञिक हैं वह लग्न मेष वृष आदिक हैं॥२७॥ सूर सूर्य अर्यमन् आदित्य द्वादशात्मन् दिवाकर भास्कर अहस्कर ब्रध्न प्रभाकर विभाकर ॥ २८ ॥ भास्वत् विवस्वत् सप्ताश्व हरिदश्व उष्णरश्मि विकर्तन अर्क मार्त्तण्ड मिहिर अरुण पूषन् ॥ २९ ॥ द्युमणि तरणि मित्र चित्रभानु विरोचन विभावसु ग्रहपति त्विषांपति अहर्पति ॥ ३० ॥ भानु हंस सहस्रांशु तपन सवितृ रवि यह तैंतीसनाम सूर्यके हैं माठर पिंगल दण्ड यह एक एक चण्डांशु (सूर्य) के पारिपार्श्वक अर्थात् चारोंतरफके समीपवर्ती ग्रह हैं ॥ ३१ ॥

---

१ मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ॥ वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः १

२ पद्माक्षस्तेजसांराशिश्छायानाथस्तमिस्रहा ॥ कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुस्त्रयीतनुः ॥ १ ॥ प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः ॥ इनो भगो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः २

यह दो श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष हैं पद्माक्ष तेजसांराशि छायानाथ तमिस्रहन् कर्मसाक्षिन् जगच्चक्षुष् लोकबन्धु त्रयीतनु ॥ १ ॥ प्रद्योतन दिनमणि खद्योत लोकबान्धव इन भाग धामनिधि अंशुमालिन् अब्जिनीपति यह सत्तरह नाम सूर्यके विशेष हैं ॥ २ ॥

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ॥ परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥३२॥ किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः ॥ भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥३३॥

सूरसूत अरुण अनूरु काश्यपि गरुडाग्रज यह पाच नाम अरुण अर्थात् सूर्यके सारथिके है परिवेष परिधि उपसूर्यक मण्डल यह चार परिवेष अर्थात् सूर्यके चारोंतरफ कभी दीखते भये कुण्डलाकार तेजविशेषके नाम है परिवेषशब्दके साहचर्यसें परिधिभी पुलिंगमें जानना ॥ ३२ ॥ किरण उस्र मयूख अंशु गभस्ति घृणि रश्मि भानु कर मरीचि दीधिति यह ग्यारह नाम किरणोंके है तिसमें मरीचि शब्द स्त्री पुलिंगमें होताहै और दीधितिशब्द केवल स्त्रीलिंगमें ही होताहै स्त्रिया इसशब्दका अन्वय उत्तरश्लोकमेंभी काकाक्षिगोलकन्यायकरके होता है ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः ॥ रोचिः शोचिरुभे क्लीवे प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥ कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ॥ तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वन्मृगतृष्णा मरीचिका ॥ ३५ ॥

प्रभा रुच् रुचि त्विष् भा भास् छवि द्युति दीप्ति रोचिष् शोचिष् ये ग्यारह नाम प्रभामात्रके हैं तिसमें दीप्ति शब्दपर्यंत स्त्रीलिंगम होवे है रोचिष् शोचिष् यह दोनो शब्द नपुंसकलिंगमें होवे है प्रकाश द्योत आतप यह तीन नाम सूर्यकी प्रभा अर्थात् घामके हैं ॥ ३४ ॥ कोष्ण कवोष्ण मन्दोष्ण कदुष्ण यह चार नाम थोडे गर्मके है यह धर्ममात्रमें रूपभेदकर नपुंसकलिंग है और तद्वान् अर्थात् धर्मवानके विषे तीनों लिंगकेविषे होवे हैं तिग्म तीक्ष्ण खर यह तीन नाम अतिगरमके है यह तद्वत् अर्थात् कोष्णशब्दकी समान है भाव यह है कि धर्ममें नपुंसकलिंगवाची है और धर्मवानके विषे तीनों लिंगमें होते है मृगतृष्णा मरीचिका यह दो नाम लूओंके है ॥ ३५ ॥

इति दिग्वर्गः ॥

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽप्यथ पक्षतिः ॥ प्रतिपद्द्वे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥ घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीवे दिवसवासरौ ॥ प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्युषसी अपि[1] ॥ २ ॥ प्रभातं च दिनान्ते तु सायं संध्या पितृप्रसूः ॥ प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्यमथ शर्वरी ॥ ३ ॥ निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा

1 व्युष्ट विभात द्वे क्लीवे पुंसि गोसर्ग इष्यते॥ यह अर्द्ध श्लोक और पुस्तकोंमे विशेष है व्युष्ट विभात गोसर्ग यह तीन नाम प्रभातकालके विशेष है व्युष्ट विभात यह दो शब्द नपुंसकलिंगमें होते है और गोसर्ग शब्द पुलिंगमें कहा है ॥१॥

क्षणदा क्षपा ॥ विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

काल दिष्ट अनेहस् समय यह चार नाम समयके हैं पक्षति प्रतिपद् यह दो नाम परिवा तिथिके हैं यह शब्द स्त्रीलिंगमें होवै हैं वह परिवादिक दिन तिथि संज्ञिक हैं वह तिथि शब्द स्त्रीलिंगमें होता है ॥ १ ॥ घस्र दिन अहन् दिवस वासर यह पांच नाम दिनके हैं तिसमें दिवस और वासर नपुंसक तथा पुंलिंगमें होवै हैं प्रत्यूष अहर्मुख कल्य उषस् प्रत्युषस् ॥ २ ॥ प्रभात यह छे नाम प्रभातकालके हैं प्रत्यूष शब्द पुंलिंग तथा नपुंसक लिंगमें होता है सायम् संध्या पितृप्रसू यह दिनान्तमें वर्तै हैं अर्थात् दिनान्त सायम् सन्ध्या पितृप्रसू यह चार नाम सन्ध्यासमयके हैं. सायं शब्द अव्यय है और दिनान्त शब्द पुंलिंगमें होता है. प्राह्ण अपराह्ण मध्याह्न यह तीनों मिलकर त्रिसन्ध्य संज्ञिक हैं. तिसमें पूर्वदिन प्राह्ण संज्ञिक है और परदिन अपराह्ण संज्ञिक है और दुपहर मध्याह्न संज्ञिक है शर्वरी ॥ ३ ॥ निशा निशीथिनी रात्रि त्रियामा क्षणदा क्षपा विभावरी तमस्विनी रजनी यामिनी तमी यह बारह नाम रात्रिके हैं ॥ ४ ॥

तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्योत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ॥ आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥ गणरात्रं निशा बह्व्यः प्रदोषो रजनीमुखम् ॥ अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

तमिस्रा यह एक नाम तामसी रात्रि अर्थात् अन्धियारीका है. ज्योत्स्नी यह एक नाम चंद्रिकायुक्त रात्रि अर्थात् उजियारी रात्रिका है. आनेवाले तथा वर्त्तमान दिनोंसें युक्त रात्रिमें पक्षिणी यह एक नाम वर्त्तै है ॥ ५ ॥ मिलकर बहुतसीं रात्रि गणरात्र संज्ञिक हैं प्रदोष रजनीमुख यह दो नाम रात्रिके पूर्वभागके हैं. अर्द्धरात्र निशीथ यह दो नाम आधीरातिके हैं. याम प्रहर यह दो नाम प्रहरके हैं. आपसमें समान लिंग हैं ॥ ६ ॥

स पर्वसंधिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ॥ पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥ कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे ॥ अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः ॥ ८ ॥

परिवा और पंचदशी अर्थात् अमावस्या पूर्णिमाका जो बीच है वह सन्धि पर्व संज्ञिक है. पक्षान्त पंचदशी यह दो नाम अमावसी तथा पौर्णमासीके हैं दो होनेसें द्विवचन है पौर्णमासी पूर्णिमा यह दो नाम पौर्णमासीके हैं ॥ ७ ॥ चंद्रमा कलाहीन होनेपर वह पौर्णमासी अनुमति संज्ञिक है और चंद्रमा पूर्ण होनेपर वह पौर्णमासी राका संज्ञिक है. अमावास्या अमावस्या दर्श सूर्येन्दुसंगम यह चार नाम अमावसीके हैं

दर्श सूर्येन्दुसगम यह दोनों शब्द पुलिंगमें होते है ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः ॥ उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥ सोपप्लवोपरक्तौ द्वावग्न्युत्पात उपाहितः । एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥

सो अमावसी यदि दृष्टचद्र होवे तो सिनीवाली सज्ञिक है और यदि वहही अमावसी नष्ट चद्रकला होवे तो कुहू सज्ञिक है भाव यह है कि–जिस अमावसीमें चद्रमा दीखता हो वह सिनीवाली सज्ञिक है और जिस अमावसीमें चद्रमाकी कला नष्ट होजावे वह कुहू सज्ञिक है इन्दु चद्रमा पूषा सूर्य यह दोनो राहुकरग्रस्त होनेपर उस ग्रहणके उपराग ग्रह यह दो नाम है अर्थात् उपराग ग्रह यह दो नाम ग्रासके है॥९॥ सोपप्लव उपरक्त यह दो नाम राहुकर ग्रसेभये चद्रमा वा सूर्यके है अग्न्युत्पात उपाहित यह दो नाम धूमकेतु सज्ञिक उत्पातके है एक उक्तिकर सूर्य चद्रमा दोनों पुष्पवन्त संज्ञिक है अर्थात् पुष्पवन्त शब्द सूर्य तथा चद्रमा दोनोंका बोधक है सूर्य चद्रमा दो होनेंसे पुष्पवन्त शब्द द्विवचनान्त है परन्तु पुष्पवन्त शब्दमें एकवचन कहनेंसे एक सूर्य तथा एक चद्रमाका ग्रहण नहीं होगा किन्तु दोनोंकाही एकसाथमें ग्रहण होगा ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला ॥ तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥११॥ ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च ॥ पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥१२॥ द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभिः ॥ अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणाऽर्कस्य वत्सरः ॥१३॥

निमेष यह एक नाम जितनें देरमें नेत्रोंके पलक लगते है उसकालका है यह निमेष अठारह मिलकर काष्ठा सज्ञिक है और वह काष्ठा तीश मिलकर कला सज्ञिक है और वह कला तीश मिलकर क्षण सज्ञिक है और वह क्षण बारह मिल्कर मुहूर्त सज्ञिक है मुहूर्त शब्द पुनपुसकलिंगमें होता है ॥ ११ ॥ वह मुहूर्त तीश मिलकर अहोरात्र सज्ञिक है और वह अहोरात्र दश तथा पाच अर्थात् पन्दरह मिलकर पक्ष सज्ञिक है वह पक्ष दो प्रकारका है शुक्ल कृष्ण तिसमे मासका पूर्वपक्ष शुक्ल सज्ञिक है और अपरपक्ष कृष्ण सज्ञिक है वह दो पक्ष मिल्कर मास सज्ञिकहै ॥ १२ ॥ और वहही दो दो मार्गादिकमास ऋतु सज्ञिक है और उन्ही तीन ऋतुओंकर अयन होता है अर्थात् वह तीन ऋतु मिलकर अयन सज्ञिक है और वह अयन दो प्रकारका है एक सूर्यकी उत्तरागति दूसरी दक्षिणा गति अर्थात् एकअयन उत्तरायण सज्ञिक है और

दूसरा अयन दक्षिणायन संज्ञिक है. वहही दो अयन मिलकर वत्सर अर्थात् वर्षसंज्ञिक है ॥ १३ ॥

समरात्रिंदिवे काले विषुवद्विषुवं च तत्॥ मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥ पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तपा माघेऽथ फाल्गुने ॥ स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः १५

विषुवत् विषुव यह दो नाम समान रात्रिकालमें वर्त्ते हैं अर्थात् जब रात्रिदिन बराबर होते हैं उसकालके नाम हैं मार्गशीर्ष सहस् मार्ग आग्रहायणिक यह चार नाम अगनके हैं ॥ १४ ॥ तैष सहस्य यह दो पौषमें वर्त्ते हैं अर्थात् पौष तैष सहस्य यह तीन नाम पौषके हैं. तपस् माघ यह दो नाम माघके हैं. फाल्गुन तपस्य फाल्गुनिक यह तीन नाम फाल्गुनके हैं. चैत्र चैत्रिक मधु यह तीन नाम चैत्रके हैं ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो ज्येष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम् ॥ आषाढे श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥१६॥

१ पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा ॥ नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे ॥ १ ॥

यह श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है पुष्यनक्षत्रयुक्त पौर्णमासी पौषी संज्ञिक है वह पौषीपौर्णमासी जिस मासमें हो सो मास पौष संज्ञिक है इसीप्रकार औरभी माघादिक ग्यारह मास जानने चाहियें ।

स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ॥ स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥ बाहुलोर्जौ कार्त्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽस्त्रियाम् ॥ वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥ निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ॥ स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा अथ शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

वैशाख माधव राध यह तीन नाम वैशाखके हैं ज्येष्ठ शुक्र यह दो नाम ज्येष्ठके हैं. शुचि आषाढ यह दो नाम आषाढके हैं श्रावण नभस् श्रावणिक यह तीन नाम श्रावणके हैं ॥ १६ ॥ नभस्य प्रौष्ठपद भाद्र भाद्रपद यह चार नाम भादोंके हैं. आपसमें समान लिंग हैं. आश्विन इष आश्वयुज यह तीन नाम क्वारके हैं. कार्त्तिक ॥ १७ ॥ बाहुल ऊर्ज कार्त्तिकिक यह चार नाम कार्त्तिकके हैं. हेमन्त यह एक हेमन्तऋतुका नाम है. शिशिर यह एक शिशिरऋतुका नाम है. शिशिरशब्द पुंलिंग तथा नपुंसकलिंगमें होता है. वसन्त पुष्पसमय सुरभि यह तीन वसन्तऋतुके नाम हैं. ग्रीष्म ऊष्मक ॥ १८ ॥ निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागम तप यह सात नाम ग्रीष्म ऋतु अर्थात् गरमीके हैं. प्रावृष् वर्षा यह दो नाम वर्षाऋतुके हैं तिनमें प्रावृष् शब्द स्त्रीलिंगमें होता है और वर्षाशब्द स्त्रीलिंगमें बहुवचनान्त होता है. शरद् यह

एक नाम शरद् ऋतुका है शरद् शब्द स्त्रीलिंगमें होता है ॥ १९ ॥

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ॥ संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥ मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण दैवतः ॥ दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

यह हेमन्त आदिक छै ऋतु संज्ञिक हैं यह ऋतुशब्द पुलिंगमें होता है सो हेमन्तादिक ऋतु मार्गशीर्ष आदिकोंके दो दो मासोंकर क्रमसे होवे है संवत्सर वत्सर अब्द हायन शरद् समा यह छै नाम वर्षके है तिसमें हायनशब्दपर्यन्त पुलिंग तथा नपुंसकलिंगमें होवे है और समा शब्द स्त्रीलिंग तथा बहुवचनान्त है ॥ २० ॥ एकमासकरके पैत्र अहोरात्र होवेहै भाव यह है कि मनुष्योंके एक महीनेकर पित्रोंका एक दिन तथा एकरात्रि होवे है तिसमें कृष्णपक्षकी अष्टमीसें शुक्ल अष्टमीतक पितरोंका दिन और शुक्ल-अष्टमीसें कृष्णअष्टमीतक पितरोंकी रात्रि होवे है औ वर्षकरके दैवत अहोरात्र होवे है भाव यह है कि मनुष्योंके एकवर्षकरके देवताओंका दिन तथा एकरात्रि होवै है तिसमें उत्तरायण दिन और दक्षिणायन रात्रि है देवताओंके दो युग सहस्र मिलकर ब्राह्म अहोरात्र होवे है अर्थात् देवताओंके दोहजार युगोंकर ब्रह्माका एकदिन और एकरात्रि होवे हैं तिसमें देवताओंके एकहजार युगमें ब्रह्माका दिन और एकहजार युगमें देवताओंकी रात्रि होवै है यह दोनों ब्रह्माजीके दिन तथा रात्रि मनुष्योंके कल्प अर्थात् स्थिति प्रलयकाल संज्ञिक है॥ २१ ॥

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ॥ संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥ अस्त्री पङ्कं पुमान्पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् ॥ कलुषं वृजिनैनोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥

और इकत्तर देवताओंके युगोंका एक मन्वन्तर होता है संवर्त प्रलय कल्प क्षय कल्पान्त यह पांच नाम प्रलयके है ॥२२॥ पङ्क पाप्मन् पाप किल्बिष कल्मष कलुष वृजिन एनस् अघ अंहस् दुरित दुष्कृत यह बारहनाम पापके हैं तिसमें पङ्क पुलिंग तथा नपुंसकलिंगमें होता है पाप्मन शब्द पुलिंग है और शेष नपुंसक लिंग है ॥ २३ ॥

१ तात्पर्य यह है कि मनुष्योंके३६०वर्षमिलकर देवताओंका एक वर्ष होता है और देवताओंके १२०००हजार वर्ष मिलकर मनुष्योंके चारो युग होते है उतनेमें मनुष्योंके४३२००००वर्ष पूरे होते है और देवताओंका एक युग पूरा होता है फिर ऐसे देवताओंके दो हजार२०००युगोंकर ब्रह्माजीका एकदिन और एकरात्रि होवे है उतनेमें मनुष्योंके८६४००००००० वर्ष पूरे होते है तिसमें४३२००००००० मनुष्योंके वर्षोंकर ब्रह्माका एक दिन होता है और४३२००००००० मनुष्योंके वर्षोंकर ब्रह्माका एकरात्रि होवे है।

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ॥ मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥ स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ॥ श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥ भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ॥ शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च २६

धर्म पुण्य श्रेयस् सुकृत वृष यह पांच नाम धर्मके हैं तिसमें धर्मशब्द पुंलिंग तथा नपुंसकलिंगमें होता है और वृष शब्द पुंलिंगमें होता है मुद् प्रीति प्रमद हर्ष प्रमोद आमोद संमद ॥ २४ ॥ आनन्दथु आनन्द शर्मन् शात सुख यह बारह नाम हर्षके हैं प्रीतिशब्दके साहचर्यसे मुद् शब्दभी स्त्रीलिंग है. श्वःश्रेयस शिव भद्र कल्याण मंगल शुभ ॥ २५ ॥ भावुक भविक भव्य कुशल क्षेम शस्त यह बारह नाम कल्याणमात्रके हैं. तिसमें शस्त क्षेम शब्द पुंलिंग तथा नपुंसकलिंगमें होते हैं. पापशब्द पुण्यशब्द और सुखादिक शस्तपर्यन्त शब्द द्रव्य अर्थात् विशेष्यलिंग होते हैं. यथा [पापा स्त्री पापः पुमान् पापं कुलम्] इत्यादिक ॥ २६ ॥

मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ ॥ प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥ दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ॥ हेतुर्ना कारणं वीजं निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥

मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्ड उद्ध तल्लज यह पांच शब्द शुभवाचक हैं यह पांचो विशेष्यमें अन्य लिंगकर समानाधिकरणता होनेपरभी अपनें लिंगको नही त्यागते हैं. यथा [प्रशस्तो ब्राह्मणः—ब्राह्मणमतल्लिका प्रशस्ता गौ गोमचर्चिका प्रशस्तागौ गो प्रकाण्डं प्रशस्तो ब्राह्मणो—ब्राह्मणोद्धः प्रशस्ता कुमारी—कुमारी तल्लजः] जो शुभ प्राप्तकरनेवाला भाग्य है वह अय संज्ञिक है ॥२७॥ दैव दिष्ट भागधेय भाग्य नियति विधि यह छै नाम पूर्वार्जित कर्मके हैं. तिसमें नियतिशब्द स्त्रीलिंग और विधि पुंलिंग है. हेतु कारण वीज यह तीन नाम कारणमात्रके हैं तिसमें हेतु शब्द पुंलिंग है और जो आदिकारण है वह निदान संज्ञिक है अर्थात् निदान यह एक नाम उपादानकारणका है जैसे घटका मृत्तिका उपादानकारण है ॥ २८ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ॥ विशेषः कालिकोऽवस्था गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥२९॥ जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ॥ प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥ जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ॥ चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

॥ इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मन् पुरुष यह तीन नाम शरीरके आधिदैव चैतन्यपुरुषके हैं. प्रधान

प्रकृति यह दो नाम प्रकृति अर्थात् सत्वादिक गुणोंकी समान अवस्थाके है तिसमें प्रकृतिशब्द स्त्रीलिंग है जो कालका किया भया देहादिक विशेष रूप है वह अवस्था है सत्त्व रजस् तमस् यह एक एक गुण प्रकृतिके धर्म है ॥ २९ ॥ जनुस् जनन जन्मन् जनि उत्पत्ति उद्भव यह छे नाम जन्मके है तिसमें जनि तथा उत्पत्तिशब्द स्त्रीलिंग है प्राणिन् चेतन जन्मिन् जन्तु जन्यु शरीरिन् यह छे नाम प्राणीके है ॥३०॥ जाति जात सामान्य यह तीन नाम ब्राह्मणतादिक जातिके है व्यक्ति पृथगात्मता यह दो नाम घटादिक स्वरूपके है चित्त चेतस् हृदय स्वान्त हृद् मानस मनस् यह सात नाम चित्तके है॥३१॥

इतिकालवर्गः ।

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ॥ प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥ धीर्धारणावती मेधा संकल्पः कर्म मानसम् ॥ चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

१ अवधान समाधान प्रणिधान तथैव च ॥ यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है अवधान समाधान प्रणिधान यह तीन नाम समाधानके है ।

२ विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते॥ यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है विमर्श भावना वासना यह तीन नाम वासना अर्थात् पूर्व अनुभव कीभई स्मृतिके है।

बुद्धि मनीषा धिषणा धी प्रज्ञा शेमुषी मति प्रेक्षा उपलब्धि चित् संविद् प्रतिपद् ज्ञप्ति चेतना यह चौदह नाम बुद्धिके है ॥ १ ॥ जो धारणावाली बुद्धि है सो मेधा संज्ञिक है जो मनकर सिद्ध किया कर्म है वह संकल्प संज्ञिक है चित्ताभोग मनस्कार यह दो नाम सुखादिकमें तत्परभये मनके है चर्चा संख्या विचारणा यह तीन विचार अर्थात् प्रमाणोंकर अर्थकी परीक्षा करनेके नाम हैं ॥ २ ॥

अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु संशयः ॥ संदेहद्वापरौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम्॥ समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥ ४ ॥

अध्याहार तर्क ऊह यह तीन नाम तर्कके है विचिकित्सा संशय संदेह द्वापर यह चार नाम संशयके है निर्णय निश्चय यह दो नाम निश्चयके है आपसमें समान लिंग हैं ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि नास्तिकता यह दो नाम नास्तिकता अर्थात् परलोकके अभावकारक ज्ञानके है व्यापाद द्रोहचिन्तन यह दोनाम परद्रोहके चिन्ता करनेके है सिद्धान्त राद्धान्त यह दो नाम सिद्धान्तके हैं आपसमें समान लिंग है भ्रान्ति मिथ्यामति भ्रम यह तीन नाम भ्रान्ति अर्थात् अयथार्थज्ञानके है यथा [स्थाणुमें पुरुषका ज्ञान होना यह भ्रान्ति है यह स्थाणु है वा पुरुष है ऐसा

ज्ञान होना संशय है] स्थाणुमें स्थाणुका ज्ञान होना यह निश्चय है ॥ ४ ॥

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ॥ अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥ मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ॥ मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥ मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ॥ रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥७॥

संविद् आगू प्रतिज्ञान नियम आश्रव संश्रव अंगीकार अभ्युपगम प्रतिश्रव समाधि यह दश नाम अंगीकारके हैं जिसकों यवनभाषामें कबूलियत कहते हैं संविद्शब्द आगूशब्द स्त्रीलिंग हैं ॥ ५ ॥ मोक्षविषयमें जो धी बुद्धि है वह ज्ञान है और मोक्षशास्त्रसे भिन्न शास्त्र शिल्प चित्तादिकमें जो बुद्धि है वह विज्ञान है. भाव यह है कि मोक्षके निमित्त शास्त्र तथा चित्तादिकमें जो बुद्धि है वह ज्ञान है और अन्यनिमित्त शास्त्र शिल्पादिकमें जो बुद्धि है वह विज्ञान है. मुक्ति कैवल्य निर्वाण श्रेयस् निःश्रेयस् अमृत ॥ ६ ॥ मोक्ष अपवर्ग यह आठ नाम मोक्षके हैं अज्ञान अविद्या अहंमति यह तीन नाम अज्ञानके हैं. रूप शब्द गंध रस स्पर्श यह पांच विषय हैं ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ॥ कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥ तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः ॥ तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

और यह ही पांचों गोचर इन्द्रियार्थसंज्ञिक हैं हृषीक विषयिन् इन्द्रिय यह तीन नाम नेत्रादिक इन्द्रियोंके हैं पायु आदिक कर्मेन्द्रिय संज्ञिक हैं और मनोनेत्रादिक धींद्रिय संज्ञिक हैं ॥ ८ ॥ तुवर कषाय यह दो नाम हर्रे आदिक स्वादुके तुल्य रसके हैं. मधुर यह एकनाम जलशर्करादिक स्वादुके तुल्य रसका है. लवण यह एक नाम सैंधवआदिक स्वादुके तुल्य रसका है. कटु यह एक नाम मिरच आदिक स्वादुके तुल्य रसका है तिक्त यह एक नाम निंबू आदिक स्वादुके तुल्य रसका है अम्ल यह एक नाम अमली आदिक स्वादुके तुल्य रसका है तुवर आदिक अम्लपर्यन्त रस संज्ञिक हैं यह तुवर आदिक छै रसमात्रमें वर्त्तमान हों तो पुंलिंगमें होते हैं और यदि तिस रसवाले पदार्थोंमें वर्त्तमान हों तो तीनों लिंगमें होवे हैं अर्थात् विशेष्यलिंग होते हैं ॥ ९ ॥

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ॥ आमोदः सोऽतिनिर्हारी वा-

१ पायूपस्थे पाणिपादौ वाक् चेतींद्रियसंग्रहः॥ उत्सर्गानन्दनादानगत्यालापाश्च तत्क्रियाः॥१॥ मनः कर्णौ तथानेत्रं रसना च त्वचा सह ॥ नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥ २ ॥

स्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥ समाकर्षी तु निर्हारी सुरभिर्घ्राणतर्पणः ॥ इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥

मर्दन करनेसें उठेभये ऐसे मनोहर गन्धमें परिमल शब्द वर्ते है अर्थात् परिमल यह एक नाम मसलनेसें उत्पन्न भये मनुष्योंका मन हरनेवाले गन्धका है जो अतिनिर्हारी अर्थात् बहुतही दूर जानेवाला गन्ध है वह आमोद संज्ञिक है इससें परे गुण शुक्लादिकपर्यन्त विशेष्यलिंगत्व हैं अर्थात् इससे परे शुक्लपर्यन्त शब्द त्रिलिंगमें होते है ॥ १० ॥ समाकर्षिन् निर्हारिन् यह दो नाम दूर जानेवाले गंधयुक्त द्रव्यके है सुरभि घ्राणतर्पण इष्टगन्ध सुगन्धि यह चार नाम सुगन्धयुक्तके है आमोदिन् मुखवासन यह दो नाम मुखको सुगन्धयुक्त करनेवाले तांबूलादिकके है॥११॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्रं स्यादामगन्धि यत् ॥ शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥ अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ॥ हरिणः पाण्डुरः पाण्डुरीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥

पूतिगन्धि दुर्गंध यह दो नाम अनिष्टगन्धयुक्त द्रव्यके हैं जो आमगन्धि अर्थात् अपक्व मांसके गन्धकी समान गन्धवाला है वह विस्र संज्ञिक है शुक्ल शुभ्र शुचि श्वेत विशद श्येत पाण्डर ॥ १२ ॥ अवदात सित गौर अवलक्ष धवल अर्जुन हरिण पाण्डुर पाण्डु यह सोलह नाम श्वेतके है ईषत्पाण्डु धूसर यह दो नाम धूसर थोडे श्वेतके है१३

कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ॥ पीतो गौरो हरिद्राभः पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥ लोहितो रोहितो रक्तः शोणः कोकनदच्छविः ॥ अव्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

कृष्ण नील असित श्याम काल श्यामल मेचक यह सात नाम काले वर्णके है पीत गौर हरिद्राभ यह तीन नाम पीलेके है पालाश हरित हरित् यह तीन नाम हरे वर्णके हैं ॥ १४ ॥ लोहित रोहित रक्त यह तीन नाम लालके है जो लालकमलकीसमान वर्ण है वह शोणसंज्ञिक है और जो अव्यक्त राग अर्थात् थोडासा लालवर्ण है वह अरुण संज्ञिक है और जो श्वेतयुक्त लालवर्ण है वह पाटल संज्ञिक है ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ कडार कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥ चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ॥ गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

॥ इति धीवर्गः ॥ ७ ॥

श्याव कपिश यह दो नाम थोडे श्वेत मिले भये थोडे लालवर्णके है यह वर्ण य-

न्दरोंके देहपर बहुधा होता है धूम्र धूसर कृष्णलोहित यह तीन नाम कालेमिले भये लालवर्णके हैं कडार कपिल पिंग पिशंग कद्रु पिंगल यह छै नाम पिंगलवर्णके हैं यह वर्ण अत्यन्त गौर बालकके बालोंपर होता है॥१६॥ चित्र किर्मीर कल्माष शबल एत कर्बुर यह छै नाम चित्रविचित्र अर्थात् तरहतरहके वर्णके हैं शुक्लादिक शब्द गुणमात्रमें वर्त्तमान होवें तो पुंलिंगमें होते हैं परन्तु चित्रशब्द रूपभेदसे नपुंसकलिंगवाची है और यदि शुक्लादिकशब्द गुणिलिंग अर्थात् विशेष्य-लिंग हों तो गुणवान् विशेष्यमें होता है १७

इति धीवर्गः।

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ॥ व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥ अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ॥ तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

ब्राह्मी भारती भाषा गिर् वाच् वाणी सरस्वती व्याहार उक्ति लपित भाषित वचन वचस् यह तेरह नाम वचनके हैं तिसमें सरस्वती शब्दपर्यन्त वचनके अधिष्ठातृक देवताके हैं और व्याहारादिक अधिष्ठेयके हैं ॥ १ ॥ जो अपशब्द अपभ्रष्टशब्द है वह अपभ्रंश संज्ञिक है जो शास्त्रव्याकरणादिकमें सिद्ध भया है वह शब्द संज्ञिक है जो तिङ् और सुप् आदिक विभक्त्यन्तपदोंका समूह है वह वाक्य संज्ञिक है अथवा कारक विभक्तियुक्त जो क्रिया है वह वाक्यसंज्ञिक है यथा [देवदत्त गामभिरक्ष शुक्लेन दण्डेन]॥२॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः ॥ स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥ शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गमोंकारप्रणवौ समौ ॥ इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः४

श्रुति वेद आम्नाय त्रयी यह चार नाम वेदके हैं तिसमें श्रुतिशब्द स्त्रीलिंग है तिस वेदकी विधि यज्ञादिक धर्म संज्ञिक है ऋच् सामन् यजुष् यह तीन वेद हैं ऋक्शब्द स्त्रीलिंगमें होता है तीनों वेद मिलकर त्रयी-संज्ञिक है ॥ ३ ॥ शिक्षा इत्यादिक वेदके अंग हैं ओंकार प्रणव यह दो नाम ओंकारके हैं आपसमें समान वर्ण हैं इतिहास पुरावृत्त यह दो नाम पूर्वचरित महाभारतादिकके हैं उदात्त आदिक तीन स्वर हैं ॥४॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ॥ आख्यायिकोपलब्धार्था पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥ प्रबन्धकल्पना कथा प्रवह्लिका प्रहेलिका॥स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहृतिस्तु संग्रहः६

१ शिक्षा कल्पोव्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः॥छन्दोविचितिरित्येष षडंगो वेद उच्यते १॥
२ उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः॥ चतुर्थ प्रचितो नोक्तो यतोऽसौ छान्दसः स्मृतः
३ सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च॥ वंश्यानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम् ॥ १ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीति यह दो नाम तर्कविद्या और अर्थशास्त्रमें वर्ते हैं अर्थात् आन्वीक्षिकी यह एक नाम गोतमादिककी रचीभई तर्कविद्याका है और दण्डनीति यह एक नाम बृहस्पत्यादिकके रचे भये अर्थ-शास्त्रका है आख्यायिका उपलब्धार्था यह दो नाम कहानीके है जो पाच लक्षणवाला है वह पुराणसज्ञिक है ॥ ५ ॥ जो प्रबन्ध-कल्पना अर्थात् वाक्यविस्तारकी रचना है वह कथासज्ञिक है प्रवह्लिका प्रहेलिका यह दो नाम प्रहेलिके है जो धर्मसहिता अर्थात् धर्मके जाननके लिये रची भई सहिता है वह स्मृति सज्ञिक है समाहृति सग्रह यह दो नाम सग्रह अर्थात् इकठे करनेके है ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्था किंवदन्ती जनश्रुतिः ॥ वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥७॥ आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ॥ हूतिराकारणाह्वानं संहूतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥

जो समासार्थ है वह समस्या है अर्थात् यह कवियोंकी शक्ति जाननेकेलिये थोडी पढीभईका नाम है किंवदन्ती जनश्रुति यह दो नाम लोकप्रवाद अर्थात् अफवाके है वार्ता प्रवृत्ति वृत्तान्त उदन्त यह चारि नाम वार्त्ताके है आह्वय ॥ ७ ॥ आख्या आह्व अभिधान नामधेय नामन यह छै नाम नामके है हूति आकारणा आह्वान यह तीन नाम पुकारनेके है बहुत मनुष्योंकर कीभई पुकार संहूतिसज्ञिक है ॥ ८ ॥

विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ॥ उपोद्घात उदाहारः शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥ प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे॥ मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथ मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥ अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ॥ यशः कीर्तिः समज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥

विवाद व्यवहार यह दो नाम ऋणादानादिकके निमित्त विविधवाद अर्थात् हुज्जतके है उपन्यास वाङ्मुख यह दो नाम वाक्यके आरम्भके है उपोद्घात उदाहार यह दो नाम उदाहरण अर्थात् मिसालके है शपन शपथ यह दो नाम सौगन्दके है जिसको कि शम कहते है तिसमें शपथ शब्द पुल्लिग है ॥ ९ ॥ प्रश्न अनुयोग पृच्छा यह तीन नाम प्रश्न अर्थात् पूछनेके हैं प्रतिवाक्य उत्तर यह दो नाम उत्तर अर्थात् पूछनेपर जवाब देनेके है मिथ्याभियोग अभिख्यान यह दो नाम सत्यके झूठ करनेके है मिथ्याभिशसन ॥ १० ॥ अभिशाप यह दो नाम झूठे दोष लगानेके है अनुरागज अर्थात् प्रीतिसे उत्पन्न भया शब्द प्रणादसज्ञिक है यशस् कीर्ति समज्ञा यह तीन नाम कीर्त्तिके है स्तव स्तोत्र स्तुति नुति यह चार नाम स्तुतिके है ॥११॥

आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ॥ काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥१२॥ अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ॥ उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

दो तीनवार कहा शब्द आम्रेडितसंज्ञिक है उच्चैर्घुष्ट घोषणा यह दो नाम ऊंचेशब्दके हैं शोक भय कामादिककरके जो ध्वनि शब्दका विकार है वह काकु संज्ञिक है ॥ १२ ॥ अवर्ण आक्षेप निर्वाद परीवाद अपवाद उपक्रोश जुगुप्सा कुत्सा निन्दा गर्हण यह दश नाम निन्दाके हैं ॥ १३ ॥

पारुष्यमतिवादः स्याद्भर्त्सनं त्वपकारगीः ॥ यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥१४॥ तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ॥ स्यादाभाषणमालापः प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

पारुष्य अतिवाद यह दो नाम बुरेबोलनेके हैं अपकारयुक्तवाणी भर्त्सनसंज्ञिक है अर्थात् भर्त्सन यह एक नाम फटकार देनेका है. जो निन्दासहित उपालम्भ अर्थात् क्रोधपूर्वक दोषका सिद्ध करना है वह परिभाषणसंज्ञिक है यह खिजानेका नाम है उपालम्भ दोप्रकारका हैं गुणोंकी प्रकटतापूर्वक तथा निन्दापूर्वक—यथा [तुझ महाकुलीनको यह क्या उचित है?—तुझ वन्धकीपुत्रको यह उचितही है] ॥ १४ ॥ मैथुनकेप्रति परस्त्रीपुरुषके संयोगनिमित्तकरके जो आक्रोश गाली है तिसमें आक्षारणा यह एक शब्द होता है. आभाषण आलाप यह दो नाम आपसमें संबोधनपूर्वक भाषणके हैं. जो वे अर्थवचन हैं वह प्रलापसंज्ञिक हैं. यह वकवादका नाम है ॥ १५ ॥

अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ॥ विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥ सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निह्नवः[1] ॥ संदेशवाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥

अनुलाप मुहुर्भाषा यह दो नाम बहुत भाषणके हैं विलाप परिदेवन यह दो नाम विलापके हैं विप्रलाप विरोधोक्ति यह दो नाम आपसमें विरुद्धभाषणके हैं जो आपसमें उक्तिप्रत्युक्तिपूर्वक भाषण है वह संलापसंज्ञिक है ॥ १६ ॥ सुप्रलाप सुवचन यह दो नाम सुन्दरभाषणके हैं अपलाप निह्नव यह दो नाम छिपे भये वाक्यके हैं.

---

१ चोद्यमाक्षेपाभियोगौ शापाक्रोशौ दुरेषणा ॥ अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकत्थनम् ॥ १ ॥

यह श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है चोद्य आक्षेप अभियोग यह तीन नाम अद्भुत प्रश्नके हैं शाप आक्रोश दुरेषण यह तीन नाम गालीके हैं चाटु चटु श्लाघा यह तीन नाम प्रेमकरके झूंठ बोलनेके हैं तिसमें चाटु चटु शब्द पुंनपुसकलिंग हैं।

संदेशवाच् वाचिक यह दो नाम दूतके कहनेके है इससे उत्तर वाग्भेद रुशत्यादिक सम्यगन्त शब्द तीनों लिंगमें होवे है ॥१७॥

रुशती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ॥ अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥१८॥ निष्ठुरं परुषं ग्राम्यमश्लील सूनृतं प्रिये ॥ सत्येऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

जो अकल्याण वाणी है वह रुशतीसञ्ज्ञिक है और जो शुभरूप वाणी है वह कल्यासञ्ज्ञिक है जो अतिही मधुरवाक्य है वह सान्त्व सञ्ज्ञिक है संगत हृदयंगम यह दो नाम सबद्धवचनके है ॥१८॥ निष्ठुर परुष यह दो नाम कर्कश वचनके है ग्राम्य अश्लील यह दो नाम शिथिलवचनके है जो प्यारा और साचा वचन है उसमें सूनृत शब्द होता है संकुल क्लिष्ट यह दो नाम परस्परपराहत अर्थात् असम्भववचनमें वर्ते है १९

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ॥ अम्बूकृतं सनिष्ठीवमबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥ अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृषार्थकम्[1] ॥

[1] सोल्लुण्ठन तु सोत्प्रास भणित रतिकूजितम् ॥ श्राव्य हृद्य मनोहारि विस्पष्ट प्रकटोदितम् ॥ १ ॥

यह श्लोक औरपुस्तकोंमे विशेष है सोल्लुण्ठन सोत्प्रास यह दो नाम हास्यसहित वचनके है भणित रतिकूजित यह दो नाम रतिसमयके शब्दके है श्राव्य हृद्य मनोहारिन् विस्पष्ट प्रकटोदित यह पाच नाम स्पष्टवचनके है ।

अथ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥

जो लुप्तवर्णपद है अर्थात् जिसका कोई वर्ण वा पद लोप होगया है वह ग्रस्तवचन है जो शीघ्र कहागया है वह निरस्तवचन है जो थूकसहित वचन है वह अम्बूकृत है जो अर्थशून्य वचन है वह अबद्ध है ॥ २० ॥ अनक्षर अवाच्य यह दो नाम नही कहने योग्य वचनके है जो झूंठ अर्थवाला वचन है वह आहत सञ्ज्ञिक है म्लिष्ट अविस्पष्ट यह दो नाम अप्रकट वचनके है यह उस वचनका नाम है जिसमें साफ २ अक्षर नही निकलते है जो झूंठ वचन है वह वितथ सञ्ज्ञिक है ॥ २१ ॥

सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति ॥ शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥ स्याननिर्घोषनिर्ह्रादनादनिस्वाननिस्वनाः ॥ आरवारावसंरावविरावा अथ मर्मरः ॥ २३ ॥ स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानां तु शिञ्जितम् ॥ निक्काणो निक्कणः क्काणः क्कणः क्कणनमित्यपि ॥ २४ ॥ वीणायाः क्कणिते प्रादेः प्रक्काणप्रक्कणादयः ॥ कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥ स्त्री

प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे समे ॥ २५ ॥

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

सत्य तथ्य ऋत सम्यक् यह चार नाम सत्यके हैं यह सत्यादिक शब्द विशेष्य-लिंग होनेपर तीनोंलिंगमें होते हैं यथा [सत्या वाक् सत्यः शब्दः सत्यं वचनम्] शब्द निनाद निनद ध्वनि ध्वान रव स्वन ॥ २२ ॥ स्वान निर्घोष निर्ह्राद नाद निस्वान निस्वन आरव आराव संराव विराव यह सतरह नाम शब्दमात्रके हैं. मर्म ॥ २३ ॥ यह एक नाम कपडों तथा पत्रोंके शब्दमें वर्त्ते है और भूषणोंके शब्दमें शिञ्जित शब्द होता है. निक्काण निक्कण क्काण क्कण क्कणन ॥ २४ ॥ यह पांच नाम वीणाके शब्दमें वर्त्ते हैं. प्रादिक उपसर्गसें जो प्रक्काण प्रक्कण आदिक हैं सोभी वीणाके शब्दमें होवे हैं. कोलाहल कलकल यह दो नाम बहुतोंकर किये भये स्पष्टशब्द अर्थात् कोलाहलका नाम है. जो पक्षियोंका शब्द है वह वासित संज्ञिक है प्रतिश्रुत् प्रतिध्वान प्रतिशब्दके नाम हैं. गीत गान यह दो नाम गावनेके हैं आपसमें समान लिंग हैं ॥ २५ ॥

इति शब्दादिवर्गः ।

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ॥ पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥ काकली तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ॥ कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

निषाद ऋषभ गांधार षड्ज मध्यम धैवत पंचम यह सात स्वर तंत्रीतार तथा कंठसें उत्पन्न होते हैं ॥ १ ॥ काकली यह एक शब्द सूक्ष्म स्वरमें होता है. स्त्रीलिंगवाची है मधुर तथा प्रकट शब्दमें कल शब्द वर्त्ते है और ऊंची ध्वनिमें तार शब्द वर्त्ते है यह तीनों कल मंद्र तारशब्द तीनों लिंगमें होते हैं॥२॥

समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी॥विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥ ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम् ॥ वंशादिकं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ४

जो समन्वितलय है अर्थात् जिसमें गान तथा बाजेकी लय बराबर है वह एकताल है वीणा वल्लकी विपंची यह तीन नाम वीणाके हैं. जो वीणा सात तारोंसें युक्त है वह परिवादिनी संज्ञिक है ॥ ३ ॥ और जो वीणादिक बाजा अर्थात् वीणा सितार सारंगी आदिक बाजा हैं वह तत संज्ञिक हैं और जो मृदंगादिक बाजा अर्थात् मृदंग ढोल पखवाज आदिक बाजा हैं वह आनद्ध

१नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः॥ सयन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते ॥

यह श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है बाईस प्रकारका शब्द मनुष्योंके पेटके बीचमें स्थित है जो कंटके मध्यमें स्थित है वह मद्र है और शिरके विषें तार संज्ञिक स्वर गाया जाता है ।

संज्ञिक है और जो वश्यादिक बाजा अर्थात् बासुरी वेन आदिक बाजा है वह सुषिर संज्ञिक है और जो कास्यतालादिक अर्थात् मजीर घंटाआदिक बाजा है घन संज्ञिक है ४

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् ॥ मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥ स्याद्यशः पटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ॥ आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादि वादनम् ॥ ६ ॥

यह चारोंप्रकारका बाजा वादित्र आतोद्यनामक है मृदग मुरज यह दो नाम मृदगके है अक्य आलिग्य ऊर्ध्वक यह तीन मृदगके भेद है ॥ ५ ॥ यशः पटह ढक्का यह दो नाम ढोलके है भेरी दुदुभि यह दो नाम नगारा तथा तुरईके है आनक पटह यह दो नाम बडे नगारेके है जिसकरके वीणादिक बाजे बजाये जाते है वह कोण संज्ञिक है ॥ ६ ॥

वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तु प्रसेवकः ॥ कोलम्बकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥ वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः ॥ मर्दलः पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥

वीणाका दण्ड प्रवाल संज्ञिक है ककुभ प्रसेवक यह दो नाम वीणाकी तूंबीके है इस वीणाका काया तन्त्रीवर्जित दण्डादिकोंका समूह कोलबक संज्ञिक है वीणाका निबंधन उपनाह संज्ञिक है अर्थात् जहाँ वीणाके अंतमें तार बधते है उस निबंधनका नाम उपनाह है ॥ ७ ॥ डमरु मड्डु डिंडिम झर्झर यह बाजेके भेद है जो मर्दल अर्थात् मृदगसदृश बाजेका भेद है वह पणवसंज्ञिक है अन्य औरभी हुड्डुक गोमुख आदिक भेद है नर्त्तकी लासिका यह दो नाम नाचनेवालीके है आपसमें समान है ॥ ८ ॥

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ॥ तालः कालक्रियामानं लयः साम्यमथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥ ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ॥ तौर्यत्रिकं नृत्यगीतं वाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

हाथपाँवोंकर जो विलम्बित नृत्यादिक है अर्थात् हातपाँवोंके चलानेकर बहुत देरमें होनेवाला नृत्यादिक है वह तत्व संज्ञिक है और जो द्रुत शीघ्र होनेवाला नृत्यादिक है वह ओघ संज्ञिक है और जो मध्यम है अर्थात् न तो देरमें हो न शीघ्र हो ऐसा नृत्यादिक घन संज्ञिक है यह क्रमसे जानने जो काल और क्रियाका मान अर्थात् नियम कारण है वह ताल है गान तथा बाजेकर तथा पाँवोंके उठानेकर काल तथा क्रियाकी समता है वह लय है यह शब्द पुनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ९ ॥ ताण्डव नटन नाट्य लास्य नृत्य नर्त्तन यह छै नाम नाचके है नाच गाना बजाना यह ती

मिलकर जो नाँच है वह तौर्यत्रिक संज्ञिक है ॥ १० ॥

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्तकः॥ स्त्रीवेषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका ॥ ११ ॥ भगिनीपतिरावुत्तो भावो विद्वानथावुकः ॥ जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

जो स्त्रीवेष धारणकरनेवाला और नाँचनेंवाला पुरुष है वह भ्रकुंस भ्रुकुंस भ्रुकुंससंज्ञिक है जो गणिका नाँचनेवाली वेश्या है वह अज्जुकासंज्ञिक है यह अज्जुकादिक संज्ञा नाट्यकी उक्तिमेंही होवे हैं नाँचसे भिन्न प्रयोग नहीं होता है ॥ ११ ॥ जो बहिनका पति है वह आवुत्तसंज्ञिक है जो विद्वान् है वह भावसंज्ञिक है जो पिता है वह आवुकसंज्ञिक है जो युवराज है अर्थात् राजपुत्र है वह कुमार भर्तृदारकसंज्ञिक है॥१२॥

राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका ॥ देवी कृताभिषेकायामितरासु तु भट्टिनी ॥१३॥ अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ॥ अम्बा माताऽथ बाला स्याद्वासूरार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥

जो राजा है वह भट्टारक देव संज्ञिक है तिस राजाकी पुत्री भर्तृदारिकासंज्ञिक है कृताभिषेक रानीकेविषें देवी शब्द वर्त्ते है अर्थात् यह एक नाम जिस रानीका अभिषेक हुआ हो उसका नाम है और अन्य रानियोंमें भट्टिनी शब्द वर्त्ते है अर्थात् यह एक नाम सामान्य रानियोंका है ॥ १३ ॥ अवध्य नहीं मारनेंयोग्य ब्राह्मणादिकोंके दोषकी उक्तिप्रकरणमें अब्रह्मण्य शब्द वर्त्ते है जो राजाका शाला है वह राष्ट्रिय संज्ञिक है अम्बा मातृ यह दो नाम माताके हैं यह अम्बादिक शब्द नाट्योक्तिसें अन्यत्रभी होते हैं परन्तु विशेपकर यहाँ नाट्योक्तिमें हि इन शब्दोंका अधिकार है बाला वासू यह दो नाम कुमारीके हैं आर्य मारिष यह दो नाम आर्यके हैं ॥ १४ ॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठानिर्वहणे समे ॥ हण्डे हञ्जे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥ अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समौ ॥ निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥

हंडे यह एक शब्द नीचसखीके बुलानेंमें होता है हंजे यह एक शब्द चेटी सखीके बुलानेंमें होता है हला यह एक शब्द सामान्य सखीके बुलानेंमें होता है ॥१५॥ अंगहार अंगविक्षेप यह नाँचविशेषके नाम हैं व्यञ्जक अभिनय यह दो नाम हस्तादिक करकें मनमें स्थितभये अर्थके प्रकाशकर देनेके हैं. आपसमें समान हैं अंग तथा सत्व अन्तः करणकरके सिद्ध भये कर्ममें आंगिक सात्विक यह दो शब्द वर्त्ते हैं अर्थात् आं-

गिक यह एक नाम भी आदिकके चलाने-का है और सात्विक यह एक नाम अन्तःकरणवृत्तिकी बाहिर प्रकटता होनेका है १६

शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः॥ बीभत्सरौद्रौ च रसाः शृङ्गारः शुचिरुज्वलः ॥ १७ ॥ उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा ॥ कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥ हासो हास्यं च बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ॥ विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥ दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ॥ भयंकर प्रतिभयं रौद्रं तूग्रममी त्रिषु ॥ २० ॥

शृगार वीर करुणा अद्भुत हास्य भयानक बीभत्स रौद्र यह आठ रस है शृगार शुचि उज्वल यह तीन नाम शृगारके है ॥ १७ ॥ उत्साहवर्द्धन वीर यह दो नाम वीर रसके है कारुण्य करुणा घृणा कृपा दया अनुकपा अनुक्रोश यह सात नाम करुणारसके है हस ॥ १८ ॥ हास हास्य यह तीन नाम हास्यरसके है बीभत्स विकृत यह दो बीभत्सरसके नाम है और तीनों लिगमें होते है विस्मय अद्भुत आश्चर्य चित्र यह चार नाम अद्भुत रसके है भैरव ॥ १९ ॥ दारुण भीषण भीष्म घोर भीम भयानक भयकर प्रतिभय यह नौ नाम भयानक रसके हैं रौद्र उग्र यह दो नाम रौद्र रसके है यह अद्भुत आदिक उग्रा त चौदह शब्द तीनों लिगमें होते है ॥ २० ॥

चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ॥ विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥ गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः[1] ॥ अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूर्क्षणम् ॥ मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा साऽपत्रपाऽन्यतः ॥ २३ ॥

दर त्रास भीति भी साध्वस भय यह छे नाम डरके हैं जो मनसबन्धी विकार है वह भाव है और जो भावबोधक अर्थात् चित्तविकारके प्रकाश करनेवाला है वह अनुभाव सज्ञिक है ॥२१॥ गर्व अभिमान अहकार यह तीन नाम गर्वके है जो चित्तकी समुन्नती अर्थात् दूसरेसे बडप्पन विचारनेंकर उन्नति है वह मान है अनादर परिभव परीभाव तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढा अवमानना अवज्ञा अवहेलन असूर्क्षण यह नौ नाम अनादरके है मन्दाक्ष ह्री त्रपा व्रीडा लज्जा यह पाच नाम लज्जाके है लज्जा दूसरेसें होती है वह अपत्रपा सज्ञिक है २३

१ दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः ॥ यह अर्द्ध श्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है दर्प अवलेप अवष्टभ चित्तोद्रेक स्मय मद यह छे नाम मदके है।

क्षान्तिस्तितिक्षाऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ॥ अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥ वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ॥ पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

क्षान्ति तितिक्षा यह दो नाम क्षमाके हैं जो पर दूसरेके विषय धनादिकमें कांक्षा है वह अभिध्या है अक्षान्ति ईर्ष्या यह दो नाम पराई उन्नतिके न सहनेके हैं गुणोंमें दोषका आरोपण करना असूया है ॥ २४ ॥ वैर विरोध विद्वेष यह तीन नाम वैरके हैं मन्यु शोक शुच् यह तीन नाम शोकके हैं तिसमें शुच्शब्द स्त्रीलिंगमें होता है पश्चात्ताप अनुताप विप्रतीसार यह तीन नाम पछितानेके हैं ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट्क्रुधौ स्त्रियौ ॥ शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥ प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽथ दोहदम् ॥ इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥ कामोऽभिलाषस्तर्षश्च सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥

कोप क्रोध अमर्ष रोष प्रतिघा रुष् क्रुध यह सात नाम क्रोधके हैं रुष् क्रुध् यह दोनों स्त्रीलिंग हैं शुद्ध आचरणमें शील शब्द वर्ते है उन्माद चित्तविभ्रम यह दो नाम उन्माद अर्थात् चित्त ठिकाने न रहनेके हैं ॥ २६ ॥ प्रेमन् प्रियता हार्द प्रेमन् स्नेह यह नाम प्रेमके हैं तिसमें प्रेमन् शब्द पुलिंग है और नपुंसक लिंगभी होता है इस कारण दो वार कहा है. दोहद इच्छा कांक्षा स्पृहा ईहा तृष् वांछा लिप्सा मनोरथ ॥ २७ ॥ काम अभिलाष तर्ष यह वारह नाम इच्छाके हैं. जो अत्यन्त इच्छा है वह लालसा संज्ञिक है. यह लालसा शब्द स्त्रीलिंगमें होता है. उपाधि धर्मचिन्ता यह दो नाम धर्मकी चिन्ताके हैं तिसमें उपाधिशब्द पुंलिंग है आधि मानसीव्यथा यह दो नाम मनकी पीडाके हैं ॥ २८ ॥

स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके समे ॥ उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥ कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे ॥ कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥

चिन्ता स्मृति आध्यान यह तीन नाम चिन्ताके हैं उत्कंठा उत्कलिका यह दो नाम उत्कंठाके हैं आपसमें समान हैं. उत्साह अध्यवसाय यह दो नाम उत्साहके हैं जो उत्साह अतिशक्तियुक्त है वह वीर्य संज्ञिक है ॥ २९ ॥ कपट व्याज दंभ उपाधि छद्मन् कैतव कुसृति निकृति शाठ्य यह नौ नाम कपटके हैं तिसमें कपटशब्द स्त्रीलिंग-

वर्जित पुनपुसकलिंगमे होता है प्रमाद अनवधानता यह दो प्रमादके नाम है ॥३०॥

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ॥ स्त्रीणां विलासविव्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥३१॥ हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ॥ द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ॥ ३२ ॥

कौतूहल कौतुक कुतुक कुतूहल यह चार नाम कौतूहलके है विलास विव्वोक विभ्रम ललित ॥ ३१ ॥ हेला लीला यह स्त्रियोंके शृंगारभावसें उत्पन्नभई क्रियॉ हाव संज्ञिक है द्रव केलि परीहास क्रीडा लीला नर्मन यह छै नाम क्रीडा मात्र अर्थात् खेलके है ॥ ३२ ॥

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खेला च कूर्दनम् ॥ घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥ अवहित्थाकारगुप्तिः समौ संवेगसंभ्रमौ ॥ स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥

व्याज अपदेश लक्ष्य यह तीन नाम स्वरूपके ढकनेके है इसकों बहानाभी कहते है क्रीडा खेला कूर्दन यह तीन नाम बालकोंके खेलके है घर्म निदाघ स्वेद यह तीन नाम पसीनाके है प्रलय नष्टचेष्टता यह दो नाम मूर्च्छाके है ॥ ३३ ॥ अवहित्था आकारगुप्ति यह दो नाम शोकादिककरके उत्पन्न भई मुखग्लानिके है संवेग संभ्रम यह दो नाम संभ्रम अर्थात् हर्षादिककरकें कर्मोंमें शीघ्रता होनेके है आपसमें समान है सोत्प्रास अधिकतासहित जो हास है वह आच्छुरित संज्ञिक है और जो थोडा हास है वह स्मित संज्ञिक है यह मुसकुरानेका नाम है ॥ ३४ ॥

मध्यमः स्याद्विहसितं रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ॥ क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं जृम्भस्तु त्रिपु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥ विप्रलम्भो विसंवादो रिङ्गणं स्खलनं समे ॥ स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

और जो हास मध्यम अर्थात् न बहुत न थोडा वह विहसित है रोमाच रोमहर्पण यह दो नाम रोम खडे होनेके हैं, क्रन्दित रुदित क्रुष्ट यह तीन नाम रोनेके है जृंभ जृंभण यह दो नाम जँभाईके हैं तिसमें जृंभशब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ ३५ ॥ विप्रलम्भ विसंवाद यह दो नाम ठगईयुक्त भाषण अथवा अंगीकृतके असिद्धकरनेके है इसकों यवनभाषामें बेमुरव्वतीभी कहते हैं रिंगण स्खलन यह दो नाम धर्मादिकसें चलायमान होनेके है आपसमें समान है निद्रा शयन स्वाप स्वप्न संवेश यह पाच नाम निद्राके हैं ॥ ३६ ॥

तन्द्री प्रमीला भ्रकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः स्त्रियाम् ॥ अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्षिण

संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥ स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः॥ कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

॥ इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

तंद्री प्रमीला यह दो नाम निद्राके आदि अन्तमें होनेवाले आलसके हैं इसको खुमारीभी कहते हैं. भ्रकुटि भ्रुकुटि भ्रूकुटि यह तीन नाम भौं टेढीकरनेके हैं यह तीनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं असौम्य नेत्र अर्थात् क्रोधयुक्त नेत्रमें अदृष्टि शब्द वर्त्तै है इसको क्रूर दृष्टिभी कहते हैं संसिद्धि प्रकृति॥३७॥ स्वरूप स्वभाव निसर्ग यह पांच नाम स्वभावके हैं वेपथु कंप यह दो नाम कांपनेके हैं क्षण उद्धर्ष मह उद्धव उत्सव यह पांच नाम उत्सवके हैं ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ।

अधोभुवनपातालं बलिसद्म रसातलम् ॥ नागलोकोऽथ कुहरं सुषिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥ छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा सुषिः ॥ गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे सुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥

अधोभुवन पाताल बलिसद्मन् रसातल नागलोक यह पांच नाम पातालके हैं कुहर सुषिर विवर बिल ॥ १ ॥ छिद्र निर्व्यथन रोक रंध्र श्वभ्र वपा सुषि यह ग्यारह नाम छिद्रमात्रके हैं पृथिवीकेविषे जो छिद्र है उसमें गर्त्त अवट यह दो शब्द वर्त्तै हैं छिद्रसहित जो वस्तु है उसमें सुषिर शब्द वर्त्तै है सुषिर शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥२॥

अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ॥ ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥ विष्वक् संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः॥ शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ॥ ४ ॥ तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ॥ अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ॥५॥

अन्धकार ध्वान्त तमिस्र तिमिर तमस् यह पांच नाम अन्धकारके हैं बडेगाढे अन्धकारमें अन्धतमस शब्द वर्त्तै है और क्षीण अन्धकारमें अवतमस शब्द वर्त्तै है और विष्वक् तमः अर्थात् चारोंतरफसे वर्त्तमान अन्धकार सन्तमस संज्ञिक है. नाग काद्रवेय यह दो नाम नागोंके हैं तिन नागोंके स्वामी शेष अनन्त संज्ञिक हैं वासुकि सर्पराज यह दो नाम नागराजके हैं गोनस ॥ ३ ॥ ४ ॥ तिलित्स यह दो नाम विशेष साँपके हैं शयु वाहस यह दो अजगरसर्पमें वर्त्तै हैं अर्थात् अजगर शयु वाहस यह तीन नाम अजगरके साँपके हैं. अलगर्द जलव्याल यह दो नाम जलसर्पके हैं आपसमें समान हैं. राजिल डुंडुभ यह दो नाम निर्विष दो मुखवाले साँपके हैं ॥ ५ ॥

मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजं-

गोऽहिर्भुजंगमः ॥ ६ ॥ आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ॥ कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥ दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ॥ उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥

मालुधान मातुलाहि यह दो नाम खट्वाकार चित्रसर्पके है निर्मुक्त मुक्तकचुक यह दो नाम त्यागीभई कैंचुरीवाले सर्पके है सर्प पृदाकु भुजग भुजग अहि भुजगम ॥ ६ ॥ आशीविष विषधर चक्रिन् व्याल सरीसृप कुण्डलिन् गूढपाद् चक्षुःश्रवस् काकोदर फणिन् ॥ ७ ॥ दर्वीकर दीर्घपृष्ठ दंदशूक विलेशय उरग पन्नग भोगिन् जिह्मग पवनाशन यह पच्चीश नाम सर्पके है ॥ ८ ॥

त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि स्फटायां तु फणा द्वयोः ॥ समौ कञ्चुकनिर्मोकौ क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥ पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ॥ सौराष्ट्रिक. शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥१०॥ दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव॥विषवैद्यो जाङ्गुलिको व्यालग्राह्यहितुण्डिकः॥११॥

॥ इति पातालभोगिवर्ग. ॥ ८ ॥

जो सर्पके विष और अस्थ्यादिक है वह आहेय संज्ञिक है आहेय शब्द तीनों लिंगमें होता है. स्फटा फणा यह दो नाम सर्पके फणाके है यह दोनों शब्द स्त्री तथा पुलिंगमें होते है कंचुक निर्मोक यह दो नाम सर्पकी कैंचुरीके है आपसमें समान लिंग है क्ष्वेड गरल विष यह तीन नाम विषके है तथा विषशब्द पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंगमे होवे है ॥ ९ ॥ काकोल कालकूट हलाहल सौराष्ट्रिक शौक्लिकेय ब्रह्मपुत्र प्रदीपन॥१०॥ दारद वत्सनाभ यह नौ विषके भेद है तिसमें काकोल कालकूट हलाहल यह तीनों पुलिंग तथा नपुंसकलिंगमे होते है विषवैद्य जाङ्गुलिक यह दो नाम विषके दूरकरनेवाले वैद्यके है वायगी शब्दकरकेंभी विख्यात है व्यालग्राहिन् अहितुंडिक यह दो नाम सर्पके पकडनेवालेके है ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्ग ।

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ॥ तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥ संघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः सत्त्वास्तु नारकाः ॥ प्रेता वैतरणी सिन्धुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥२॥ विष्टिराजूः कारणा

१ लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा ॥ कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा ॥ १ ॥ अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहिदंष्ट्रिका ॥

यह श्लोक क्षेपक और पुस्तकोंमें विशेष है लेलिहान द्विरसन गोकर्ण कंचुकिन् कुम्भीनस फणधर हरि भोगधर यह आठ नाम सर्पके विशेष ॥ १ ॥ सर्पका शरीर भोग संज्ञिक है आशी अहिदंष्ट्रिका यह दो नाम सर्पकी डाढके है ।

तु यातना तीव्रवेदना ॥ पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥ स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

नारक नरक निरय दुर्गति यह चार नाम नरकके हैं तिसमें दुर्गतिशब्द स्त्रीलिंगमें होता है. तिस नरकके भेद तपन अवीचि महारौरव रौरव ॥ १ ॥ संघात कालसूत्र इत्यादिक हैं नरकके विषैं होनेवाले प्राणी प्रेत संज्ञिक हैं नरककी नदी वैतरिणी संज्ञिक है नरककी अशोभा निर्ऋति संज्ञिक है ॥ २ ॥ विष्टि आजू यह दो नाम नरकमें हठसें डारनेके हैं. कारणा यातना तीव्रवेदना यह तीन नाम नरककी पीडाके हैं पीडा बाधा व्यथा दुःख आमनस्य प्रसूतिज ॥ ३ ॥ कष्ट कृच्छ्र आभील यह नौ नाम दुःखके हैं तिसमें पीडा आदिक चार मनपीडाके नाम हैं. आमनस्य प्रसूतिज यह वैमनस्यके नाम हैं और कष्ट आदिक तीन शरीरपीडाके हैं इनके मध्यमें जो दुःखादिक भेद्यगामि अर्थात् विशेष्यगामि हैं यह तीनों लिंगमें होते हैं ॥

इति नरकवर्गः ।

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ॥ उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥ रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ॥ तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

समुद्र अब्धि अकूपार पारावार सरित्पति उदन्वत् उदधि सिन्धु सरस्वत् सागर अर्णव ॥ १ ॥ रत्नाकर जलनिधि यादःपति अपांपति यह पन्दरह नाम समुद्रके हैं तिस समुद्रके भेद क्षीरोद लवणोद तथा औरभी हैं ॥ २ ॥

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ॥ पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥ कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ॥ अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशम्बरम् ॥ ४ ॥ मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ॥ भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु ॥ ५ ॥

अप् वार वारि सलिल कमल जल पयस् कीलाल अमृत जीवन भुवन वन ॥ ३ ॥ कबन्ध उदक पाथस् पुष्कर सर्वतोमुख अम्भस् अर्णस् तोय पानीय नीर क्षीर अम्बु शंबर ॥ ४ ॥ मेघपुष्प घनरस यह सत्ताईश नाम जलके हैं तिसमें अप्शब्द स्त्रीलिंग तथा बहुवचनमें होता है और वार शब्द पूर्वोत्तरके साहचर्यसें स्त्री तथा नपुंसकलिंगमें होता है आप्य अम्मय यह दो जलविकारके नाम हैं तीनों लिंगमें होते हैं भंग तरंग ऊर्मि वीचि यह चार नाम जलकी लहरिके हैं तिसमें वीचि शब्द स्त्रीलिंगमें होता है और ऊर्मि विकल्पकर स्त्रीलिंगमें होता है ॥ ५ ॥

महत्सूल्लोलकल्लोलौ स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः ॥ पृषन्ति विन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥ चक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ॥ कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

बडी लहरिमें उल्लोल कल्लोल शब्द वर्त्ते है जो जलका मण्डलाकार होकर भ्रमण है वह आवर्त्त संज्ञिक है यह भँवराका नाम है पृषत् बिन्दु पृषत विप्रुष् यह चार नाम जलके बिन्दुओंके है तिसमें पृषत् शब्द नपुंसकलिंग है और बिन्दु पृषत पुल्लिंग है और विप्रुष् स्त्रीलिंगमें होता है ॥ ६ ॥ चक्र पुटभेद भ्रम जलनिर्गम यह चार नाम चक्राकारकरके जलोंका नीचे जानेके है परन्तु तिसमें चक्र आदिक दो नाम चक्राकारकरके जलोंके नीचे जानेके है और भ्रम आदिक दो नाम नद्यादिकमें नीचेके जलोंको ऊपर निकलनेके है कूल रोधस् तीर प्रतीर तट यह पाच नाम तीर अर्थात् किनारेके है तिसमें तट शब्द तीनों लिंगमें होताहै॥७॥

पारावारे परार्वाची तीरे पात्रं तदन्तरम् ॥द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥ तोयोत्थितं तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम् ॥ निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्दमौ ॥ ९ ॥

पर (परलीतरफवाची) अर्वाक् (उरलीतरफवाची) किनारेंमे क्रमसे पार आवार शब्द वर्त्तै है अर्थात् पार परलेकिनारेको कहते है आवार उरले किनारेको कहते है तिन पार तथा उरलीपारकी बीच पात्र संज्ञिक है जलके बीचमें जो किनारा है वह द्वीप अन्तरीप संज्ञिक है द्वीप अन्तरीप शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होते है ॥ ८ ॥ जो जलसे उठा भया स्थल है वह पुलिन संज्ञिक है सैकत सिकतामय यह दो नाम बहुतसी वालूसे युक्त स्थानके है निषद्वर जंबाल पंक शाद कर्दम यह पाच नाम कीचके है तिसमें पंकशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ९ ॥

जलोच्छ्रासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ॥ नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥ उडुपं तु प्लवः कोलः स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ॥ आतरस्तरपण्यं स्याद्द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

जलोच्छ्रास परीवाह यह दो नाम बहतेभये जलके निकसनेके मार्गोके हैं इनको वाहाभी कहते है कूपका विदारका यह दो नाम सूखेभये नद्यादिकमें जलकेवास्ते खोदेभये खड्डोंके हैं नावकरके तरनेयोग्य जलादिकमें नाव्य शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगवाची है नौ तरणि तरि यह तीन नाम नावके है यह तीनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते है ॥ १० ॥ उडुप प्लव कोल यह तीन नाम छोटी नावके हैं जो स्वत ही जलका निकलना है वह स्रोतस् संज्ञिक है इसको

सोतभी कहते हैं आतर तरपण्य यह दो नाम नद्यादिकके तरनेमें देनेयोग्य मूल्यके हैं इसकों उतराईभी कहते हैं जो काष्ठकी बनी भई जलके वहानेवाली है वह द्रोणी संज्ञिक है इसको डोंगीभी कहते हैं ॥११॥

सांयात्रिकः पोतवणिक्कर्णधारस्तु नाविकः ॥ नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥ नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः॥ अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

सांयात्रिक पोतवणिज् यह दो नाम नावमें वणिजी करनेवालेके हैं. कर्णधार नाविक यह दो नाम पतवार पकडकर उतारनेवाले मल्लाहाओंके हैं नियामक पोतवाह यह दो नाम नावके बीचमें खडे भये काष्ठके अगारी स्थित होकरके दुष्ट जलजन्तुओंके रोकने तथा मारनेवाले मल्हाओंके हैं कूपक गुणवृक्षक यह दो नाम बीचके खंवके हैं जिसमें नावके रोकने तथा चलानेकी रस्सी बँधी रहती है ॥ १२ ॥ नौकादण्ड क्षेपणी यह दो नाम नावके वहानेवाले दण्डके हैं इसकों वल्हीभी कहते हैं. अरित्र केनिपातक यह दो नाम पतवारके हैं. अभ्रि काष्ठकुद्दाल यह दो नाम नावआदिकके मलके दूर करनेके लियें जो काष्ठकुद्दाल है उसके हैं तिसमें अभ्रिशब्द स्त्रीलिंग है सेकपात्र सेचन यह दो नाम चमडा आदिकके नैभये जलके निकालनेवाले पात्रके हैं इसकों डोलचीभी कहते हैं ॥ १३ ॥

क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ॥ त्रिष्वागाधात्प्रसन्नोऽच्छः कलुषोऽनच्छ आविलः ॥१४॥ निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ॥ अगाधमतलस्पर्शं कैवर्ते दाशधीवरौ १५॥

नावके आधेभागमें अर्द्धनाव शब्द वर्त्ते है यह अर्द्धनाव शब्द नपुंसकलिंगमें होता है अतीतनौक अर्थात् नावकों उल्लंघन करके वर्त्तमान भये मनुष्यादिकमें अतिनु शब्द वर्त्ते है यह तीनों लिंगमें होता है इससें परे अगाधपर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें होवे हैं प्रसन्न अच्छ यह दो निर्मलके नाम हैं कलुष अनच्छ आविल यह तीन नाम मलयुक्तके हैं ॥ १४ ॥ निम्न गभीर गंभीर यह तीन नाम गहरेके हैं तिस गहरेसें विपर्ययमें उत्तान शब्द वर्त्ते है इसकों उथला कहते हैं. अगाध अतलस्पर्श यह दो नाम अतिगहरेके हैं कैवर्त्त दास धीवर यह तीन नाम धीवरके हैं जिसकों कहार कहते हैं१५

आनायः पुंसि जालं स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम् ॥ मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥ पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः॥विसारः शकुली चाथ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥

आनाय जाल यह दो नाम जालके है तिसमें आनाय शब्द पुल्लिंगमें होता है शणसूत्र पवित्र यह दो नाम शणसूत्र जालके है इसको सुतरीभी कहते है. मत्स्याधानी कुवेणी यह दो नाम मछलियोंके ब धन करनेकी कण्डियोंके है बडिश मत्स्यवेधन यह दो नाम मछलीके वेधनेवाले काटेके है ॥ १६ ॥ पृथुरोमन् झष मत्स्य मीन वैसारिण अण्डज विसार शकुलिन् यह आठ नाम मछलियोंके है गडक शकुलार्भक यह दो नाम गलफटी मछलीके है ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः पाठीन उलूपी शिशुकः समौ ॥ नलमीनश्चिलिचिमः प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥ क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो झषाः॥ रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥ तिमिंगिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः॥तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्कवो मकरादयः॥२०॥

सहस्रदंष्ट्र पाठीन यह दो नाम बहुतसी डाढोंवाली मछलीके है उलूपिन् शिशुक यह दो नाम शिशुमारके आकार मछली विशेषके है आपसमें समान है. नलमीन चिलिचिम यह दो नाम जलके तृण चरनेवाली मछलीविशेषके है प्रोष्ठी शफरी यह दो नाम उजली मछलीविशेषके है इसको सहरीभी कहते है प्रोष्ठी तथा शफरी शब्द दोनों स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंगमें होते है ॥ १८ ॥ क्षुद्राण्ड मछलियोंका समूह पोताधान संज्ञक है यह छोटी छोटी बहुतसी मछलियोंका नाम है झष यह एक नाम मत्स्य विशेषोंका है रोहित यह एक नाम रोही मछलीका है मद्गुर यह एक नाम माँगरा मछलीका है राजीव यह एक नाम रायामछलीका है शकुल यह एक नाम सौर मछलीका है तिमि ॥ १९ ॥ तिमिंगल आदिशब्दसे औरभी मन्थावर्त्तादिकभेद है यादस् जलजन्तु यह दो नाम जलचरमात्र जीवके है तिन जलचारियोंके भेद शिशुमार उद्र शङ्कु मकर आदिक है ॥ २० ॥

स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मे कमठकच्छपौ ॥ ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता॥२१॥गण्डूपदः किंचुलको निहाका गोधिका समे॥ रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः ॥ २२ ॥

कुलीर कर्कट यह दो नाम कर्कटके है जिसको केंकडाभी कहते है. कूर्म कमठ कच्छप यह तीन नाम कच्छपके है ग्राह अवहार यह दो नाम ग्राहके है इसको घडियालभी कहते है नक्र कुंभीर यह दो नाम ग्राहविशेष अर्थात् नाकेके है महीलता॥२१॥ गण्डूपद किंचुलक यह तीन नाम जलचरविशेषके हैं जिसको केंचुआभी कहते है निहाका गोधिका यह दो नाम जलगोहके है रक्तपा जलौका जलौकस् यह तीन जलौकाके है इसको जोकभी कहते है. तिसमें

जलौकस् शब्द स्त्रीलिंग तथा बहुवचनमें होता है ॥ २२ ॥

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ॥ क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनखाः शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥ भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः ॥ शिली गण्डूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी डुलिः ॥ २४ ॥

मुक्तास्फोट शुक्ति यह दो नाम शुक्तिके हैं जिसकों शिप्पीभी कहते हैं. तिसमें शुक्तिशब्द स्त्रीलिंगमें होता है. शंख कम्बु यह दो नाम शंखके हैं शंख कम्बुशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होते हैं. क्षुद्रशंख शंखनख यह दो नाम छोटे छोटे शंखोंके हैं शंबूका जलशुक्ति यह दो नाम छोटीछोटी शुक्ति अर्थात् शिप्पियोंके है ॥ २३ ॥ भेक मण्डूक वर्षाभू शालूर प्लव दर्दुर यह छै नाम मेंडूकके हैं शिली गण्डूपदी यह दो नाम छोटी गण्डूपदजातिके हैं भेकी वर्षाभ्वी यह दो नाम छोटीछोटी मेंडुकजातिके हैं कमठी डुली यह दो नाम कच्छपीके हैं ॥ २४ ॥

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका ॥ जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो ह्रदः ॥ २५ ॥ आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये॥ पुंस्येवाऽन्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥

मद्गुरकी प्रिया स्त्री शृंगी संज्ञिक है दुर्नामन् दीर्घकोशिका यह दो नाम जोंककीसमान जलचर विशेषके हैं. जलाशय जलाधार यह दो नाम तलाव आदिक जलस्थानके हैं और गहरे जलवाला जलस्थान ह्रद संज्ञिक है ॥ २५ ॥ आहाव निपान यह दो नाम कूपके समीप गऊआदिकोंके पीनेकेवास्ते शिला ईंट आदिकोंके रचेभये जलस्थानके हैं. अन्धु प्रहि कूप उदपान यह चार नाम कूपके हैं तिसमें अन्धु प्रहि कूप शब्द पुंलिंगमें होते हैं और उदपान विकल्पकर पुंलिंगमें होता है ॥ २६ ॥

नेमिस्त्रिकास्य वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ॥ पुष्करिण्यां तु खातं स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥ पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ॥ वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥

इस कूपकी नेमि अर्थात् रस्सी आदिकोंके रखनेके लिये जो लकडीका यंत्र है वह त्रिका संज्ञिक है. इसकों चौखटाभी कहते हैं और जो इस कूपका मुखबन्धन है अर्थात् कूपका पत्थर शिला आदिकोंकर मुखबन्धन है वह वीनाह संज्ञिक है. पुष्करिणी खात यह दो नाम पुष्करिणी (तलाविनी)के हैं. अखात देवखातक यह दो नाम विना खोदेभये देवसरोवरके हैं ॥ २७ ॥ पद्माकर तडाग कासार सरसी सरस् यह

पाच नाम तलावके है तिसमें पद्माकर तडाग यह दो नाम जिसमें गहरा जल और कमल फूले होते है उस तालावके है और कासार आदिक तीन खोदे भये तलावके है तडागशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमे होता है वेशन्त पल्वल अल्पसरस् यह तीन नाम छोटे तालावके है वापी दीर्घिका यह दो नाम बावडीके है ॥ २८ ॥

खेयं तु परिखाधारस्त्वम्भसा यत्र धारणम् ॥ स्यादालवालमावालमावापोऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥ तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी ॥ स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा[1] ॥ ३० ॥

खेय परिखा यह दो नाम किलाके बाहिर चारोतरफ खुदेभये खन्दकके है जिसमें क्षेत्र आदिकोंके सींचनेंकेलिये जलोंकी स्थिति है वह आधार सज्ञिक हे आलवाल आवाल आवाप यह तीन नाम वृक्षादिकोंके जडमे चारोंतरफ जल रखनेकेलिये जो खन्दक हे उसके है नदी सरित ॥२९॥ तरंगिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी स्रोतस्विनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगा आपगा यह वारह नाम नदीके है॥ ३० ॥

गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा ॥ भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥ कालिन्दी

[1] कूलङ्कषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती ॥ ये चार नदीके औरभी नाम है

सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ॥ रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका३२

गगा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोतस् भीष्मसू यह आठ नाम गगाजीके है ॥ ३१ ॥ कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसृ यह चार नाम यमुनाजीके है रेवा नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका यह चार नाम नर्मदा नदीके है ३२

करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी ॥ शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥३३॥शोणो हिरण्यवाहः स्यात्कुल्याऽल्पा कृत्रिमा सरित् ॥ शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः॥ द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिपु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥

करतोया सदानीरा यह दो नाम गौरीके विवाहमें कन्यादानके जलसें उत्पन्न भई नदीके हैं बाहुदा सैतवाहिनी यह दो नाम बाहुदा नदीके है शतद्रु शुतुद्रि यह दो नाम शतद्रु नदीके है विपाशा विपाश् यह दो नाम विपाशा नदीके है यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगमें होवे है ॥ ३३ ॥ शोण हिरण्यवाह यह दो नाम नदविशेषके हे इसकों शोन नदीभी कहते है जो छोटी कीभई नदी है वह कुल्या सज्ञिक हे इसकों नहरभी कहते है शरावती वेत्रवती चद्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी यह नदीविशेष है औरभी

कौशिकी गण्डकी आदिक हैं. संभेद सिन्धुसंगम यह दो नाम नदियोंके मिलनेकी जगहके हैं. जलके निकलनेके मार्गमें प्रणाली शब्द होता है इसको नालीभी कहते हैं. यह शब्द स्त्री तथा पुंलिंगमें होता है पुंलिंगमें प्रणाल रूप होता है. इससें उत्तर अर्थात् अगारीके दोनों दाविक तथा सारवशब्द तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ३५ ॥

देविकायां सरय्वां च भवे दाविकसारवौ ॥ सौगन्धिकं तु कह्लारं हल्लकं रक्तसंध्यकम् ॥ ३६ ॥ स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च॥इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्सिते कुमुदकैरवे॥३७॥

देवताओंकी नदीकेविषें उत्पन्न भये पदार्थमें दाविक शब्द वर्त्तै है और सरयूनदीकेविषें उत्पन्न भये पदार्थमें सारव शब्द वर्त्तै है. सौगन्धिक कह्लार यह दो नाम सन्ध्यासमय खिलनेवाले शुक्लकमलके हैं हल्लक रक्तसंध्यक यह दो नाम संध्यासमय खिलनेवाले लालकमलके हैं ॥३६॥ उत्पल कुवलय यह दो नाम कुमुदके है इसको फफुलाभी कहते हैं और इस नील कुमुदमें नीलाम्बुजन्मन् इन्दीवर यह दो शब्द वर्त्तै हैं और इस श्वेतकुमुदमें कुमुद कैरव यह दो शब्द वर्त्तै हैं ॥ ३७ ॥

शालूकमेषां कन्दः स्याद्वारिपर्णी तु कुम्भिका ॥ जलनीली तु शेवालं शैवलोऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥ कुमुदिन्यां नलिन्यां तु विसिनीपद्मिनीमुखाः ॥ वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ॥ पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥४०॥ विसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ॥ पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पलं कोकनदं नालो नालमथास्त्रियाम् ॥ मृणालं विसमब्जादिकदम्बे खण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥ करहाटः शिफाकन्दः किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ॥ संवर्तिका नवदलं बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

॥ इति वारिवर्गः ॥

इन कमलोंका कन्द शालूक संज्ञिक है इसको मकरन्दभी कहते हैं. वारिपर्णी कुम्भिका यह दो नाम जलकुम्भीके हैं. जलनीली शेवाल शैवल यह तीन नाम शिवारके हैं कुमुद्वती ॥ ३८ ॥ कुमुदिनी यह दो नाम कुमुदिनीके हैं. नलिनी विसिनी पद्मिनी आदिक नाम कमलिनीके हैं. पद्म नलिन अरविन्द महोत्पल ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्र कमल शतपत्र कुशेशय पंकेरुह तामरस सारस सरसीरुह ॥ ४० ॥ बिसप्रसून राजीव पुष्कर अम्भोरुह यह सोलह नाम कमलके हैं. यह कमलवाची सोलह शब्द विकल्प पुंलिंगमें होते हैं. पुण्डरीक सिताम्भोज यह

दो नाम श्वेतकमलके है रक्तसरोरुह॥४१॥ रक्तोत्पल कोकनद यह तीन नाम लालकमलके है. नाल नाल यह दो नाम कमलादिकोंकी दण्डीके है नाल शब्द पुंलिग तथा नपुंसकलिंग होनेसें दोवार कहागया है मृणाल विस यह दो नाम मृणालके है इसको भसाडाभी कहते हैं यह दोनो शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होते हैं कमलादिकोंके समूहमें खण्ड शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ४२ ॥ करहाट शिफाकन्द यह दो नाम कमलकी जडके है यह दोनों पुनपुंसकलिंगमें होते है संवर्तिका नवदल यह दो नाम कमलादिकोंके नवीन पत्तोंके है बीजकोश वराटक यह दो नाम कमलगट्टाके है॥४३॥

इतिवारिवर्ग ।

उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादि सनाट्यकम् ॥ पातालभोगि नरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ १ ॥ इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ॥ स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने प्रथमकाण्डः समाप्तः ॥

मुझ अमरसिंहनें स्व (स्वर्गवर्ग) व्योमवर्ग दिग्वर्ग कालवर्ग धीवर्ग शब्दादिवर्ग और नाट्यवर्गसहित पातालभोगिवर्ग और नरकवर्ग और वारिवर्ग कहा और इन स्वर्गादिकवर्गोंके सगत अर्थात् सबन्धसें प्राप्तभये देव असुर मेघादिक सोभी कहे ॥ १ ॥ इसप्रकार अमरसिंहजीकी कृति नाम और लिंगोंके शास्त्रमें प्रथम स्वरादिक शब्दोंका काण्ड सांगोपाग कहा है ॥ २ ॥

इतिश्रीमदमरसिंहकृतौ श्रीपाठकमगलसेनात्मजकाशिरामविरचितभाषाटीकायां प्रथम स्वरादिकाण्डः समाप्तः ॥

द्वितीयं काण्डम् ।

वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः ॥ नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः ॥ १ ॥

इस कहेजानेवाले काण्डमें अग मृच्छावानगरादिक और उपाग मृत्स्नावेशादिकोंसहित पृथिवी, पुर, शैल, वनौषधि, सिंह तथा नर, ब्रह्म, क्षत्र वैश्यशब्दोंकर वर्ग कहे है ॥ १ ॥

भूर्भूमिरचलाऽनन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा ॥ धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥ सर्वंसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा ॥ गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

---

१ विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी

भू भूमि अचला अनन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा धरा धरित्री धरणि क्षोणि ज्या काश्यपि क्षिति ॥ २ ॥ सर्वंसहा वसुमती वसुधा उर्वी वसुन्धरा गोत्रा कु पृथिवी पृथ्वी क्ष्मा अवनि मेदिनी मही यह सत्ताईश नाम पृथिवीके हैं ॥ ३ ॥

मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ॥ उर्वरा सर्वसस्याढ्या स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥ ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थलं स्थली ॥ समानौ मरुधन्वानौ द्वे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥

मृद् मृत्तिका यह दो नाम मिट्टीके हैं और जो कि उत्तम मिट्टी है वह मृत्सा मृत्स्ना संज्ञिक है. और जो कि मिट्टी सर्व अन्नादिकोंसें युक्त होवे है वह उर्वरा संज्ञिक है. ऊष क्षारमृत्तिका यह दो नाम लौनी मिट्टीके हैं ॥ ४ ॥ ऊषवत् ऊषर यह दो नाम लौनीमिट्टीसें युक्त हुए पृथिवी देशादिकोंके हैं यह दोनों अन्यलिंग अर्थात् विशेष्यलिंग होवे हैं. भाव यह है कि जो लिंग-विशेष्यमें होता है वहही लिंग इन दोनों शब्दोंमें होता है. स्थल स्थली यह दो नाम विनाबनाये हुए स्थानके हैं मरु धन्वन यह दो नाम मरुदेश अर्थात् निर्जलदेशके हैं और आपसमें दोनों समानलिंग अर्थात् पुंलिंग हैं. खिल अप्रहत यह दो नाम विना जोतेहुए क्षेत्रादिकके हैं. इसको जंगलभी कहते हैं यह दोनों आपसमें समान हैं और तीनों लिंगमें होवें हैं ॥ ५ ॥

त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ॥ लोकोऽयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥ देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ॥ प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥

जगती लोक विष्टप भुवन जगत् यह पांच नाम जगत्के हैं. और यह जो जंबुद्वीपवर्त्ती लोक हैं वह भारतसंज्ञिक वर्ष है और शरावतीकी अवधिसें जो कि पूर्वदक्षिण देश वह प्राच्य संज्ञिक है—और शरावतीकी अवधिसें पश्चिमसहित उत्तर देश है वह उदीच्य संज्ञिक है. प्रत्यन्त म्लेच्छदेश यह दो नाम म्लेच्छदेशके हैं. मध्यदेश मध्यम यह दो नाम मध्यदेशके हैं ॥ ६ ॥

आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ॥ नीवृज्जनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥ त्रिष्वागोष्ठान्नडप्राये नड्वान्नड्वल इत्यपि ॥ कुमुद्वान्कुमुदप्राये वेतस्वान्बहुवेतसे ॥ ९ ॥

जो कि विंध्यपर्वत और हिमाचलपर्वतका बीच है वह आर्यावर्त्त पुण्यभूमि संज्ञिक है.

क्ष्मा ॥ भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा ॥ १ ॥

विपुला गह्वरी धात्री गो इला कुंभिनी क्ष्मा भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा यह ग्यारह नाम पृथिवीके और पुस्तकोंमें विशेष हैं।

नीवृत् जनपद यह दो नाम मनुष्योंकर वसे हुए देशके है देश विषय उपवर्त्तन यह देशमात्रके नाम है ॥ ८ ॥ गोष्ठशब्दपर्यंत जो कि शब्द कहेजावेंगे वह तीनो लिंगमें होवेंगे नड्वत् नड्वल यह दो नाम बहुतसे नरसरवाले देशमे वर्त्ते है और कुमुद्वत् यह एक नाम बहुतसे फफुलावाले देशमें वर्त्ते है वेतस्वत् यह एक नाम बहुतसे वेतोंवाले देशमें वर्त्ते है ॥ ९ ॥

शाद्वलः शादहरिते सजम्बाले तु पङ्किलः ॥ जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥१०॥ स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति ॥ देश एवादिमावेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥

शाद्वल यह एक नाम घाससें हरित हुए देशमें वर्त्ते है अर्थात् हरीघासवाले देशका नाम है और पंकिल यह एक नाम कीचसेंयुक्त हुए देशमें वर्ते है जलप्राय अनूप यह दो नाम बहुतसे जलवाले देशके है और तिसीप्रकारका कच्छ यह एक नाम नद्यादिकोंके समीपवर्त्ती देशका है यह शब्द पुलिंगहीमें होता है न कि तीनो लिंगोंमें ॥ १० ॥ शर्करा शर्करिल यह दोनाम वालूयुक्तदेशके हैं तिसमे शर्कराशब्द स्त्रीलिंग है और शार्कर शर्करावत् यह दो नाम वालुयुक्त देशादिकके है आदिमेंवर्त्तमान हुए शर्करा और शर्करिलशब्द देशमेंही वर्त्ते है और इसीप्रकार सिकतावत् शब्दके विषें सिद्धि करने योग्य है जैसे कि सिकता सिकतिल यह दो नाम सिकतायुक्त देशके है और सैकत सिकतावत् यह दो नाम वालुकायुक्त देशादिकके है तिसमें सिकताशब्द नित्यही बहुवचनान्त ओ स्त्रीलिंग है और यहा कोई आचार्य शर्करा और सिकता शब्द दोनोंको बहुवचनान्त कहते है ॥११॥

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नव्रीहिपालितः ॥ स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥ सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् ॥ गोष्ठं गोस्थानकं तत्तु गोष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥

नदीके जल और वर्षाके जलसे सिद्ध हुए धान्योंकर पालाहुआ देश यथाक्रम नदीमातृक देवमातृक संज्ञिक है भाव यह है कि जो देशकी नदीके जलसे सिद्ध हुए धान्योंकर पाला जावे वह नदीमातृक संज्ञिक है और जो कि देश वर्षाके जलसें सिद्धहुए धान्योंकर पाला जावे वह देवमातृक संज्ञिक है ॥ १२ ॥ राजन्वत् यह एक नाम सुन्दर धर्मशील राजावाले देशमें वर्त्ते है और तिससें अन्यत्र अर्थात् केवल राजावाले देशमें राजवत् यह एक नाम वर्त्ते है गोष्ठ गोस्थानक यह दो नाम गौओंके स्थानके हैं और वहही गौओंका स्थान जो पहिले होचुका हो तो गोष्ठीन संज्ञिक है अर्थात् गोष्ठीन यह एक नाम गौओंके पहिले स्थानके है ॥ १३ ॥

पर्यन्तभूः परिसरः सेतुरालौ स्त्रियां पुमान् ॥ वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीक-

पुंनपुंसकम् ॥ १४ ॥ अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ॥ सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

पर्यन्तभू परिसर यह दो नाम नदीपर्वतादिकोंकी समीप पृथिवीके हैं. स्त्रीलिंगवाची आलिशब्दमें पुंलिंगवाची सेतुशब्द वर्त्ते है अर्थात् सेतु आलि यह दो नाम पुलके हैं तिसमें सेतु पुंलिंग और आलि स्त्रीलिंग है वामलूर नाकु वल्मीक यह तीननाम वल्मीकके हैं इसको वाँवीभी कतेहैं. तिसमें वल्मीक शब्द पुंलिंग तथा नपुंसकलिंगवाची है ॥ १४ ॥ अयन वर्त्मन् मार्ग अध्वन् पथिन् पदवी सृति सरणि पद्धति पद्या वर्त्तनी एकपदी यह वारह नाम मार्गके हैं ॥ १५ ॥

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ॥ व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥ अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ॥ प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥

अतिपथिन् सुपथिन् सत्पथ यह तीन नाम पूजितमार्गमें वर्त्तें हैं अर्थात् यह तीन नाम सुन्दरमार्गके हैं. व्यध्व दुरध्व विपथ कदध्वन् कापथ यह पांच नाम खोटे मार्गके हैं और आपसमें समान लिंग हैं ॥ १६ ॥ अपथिन् अपथ यह दो नाम अमार्गके हैं. शृंगाटक चतुष्पथ यह दो नाम चह्वाटेके हैं आपसमें समान लिंग हैं. और जो कि दूरतक स्थित और शून्य अर्थात् छायाजलादिकोंसे वर्जित मार्ग है वह प्रांतर संज्ञिक है और जो दुर्गम अर्थात् चोर कंटक आदिक उपद्रवोंसे युक्त मार्ग है वह कान्तार संज्ञिक है ॥ १७ ॥

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं नल्वः किष्कुचतुःशतम् ॥ घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

दो कोश गव्यूति संज्ञिक है अर्थात् गव्यूति यह एक नाम दोकोशका है और स्त्रीलिंगवाची है. और चारसौ हाथ स्थानको नल्व कहते हैं अर्थात् नल्व यह एक नाम चारसौ हाथ लम्बे स्थानका है. घंटापथ संसरण यह दो नाम राजमार्गके हैं और वहही राजमार्ग नगरका होवै तो उपनिष्कर संज्ञिक है अर्थात् उपनिष्कर यह एक नाम नगरके राजमार्गके है ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः ।

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ॥ स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु य-

१ द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी ॥ दिवस्पृथिव्यौ गञ्जा तु रुमा स्याल्लवणाकरः ॥ १ ॥

द्यावापृथिवी रोदसी द्यावाभूमि रोदसी दिवस्पृथिवी यह पांच नाम आकाशपृथिवीके हैं और द्विवचनान्त हैं गंजा रुमा लवणाकर यह तीन नाम क्षारसमुद्रके हैं तिसमे गंजा रुमा स्त्रीलिंग हैं ।

न्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥ तच्छाखा-नगरं वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ॥ आपणस्तु निषद्यायां विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥

पुर् पुरी नगरी पत्तन पुटभेदन स्थानीय निगम यह सात नाम नगरके है तिसमें पुर् शब्द स्त्रीलिंग हे और पुरी नगरी शब्द विकल्प करके स्त्रीलिंग है अर्थात् पुरी नगरी शब्द स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग है और शेष सब नपुंसकलिंग है और जो मूल नगर राजधानीसे अन्य नगर है वह शाखानगर संज्ञिक है और जो वेश्याजनोंका निवेशस्थान है वह वेश संज्ञिक है आपणशब्द निषद्या अर्थात् हाटमें वर्ते हे भाव यह है कि आपण निषद्या यह दो नाम बाजारके है विपणि पण्यवीथिका यह दो नाम दुकानके है ॥ १ ॥ २ ॥

रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ॥ प्राकारो वरणः सालः प्राचीनं प्रान्ततो वृतिः ॥ ३ ॥ भित्तिः स्त्री कुड्यमेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ॥ गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥४॥ निशान्तपस्त्य-सदनं भवनागारमन्दिरम्॥गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः ॥५॥

रथ्या प्रतोली विशिखा यह तीन नाम ग्रामके बीचके मार्गके है इसको गलीभी कहते है चय वप्र यह दो नाम चाईम उठाई हुई मिट्टीके ढेरके है इसको मेंढाभी कहते हैं प्राकार वरण साल यह तीन नाम लकडी काटे आदिकोंसे बनायेहुए घेरेके हैं इसकों वारीभी कहते है और नगरादिकोंके आसपास बाग काँटे आदिकोंका घेरा है वह प्राचीन संज्ञिक है ॥ ३ ॥ भित्ति कुड्य यह दो नाम भीतिके है तिसमें भित्तिशब्द स्त्रीलिंग है यदि जिस भीतिकेविषे बीचमें दृढताकेवास्ते हाडआदिक मजबूत द्रव्य पडा हो तो वह एडूक संज्ञिक है गृह गेह उदवसित वेश्मन् सद्मन् निकेतन ॥ ४ ॥ निशान्त पस्त्य सदन भवन आगार मन्दिर गृह निकाय्य निलय आलय यह सोलह नाम घरके है तिसमें तेरहवाँ गृह शब्द बहुवचन तथा पुलिंगमें होता है ॥ ५ ॥

वासः कुटी द्वयोः शाला सभा संजवनं त्विदम् ॥ चतुःशालं मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ॥६॥ चैत्यमायतनं तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा॥ आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

वास कुटी शाला सभा यह चार नाम सभा घरके है तिसमें कुटीशब्द स्त्रीपुल्लिंगमें होते है संजवन चतुःशाल यह दो नाम आपसमें सन्मुख हुई चार शालाओंके नाम है इसको चौकभी कहते है पर्णशाला उटज यह दो नाम मुनियोंके घरके है तिसमें उटजशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें

होता है ॥ ६ ॥ चैत्य आयतन यह दो नाम यज्ञस्थानके हैं आपसमें तुल्य लिंग हैं वाजिशाला मंदुरा यह दो नाम घुडशालके हैं आवेशन शिल्पिशाला यह दो नाम सुनारआदिक शिल्पिजनोंके घरके हैं. प्रपा पानीयशालिका यह दो नाम जलस्थान अर्थात् प्याऊके हैं ॥ ७ ॥

मठश्छात्रादिनिलयो गञ्जा तु मदिरागृहम् ॥ गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम्[1] ॥ ८ ॥ वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः॥हर्म्यादि धनिनां वासः प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥

और शिष्य सन्न्यासी आदिकोंका घर मठ संज्ञिक है. गंजा मदिरागृह यह दो नाम मदिराघरके हैं जहाँकि शराव रहती है गर्भागार वासगृह यह दो नाम घरके मध्यभागके हैं इसकों माजघरभी कहते हैं अरिष्ट सूतिकागृह यह दो नाम सूतिकाके घरके हैं इसकों सौरिघरभी कहते हैं ॥८॥ वातायन गवाक्ष यह दो नाम झरोखेंके हैं. मण्डप जनाश्रय यह दो नाम मण्डपके हैं तिसमें मण्डपशब्द पुंनपुंसकलिंगवाची है धनवानोंका घर हर्म्य आदिक संज्ञिक है. आदिशब्दसें स्वस्तिक अट्टालिकादिक जाननें. और देवता तथा राजाओंका घर प्रासाद संज्ञिक है ॥ ९ ॥

सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ॥ स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥१०॥ विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ॥ स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥ शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ॥ प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके॥ १२॥

सौध राजसदन उपकार्य उपकारिका यह चार नाम राजमन्दिरके हैं इनको महलभी कहते हैं और राजाओंके घरोंके भेद स्वस्तिक तथा सर्वतोभद्र तथा नंद्यावर्त्त आदिक तथा विच्छन्दक हैं. राजाओंकी स्त्रियोंका घर अन्तःपुर अवरोधन शुद्धान्त अवरोध संज्ञिक है. अट्ट क्षौम यह दो नाम अटारीके हैं तिसमें क्षौमशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है. प्रघाण प्रघण अलिन्द यह तीन नाम जो कि बाहिर दरवाजेसें प्रकोष्टक होता है उसमें वर्त्ते हैं इसकों ओटाभी कहते हैं और कोई चौखट कहते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

गृहावग्रहणी देहल्यङ्गणं चत्वराजिरे॥ अधस्ताद्दारुणि शिला नासा दारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥ प्रच्छन्नमन्त-

---

[1] कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगृहम् ॥ १ ॥

पत्थर आदिकोंसें बँधी हुई पृथिवी कुट्टिम संज्ञिक है इसीको फरसबन्दीभी कहते हैं कुट्टिमशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होता है चन्द्रशाला शिरोगृह यह दो नाम घरके ऊपर बनायेहुए घरके है इसकों ऊपरमाळीभी कहते हैं ।

द्वारं स्यात्पक्षद्वारं तु पक्षकम ॥ वली कनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः॥१४॥

गृहावग्रहणी देहली यह दो नाम देहलीके है अंगण चत्वर अजिर यह तीन नाम आँगनके हैं शिला यह एक नाम दरवाजेके स्तम्भके नीचें स्थित हुए काष्ठका है नासा यह एक नाम दरवाजेके स्तम्भके ऊपर स्थित हुए काष्ठका है इसको मस्तकपट्टी सरदलभी कहते है ॥१३॥ प्रच्छन्न अन्तर्द्वार यह दो नाम खिडकीके है पक्षद्वार पक्षक यह दो नाम दरवाजेके पासके दरवाजेके हैं वलीक नीध्र यह दो नाम छप्परके अन्तमें वर्त्ते है इसको ओलाती तथा छज्जाभी कहते है पटल छदि यह दो नाम छप्परके है ॥ १४ ॥

गोपानसी तु वलभीछादने वक्रदारुणि ॥ कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥ स्त्री द्वाद्वारं प्रतीहारः स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ॥ तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥

गोपानसी वलभी यह दो नाम छप्परकेविषे जोकि तिरछी लकडी होवे है उसमें वर्त्ते हैं इनको कडी वासाभी कहते है विटक शब्द कपोतपालिकामें वर्त्ते है भाव यह है कि कपोतपालिका विटक यह दो नाम काष्ठआदिकोंके बनाये हुए पक्षियोंके घरके हैं. तिसमें विटकशब्द पुनपुसकलिंगमें होता है ॥ १५ ॥ द्वार् द्वार प्रतीहार यह तीन नाम दरवाजेके है तिसमें द्वार्शब्द स्त्रीलिंगमें होता है वितर्दि वेदिका यह दो नाम वेदीके है तोरण बहिर्द्वार यह दो नाम दरवाजेके बहिरभागके हैं तिसमें तोरणशब्द पुनपुसकलिंगवाची है इसको घरका फाटकभी कहते है पुरद्वार गोपुर यह दो नाम नगरके दरवाजेके है ॥ १६ ॥

कूटं पूर्द्वारि यद्धस्तिनखस्तस्मिन्नथ त्रिषु ॥ कपाटमररं तुल्ये तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥ आरोहणं स्यात्सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी ॥ संमार्जनी शोधनी स्यात्संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥

पुरके दरवाजेकेविषे सुखपूर्वक उतरनेकेवास्ते क्रमसे नीचा जोकि मिट्टीका ढेर किया जावे है उसमें हस्तिनख शब्द वर्त्ते है कपाट अरर यह दो नाम किवाडके है वह दोनोंशब्द आपसमें समान है और तीनों लिंगमें होवे है और जो किवाडोंके रोकनेवाला मूसल है वह अर्गल संज्ञिक है अर्गलशब्द पुल्लिग नहीं है किन्तु स्त्रीनपुसकलिंग है ॥ १७ ॥ आरोहण सोपान यह दो नाम सीढियोंके है निश्रेणि अधिरोहिणी काष्ठकी बनाईहुई सीढीके है इसको निसेनी कहते है समार्जनी शोधनी यह दो नाम बुहारीके है सकर अवकर यह दो नाम बुहारीसे फेंकेहुए तृणादिकमें वर्त्ते है इसको कूडा कर्कट कहते हैं ॥ १८ ॥

क्षिप्ते मुखं निःसरणं संनिवेशो निकर्षणः ॥ समौ संवसथग्रामौ वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥ ग्रामान्तमुपशल्यं स्यात्सीमसीमे स्त्रियामुभे ॥ घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्कणः शबरालयः ॥ २० ॥

॥ इति पुरवर्गः ॥ १ ॥

मुख निस्सरण यह दो नाम गृहादिकका मुखभूत द्वारप्रदेशका है. इसको निकासकी जगह कहते हैं. सन्निवेश निकर्षण यह दो नाम अच्छीतरह बनेहुए वासस्थानके हैं संवसथ यह दो नाम ग्रामके हैं. वेश्मभू वास्तु यह दो नाम घरोंकी रचनासेयुक्त हुई पृथिवीके हैं. तिसमें वास्तुशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है॥१९॥ ग्रामके समीपमें उपशल्य शब्द वर्त्ते है इसको पडोशभी कहते हैं सीमन् सीमा यह दो नाम सीमा ग्रामादिककी मर्यादाके हैं यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं घोष आभीरपल्ली यह दो नाम ग्वालोंके ग्रामके हैं पक्कण शबरालय यह दो नाम भीलोंके ग्रामके हैं ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः ।

महीध्रे शिखरि क्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः ॥ अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥ लोकालोकश्चक्रवालस्त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ ॥अस्तस्तु चरमः क्ष्माभृदुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥

महीध्र शिखरिन् क्ष्माभृत् अहार्य धर पर्वत अद्रि गोत्र गिरि ग्रावन् अचल शैल शिलोच्चय यह तेरह नाम पर्वत अर्थात् पहाडके हैं ॥ १ ॥ लोकालोक चक्रवाल यह दो नाम सात द्वीपवाली पृथिवीके परकोटरूप पर्वतके हैं. त्रिकूट त्रिककुद् यह दो नाम त्रिकुटपर्वतके हैं आपसमें समानलिंग हैं अस्त चरमक्ष्माभृत् यह दो नाम अस्ताचलके हैं. उदय पूर्वपर्वत यह दो नाम उदयाचल पर्वतके हैं ॥ २ ॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः ॥ गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥ पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ॥ कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥

हिमवत् निषध विंध्य माल्यवत् पारियात्रिक गंधमादन यह सात तथा अन्य हेमकूट आदिक विशेष पर्वत हैं ॥ ३ ॥ पाषाण प्रस्तर ग्रावन् उपल अश्मन् शिला दृशद् यह सात नाम पत्थरके हैं तिसमें शिला और दृषद् स्त्रीलिंग हैं और शेष पुंलिंग हैं. कूट शिखर शृंग यह तीन नाम पर्वतकी चोटीके हैं यह तीनों पुंनपुंसकलिंग वाची हैं प्रपात अतट भृगु यह तीन नाम पर्वतसे गिरनेके स्थानके हैं ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् ॥ उत्सः प्रस्रवणं वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥ दरी तु कंदरो वा स्त्री देवखातबिले गुहा॥

गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः[1] ॥ ६ ॥

और पर्वतका जो नितम्ब मध्यभाग है वह कटक सज्ञिक है कटकशब्द पुनपुसक लिगवाची है स्नु प्रस्थ सानु यह तीन नाम जो कि समभूभागपर्वतका एकदेश है उसमें वर्त्तै है तीनों पुनपुसकलिगमें होवै है उत्स प्रस्रवण यह दो नाम जहाँकि गिरकर पानी बहुतसा होजाता हे उस स्थानके है वारिप्रवाह निर्झर झर यह तीन नाम पर्वतके जलके झिरनेके है कोई एक आचार्य उत्स प्रस्रवण शब्दकोभी इन्हीशब्दोंमें सामिल करते है ॥ ५ ॥ दरी कन्दर यह दो नाम पर्वतके घरकीसमान बनायेहुए छिद्रके है इसको कन्दरा कहते है और कन्दरशब्द विकल्पकर स्त्रीलिगभी है और देवताओंकर खोदे हुए छिद्रमें गुहा गह्वर शब्द वर्त्तै है पर्वतके सकाशसे गिरेहुए जो स्थूल पत्थर है वह गण्डशैल सज्ञिक हैं ॥ ६ ॥

खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ॥ उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥ धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः ॥

1 दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः ॥

1 पर्वतके तिरछेप्रदेशसें बाहिर निकलेहुए पत्थर दन्तका सज्ञिक है यह अर्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष हे ।

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

॥ इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

खनि आकर यह दो नाम खानके हैं तिसमें खनिशब्द स्त्रीलिगमें होता है इसको रत्नादिकोंकी उत्पत्तिस्थान कहते है पाद प्रत्यन्तपर्वत यह दो नाम पर्वतके समीपमें स्थितहुए छोटे२ पर्वतोंके है पर्वतके नीचे जो भूमि स्थित है वह उपत्यका सज्ञिक है और पर्वतके ऊपर जो भूमि स्थित है वह अधित्यका सज्ञिक है ॥ ७ ॥ और पर्वतका जो मनःशिला,हरताल,सुवर्ण,ताँबा,चाँदी,गेरू, अंजन, कासी, सीसा, लोहा, हिंग, गन्धक, अभ्रक आदिक वस्तु है वह धातु सज्ञिक है और गेरू विशेषकर धातु सज्ञिक है निकुञ्ज कुञ्ज यह दो नाम लताआदिकसें ढकेहुए मध्यस्थानके है इसको कुञ्जभी कहते है निकुञ्ज कुञ्ज शब्द विकल्पकरके नपुसकलिंगमें होते है ॥ ८ ॥

इति शैलवर्ग ।

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ॥ महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥ आरामःस्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ॥ अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥२॥

अटवी अरण्य विपिन गहन कानन वन यह छे नाम वनके हे महारण्य अरण्यानी यह दो नाम बडेभारी वनके हे गृहाराम

निष्कुट यह दो नाम घरके समीप लगाये हुए बागोंके हैं ॥ १ ॥ और जो कि बनायाहुआ वन है वह आराम उपवनसंज्ञिक है. राजमंत्री और वेश्याओंके जो कि घरमें बाग है उसमें वृक्षवाटिका शब्द वर्त्तै है॥२॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ॥ स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥ वीथ्यालिरावलिः पङ्क्तिः श्रेणी लेखास्तु राजयः ॥ वन्या वनसमूहे स्यादङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

और जो कि राजाका साधारण वन है वह आक्रीड उद्यान संज्ञिक है तिसमें आक्रीडशब्द पुंलिंग है और यहही उद्यान रानियोंकी क्रीडामें जो उचित हो तौ प्रमदवन संज्ञिक है ॥ ३ ॥ वीथी आलि आवलि पंक्ति श्रेणी यह पांच नाम पंक्तिके हैं लेखा राजि यह दो नाम रेखाओंके हैं वनोंके समूहमें वन्या शब्द वर्त्तै है. नवीन उगेहुए वृक्षादिकमें अंकुर शब्द वर्त्तै है ॥ ४ ॥

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः॥अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥५॥ वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ॥ ओषध्यः फलपाकान्ताः स्युरवन्ध्यः फलेग्रहिः॥६

वृक्ष महीरुह शाखिन् विटपिन् पादप तरु अनोकह कुट शाल पलाशिन् द्रु द्रुम अगम यह तेरह नाम वृक्षके हैं ॥ ५ ॥ फूलसें उत्पन्न हुए फलोंकर उपलक्षित जो वृक्ष है वह वानस्पत्य संज्ञिक है और विनाफलसें उत्पन्न हुए फलोंकर उपलक्षित जो वृक्ष है वह वनस्पति संज्ञिक है. और फलका पाकही है अन्त जिनका ऐसे वृक्ष औषधि संज्ञिक हैं अवध्य फलेग्रहि यह दो नाम कालके अनुकूल फलके धारण करनेवाले वृक्षोंके हैं ॥ ६ ॥

वन्ध्योफलोऽवकेशी च फलवान्फलिनः फली ॥ प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥ फुल्लश्चैते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ॥ स्थाणु वा ना ध्रुवः शङ्कुर्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

वंध्य अफल अवकेशिन् यह तीन नाम ऋतुकेविषैं फलवर्जित वृक्षके हैं फलवत् फलिन फलिन् यह तीन नाम सफलवृक्षके हैं. प्रफुल्ल उत्फुल्ल संफुल्ल व्याकोश विकच स्फुट ॥ ७ ॥ फुल्ल यह विकसित अर्थात् फूले हुए वृक्षमें वर्त्तैं हैं अवन्ध्यादिक विकसितपर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें होते हैं स्थाणु ध्रुव शंकु यह तीन नाम जिस वृक्षका कि शाखा पल्लवादिक समूह कटगया हो उसके हैं तिसमें स्थाणुशब्द पुंलिंग विकल्पकरके होता है और छोटी२ है शाखा और जड जिसकी ऐसा वृक्ष क्षुप संज्ञिक है ॥ ८ ॥

अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ वल्ली तु व्रततिर्लता ॥ लता प्रतानिनी वीरुद्-

ल्मिन्युलय इत्यपि ॥ ९ ॥ नगाद्या-रोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः॥ अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूला-च्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥

नही विद्यमान है प्रकाण्ड अर्थात् जडसे लेकर शाखापर्यन्त भाग जिसमें ऐसे वृक्षमें स्तम्ब गुल्म शब्द वर्त्ते है वल्ली व्रतति लता यह तीन नाम वेलिके है और जो शाखा-दिकोंकर फैली हुई लता है वह वीरुध् गुल्मिनी उपल सज्ञिक है ॥ ९ ॥ वृक्षादि-कोंकी उंचाईमें उच्छ्राय उत्सेध उच्छ्रय यह तीन नाम वर्त्ते हैं और जो कि वृक्षकी जडसें लेकर शाखातक अवधि है वह प्रकाड स्कन्ध सज्ञिक है तिसमें प्रकाण्डशब्द स्त्री-लिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगवाची है ॥ १० ॥

समे शाखालते स्कन्धशाखाशाले शि-फाजटे ॥ शाखाशिफावरोहः स्या-न्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥ शिरोऽग्रं शिखरं वा ना मूलं बुध्नो-ऽङ्घ्रिनामकः ॥ सारो मज्जा नरि त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

शाखा लता यह दो नाम शाखाके हैं आपसमें समानलिंग है स्कन्ध शाखा शाला यह दो नाम स्कन्धसें प्रथम उत्पन्न हुई शाखाके है शिफा जटा यह दो नाम वृक्षकी जडके हैं शाखाकी जड अवरोह सज्ञिक है और वृक्षकी जडसें लेकर अग्रपर्यंत गई-हुई शाखाभी अवरोह सज्ञिक है ॥ ११ ॥ और वृक्षके शिरका जो अग्रभाग है वह शिखर सज्ञिक है शिखरशब्द विकल्पकरके पुलिंग है मूल बुध्न अंघ्रिनामक यह तीन नाम वृक्षादिकोंकी जडमात्रके है सार मज्जन् यह दो नाम वृक्षके तत्वके है यह दोनों शब्द पुलिंगमें होते है मज्जाशब्द स्त्रीलिंगभी है त्वच् वल्क वल्कल यह तीन नाम वल्कल (छाल)के है तिसमें त्वच् शब्द स्त्रीलिंग है और शेष दोनों पुनपुंसकलिंगमें होते है॥१२॥

काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः स-मित्स्त्रियाम् ॥ निष्कुहः कोटरं वा ना वल्लरिर्मञ्जरि स्त्रियौ ॥ १३ ॥ पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पु-मान् ॥ पल्लवोऽस्त्री किसलयं विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

काष्ठ दारु यह दो नाम काष्ठमात्रके है इन्धन एध इध्म एधस् समिध् यह पाच नाम सूखे तृणकाष्ठादिकके हैं तिसमें आ-दिके तीन अग्निके जलानेवाले तृण काष्ठा-दिकके नाम है इसकों ईंधनभी कहते हैं और अन्तके दो यज्ञादिकमें होमीहुई समि-धादिकके है इसमें समिध् शब्द स्त्रीलिंगमें होता है निष्कुह कोटर यह दो नाम वृक्षके छिद्रके है इसकों खखोडर कहते हैं तिसमें कोटरशब्द विकल्पकरके पुलिंग है वल्लरि मजरि यह दो नाम मजरीके हैं और स्त्री-लिंगवाची है ॥ १३ ॥ पत्र पलाश छदन दल पर्ण छद यह छे नाम पत्रके है तिसमें छदशब्द पुलिंग है पल्लव किसलय यह दो

पारिभद्र निम्बतरु मंदार पारिजातक यह चार नाम निम्बवृक्षके हैं इसकों कडूनिम्ब कहते हैं. तिनिश स्यन्दन नेमी रथद्रु अतिमुक्तक ॥ २६ ॥ वंजुल चित्रकृत् यह सात नाम तिनिश वृक्षके हैं इसकों तिवसभी कहते हैं. पीतन कपीतन आम्रातक यह तीन नाम आम्रातकके हैं इसकों अंबाडाभी कहते हैं. मधूक गुडपुष्प मधुद्रुम ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ मधुष्ठील यह पांच नाम महुआके हैं और जो कि महुआ जलसें उत्पन्न हो तौ उसमें मधूलक शब्द वर्त्ते है. पीलु गुडफल स्रंसिन् यह तीन नाम पीलुवृक्षके हैं इसकों पिलुआ कहते हैं और जो कि पीलुपर्वतपर उत्पन्न हो तौ उसमें ॥ २८ ॥ अक्षोट कंदराल यह दो नाम वर्त्ते हैं अर्थात् यह दो नाम पर्वतपीलुके हैं अंकोट निकोचक यह दो नाम चिलगोजाके हैं इसकों किसीदेशमें पिस्ते कहते हैं. पलाश किंशुक पर्ण वातपोथ यह चार नाम ढाकवृक्षके हैं. वेतस ॥ २९ ॥ रथ आभ्रपुष्प विदुल शीत वानीर वंजुल यह सात नाम वेंतके हैं परिव्याध विदुल नादेयी अम्बुवेतस यह चार नाम जलवेंतके हैं तिसमें नादेयीशब्द स्त्रीलिंग है ॥ ३० ॥

सोभाञ्जने शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ॥ रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्यादरिष्टः फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥ बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ॥ प्लक्षो जटी पर्कटी स्यान्न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥ ३२ ॥

सोभांजन शिग्रु तीक्ष्णगन्धक अक्षीव मोचक यह पांच नाम सहजनेंके हैं इसकों किसीदेशमें शेगूल (शेवगा–शेगट)भी कहते हैं. और यह सहजना यदि लाल होवै तौ मधुशिग्रु संज्ञिक है. अरिष्ट फेनिल यह दो नाम रीठेके हैं और आपसमें समान लिंग हैं ॥ ३१ ॥ बिल्व शांडिल्य शैलूष मालूर श्रीफल यह पांच नाम बेलके हैं. प्लक्ष जटी पर्कटी यह तीन नाम पाखरके हैं. न्यग्रोध बहुपाद् वट यह तीन नाम वटके हैं इसकों वडका वृक्ष कहते हैं ॥ ३२ ॥

गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ ॥ आम्रश्चूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥ कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ॥ शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ॥ ३४ ॥

गालव शाबर लोध्र तिरीट तिल्व मार्जन यह छै नाम लोधके हैं. कोईएक आचार्य यहाँ ऐसा कहते हैं कि आदिके दो नाम श्वेतलोधके हैं शेष नाम लाललोधके हैं. आम्र चूत रसाल यह तीन नाम आम्रके हैं. यदि यह आम्र अतिसुगन्धित हो तौ सहकार संज्ञिक है ॥३३॥ कुम्भ उलूखलक कौशिक गुग्गुलु पुर यह पांच नाम गूगलके हैं तिसमें कुम्भ और उलूखलशब्द नपुंसकलिंगमें होवै हैं. शेलु श्लेष्मातक शीत उद्दाल बहुवारक यह पांचनाम लभेरेके हैं इसकों किसी देशमें (शेलट-भोंकरी) कहते हैं॥३४॥

राजादनं पियालः स्यात्सन्नकद्रुर्धनुःपटः ॥ गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ॥ कर्कन्धूर्बदरी कोलिः कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥ सौवीरं बदरं घोण्टाऽप्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः ॥ विकङ्कतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

राजादन पियाल सन्नकद्रु धनुपट यह चार नाम चिरोंजीके है इसको चार कहते है गभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी भद्रपर्णी काश्मर्य यह सात नाम खभारीके है इसको शिवणीभी कहते है कर्कन्धू बदरी कोलि यह तीन नाम बेरके है तिसमें कर्कन्धूशब्द दोनों स्त्रीपुल्लिंगमें होता है कोल कुवल फेनिल ॥ ३६ ॥ सौवीर बदर घोंटा यह छे नाम बेरके फलके है स्वादुकटक विकंकत सुवावृक्ष ग्रथिल व्याघ्रपाद् यह पाच नाम हिस वृक्षके हैं इसको वेहलोभी कहते है॥३७॥

ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ॥ तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥ काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ॥ गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥

ऐरावत नागरग नादेयी भूमिजबुका यह चार नाम नारंगीके है तिंदुक स्फूर्जक कालस्कन्ध शितिसारक यह चार नाम तेंदुआके है इसको तेंदू(टेंभुरणी)कहते है ॥ ३८ ॥ काकेन्दु कुलक काकतिन्दुक काकपीलुक यह चार नाम कडुए तेंदुएके है इसको कुचला तथा काजराभी कहते है, गोलीढ झाटल घटापाटलि मोक्ष मुष्कक यह पाच नाम काली पाठरिके है इसको मोखाभी कहते है कोई आचार्य घटा पाटलि यह दो नाम गिनते है ॥ ३९ ॥

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समौ पिचुलझावुकौ ॥ श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैटर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥ क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ॥ तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥ तूलं च नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः ॥ वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु ॥ ४२ ॥

तिलक क्षुरक श्रीमत् यह तीन नाम तिलक वृक्षके ह पिचल झावुक यह दो नाम झाऊके है आपसमे समान है श्रीपर्णिका कुमुदिका कुभी कैटर्य कट्फल यह पाच नाम कॉयफल्के है इसको कुमल्भी कहते है ॥ ४० ॥ क्रमुक पट्टिका पट्टिन् लाक्षाप्रसादन यह चार नाम लाटलोधके ह इनमें पट्टिन्शब्द ईकारांतवाची स्त्रीलिंगभी होता है तूद यूप क्रमुक ब्रह्मण्य ब्रह्मदारु ॥ ४१ ॥

तूल यह छे नाम तूत वृक्षके हैं इसकों पारसापिंपलभी कहते हैं. नीप प्रियक कदंब हरिप्रिय यह चार नाम कदम्बके हैं. वीरवृक्ष अरुष्कर अग्निमुखी भल्लातकी यह चार नाम भिलावाके हैं. तिसमें अग्निमुखी भल्लातकी शब्द तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ४२ ॥

गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः ॥ प्लक्षश्च तिन्तिडी चिञ्चाऽम्लिकाऽथो पीतसारके ॥४३॥ सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ॥ साले तु सर्जकार्श्याश्वकर्णकाः सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥

गर्दभांड कन्दराल कपीतन सुपार्श्वक प्लक्ष यह पांच नाम वडी हरंके हैं इसकों लाखीपिंपरीभी कहते हैं. तिंतिडी चिंचा अम्लिका यह तीन नाम अमिलीके हैं. पीतसारक ॥ ४३ ॥ सर्जक असन बंधूकपुष्प प्रियक जीवक यह छे नाम विजयसारके हैं इसकों असणाभी कहते हैं. साल सर्ज कार्श्य अश्वकर्णक सस्यसंवर यह पांच नाम शालवृक्षके हैं इसकों सालईभी कहते हैं ॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ॥ राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामथ द्वयो. ॥ ४५ ॥ इङ्गुदी तापसतरुर्भूर्जे चर्ममृदुत्वचौ ॥ पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

नदीसर्ज वीरतरु इंद्रद्रु ककुभ अर्जुन यह पांच नाम अर्जुनवृक्षके हैं. राजादन फलाध्यक्ष क्षीरिका यह तीन नाम खिरनीके हैं ॥ ४५ ॥ इंगुदी तापसतरु यह दो नाम गोंदीके हैं तिसमें इंगुदीशब्द दोनो स्त्रीपुंलिंगमें होता है. भूर्ज चर्मिन् मृदुत्वच् यह तीन नाम भोजवृक्षके हैं पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायु शाल्मलि यह पांच नाम सेमरके हैं इसकों सांवरीभी कहते हैं. तिसमें शाल्मलिशब्द दोनों स्त्रीपुंलिंगमें होता है ४६

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः ॥ चिरबिल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥ प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ॥ करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥

और सेमरके गोंदमें पिच्छा शब्द वर्त्ते है. रोचन कूटशाल्मलि यह दो नाम काले सेमरके हैं. चिरिबिल्व नक्तमाल करज करंजक यह चार नाम कंजाके हैं ॥ ४७ ॥ प्रकीर्य पूतिकरज पूतिक कलिमारक यह चार नाम कांटेदार कंजाके हैं षड्ग्रन्थ मर्कटी वल्लरी यह तीन कंजाके भेद हैं ॥४८॥

रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ॥ गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥ अरिमेदो विट्खदिरे कदरः खदिरे सिते ॥ सोमवल्कोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥ एरण्ड उरुबूकश्च

रुचकश्चित्रकश्च सः ॥ चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः॥५१॥

रोहिन् रोहितक प्लीहशत्रु दाडिम पुष्पक यह चार नाम लाल कजाके है इसको रक्तरोहिडाभी कहते है गायत्री बालतनय खदिर दन्तधावन यह चार नाम कत्थावृक्षके हैं ॥ ४९ ॥ अरिमेद विट्खदिर यह दो नाम दुर्गंध कत्थाके है श्वेतसारवाले कत्थाके वृक्षमें कदर सोमवल्क यह दो नाम वर्ते है व्याघ्रपुच्छ गन्धर्वहस्तक ॥ ५० ॥ एरण्ड उरुवूक रुचक चित्रक चचु पचागुल मड वर्धमान व्यडवक यह ग्यारह नाम अरण्डवृक्षके है ॥ ५१ ॥

अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी सक्तुफला शिवा ॥ पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥ शल्यश्च मदने शक्रपादपः पारिभद्रकः ॥ भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुण्यथ द्वयोः ॥ पाटलिः पाटलाऽमोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥ ५४ ॥ कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी श्यामा तु महिलाह्वया ॥ लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ॥ मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकट्वङ्गटुण्टुकाः ॥ ५६ ॥ श्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ॥ शोणकश्चारलौ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥ अमृता च वयस्था च त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ॥ नाक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

और जो कि छोटी शमी होवे है वह शमीर सज्ञक है शमी सक्तुफला शिवा यह तीन नाम शमीवृक्षके है पिण्डीतक मरुवक श्वसन करहाटक ॥ ५२ ॥ शल्य मदन यह छै नाम मैनफलके है इसको गेलाभी कहते हे शक्रपादप पारिभद्रक भद्रदारु द्रुकिलिम पीतदारु दारु ॥ ५३ ॥ पूतिकाष्ठ यह सात नाम देवदारुवृक्षके विषैं वर्ते है पाटलि पाटला अमोघा काचस्थली फलेरुहा ॥५४॥ कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी यह सात नाम पाटरिके है तिसमें पाटलिशब्द दोनों स्त्रीपुल्लिगमें होता हे श्यामा महिलाह्वया लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियगु फलिनी फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना गधफली कारभा प्रियक यह बारह नाम प्रियगु वृक्षके है इसको बाघाटीभी कहते है तिसमें प्रियकशब्द पुलिग है मडूकपर्ण पत्रोर्ण नट कट्वग टुटुक ॥ ५६ ॥ श्योनाक शुकनास ऋक्ष दीर्घवृन्त कुटन्नट शोणक अरलु यह बारह नाम अरलू वृक्षके है इसको टण्टिकाभी कहते है और कोइ टेंटूभी कहते हैं तिष्यफला आमलकी ॥ ५७ ॥ अमृता वयस्था यह चार नाम आँवरेके है विभीतक शब्द तीनों

लिंगमें होता है. विभीतक अक्ष तुष कर्षफल भूतावास कलिद्रुम यह छे नाम बहेड़ेके हैं तिसमें विभीतकशब्द त्रिलिंग है और अक्षादिक पुंलिंग हैं ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ॥ हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥ पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः ॥ कर्णिकारः परिव्याधो लकुचो लिकुचो डहुः ॥ ६० ॥

अभया अव्यथा पथ्या कायस्था पूतना अमृता हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा यह ग्यारह नाम हर्रेके हैं ॥ ५९ ॥ पीतद्रु सरल पूतिकाष्ठ यह तीन नाम सरलवृक्षके हैं इसकों देवदारभी कहते हैं. द्रुमोत्पल कर्णिकार परिव्याध यह तीन नाम कर्णिकार वृक्षके हैं इसकों पांगाराभी कहते हैं. लकुच लिकुच डहु यह तीन नाम बडहलके हैं इसकों ओंट कहते हैं ॥ ६० ॥

पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ॥ काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥ अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ॥ पिचुमन्दश्च निम्बेऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिंशपा ॥ ६२ ॥ कपिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः ॥ भण्डिलोऽप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥

पनस कंटकिफल यह दो नाम कटहलके हैं. निचुल हिज्जल अंबुज यह तीन नाम इजरके हैं यह भी जलवेंतका भेद है. काकोदुंवरिका फल्गु मलयू जघनेफला यह चार नाम कटूमरिके हैं इसकों वोखाडा तथा खर्वतभी कहते हैं ॥ ६१ ॥ अरिष्ट सर्वतोभद्र हिंगुनिर्यास मालक पिचुमन्द निम्ब यह छे नाम नीबके वृक्षके हैं. पिच्छिला अगुरु शिंशपा ॥ ६२ ॥ कपिला भस्मगर्भा यह चार नाम कालीसीसोंके हैं यहाँपर कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि पिच्छिला अगुरु शिंशपा यह तीन नाम सीसोंके हैं और तिसमें अगुरु नपुंसक है. कपिला अर्थात् काले फूलवाले सीसोंके हैं वह भस्मगर्भा संज्ञिक है. शिरीष कपीतन भंडिल यह तीन नाम शिरसके हैं. चांपेय चंपक हेमपुष्पक यह तीन नाम चमेलीके हैं इसकों कुडचांपा तथा सोनाचापाभी कहते हैं ॥ ६३ ॥

एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे ॥ बकुलो वञ्जुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥ चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ॥ जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥

इस चमेलीकी कली गंधफली संज्ञिक है. केसर बकुल यह दो नाम मोरश्रीके हैं. वंजुल अशोक यह दो नाम अशोकवृक्षके हैं. करक दाडिम यह दो नाम अनारके हैं इसकों दालिंबभी कहते हैं. आपसमें समान

लिग है ॥६४॥ चापेय केसर नागकेसर काचनाह्वय यह चार नाम नागकेसरके है इसको नागचापाभी कहते है जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका यह पाच नाम खासनेवृक्षके है इसकों टाहाकल तथा थोर ऐरणभी किसी२ देशमें बोलते है ॥ ६५ ॥

श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका ॥ जयोऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥६६॥ एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले ॥ कृष्णपाकफलाविघ्नसुषेणाः करमर्दके ॥६७॥

श्रीपर्ण अग्निमथ कणिका गणिकारिका जय यह पाच नाम अरणीवृक्षके है इसकों नरवेलभी कहते है कुटज शक्र वत्सक गिरिमल्लिका यह चार नाम कुडावृक्षके है ॥ ६६ ॥ और इस कुडावृक्षके फलमें कलिग इद्रयव भद्रयव यह तीन नाम वर्त्ते हैं कृष्णपाकफल अविघ्न सुषेण करमर्दक यह चार नाम करोंदेके है ॥ ६७ ॥

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यथ सिन्दुके ॥ सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ॥६८॥ वेणी गरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ॥ श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥ भूपदी शीतभीरुश्च सैवास्फोटा वनोद्भवा ॥ शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥

कालस्कन्ध तमाल तापिच्छ यह तीन नाम तमालवृक्षके है सिन्दुक सिन्दुवार इद्रसुरस निर्गुंडी इन्द्राणिका यह पाच नाम निर्गुण्डीके है इसकों सिमाल कहते है और सिन्धुआरीभी कहते है ॥ ६८ ॥ वेणी गरा गरी देवताड जीमूत यह पाच नाम देवताडवृक्षके है श्रीहस्तिनी भूरुण्डी यह दो नाम हाथी शुण्डाके हैं इसकों सिरिहस्तिनी भी कहते है तृणशून्य मल्लिका ॥ ६९ ॥ भूपदी शीतभीरु यह चार नाम मल्लिकाके है इसकों मोगरीभी कहते है और जो कि मल्लिका वनमें उत्पन्न होवे है वह आस्फोटा सज्ञिक है इसकों रानमोगरी कहते है शेफालिका सुवहा निर्गुंडी नीलिका यह चार नाम काले फूलवाली निर्गुण्डीके है ॥ ७० ॥

सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मागधी ॥ गणिका यूथिकाऽम्बष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥ अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ॥ सुमना मालती जातिः सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥

और यह निर्गुंडी यदि श्वेतफूलवाली हो तो श्वेतसुरसा भूतवेशी सज्ञिक है इसको कातरी निगुडभी कहते हैं मागधी गणिका यूथिका अम्बष्ठा यह चार नाम यूथिकाके है इसकों जुई कहते है और वह ही यूथिका पीले फूलोवाली हो तो हेमपुष्पिका सज्ञिक है ॥ ७१ ॥ अतिमुक्त

पुण्ड्रक वासन्ती माधवी लता यह पांच नाम माधवीलताके हैं इसकों कुसरी तथा कस्तुर मोगरा तथा मधुमाधवीभी कहते हैं. सुमना मालती जाति यह तीन नाम जातीके हैं इसकों जाई (चमेली) मोटी श्वेतवर्णजाई पीतवर्ण जाईभी कहते हैं.सप्तला नवमालिका यह दो नाम नवमल्लिकाके हैं इसकों नेवाली थोरमोगरा बटमोगरा वेलमोगराभी कहते हैं७२

माध्यं कुन्दं रक्तकस्तु वन्धूको वन्धुजीवकः ॥ सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥ तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः ॥ नीली झिण्टी द्वयोर्वाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

माध्य कुन्द यह दो नाम कुंदवृक्षके हैं रक्तक वंधूक वंधुजीवक यह तीन नाम दुपहरियाके हैं. सहा कुमारी तरणि यह तीन नाम कुमारीके हैं इसकों घीगुवार तथा सेवतीगुलावभी कहते हैं. अम्लान महासहा यह दो नाम कांटेदार सेवतीके हैं इसकों आवोलीभी कहते हैं ॥ ७३ ॥ और तिस लाल अम्लानमें कुरवक शब्द वर्त्ते है और तिस पीले अम्लानमें कुरंटक शब्द वर्त्ते है और जो कि नीलवर्ण झिंटी है वह वाणा दासी आर्त्तगल संज्ञिक है तिसमें बाणा शब्द दोनों स्त्री तथा पुंलिंगमें होता है ॥ ७४ ॥

सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ॥ पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः॥७५॥ओण्ड्रपुष्पं जपापुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ॥ प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥ करवीरे करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ ॥ उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः॥७७॥ मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रकः ॥ फलपूरो वीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥

सैरेयक झिंटी यह दो नाम पिया वांसके हैं इसकों कोरांटीभी कहते हैं और तिस लालसैरेयकमें कुरवक शब्द वर्त्ते है. और जो कि पीतवर्ण झिंटी है वह कुरंटक संज्ञिक है और उसी कुरंटकमें सहचरी शब्द वर्त्ते है अर्थात् कुरंटक सहचरी यह दो नाम पीले फूलवाले पियावांसके हैं सहचरीशब्द दोनों स्त्री तथा पुंलिंगमें होता है ॥ ७५ ॥ ओंड्रपुष्प जपापुष्प यह दो नाम जपापुष्पके हैं इसकों जास्वन्दभी कहते हैं. और जो कि तिलका फूल है वह वज्रपुष्प संज्ञिक है प्रतिहास शतप्रास चंडात हयमारक ॥७६॥ करवीर यह पांच नाम कण्हेरके हैं. करीर क्रकर ग्रंथिल यह तीन नाम करील वृक्षके हैं इसकों कारवी (नेवती)भी बोलते हैं उन्मत्त कितव धूर्त्त धत्तूर कनकाह्वय॥७७॥

१ कनकाह्वय यह सुवर्णपर्यायक नाम है

मातुल मदन यह सात नाम धतूरेके है इसके फलमें मातुलपुत्रक शब्द वर्त्ते है फलपूर बीजपूर रुचक मातुलुंगक यह चार नाम बिजोरानीबूके है इसकों महालुंगभी कहते है ॥ ७८ ॥

समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः ॥ जम्बीरोऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ॥७९॥ सितेऽर्जकोऽत्र पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ॥ अर्काह्ववसुकाऽऽस्फोटगणरूपविकीरणाः ॥ ८० ॥ मन्दारश्चार्कपर्णोऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ॥ शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः॥८१॥

समीरण मरुवक प्रस्थपुष्प फणिज्जक जंबीर यह पाच नाम दौना (मरुआ)के है इसकों किसी देशमें जवीरभी कहते हैं पर्णास कठिंजर कुटेरक यह तीन नाम पर्णासके है इसकों आजवला बावरीभी कहते है ॥ ७९ ॥ और इस श्वेतपर्णासमें अर्जक शब्द वर्त्ते है पाठिन् चित्रक वन्हिसंज्ञिक यह तीन नाम चीतेके है अर्काह्व वसुक आस्फोट गणरूप विकीरण ॥ ८० ॥ मन्दार अर्कपर्ण यह सात नाम आकके है और यह आक यदि श्वेत होवे तो उसमें अलर्क प्रतापस शब्द वर्त्ते हैं शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठील बुक वसु यह पाच नाम गुमाके है इसकों रुईमन्दार तथा थोर वकुलीभी कहते है ॥ ८१ ॥

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ॥ वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ॥ मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ॥ पाठाऽम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥८४॥ एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ॥ कटुः कटंभराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥

वंदा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिका यह चार नाम वृक्षके ऊपर उत्पन्न हुई लताविशेषके है इसकों अमरवेलि (वेटागुली बाडगुल)भी कहते है वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिका अमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्णी यह नौ नाम गिलोयके हैं इसको गुलवेलभी कहते है मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णी यह दश नाम मूर्वाके है इसकों मुर तथा मोरवेलभी कहते है पाठा अम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका यह दश नाम पाठाके है इसकों पाडली (पहाडमूल)भी कहते है कटु कटंभरा अशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥

मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटि ॥ चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ॥ हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥

मत्स्यपित्ता कृष्णाभेदी चक्रांगी शकुलादनी यह आठ नाम केदारकुटकीके हैं. आत्मगुप्ता अजहा अव्यंडा कंडुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता शूकशिंबि कपिकच्छु मर्कटी यह नौ नाम मर्कटीके हैं इसकों कौंची (कुवली। कुहीरि)भी कहते हैं. इसके छूनेसें खुजली उठती है. चित्रा उपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शंबरी वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रंडा मूषिकपर्णी यह दशनाम मूषिकपर्णीके हैं इसकों मूसरी (उन्दीरकानी) भी कहते हैं. अपामार्ग शैखरिक धामार्गव मयूरक ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमंजरी यह आठ नाम चिरचिटाके हैं इसकों आवाडाभी किसी देशोंमें कहते हैं. हंजिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥

अङ्गारवल्ली बालेयशाकबर्बरवर्धकाः॥ मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका॥९०॥मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ॥ यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥ रोदनी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ॥ पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका॥९२॥ क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशिर्धावनिर्गुहा ॥ निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥

अंगारवल्ली बालेयशाक बर्बर वर्धक यह नौ नाम भांगराके हैं इसकों भारंगभी कहते हैं. मंजिष्ठा विकसा जिंगी समंगा कालमेषिका ॥ ९० ॥ मंडूकपर्णी भंडीरी भंडी योजनवल्ली यह नौ नाम जमीठके हैं. यास यवास दुस्पर्श धन्वयास कुनाशक॥९१॥रोदनी कच्छुरा अनन्ता समुद्रांता दुरालभा यह दश नाम जवासाके हैं इसकों धमासाभी कहते हैं. पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्णी अंघ्रिवल्लिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा यह नौ नाम सिंहपुच्छीके हैं इसकों डवला (पिठवण)भी कहते हैं. निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कंटकारिका ॥ ९३ ॥

प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ॥ नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥

रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी ॥ अवल्गुज सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ॥ कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६॥ उषणा पिप्पली शौण्डी कोलाऽथ करिपिप्पली ॥ कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥

प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुस्पर्शा राष्ट्रिका यह दश नाम भटकटाईके है इसकों रिगणीभी कहते है नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥९४॥ रजनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला नीलिनी यह ग्यारह नाम नीलीके है यह वस्त्रोंकी रँगत करनेवाली काले वर्णकी होती है अवल्गुज सोमराजी सुवल्लि सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफली यह आठ नाम बकुचीके हैं इसकों बाकुची बावचीभी कहते है कृष्णा उपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा॥९६॥ उषणा पिप्पली शौंडी कोला यह दश नाम पीपरिके है करिपिप्पली कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिर यह पाच नाम बडीपीपरिके है तिसमें वशिरशब्द पुलिंग है ॥ ९७ ॥

चव्यं तु चविका काकचिञ्चा गुञ्जा तु कृष्णला ॥ पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥ गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ॥ विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥ शृङ्गी महौषधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे ॥ शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी॥अहेरुरथ पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः १०१ दार्वी पचम्पचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ॥ वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

चव्य चविका यह दो नाम चव्यके है. काकचिचा गुंजा कृष्णला यह तीन नाम गुंजाके है इसकों घुंघुचीभी कहते है पलंकषा इक्षुगंधा श्वदंष्ट्रा स्वादुकंटक ॥ ९८ ॥ गोकंटक गोक्षुरक वनशृंगाट यह सात नाम गोखरूके है इसकों सराटाभी कहते हैं विश्वा विषा प्रतिविषा अतिविषा उपविषा अरुणा ॥ ९९ ॥ शृंगी महौषध यह आठ नाम अतीसके है इसकों अतिविखभी कहते है क्षीरावी दुग्धिका यह दो नाम दुग्धीके है आपसमें समान लिंग है शतमूली बहुसुता अभीरु इंदीवरी वरी॥१००॥ऋष्यप्रोक्ता अभीरुपत्री नारायणी शतावरी अहेरु यह दश स्त्रीलिंगवाचीनाम शतावरीके है पीतद्रु कालीयक हरिद्रव॥१०१॥दार्वी पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनी यह सात नाम दारुहलदीके है. वचा उग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका यह पाच नाम वचके है इसकों बेखडभी कहते है ॥ १०२ ॥

शुक्ला हैमवती वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका ॥ वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥ आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्ताऽपराजिता ॥ इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः॥ १०४॥

और जो कि श्वेतवच है वह हैमवती संज्ञिक है वैद्यमातृ सिंही वाशिका वृष अटरूष सिंहास्य वासक वाजिदन्तक यह आठ नाम अडूसाके हैं ॥ १०३ ॥ आस्फोटा गिरिकर्णी विष्णुक्रान्ता अपराजिता यह चार नाम विष्णुक्रान्ताके हैं इक्षुगन्धा कांडेक्षु कोकिलाक्ष इक्षुर क्षुर यह पांच नाम तालमखानेंके हैं इसको कोलिसुन्दाभी कहते हैं ॥ १०४ ॥

शालयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः ॥ मिश्रेयाप्यथ सीहुण्डो वज्रः स्नुक् स्त्री स्नुही गुडा ॥१०५॥ समन्तदुग्धाऽथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ॥ तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम् ॥ १०६ ॥

शालेय शीतशिव छत्रा मधुरिका मिसि मिश्रेया यह छै नाम सौंफके हैं इसकों वडिशेपभी कहते हैं सीहुण्ड वज्र स्नुह् स्नुही गुडा ॥ १०५ ॥ समन्तदुग्धा यह छै नाम सेहुडके हैं, तिसमें स्नुह् शब्द हकारान्त तथा स्त्रीलिंगवाची है. वेल्ल अमोघा चित्रतंडुला तंडुल कृमिघ्न विडंग यह छै नाम वायविडंगके हैं विडंगशब्द पुंनपुंसकलिंगवाची है ॥ १०६॥

बला वाट्यालका घण्टारवा तु शणपुष्पिका ॥ मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ॥ १०७॥ सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ॥ त्रिभण्डी रोचनी श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥ काला मसूरविदलाऽर्धचन्द्रा कालमेषिका ॥ मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥

बला वाट्यालका यह दो नाम खरहटी हैं इसकों तुयकडी (चिकणा)भी कहते हैं घंटारवा शणपुष्पिका यह दो नाम सन हैं इसकों लवुताग वागरीभी कहते हैं. मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसा यह पांच नाम दाखके हैं ॥१०७॥ सर्वानुभूति सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् त्रिभंडी रोचनी यह सात नाम निशोतके हैं. श्यामा पालिन्दी सुषेणिका ॥ १०८ ॥ काला मसूर विदला अर्धचंद्रा कालमेषिका यह सात नाम काले निशोतके हैं मधुक क्लीतक यष्टिमधुक मधुयष्टिका यह चार नाम मुलहठीके हैं इसकों ज्येष्ठमधभी कहते हैं ॥ १०९ ॥

विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता ॥ अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥ लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ॥ खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥ गो-

पी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ॥ योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥ ११२ ॥

विदारी क्षीरशुक्ला इक्षुगन्धा क्रोष्ट्री यह चार नाम काले गगाफलके है और जो कि अन्यविदारी हे वह क्षीरविदारी महाश्वेता ऋक्षगन्धिका सज्ञिक है यह तीन नाम श्वेतगगाफलके है ॥ ११० ॥ लागली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी यह चार नाम जलपीपरिके है इसकों मोगुडभी कहते है खराश्वा कारवी दीप्य मयूर लोचमस्तक यह पाच नाम अजमोदके है इसकों मोरशेंडाभी कहते है ॥ १११ ॥ गोपी श्यामा शारिवा अनन्ता उत्पलशारिवा यह पाच नाम श्यामलताके है इसकों उपरसालभी कहते है योग्य ऋद्धि सिद्धि लक्ष्मी यह चार नाम ऋद्धिनाम औषधिके है इसकों केवडी तथा मुरुडशेंगभी कहते है यह चारों वृद्धि औषधीके है ॥ ११२ ॥

कदली वारणबुसा रम्भा मोचांशुमत्फला ॥ काष्ठीला मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥ वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ॥ नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ॥ विदारिगन्धांऽशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥

कदली वारणबुसा रभा मोचा अशुमत्फला काष्ठीला यह छै नाम केलाके है मुद्गपर्णी काकमुद्गा सहा यह तीन नाम वनमूँगके है इसकों काकमूग तथा रानमूगभी कहते है ॥ ११३ ॥ वार्त्ताकी हिंगुली सिंही भटाकी दुष्प्रधर्षिणी यह पाच नाम बेंगनके है इसकों रानवागी (डोरली)भी कहते है नाकुली सुरसा रास्ना सुग धा गधनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा भुजगाक्षी छत्राकी सुवहा यह नौ नाम सनायके है इसकों मुगसी (मुगसवेल)भी कहते है विदारिगधा अशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा यह पाच नाम सालपर्णीके है इसकों डाव (डवला—सालवण) कहते है ॥ ११५ ॥

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च ॥ भारद्वाजी तु सा वन्या शृङ्गी तु ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥ गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ॥ धामार्गवो घोषकः स्यान्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥

तुण्डिकेरी समुद्राता कार्पासी बदरा यह चार नाम कपासके है और जो कि कपास वनमें उत्पन्न होवे वह भारद्वाजी सज्ञिक है शृगिन् ऋषभ वृष यह तीन नाम कॉकडाशृगीके है इसकों वैलघाटीभी कहते है ॥११६॥ गागेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका यह चार नाम कगीके है इसकों ह्रस्वचिकणाभी कहते है धामार्गव घोषक यह

दो नाम घोषवल्लीके हैं इसकों श्वेततुरई (वोंसाली–दोडको) कहते हैं. और यदि जो घोषक पीले फूलवाला हो तौ वह महाजाली संज्ञिक है ॥ ११७ ॥

ज्यौत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ॥ स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका॥११८॥ गोधापदी तु सुवहा मुसली तालमूलिका ॥ अजशृङ्गी विषाणी स्याद्गोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥

ज्यौत्स्नी पटोलिका जाली यह तीन नाम चचेंडाके हैं इसकों पडवलीभी कहते हैं नादेयी भूमिजंबुका यह दो नाम भूमिजामुनके हैं इसकों भूइजांभलीभी कहते हैं. लांगलिकी अग्निशीखा यह दो नाम कलहारीवृक्षके हैं इसकों वागचवकाभी कहते हैं काकांगी काकनासिका यह दो नाम काकजंघाके हैं इसकों कावलीभी कहते हैं ॥ ११८ ॥ गोधापदी सुवहा यह दो नाम हंसपदीके हैं इसकों रक्तलाजालूं कहते हैं. मुसली तालमूलिका यह दो नाम मुसलकंदके हैं अजशृंगी विषाणी यह दो नाम मेढाशृंगी औषधिके हैं. गोजिह्वा दार्विका यह दोनाम गोभीके हैं इसकों दवली (पाथरी)भी कहते हैं ॥ ११९ ॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूलि नागवल्ल्यप्यथ द्विजा ॥ हरेणु रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥ एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ वालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू ॥ १२१ ॥

तांबूलवल्ली तांबूली नागवल्ली यह तीन नाम पानकी वेलिके हैं. द्विजा हरेणु रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी यह छै नाम गगनधूरिके हैं इसकों रेणुकवीजभी कहते हैं ॥ १२० ॥ एलावालुक ऐलेय सुगन्धि हरिवालुक वालुक ये पांच नाम एलुआके हैं इसकों कांकडी तथा वालुकभी कहते हैं. पालंकी मुकुन्द कुन्दु कुन्दरु यह चार नाम पालखशाकके हैं इसकों पोईशाकभी कहते हैं ॥ १२१ ॥

वालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ॥ कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥ शैलेयं तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा॥ गन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥ महेरुणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च ॥ अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका१२४

वाल ह्रीवेर वर्हिष्ठ उदीच्य केशाम्बुनामन् यह पांच नाम नेत्रवालाके हैं कालानुसार्य वृद्ध अश्मपुष्प शीतशिव ॥ १२२ ॥ शैलेय यह पांच नाम शिलाजीतके हैं तालपर्णी दैत्या गंधकुटी मुरा गन्धिनी यह पांच नाम तालीसपत्रके हैं इसकों मोरमांशीभी कहते हैं. गजभक्ष्या सुवहा सुरभी रसा

॥ १२३ ॥ महेरुणा कुदुरुकी सल्लकी ...ादनी यह आठ नाम सालमिश्रीके है ...कों सालईभी कहते है अग्निज्वाला ...भिक्षा धातकी धातुपुष्पिका यह चार नाम ...तकीके है इसकों धायफूल (धायटी)भी ...हते है ॥ १२४ ॥

...पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्बहु-...लाऽथ सा ॥ सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः ॥ १२५ ॥ ...व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् ॥ शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्यथ वितुन्नकः ॥१२६॥ ...झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ॥ प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यमथ तुन्नः कुबेरकः ॥ १२७ ॥ कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ राक्षसी ॥ चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥

पृथ्वीका चद्रवाला एला निष्कुटि बहुला ...ह पाच नाम बडी इलायचीके है और ...दि जो इलायची सूक्ष्म हो अर्थात् छोटी ... तो यह उपकुचिका तुत्था कोरगी त्रिपुटा ...टि सज्ञिक है अर्थात् यह पाच नाम छोटी ...लायचीके है ॥ १२५ ॥ व्याधि कुष्ठ ...रिभाव्य वाप्य पाकल उत्पल यह छे नाम ...टके हैं शखिनी चोरपुष्पी केशिनी यह ...ीन नाम चोरवल्लीके है इसकों शखाहुली ...ाखवेलभी कहते है वितुन्नक ॥ १२६ ॥ ...टामला अज्झटा ताली शिवा तामलकी यह छे नाम तामलकीके है प्रपौडरीक पौडर्य यह दो नाम पौडर्यके हैं इसका पत्र शालपर्णीकी समान होता है तुन्न कुबेरक॥ १२७॥ कुणि कच्छ कातलक नदिवृक्ष यह छे नाम तूनवृक्षके है इसकों नादरूखीभी कहते है इसका पत्र पीपलके पत्रकी समान होता है राक्षसी चण्डा धनहरी क्षेम दुष्पत्र गणहासक यह छे नाम राक्षसीवृक्षके है इसकों चोरओंवा (किरमाठीओंवा । गठोना । गाटीवनमूल)भी कहते है और इसकों गणभी कहते है १२८

व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ॥ सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ॥ १२९ ॥ धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हट्टविलासिनी ॥ शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नखमथाढकी ॥ १३० ॥ काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे ॥ कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥१३१॥ प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च॥ ग्रन्थिपर्णं शुकं बर्हपुष्पं स्थौणेयकुकुरे ॥ १३२ ॥

व्याडायुध व्याघ्रनख करज चक्रकारक यह चार नाम व्याघ्रनख नाम गधद्रव्यका है इसकों ल्घुनखला (वाघनख)भी कहते है सुषिरा विद्रुमलता कपोताघ्रि नटी नली ॥ १२९ ॥ धमनी अजनकेशी यह सात नाम नलीनाम गधद्रव्यके है इसकों पमारभी कहते है हनु हट्टविलासिनी शुक्ति शंख खुर कोल्दल नख यह सात नाम नखनाम

गंधद्रव्यके हैं इसकों ककूदन तथा नखलाभी कहते हैं. तिसमें हनुशब्द उकारान्त तथा स्त्रीलिंग है इसका पत्र बेरके पत्तेकी समान होता है. आढकी ॥ १३० ॥ काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालक सुराष्ट्रज यह छै नाम अरहरके हैं इसकों तूरभी कहते हैं. कुटन्नट दाशपुर वानेय परिपेलव ॥ १३१ ॥ प्लव गोपुर गोनर्द कैवर्त्ती मुस्तक यह आठ नाम मोथाके हैं इसकों केवडी (जलमुस्ता क्षुद्र-मोथा)भी कहते हैं. ग्रन्थिपर्ण शुक बर्हपुष्प स्थौणेय कुक्कुर यह पांच नाम कुकुरोंधाके हैं इसकों गंठीवन (भेटोरा)भी कहते हैं १३२

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ॥ समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षालङ्कोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥ तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिशी ॥ त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

मरुन्माला पिशुना स्पृक्का देवी लता लघु समुद्रांता वधू कोटिवर्षा लंकोपिका यह दश नाम मरुन्मालाके हैं इसकों पिंडरकशाकभी कहते हैं ॥ १३३ ॥ तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिशी यह पांच नाम जटामांसीके हैं. त्वक्पत्र उत्कट भृंग त्वच चोच वरांगक यह छै नाम तजके हैं इसकों दालचिनीभी कहते हैं ॥ १३४ ॥

कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ॥ ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥ शाकाख्यं पत्रपुष्पादि तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ॥ विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥

कर्चूरक द्राविडक काल्पक वेधमुख्यक यह चार नाम कचूरके हैं. फलपाकही है अन्त जिनका ऐसे व्रीहि यव गोधूमादिकोंकी जातिमात्रमें ही ओषधिशब्दका प्रयोग होता है यहाँ ओषधिशब्दमें बहुवचन बहुत्वके कहनेकी इच्छासें है किन्तु नित्य ओषधिशब्द बहुवचनान्त नहीं होता है और यदि ओषधि शब्द रोग हरनेमात्रही प्रतीत होवे और अन्य न हो तो औषधशब्दका प्रयोग होता है केवल ओषधिही औषधशब्दवाच्य नहीं है किन्तु अजातिमें रोग हरनेसें बीसहित त्रिफला आदिक सबही औषध हैं॥१३५॥ और जो फूलपुष्पादिक हैं वह शाक संज्ञिक हैं आदिशब्दसें मूलादिकभी शाकसंज्ञिक हैं तण्डुलीय अल्पमारिष यह दो नाम चौराई शाकके हैं इसकों तांदली (तांदुलजा)भी कहते हैं विशल्या अग्निशिखा अनन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका यह पांच नाम अग्निशिखाके हैं इसकों हालाँ (कललावी)भी कहते हैं ॥ १३६ ॥

स्याद्दक्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः ॥ जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी

मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डाधिरूढकम् ॥ त्वक् पुष्पं कवचं चैव शाकं दशविधं स्मृतम् ।

वयस्था सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥ पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ॥ हयपुच्छी तु काम्बोजी मापपर्णी महासहा ॥ १३८ ॥

ऋक्षगंधा छगलान्त्री आवेगी-वृद्धदारक जुंग यह पाच नाम वृद्धदारकके हैं इसकों विधारा (जीर्णफजी)भी कहते हैं ब्राह्मी मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी यह चार नाम सोमलताके हे इसके पत्ते शुक्लपक्षमें उगते है और कृष्णपक्षमें गिर जाते है ॥ १३७ ॥ पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती यह चार नाम स्वर्णक्षीरीके है इसकों मकोय (पिसोला)भी कहते है हयपुच्छी काबोजी माषपर्णी महासहा यह चार नाम मापपर्णी के हैं इसकों मूँगभैंथी (रानउडीद)भी कहते है ॥ १३८ ॥

तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ॥ बर्बरा कबरी तुङ्गी खरपुष्पाऽजगन्धिका ॥ १३९ ॥ एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ॥ चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥

तुण्डिकेरी रक्तफला बिंबिका पीलुपर्णी यह चार नाम कुँदुरूके है इसकों तोंडलीभी कहते है बर्बरा कबरी तुगी खरपुष्पा अजगंधिका यह पाच नाम वॅवई शाकके है इसकों वर्बरी (तिलवणी कानफोडी)भी कहते हैं ॥ १३९ ॥ एलापर्णी सुवहा रास्ना युक्तरसा यह चार नाम एलापर्णीके है इसकों रायसेन (कोलिदण)भी कहते हैं चागेरी चुक्रिका दन्तशठा अवष्ठा अल्मलोणिका यह पाच नाम चूकके है ॥१४०॥

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ॥ नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥ जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा॥ कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥

सहस्रवेधिन् चुक्र अम्लवेतस शतवेधिन यह चार नाम अम्लवेतके है नमस्कारी गडकारी समगा खदिरा यह चार नाम गुलखेराके है इसकों लज्जालुभी कहते है॥१४१॥ जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा यह चार नाम रत्नज्योतिके है इसकों हरणवेल (हरणदोडी)भी कहते है कूर्चशीर्ष मधुरक शृग ह्रस्वाग जीवक यह पाच नाम जीराके हैं ॥ १४२ ॥

किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तोऽथ सप्तला ॥ विमला शातला भूरिफेना चर्मकपेत्यपि ॥ १४३ ॥ वायसोली स्वादुरसा वयस्थाऽथ मकूलकः ॥ निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि ॥ १४४ ॥

किराततिक्त भूनिंब अनार्यतिक्त यह तीन नाम चिरैताके हे इसकों किराईतभी कहते हैं. सप्तला विमला शातला भूरिफेना चर्मकषा

यह पांच नाम सोयाशाकके हैं इसकों शिकेकाईभी कहते हैं ॥१४३॥ वायसोली स्वादुरसा वयस्था यह तीन नाम काकोलीके हैं इसकों लहान कावलीभी कहते हैं. मकूलक निकुम्भ दन्तिका प्रत्यक्श्रेणी उदुम्बरपर्णी यह पांच नाम दाँतीके हैं इसका बीज जेपाल बोलाजाता है ॥ १४४ ॥

अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ॥ मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥ अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ॥ काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥

अजमोदा उग्रगंधा ब्रह्मदर्भा यवानिका यह चार नाम अजवायनके हैं कोई आचार्य दोनों अजवायनोंके दोदो नाम कहते हैं. पुष्कर काश्मीर पद्मपत्र यह तीन नाम पुष्करनाम औषधिकी जडमें वर्त्ते हैं अर्थात् यह तीन नाम पुहकरमूलके हैं ॥ १४५ ॥ अव्यथा अतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी यह पांच नाम पद्माकके हैं इसकों स्थलकमलिनीभी कहते हैं यह उत्तरदेशमें प्रसिद्ध है कांपिल्य कर्कश चंद्र रक्तांग रोचनी यह पांच नाम कवीलाके हैं ॥ १४६ ॥

प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः॥ पद्माट उरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥ लतार्कदुर्द्रुमौ तत्र हरितेऽथ महौषधम् ॥ लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥

प्रपुन्नाड एडगज दद्रुघ्न चक्रमर्दक पद्माट उरणाख्य यह छै नाम पमारवृक्षके हैं इसकों टाकलाभी कहते हैं. पलांडु सुकन्दक ये दो नाम प्याजके हैं इसकों कांदाभी कहते हैं ॥ १४७ ॥ और यदि जो पलांडु हरा होवे तौ उसमें लतार्क दुर्द्रुम यह दो नाम वर्त्ते हैं अर्थात् यह दो नाम हरेप्याजके हैं. महौषध लशुन गृंजन अरिष्ट महाकन्द रसोनक यह छै नाम लहसनके हैं ॥ १४८ ॥

पुनर्नवा तु शोथघ्नी वितुन्नं सुनिषण्णकम् ॥ स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि ॥ १४९ ॥ पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ॥ वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

पुनर्नवा शोथघ्नी यह दो नाम पुनर्नवाके हैं इसकों घेटुलीभी कहते हैं. वितुन्न सुनिषण्णक यह दो नाम विसखपराके हैं इसकों सुपुन और कुरडुभी कहते हैं. वातक शीतल अपराजिता शणपर्णी यह चार नाम पटसनके हैं इसकों गोकर्णीभी कहते हैं ॥ १४९ ॥ पारावतांघ्रि कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता यह पांच नाम मालकाँगुनीके हैं यह सब स्त्रीलिंग हैं. वार्षिक त्रायमाण त्रायंती बलभद्रिका यह चार नाम त्रायमाणके हैं ॥ १५० ॥

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही वदरेत्यपि ॥ मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥

विश्वक्सेनप्रिया गृष्टि वाराही बदरा यह चार नाम बिलाईकन्दके है मार्कव भृगराज यह दो नाम भागराके हैं इसकों माकाभी कहते है काकमाची वायसी यह दो नाम काकजघाके हैं इसकों कावलीभी कहते है ॥ १५१ ॥

शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ॥ अवाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥ तस्या कटंभरा राजवला भद्रबलेत्यपि ॥ जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शाऽथ शटी गन्धमूली पड्ग्रन्थिकेत्यपि ॥ कर्चूरोऽपि पलाशोऽथ कारवेल्लः कठिल्लकः ॥ १५४ ॥ सुपवी चाथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ॥ कूष्माण्डकस्तु कर्कारुरुर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥ १५५ ॥

शतपुष्पा सितच्छत्रा अतिच्छत्रा मधुरा मिसि अवाक्पुष्पी कारवी यह सात नाम सौंफके हैं सरणा प्रसारिणी॥१५२॥कटम्भरा राजवला भद्रबला यह पाच नाम आकाशवेलिके है इसकों पादवेलभी कहते है जनी जतूका रजनी जतुकृत चक्रवर्तिनी ॥१५३॥ संस्पर्शा यह छै नाम चाकवतके है शटी गधमूली पड्ग्रन्थिका कर्चूर पलाश यह पाच नाम अम्बियाहल्दीके हैं इसकों कापूरकाचरीभी कहते हैं कारवेल्ल कठिल्लक॥१५४॥ सुपवी यह तीन नाम कारवेल्लके है इसकों करेलाभी कहते है कुलक पटोल तिक्तक पटु यह चार नाम पटोलके है इसकों पडवलभी कहते है कूष्माण्ड कर्कारु यह दो नाम कूष्माडके है इसकों कोहलाभी कहते है उर्वारु कर्कटी यह दो नाम काकडीके हैं दोनों शब्द स्त्रीलिंगवाची है ॥ १५५ ॥

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्तुम्ब्यलावूरुभे समे ॥ चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥ अर्शोघ्नः सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु समठिला ॥ कलम्ब्युपोदिका स्त्री तु मूलकं हिलमोचिका ॥ १५७ ॥

इक्ष्वाकु कटुतुंबी यह दो नाम करुई तोंबीके हैं इसकों कडुभोपलाभी कहते हैं तुम्बी अलावू यह दो नाम लौकीके हैं इसकों काटाभोपलाभी कहते हैं यह दोनों समान हैं चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा यह तीन नाम गोडुम्बाके है इसकों फूट तथा कचहलभी कहते हैं विशाला इन्द्रवारुणी यह दो नाम इन्द्रायनके है ॥ १५६ ॥ अर्शोघ्न सूरण कद यह तीन नाम जिमीकन्दके हैं गडीर समठिला यह दो नाम गडीरनाम शाकभेदके है इसकों गडरदवीभी कहते है, कलम्बी यह एक नाम कलम्बीका है उपोदिका यह

एक नाम पोधीनाका है इसको थोरमयाल (पोईमाण्डवीवेल) कहते हैं. यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगवाची हैं मूलक यह एक नाम मूलीका है. हिलमोचिका यह एक नाम हिलसाका है इसको हलहंचोभी कहते हैं ॥१५७॥

वास्तुकं शाकभेदाः स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका ॥ सहस्रवीर्या भार्गव्यो रुहाऽनन्ताऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥ गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षका ॥ कुरुविन्दो मेघनामा[1] मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

वास्तुक यह एक नाम वथुआका है यह कलंब्यादिक शाकभेद हैं. दूर्वा शतपार्विका सहस्रवीर्या भार्गवी रुहा अनन्ता यह छै नाम दूबके हैं जो कि श्वेतदूब है वह ॥ १५८ ॥ गोलोमी शतवीर्या गंडाली शकुलाक्षकासंज्ञिक है. कुरुविंद मेघनामन् मुस्ता मुस्तक यह पांच नाम मुस्ताके हैं इसको मोथाभी कहते हैं तिसमें मुस्तकशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ १५९ ॥

स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा ॥ वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥ शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥ वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥ ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ॥ नडस्तु धमनः पोटगलोऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धा पोटगलः पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ॥ रसाल इक्षुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः[1] ॥ १६३ ॥

भद्रमुस्तक गुंद्रा यह दो नाम नागरमोथाके हैं चूडाला चक्रला उच्चटा यह तीन नाम उच्चटामूलके हैं इसको फुरडीभी कहते हैं. वंश त्वक्सार कर्मार त्वचिसार तृणध्वज ॥ १६० ॥ शतपर्वन् यवफल वेणु मस्कर तेजन यह दश नाम वांसके हैं जो कि वांस कीटकादिकोंके कियेहुए छिद्रमें प्राप्त हो पवनकर ताडेहुए शब्दकरते हैं वह कीचक संज्ञिक हैं ॥ १६१ ॥ ग्रंथि पर्वन् परुष् यह तीन नाम वांस आदिकोंकी गांठके हैं तिसमें ग्रंथिशब्द पुंलिंग है गुंद्र तेजनक शर यह तीन नाम शरकंडाके हैं. नड धमन पोटगल यह तीन नाम नडके हैं इसको देवनलभी कहते हैं. काश इक्षुगंधा पोटगल यह तीन नाम काशके हैं तिसमें काशशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है. बल्वज शब्द बहुवचन तथा पुंलिंगमें होताहै इसको मोल (लह्वाले—लवा)भी कहते हैं. रसाल इक्षु यह दो नाम ईखके हैं उस ईखके भेद पुंड्र कान्तारक आदिक हैं ॥ १६२ ॥ १६३ ॥

स्यादीरणं वीरतरं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ॥ अभयं नलदं सेव्यममृ-

१ मेघनामन् यहशब्दमेघपर्याय नामक है।

१ इक्षुः कर्कटको वंशः कान्तारोवेणुनिःसृतः ॥ इक्षुरन्यः पौड्रकश्च रसालः सुकुमारकः॥१॥

णालं जलाशयम् ॥१६४॥ लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ॥ नडादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा अपि॥१६५॥

वीरण वीरतर यह दो नाम गाडरनाम तृणभेदके है कालावालाभी इसको कहते हैं और इस वीरणकी जडमें उशीर अभय नलद सेव्य मृणाल जलाशय ॥ १६४ ॥ लामज्जक लघुलय अवदाह इष्टकापथ यह दशनाम वर्त्ते है तिसमें उशीरशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिगमें होता है यह नड आदिकशब्द तृणजातीय हैं और गर्मुत् श्यामाक आदिक शब्दभी तृणजातीय हैं यहाँ प्रमुखशब्दसे नीवारादिकभी तृणजातीय है ॥ १६५ ॥

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रमथ कत्तृणम् ॥ पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥ १६६ ॥ छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणे ॥ शष्पं बालतृणं घासो यवसं तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

कुश कुथ दर्भ पवित्र यह चार नाम कुशके है तिसमें कुशशब्द पुंनपुसकलिगवाची है कत्तृण पौर सौगन्धिक ध्याम देवजग्धक रौहिष यह छे नाम सुगन्धिक तृणके है इसको गजाण (रोहिसगवत) भी कहते हैं ॥ १६६ ॥ छत्रा अतिछत्र पालघ्न मालातृणक भूस्तृण यह पाच नाम चचकीतुल्य जलतृणभेदके हैं तिसमें आदिके तीन नाम शेतगवतके है अन्तके दो मालाकारतृणके हैं शष्प बालतृण यह दो नाम कोमलतृणके हैं घास यवस यह दो नाम घासके है तृण अर्जुन यह दो नाम तृणमात्रके है ॥ १६७ ॥

तृणानां संहतिस्तृण्या नड्या तु नडसंहतिः ॥ तृणराजाह्वयस्तालो नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥ घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरोऽस्य तु ॥ फलमुद्वेगमेते च हिंतालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥ खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ॥

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

तृणोंका जो समूह है वह तृण्या संज्ञिक है और नडोंका जो समूह है वह नड्या सज्ञिक है तृणराज ताल यह दो नाम तालवृक्षके हैं तृणराजाह्वयशब्द तृणराजनामक है नालिकेर लागली यह दो नाम नारियलके हैं लागलीशब्द इन्नन्तवाची पुलिंगभी होता है ॥ १६८ ॥ घोंटा पूग क्रमुक गुवाक खपुर यह पाच नाम सुपारीवृक्षके हैं इस सुपारीवृक्षका फल उद्वेग सज्ञिक है हिंताल वृक्षसहित यह तीनों तालवृक्ष और नारियलका वृक्ष और सुपारीका वृक्ष ॥ १६९ ॥ तथा खर्जूर और केतकी और ताली और खर्जूरी वृक्ष यह आठो तृणद्रुम सज्ञिक हैं खर्जूर खजूरको कहते हैं औरकेतकी केथको कहते हैं और ताली-

वृक्ष तालवृक्षका भेद है. और खर्जूरी खजूरवृक्षका भेद है. ॥

इति वनौषधिवर्गः

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः[1] ॥ शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥ वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः ॥ दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥

सिंह मृगेन्द्र पंचास्य हर्यक्ष केसरिन् हरि यह छे नाम सिंहके हैं. शार्दूल द्वीपिन् व्याघ्र यह तीन नाम व्याघ्रके हैं. तरक्षु मृगादन यह दो नाम कुत्तेके आकारवाले कृष्णरेखाओंसे चित्रित हुए मृगविशेषके हैं इसको चीता (तरस)भी कहते हैं ॥ १ ॥ वराह सूकर घृष्टि कोल पोत्रिन् किरि किटि दंष्ट्रिन् घोणिन् स्तब्धरोमन् क्रोड भूदार यह बारह नाम सूकरके हैं. साहचर्यसे घृष्टिशब्द पुंलिंग जाननें योग्य है ॥ २ ॥

कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः ॥ मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ भल्लुके ॥ ३ ॥ ऋक्षाऽच्छभल्लभल्लूका गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥ लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासरसैरिभाः ॥ ४ ॥

कपि प्लवंग प्लवग शाखामृग वलीमुख मर्कट वानर कीश वनौकस् यह नौ नाम वन्दरके हैं. भल्लुक ॥ ३ ॥ ऋक्ष अच्छभल्ल भल्लूक यह चार नाम रीछके हैं. गंडक खड्ग खड्गिन् यह तीन नाम गेंडाके हैं. लुलाय महिष वाहद्विषत् कासर सैरिभ यह पांच नाम भैंसाके हैं ॥ ४ ॥

स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः ॥ शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥ ओतुर्बिडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ॥ त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥

शिवा भूरिमाय गोमायु मृगधूर्तक शृगार वंचक क्रोष्टु फेरु फेरव जंबुक यह दश नाम श्यारके हैं तिसमें शिवाशब्द स्त्रीलिंग है ॥ ५ ॥ ओतु बिडाल मार्जार वृषदंशक आखुभुज् यह पांच नाम बिलावके हैं. गौधेर गौधार गौधेय यह तीन नाम गोधिकाकी सन्तानमें वर्ते हैं अर्थात् यह तीन नाम गोहके बच्चेके हैं ॥ ६ ॥

श्वावित्तु शल्यस्तल्लोम्नि शललो शललं शलम् ॥ वातप्रमीर्वातमृगः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥ ७ ॥ मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ॥ ऐणेयमेण्याश्चर्माद्यमेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

[1] कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः ॥ पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विषः ॥ १ ॥

कंठीरव मृगरिपु मृगदृष्टि मृगाशन पुण्डरीक पंचनख चित्रकाय मृगद्विष् यह आठ नाम और पुस्तकोंमें विशेष हैं.

श्वाविध् शल्य यह दो नाम सेहीके है इसकों सालईभी कहते है और उससेही जीवके रोमोंमें शलली शलल शल यह तीन नाम हैं है तिसमें शलली शब्द स्त्रीलिंग है वातप्रमी वातमृग यह दो नाम वातमृगके है इसकों वाघलभी कहते है वातप्रमी शब्द ईकारान्त और पुलिंग है कोक ईहामृग वृक यह तीन नाम भेडियाके है ॥ ७ ॥ मृग कुरग वातायु हरिण अजिनयोनि यह पाच नाम हरिणके है एणीनाम हरिणीका जो चर्म मासादिक है वह ऐणेय सज्ञिक है और एणनाम हरिणका जो चर्ममासादिक है व ऐण सज्ञिक हे यह दोनों ऐणेय तथा ऐण शब्द तीनों लिंगमें होते है ॥ ८ ॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ॥ समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥ कृष्णसाररुरुन्यङ्कुरङ्कुशम्बररौहिषाः ॥ गोकर्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरो मृगाः॥१०॥

कदलिन् कदलिन् चीन चमूरु प्रियक समूरु यह छे प्रकारके हरिण और वक्ष्यमाण कृष्णसारादिक अजितयोनि सज्ञिक है कारण कि यह चर्मकेविषेही उपयुक्त है ॥ ९ ॥ कृष्णसार रुरु न्यकु रकु शबर रौहिष गोकर्ण पृशत एण ऋश्य रोहित चमर यह बारह मृगके भेद हैं ॥ १० ॥

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरोगवय शशः ॥ इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः[१] ॥ ११ ॥ उन्दुरुर्मूषकोऽप्याखुर्गिरिका बालमूषिका ॥ सरटः कृकलासः स्यान्मुसली गृहगोधिका ॥ १२ ॥

गधर्व शरभ राम सृमर गवय शश यहभी छे मृगभेद है इत्यादिक अर्थात् गन्धर्वादिक शब्द आदि शब्दसें नही कहेहुये वनपोतादिकशब्द और मृगेन्द्रादिक चमरपर्यन्त शब्द और अन्यवर्गमें कहेजावेंगे ऐसे गवादिक गोहस्त्यश्वादिक शब्द पशुजाति सज्ञिक है ॥ ११ ॥ उन्दुरु मूषक आखु यह तीन नाम मूषकके है, गिरिका बालमूषिका यह दो नाम छोटी मूषकजातिके है, सरट कृकलास यह दो नाम गिर्गटके हैं मुसली गृहगोधिका यह दो नाम गृहगोधाके है इसकों छिपकेलीभी कहते है ॥ १२ ॥

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ॥ नीलङ्गुस्तु कृमिः कर्णजलौकाः शतपद्युभे ॥ १३ ॥ वृश्चिकः शूककीटः स्यादलिद्रुणौ तु वृश्चिके ॥ पारावतः कलरवः कपोतोऽथ शशादनः ॥ १४ ॥ पत्री श्येन उलूकस्तु

[१] अधोगन्ता तु खनको वृक पुध्वज उन्दुर ॥ अधोगतृ खनक वृक पुध्वज उंदुर यह पाच नाम मूषकके और पुस्तकोंमें विशेष है सबमिलकर आठ नाम मूषकके है।

वायसारातिपेचकौ¹ ॥ व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः खञ्जरीटस्तु खञ्जनः॥१५॥

लूता तन्तुवाय ऊर्णनाभ मर्कटक यह चार नाम मकरीके हैं तिसमें लूताशब्द स्त्रीलिंग है और शेष समानलिंग हैं नीलंगु कृमि यह दो नाम छोटे छोटे कीडामात्रके हैं कर्ण जलौकस् शतपदी यह दो नाम कानसलाईके हैं इसकों कानखजूराभी कहते हैं यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगवाची हैं ॥ १३ ॥ वृश्चिक शूककीट यह दो नाम केंचुआके हैं इसकों कसरभी कहते हैं यह उर्णादिककों खाता है. अलि द्रुण वृश्चिक यह तीन नाम विच्छूके हैं. पारावत कलरव कपोत यह तीन नाम कवूतरके हैं शशादन ॥ १४ ॥ पत्रिन् श्येन यह तीन नाम वाजपक्षीके हैं. उलूक वायसाराति पेचक यह तीन नाम उल्लूपक्षीके हैं व्याघाट भरद्वाज यह दो नाम भरद्वाज पक्षीके हैं इसकों कुकुडकोंवा (कुंभारकोंवा) भी कहते हैं खंजरीट खंजन यह दो नाम ममोलापक्षीके हैं इसकों ताजवाभी कहते हैं ॥ १५ ॥

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यादथ चाषः किकीदिविः ॥ कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥ दार्वाघाटोऽथ सारङ्गस्तोककश्चातकः समाः ॥ कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥

लोहपृष्ठ कंक यह दो नाम सेतचीलके हैं. चाष किकीदिवि यह दो नाम नीलकंठके हैं. कलिंग भृंग धूम्याट यह तीन नाम खुटकवढैया पक्षीके हैं इसको फंचुहार (मस्तकचूड)भी कहते हैं. शतपत्रक ॥ १६ ॥ दार्वाघाट यह दो नाम कठफोराजीवके हैं इसकों वटफोरा सुतारपक्षीभी कहते हैं. सारंग तोकक चातक यह तीन नाम चातकके हैं इसकों पपीहा कहते हैं. यह तीनों शब्द समान लिंगवाची हैं कृकवाकु ताम्रचूड कुक्कुट चरणायुध यह चार नाम मुरगेके हैं ॥ १७ ॥

चटकः कलविङ्कः स्यात्तस्य स्त्री चटका तयोः ॥ पुमपत्ये चाटकैरस्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥ कर्करेटुः करेटुः स्यात्कृकणक्रकरौ समौ ॥ वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

चटक कलविंक यह दो नाम चिडाके हैं इसकों चिमणीभी कहते हैं उस चिडाकी स्त्री चटका संज्ञिक है तिन दोनों चटक और चटकाकी पुरुषरूप सन्तानमें चाटकैर शब्द होता है और स्त्रीरूपसन्तानमें चटका शब्द वर्त्ते है ॥ १८ ॥ कर्करेटु करेटु यह दो नाम करकेटाके हैं इसकों कंकरेटभी कहते हैं. कृकण क्रकर यह दो नाम करकपक्षीके हैं आपसमें यह दोनोंशब्द समान हैं. वन-

१ दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो निशाटनः ॥

दिवांध कौशिक घूक दिवाभीत निशाटन यह पांच नाम और पुस्तकोंमें उल्लुके विशेष हैं ॥

प्रिय परभृत कोकिल पिक यह चार नाम कोकिलके हैं ॥ १९ ॥

काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः ॥ ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि॑ ॥ २० ॥ द्रोणकाकस्तु काकोलो दात्यूहः कालकण्टकः ॥ आतापिचिल्लौ दाक्षाय्यगृध्रौ कीरशुकौ समौ ॥ २१ ॥

काक करट अरिष्ट बलिपुष्ट सकृत्प्रज ध्वाङ्क्ष आत्मघोष परभृत् बलिभुज् वायस यह दश नाम काकके हैं ॥ २० ॥ द्रोणकाक काकोल यह दो काकके भेद हैं. दात्यूह कालकंटक यह दो नाम जलकाकके हैं इसको डाहद तथा अयकाकभी कहते हैं. आतापिन् चिल्ल यह दो नाम चीलके हैं. दाक्षाय्य गृध्र यह दो नाम गीधके हैं कीर शुक यह दो नाम शुआके हैं यह दोना शब्द आपसमें समान हैं ॥ २१ ॥

क्रुङ्क्रौञ्चोऽथ बक॑ कह्वः पुष्कराह्वस्तु सारसः ॥ कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २२ ॥ कादम्बः कलहंस॑ स्यादुत्क्रोशकुररौ समौ ॥ हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकस॑ ॥ २३ ॥

क्रुञ्च् क्रौंच यह दो नाम टैंकपक्षीके हैं इसको कुरकुचाभी कहते हैं बक कह्व यह दो नाम बगुलाके हैं पुष्कराह्व सारस यह दो नाम सारसके हैं कोक चक्र चक्रवाक रथाङ्ग यह चार नाम चकवाके है रथाङ्गाह्वयनामक इस शब्दका अर्थ इसप्रकार है कि रथाङ्गनाम चक्रके जो नाम है वह ही नाम होंवे जिसके सो रथाङ्गाह्वयनामक है ॥ २२ ॥ कादंब कलहंस यह दो नाम बतकके हैं उत्क्रोश कुरर यह दो नाम कुररीके हैं यह शब्द आपसमें समानलिंग है हंस श्वेतगरुत चक्राङ्ग मानसौकस् यह चार नाम हंसके हैं यहाँ बहुत्वविवक्षामें बहुवचन है ॥ २३ ॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितै॑ सिताः ॥ मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते धार्तराष्ट्राः सितेतरै॑ ॥ २४ ॥ शरारिराटिराडिश्च बलाका बिसकण्ठिका ॥ हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥

और जो कि हंस नाम शरीरकर श्वेत और लाल चोंच तथा चरणोंकर युक्त हों वो यह राजहंसनामिक हैं और जो कि हंस शरीरकर श्वेत और मलीनचोंच चरणोंकर युक्त हो वह मल्लिकाक्षनामिक हैं और जो कि हंस शरीरकर श्वेत और काले चोंच और चरणोंसे युक्त हों वह धार्तराष्ट्र कहावें ॥ २४ ॥ शरारि आटि आडि यह तीन ना...

१स एव च चिरन्तोटी चक्रदृष्टिश्च मंकुरिः ॥ निरंजामिन् एकदृष्टि मौकुली यह तीना नाम और पुस्तकमें पाठके विशेष है।

२पुष्कराह्व यह नाम पद्मपर्यायान्तर है

होता है. ॥३७॥ पोत पाक अर्भक डिंभ पृथुक शावक शिशु यह सात नाम बच्चेके हैं. स्त्रीपुंस मिथुन द्वंद्व यह तीन नाम स्त्रीपुरुषरूप जोडेके हैं तिसमें स्त्रीपुंस शब्द द्विवचन तथा पुंलिंग है और शेष नपुंसक लिंग हैं युग्म युगुल युग यह तीन जोडेके हैं कोई आचार्य द्वंद्वशब्दकाभी युग्मके साथ अन्वय करते हैं ॥ ३८ ॥

समूहनिवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः ॥ स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः ॥ ३९ ॥ समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः ॥ स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥

समूह निवह व्यूह संदोह विसर व्रज स्तोम ओघ निकर व्रात वार संघात संचय ॥ ३९ ॥ समुदाय समुदय समवाय चय गण संहति वृन्द निकुरम्ब कदम्बक यह बाईस नाम समूहके हैं तिसमें संहति शब्द स्त्रीलिंगमें होताहै ॥ ४० ॥

वृन्दभेदाः समैर्वर्गः सङ्घसार्थौ तु जन्तुभिः ॥ सजातीयैः कुलं यूथं तिरश्चां पुंनपुंसकम् ॥ ४१ ॥ पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ॥ स्यान्निकायः पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥ कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे ॥ गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥

॥ इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

और समूहके भेद विशेष हैं सम अर्थात् सजातीय प्राणी वा अप्राणियोंका समूह है वह वर्ग संज्ञिक है. यथा मनुष्यवर्गः शैलवर्गः और सजातीय और विजातीय जन्तुओंका समूह है वह संघ सार्थ संज्ञिक है. यथा पशुसंघ वणिक्सार्थ और सजातीय जन्तुओंका जो समूह है वह कुल संज्ञिक है. यथा विप्रकुल और सजातीय तिर्यक्जातीका जो समूह है वह यूथ संज्ञिक है यूथशब्द पुंनपुंसकलिंग है यथा मृगयूथ ॥ ४१ ॥ और पशुओंका समूह समज संज्ञिक है और अन्य अर्थात् पशुओंसे भिन्नोंका समूह समाज संज्ञिक है. यथा श्रोत्रियसमाज और एक धर्मवालोंका जो समूह है वह निकाय संज्ञिक है यथा श्रोत्रियनिकायः पुंज राशि उत्कर कूट यह चार नाम धान्यादिकोंके ढेरके हैं तिसमें कूटशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ४२ ॥ कापोत शौक मायूर तैत्तिर इत्यादिक शब्द तिन कपोतादिकोंके समूहमें वर्त्ते हैं यथा कपोतोंका समूह कापोत संज्ञिक है शुकोंका समूह शौक संज्ञिक है. और मोरोंका समूह मायूर संज्ञिक है. और तीतरोंका समूह तैत्तिर संज्ञिक है आदिशब्दसें काकादिक जानने योग्य हैं. जो पक्षी मृग घरमें आसक्त अर्थात् खेलनेकेवास्ते पींजराआदिकमें स्थापित किये हैं वह छेक गृह्यक संज्ञिक हैं ४३

इति सिंहादिवर्गः।

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ॥ स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥ स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ॥ प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥

मनुष्य मानुष मर्त्य मनुज मानव नर पुस् पचजन पुरुष पूरुष नृ यह ग्यारह नाम मनुष्यके है तिसमें पुस् आदिक पाच नाम मनुष्यके है तिसमें पुस् आदिक पाच नाम बहुधाकरके पुरुषजातिमेही प्रयुक्त होते हैं ॥ १ ॥ स्त्री योषित् अबला योषा नारी सीमन्तिनी वधू प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला यह ग्यारह नाम स्त्रीके है ॥ २ ॥

[१]विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ॥ प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥ सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी ॥ वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

स्त्रियोंके भेद विशेष है अगना यह एक नाम उत्तम अगोवाली स्त्रीका है भीरु यह एक भयशील डरपोसी स्त्रीका है कामिनी यह एक नाम कामयुक्त स्त्रीका है वामलोचना यह एक नाम सुन्दरनेत्रवाली स्त्रीका है प्रमदा यह एक नाम अत्यन्त कामवेगवाली स्त्रीका है मानिनी यह एक नाम स्नेहपूर्वक क्रोधवाली स्त्रीका है कान्ता यह एक नाम मनोहर स्त्रीका है. ललना यह एक नाम लाडयुक्त स्त्रीका है नितम्बिनी यह एक नाम सुन्दर कमरवाली स्त्रीका है ॥ ३ ॥ सुन्दरी यह एक नाम सुन्दरअगोंवाली स्त्रीका है रमणी यह एक नाम रमणकरानेवाली स्त्रीका है रामा यह एक नाम रमणकरनेवाली स्त्रीका है कोपना भामिनी यह दो नाम क्रोधवाली स्त्रीके है वरारोहा मत्तकाशिनी उत्तमा वरवर्णिनी यह चार नाम अत्यन्त गुणवाली स्त्रीके है ॥ ४ ॥

कृताभिषेका महिषी भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ॥ पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः स्यात्तु कुटुम्बिनी ॥ पुरंध्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥

जिस राजाकी स्त्रीका अभिषेक किया गया हो वह महिषी सञ्ज्ञिक है और अन्य-(विना अभिषेकवाली राजस्त्रियाँ) भोगिनी सञ्ज्ञिक है पत्नी पाणिगृहीती द्वितीया सहधर्मिणी ॥५॥ भार्या जाया दार यह सात नाम विवाहित स्त्रीके है तिसमें दार शब्द पुलिंग और बहुवचनमें होता है. कुटुम्बिनी पुरंध्री यह दो नाम पतिपुत्रादिकवाली स्त्रीके है

१ यहा वरवर्णिनी स्त्रीका लक्षण रुद्रकोशमें लिखा है शीते सुखोष्णसर्वांगी ग्रीष्मे या सुखशीतला ॥ भर्तृभक्ता च या नारी विज्ञेया वरवर्णिनी ॥ १ ॥

सुचरित्रा सती साध्वी पतिव्रता यह चार नाम पतिव्रता स्त्रीके हैं ॥ ६ ॥

कृतसापत्निकाध्यूढाधिविन्नाथ स्वयंवरा ॥ पतिंवरा च वर्याथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥ कन्या कुमारी गौरी तु नग्निकाऽनागतार्तवा ॥ स्यान्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥

कृतसापत्निका अध्यूढा अधिविन्ना यह तीन नाम बहुतसे कियेहुए विवाहवाले पुरुषकी पहिली विवाहिता स्त्रीके नाम हैं. स्वयंवरा पतिंवरा वर्या यह तीन नाम अपनी इच्छाहीसें पतिके वरनेमें उद्युक्त हुई स्त्रीके हैं कुलस्त्री कुलपालिका यह दो नाम कुलवती स्त्रीके हैं ॥ ७ ॥ कन्या कुमारी यह दो नाम पहिली अवस्थामें वर्त्तमान हुई स्त्रीके हैं गौरी नग्निका अनागतार्त्तवा यह तीन नाम नहींदीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं. मध्यमा दृष्टरजस् यह दो नाम प्रथम प्राप्तहुए रजवाली स्त्रीके हैं. तरुणी युवति यह दो नाम मध्यम अवस्थामें प्राप्त हुईस्त्रीके हैं. आपसमें समानलिंग हैं ॥ ८ ॥

समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी ॥ इच्छावती कामुका स्याद्वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥ कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ॥ पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी ॥ १० ॥ स्वैरिणी पांसुला च स्यादशिश्वी शिशुना विना ॥ अवीरा निष्पतिसुता विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥

स्नुषा जनी वधू यह तीन नाम पुत्रादिकोंकी स्त्रियोंके हैं कोई आचार्य वधू यह एक नाम नवीन विवाहितस्त्रीका कहते हैं चिरिंटी सुवासिनी यह दो नाम कुछ प्राप्तहुए यौवनवाली विवाहितस्त्रीका है. इच्छावती कामुका यह दो मैथुन धनादिकोंके चाहनेवाली स्त्रीका है. वृषस्यन्ती कामुकी यह दो नाम मैथुनकेही चाहनेवाली स्त्रीका है ॥ ९ ॥ और जो कि कान्तके चाँहनेवाली स्त्री भर्त्ताके संकेतस्थानको जाती है वह अभिसारिका संज्ञिक है. पुंश्चली धर्षिणी बंधकी असती कुलटा इत्वरी ॥ १० ॥ स्वैरिणी पांसुला यह आठ नाम व्यभिचारिणीके हैं और जो विना बालकके वर्त्तमान है वह अशिश्वी संज्ञिक है और जो कि विनापति पुत्रवाली है वह अवीरा संज्ञिक है विश्वस्ता विधवा यह दो नाम रण्डास्त्रीके हैं यह शब्द दोनों समान हैं ॥ ११ ॥

आलिः सखी वयस्याऽथ पतिवत्नी सभर्तृका ॥ वृद्धा पलिक्नी प्राज्ञी तु प्रज्ञाप्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥ शूद्री शूद्रस्य भार्या स्याच्छूद्रा तज्जातिरेव च ॥ आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥

आलि सखी वयस्या यह तीन नाम सखीके हैं. पतिवत्नी सभर्तृका यह दो नाम

जोवतेहुए भर्त्तारवाली स्त्रीके है वृद्धा पलिकी यह दो नाम बूढी स्त्रीके है प्राज्ञी प्रज्ञा यह दो नाम सब अच्छी तरहसे जाननेवाली स्त्रीका है प्राज्ञा धीमती यह दो नाम बुद्धिमती स्त्रीके है । और जो कि शूद्रकी स्त्री हैं वह विजातीयभी हो परन्तु तबभी शूद्री संज्ञिक है और जो कि शूद्रजाति होकर अन्यकी स्त्रीभी हो वह शूद्रा संज्ञिक है आभीरी महाशूद्री यह दो नाम ग्वालिनीके हैं यह महाशूद्रीशब्द जाति और पुयोगमें समान है अर्थात् यह महाशूद्रीशब्द जाति तथा पुयोगमें ङीप्प्रत्ययान्त होता है यथा [महाशूद्रस्य जातिः महाशूद्री] और [महाशूद्रस्य स्त्री महाशूद्री] इसीप्रकार आभीरीशब्द जानना चाहिये

अर्याणी स्वयमर्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ॥ उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥१४॥ आचार्यानी तु पुंयोगे स्यादर्यी क्षत्रियी तथा ॥ उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥१५॥

अर्याणी अर्या यह दो नाम वैश्यजातिमें उत्पन्न हुई स्त्रीके नाम हैं अर्थात् यह दो नाम उनके हैं जो कि स्वयं तो वैश्यजाति हो और स्त्री जिसकिसीकी हो क्षत्रिया क्षत्रियाणी यह दो नाम उनके हैं जो स्वयं तो क्षत्रिय जाति हो और स्त्री जिसकिसीकी हो उपाध्याया उपाध्यायी यह दो नाम पढानेवाली स्त्रीके हैं और जो कि स्वतःही मंत्रव्याख्या करनेवाली स्त्री है वह आचार्या संज्ञिक है ॥ १४ ॥ और पुयोगमें आचार्यानी शब्द होता है यथा [आचार्यस्य स्त्री आचार्यानी] और तिसीप्रकार अर्यी तथा क्षत्रियी शब्द होते है यथा [अर्यस्य स्त्री अर्यी] संज्ञिक है और [क्षत्रियस्य स्त्री क्षत्रियी] संज्ञिक है उपाध्यायानी उपाध्यायी यह दो नाम पढानेवालेकी स्त्रीके है और जो कि स्त्री स्त्रीपुरुष दोनोंके लक्षण कुच श्मश्रुरूपसे युक्त है वह पोटा संज्ञिक है ॥ १५ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ॥ जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥ स्त्री नग्निका कोटवी स्याद्दूतीसंचारिके समे ॥ कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषायवसनाऽधवा ॥ १७ ॥

वीरपत्नी वीरभार्या यह दो नाम शूरवीरकी स्त्रीके हैं वीरमाता वीरसू यह दो नाम शूरवीरकी माताके हैं जातापत्या प्रजाता प्रसूता प्रसूतिका यह चार नाम प्रसूतास्त्रीके है ॥ १६ ॥ और जो कि नगी स्त्री है यह कोटवी संज्ञिक है दूती संचारिका यह दो नाम दूतीके है और जो कि स्त्री आधी बुढी तथा काषायवस्त्र और विधवा है यह कात्यायनी संज्ञिक है ॥ १७ ॥

सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ॥ असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥ वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवाऽथ सा जनैः ॥ सत्कृता वारमुख्या स्यात्कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

और जो कि दूसरेके घरमें रहनेवाली स्वतंत्र होकर केशप्रसाधनादिक कारीगरी करती है वह सैरंध्री संज्ञिक है और जो कि अवृद्ध स्त्री सेवक होकर अन्तःपुर(राजमहल)में रहती है वह असिक्नी संज्ञिक है ॥ १८ ॥ वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा यह चार नाम वेश्याके हैं और जो कि वेश्या गुणवती होनेसें मनुष्योंने सत्कार की है वह वारमुख्या संज्ञिक है. कुट्टनी शंभली यह दो नाम उसके हैं जो कि पुरुषके साथ पराई स्त्रीकों जोडती है यह दोनों शब्द आपसमें समान हैं ॥ १९ ॥

विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञाऽथ रजस्वला ॥ स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥ ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ॥ श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥

विप्रश्निका ईक्षणिका दैवज्ञा यह तीन नाम शुभ अशुभ लक्षणा कहनेवाली स्त्रीके हैं रजस्वला स्त्री धर्मिणी अवि आत्रेयी मलिनी पुष्पवती ॥ २० ॥ ऋतुमती उदक्या यह आठ नाम रजोवती स्त्रीके हैं रजस् पुष्प आर्त्तव यह तीन नाम स्त्रीके रजके हैं श्रद्धालु दोहदवती यह दो नाम गर्भके वशसें अन्नादिक विशेषकी अभिलाषा करनेवाली स्त्रीके हैं निष्कला विगतार्तवा यह दो नाम हीनरजवाली स्त्रीके हैं ॥२१॥

आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ॥ गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे ॥ पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्विस्तस्या दिधिषुः पतिः ॥ स तु द्विजोऽग्रेदिधिषः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३

आपन्नसत्वा गुर्विणी अन्तर्वत्नी गर्भिणी यह चार नाम गर्भिणी स्त्रीके हैं. गणिकादिकोंके गणोंमें गाणिक्य गार्भिण यौवत शब्द वर्त्ते हैं जैसें गणिकाओंका समूह गाणिक्य संज्ञिक है गर्भिणियोंका समूह गार्भिण संज्ञिक है युवतियोंका समूह यौवत संज्ञिक है ॥ २२ ॥ और जो कि स्त्री दो वार वरीगई है वह पुनर्भू दिधिषू संज्ञिक है और उस दो वार वरीहुईका पति दिधिषु संज्ञिक है और वह दोवार वरी हुई जिसकी कुटुम्बिनी अर्थात् पुत्रादिक पोष्यवर्गवाली है वह द्विज अग्रेदिधिषू संज्ञिक है यहाँ द्विज शब्दसे तीनों वर्णोंका ग्रहण है ॥ २३ ॥

१ कात्यायननें सैरन्ध्रीका लक्षण कहा है—
चतुःषष्टिकलाभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी ।
प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री परिकीर्त्तिता ॥१॥

कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽथ सुभगासुतः ॥ सौभागिनेयः स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥ पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्रीयश्च पितृष्वसुः ॥ सुतो मातृष्वसुश्चैवं वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥

जो कन्यका अर्थात् विना विवाहित स्त्रीसे उत्पन्न हुआ है वह कानीन सज्ञिक है जैसें कर्ण व्यास आदिक. सुभगासुत सौभागिनेय यह दो नाम सुभगापुत्रके है और परस्त्रीका पुत्र है वह पारस्त्रैणेय सज्ञिक है ॥ २४ ॥ और जो पितृष्वसृ अर्थात् पिताकी वहनिका जो पुत्र है वह पैतृष्वसेय पैतृष्वस्रीय सज्ञिक है और इसीप्रकार मातृष्वसृ अर्थात् माताकी वहनिका पुत्र मातृष्वसेय मातृष्वस्रीय सज्ञिक है. वैमात्रेय विमातृज यह दो नाम सौतेले भाईके है ॥ २५ ॥

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ॥ कौलटेरः कौलटेयो भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥ तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ॥ आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्र स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥ आहुर्दुहितरं सर्वेऽपत्य तोकं तयो' समे ॥ स्वजाते त्वौरसोरस्यौ तातस्तु जनक' पिता ॥ २८ ॥

बाधकिनेय बधुल असतीसुत कौलटेर कौलटेय यह पाच नाम व्यभिचारिणीके पुत्रके है और जो कि पतिव्रता भिक्षा माँगनेवाली हो तौ उसका पुत्र कौलटिनेय कौलटेय सज्ञिक है. भाव यह है कि जो कि घरोंकेप्रति भिक्षाकेलिये जाती है न कि जारकेलिये उस कुलटाका पुत्र कौलटिनेय सज्ञिक है और अन्यका कौलटेर सज्ञिक है यह भेद हैं (कुल जनपदे गृहे इतिविश्व) आत्मज तनय सूनु सुत पुत्र यह पाच नाम पुत्रके है यह आत्मज आदिकशब्द स्त्रीलिंगके विषैं वर्त्तमान होकर सब दुहितृ अर्थात्पुत्रीको कहते है. यथा आत्मजा तनया सूनु सुता पुत्री दुहितृ यह छे नाम पुत्रीके हैं और तिन दोनों पुत्र तथा पुत्रीमें अपत्य तोक शब्द वर्त्ते है यह दोनों शब्द समान है औरस्य उरस्य यह दो नाम विवाहितसवर्ण स्त्रीकेविषै अपने सकाशसे उत्पन्नहुए पुत्रमें वर्त्ते है तात जनक पितृ यह तीन नाम पिताके है ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

जनयित्री प्रसूर्माता जननी भगिनी स्वसा ॥ ननान्दा तु स्वसा पत्युर्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥ भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातर' स्युः परस्परम् ॥ प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

जनयित्री प्रसू मातृ जननी यह चार नाम माताके है भगिनी स्वसृ यह दो नाम वहिनिके है और जो पतिकी वहनि है यह ननान्द सज्ञिक है और जो कि पुत्रकी या

पुत्रीकी पुत्री है वह नप्त्री पौत्री संज्ञिक है ॥ २९ ॥ और भ्रातृवर्गकी जो भार्या हैं वह परस्पर यातृ संज्ञिक हैं. प्रजावती भ्रातृजाया यह दो नाम भाईकी स्त्रीके हैं. मातुलानी मातुली यह दो नाम मामाकी स्त्रीके हैं॥३०॥

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः ॥ पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यान्मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥ श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो देवृदेवरौ ॥ स्वस्रीयो भागिनेयः स्याज्जामाता दुहितुः पतिः॥३२॥

पति अथवा पत्नीकी जो माता है वह श्वश्रू संज्ञिक है. और उन दोनोंका पिता श्वशुर संज्ञिक है. पिताका भाई पितृव्य संज्ञिक है. और माताका भाई मातुल संज्ञिक है ॥ ३१ ॥ और पत्नी अर्थात् अपनी विवाहितस्त्रीके जो भाई हैं. वह श्याल संज्ञिक हैं. और पतिके छोटे भाईमें देवृ देवर शब्द वर्त्ते हैं. स्वस्रीय भागिनेय यह दो नाम बहनिके पुत्रके हैं. पुत्रीका जो पति है वह जामातृ संज्ञिक है ॥ ३२ ॥

पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ मातुर्मातामहाद्येवं सपिण्डास्तु सनाभयः ॥३३॥ समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ॥ सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाःसमाः॥३४॥

पितामह पितृपितृ यह दो नाम पिताके पिताके हैं इसको दादाभी कहते हैं. और उस दादाका पिता प्रपितामह संज्ञिक है. और इसीप्रकार माताके पिता दादा मातामह प्रमातामह संज्ञिक हैं जैसे माताके पिता मातामह यह एक नाम नानाका है. और नानाके पिता प्रमातामह संज्ञिक हैं. सपिण्ड सनाभि यह दो नाम सातपुरुषोंकी अवधिपर्यन्त ज्ञातियोंमें वर्त्ते हैं ॥ ३३ ॥ समानोदर्य सोदर्य सगर्भ्य सहज यह चार नाम सगे भाईके हैं. सगोत्र बान्धव ज्ञाति बंधु स्व स्वजन यह छे नाम सगोत्रके हैं ॥ ३४ ॥

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ॥ धवः प्रियः पतिर्भर्ता जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥ अमृते जारजः कुण्डो मृते भर्तरि गोलकः॥ भ्रात्रीयो भ्रातृजो भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ ॥ ३६ ॥

तिनके भाव और समूहमें क्रमसे ज्ञातेय बंधुता शब्द होवे हैं जैसे ज्ञातियोंका भाव ज्ञातेय संज्ञिक है. और बन्धुओंका समूह बन्धुता संज्ञिक है. धव प्रिय पति भर्तृ यह चार नाम पतिके हैं. जार उपपति यह दो नाम मुख्य पतिसे अन्यभर्त्ताके नाम हैं यह दोनों शब्द समान हैं ॥ ३५ ॥ पतिके न मरनेपर जो कि पुत्र जारसे उत्पन्न हुआ है वह कुंड संज्ञिक है. और पतिके मरनेपर जो जारसे उत्पन्न हुआ है वह गोलक संज्ञिक है भ्रात्रीय भ्रातृज यह दो नाम भाईके पुत्रके हैं भ्राता और बहनि यह दोनों भ्रातरौ सं-

ज्ञिक हैं यहां भाई बहनि दोनोंका ग्रहण होनेसे द्विवचन है ॥ ३६ ॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ॥ श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥३७ ॥ दंपती जंपती जायापती भार्यापती च तौ ॥ गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्वं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ यह चार नाम द्विवचनान्तमाताके साथ कहेहुए पितामें वर्त्ते है अर्थात् यह चार नाम मातापिता दोनोंके हैं श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ यह दो नाम द्विवचनान्त शाशसुशरदोनोंके हैं पुत्र और दुहितृ (पुत्री) यह दोनों एक उक्तिमें पुत्रौ संज्ञिक है ॥ ३७ ॥ दम्पती जंपती जायापती भार्यापती यह चार नाम एक उक्तिमें पतिपत्नीके हैं यह शब्द द्विवचनान्त पुल्लिंगमें होते हैं. गर्भाशय जरायु उल्व यह तीन नाम उस चर्मके हैं जिसकरके लिपटाहुआ गर्भ कुक्षिमें रहता है कलल यह एक नाम वीर्य और रुधिरके इकट्ठे होनेका है यह पुनपुसकलिंगमें होता है ॥३८॥

सूतिमासो वैजननो गर्भो भ्रूण इमौ समौ ॥ तृतीयाप्रकृतिः षण्ढः क्लीबः पण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥ शिशुत्वं शैशवं बाल्यं तारुण्यं यौवनं समे ॥ स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं वृद्धसङ्घेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥

सूतिमास वैजनन यह दो नाम प्रसवमासके हैं गर्भ भ्रूण यह दो नाम गर्भके है यह दोनों शब्द समान है तृतीयाप्रकृति षढ क्लीब षड नपुंसक यह पाच नाम नपुंसकके हैं इसकों ही जरा कहते है ॥ ३९ ॥ शिशुत्व शैशव बाल्य यह तीन नाम बालपनके हैं तारुण्य यौवन यह दो नाम तरुणताके हैं यह दोनोंशब्द आपसमें समान है स्थाविर वृद्धत्व वार्द्धक यह तीन नाम वृद्धताके हे तिसमें वार्द्धक शब्द वृद्धोंके समूहमेंभी होता है ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ विस्रसा जरा ॥ स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनंधयी ॥ ४१ ॥ बालस्तु स्यान्माणवको वयस्थस्तरुणो युवा ॥ प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

बालोंका वृद्धपणामें जो शौक्ल्य(पांडुरता) का नाम पलित है विस्रसा जरा यह दो नाम वृद्धताका है उत्तानशया डिंभा स्तनपा स्तनधयी यह चार नाम दूध पीनेवाले बच्चोंके हैं यह शब्द तीनों लिंगमें कहे जांयगे यहां जो स्त्रीलिंगकरके निर्देश है वह स्त्रीमें रूपभेदके दिखानेकेवास्ते है और डिंभशब्द सिंहादिग्रन्थमें कहाभी है परन्तु यहां स्त्रीलिंगमेंभी टाबन्त दिखानेकेवास्ते फिर कहा है ॥ ४१ ॥ बाल माणवक यह दो नाम बालकके हैं वयस्थ तरुण युवा यह तीन नाम जवानके हैं प्रवयस् स्थविर वृद्ध जीन जीर्ण जरत् यह छ नाम बूढेके हैं ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ॥ जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोवरजानुजाः ॥ ४३ ॥ अमांसो दुर्बलश्छातो बलवान्मांसलोंऽसलः ॥ तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

वर्षीयस् दशमिन् ज्यायस् यह तीन नाम अतिवूढेके हैं पूर्वज अग्रिय अग्रज यह तीन नाम बडे भाईके हैं. जघन्यज कनिष्ठ यवीयस् अवरज अनुज यह पांच नाम छोटे भाईके हैं ॥ ४३ ॥ अमांस दुर्बल छात यह तीन नाम निर्बलके हैं. बलवत् मांसल अंसल यह तीन नाम बलवानके हैं तुन्दिल तुंदिभ तुंदिन् बृहत्कुक्षि पिचण्डिल यह पांच नाम बडे पेटवालेके हैं ॥ ४४ ॥

अवटीटोऽवनाटश्चाऽवभ्रटो नतनासिके ॥ केशवः केशिकः केशी वलिनो वलिभः समौ ॥ ४५ ॥ विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ॥ खरणाः स्यात्खरणसो विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥

अवटीट अवनाट अवभ्रट नतनासिक यह चार नाम चपटी नाकवालेके हैं केशव केशिक केशिन् यह तीन नाम सुन्दर केशवालेके हैं. वलिन वलिभ यह दो नाम उसके हैं जिसका कि चर्म बुढापेसें ढीला होजाता है यह दोनों शब्द समान हैं ॥ ४५ ॥ विकलांग अपोगण्ड यह दो नाम स्वभावसें न्यून अंगवालेके हैं. खर्व ह्रस्व वामन यह तीन नाम ठिगनेके हैं खरणस् खरणस यह दो नाम तीखीनाकवालेके हैं. विग्र गतनासिक यह दो नाम नकटेके हैं ॥ ४६ ॥

खुरणाः स्यात्खुरणसः प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ॥ ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात्संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥ स्यादेडे बधिरः कुब्जे गडुलः कुकरे कुणिः ॥ पृश्निरल्पतनौ श्रोणः पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

खुरणस् खुरणस यह दो नाम विकटनासिकावालेके हैं. प्रज्ञु प्रगतजानुक यह दो नाम उसके हैं जिसकि घोंटुओंमें वडा फासला हो. ऊर्ध्वज्ञु ऊंर्ध्वजानु यह दो नाम उसके हैं जिसके कि स्थित होनेपर घोंटू ऊंचे होजावे संज्ञु संहतजानुक यह दो नाम मिलेहुए घुटनेवालेके है ॥ ४७ ॥ एड बधिर श्रवणेन्द्रियसें वर्जितहुये पुरुषके हैं इसकों बहिराभी कहते हैं कुब्ज गडुल यह दो नाम कूबडेके हैं. कुकर कुणि यह दो नाम रोगादिकसें दूषित हाथवालेके हैं इसकों लुंजा कहते हैं पृश्नि अल्पतनु यह दो नाम छोटे अंगवालेके हैं श्रोण पंगु यह दो नाम पंगुलेके हैं. मुंड मुंडित यह दो नाम मुंडितके हैं ॥ ४८ ॥

वलिरः केकरे खोडे खञ्जस्त्रिपु जरावराः ॥ जडुलः कालकः पिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥ अनामयं स्यादारोग्यं चिकित्सा रुक्प्रति-

क्रिया ॥ भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥

बलिर केकर यह दो नाम नेत्रहीन अर्थात् काणाके है खोड खज यह दो नाम लंगडेके है. जराशब्दसें पीछें उत्तानशयादिक खजपर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें होते है जडुल कालक पिप्लु यह तीन नाम देहमें उत्पन्न हुए कृष्णवर्णचिह्नके है इसकों लसाभी कहते है तिलक तिलकालक यह दो नाम उसके है जो कि स्वरूप और वर्णसें काले तिलकीसमान देहमें उत्पन्न हुआ चिन्ह है इसकों तिल कहते है ॥ ४९ ॥ अनामय आरोग्य यह दो नाम नीरोगके है चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया यह दो नाम रोगके दूर करनेके है भेषज औषध भैषज्य अगद जायु यह पाच नाम औषधके है इसकों दवा कहते है अगदके साहचर्यसें जायुशब्दभी पुलिंग है ॥ ५० ॥

स्त्री रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ॥ क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥ स्त्री क्षुत् क्षुतं क्षवः पुंसि कासस्तु क्षवथुः पुमान् ॥ शोफस्तु श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥

रुज् रुजा उपताप रोग व्याधि गद आमय यह सात नाम रोगमात्रके है क्षय शोष यक्ष्मन् यह तीन नाम क्षयरोगके है प्रतिश्याय पीनस यह दो नाम पीनसरोगके हैं ॥ ५१ ॥ क्षुत् क्षुत क्षव यह तीन नाम छींकके है कास क्षवथु यह दो नाम खासीके है यह दोनों शब्द पुलिंग है शोक श्वयथु शोथ यह तीन नाम सूजनके है पादस्फोट विपादिका यह दो नाम विवाईके है ॥ ५२ ॥

किलाससिध्मे कच्छ्वां तु पामपामा विचर्चिका ॥ कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटकः स्त्रियाम् ॥५३॥ व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे नाडीव्रणः पुमान् ॥ कोठो मण्डलकं कुष्ठश्वित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥

किलास सिध्म यह दो नाम सीपरोगके है कच्छ्वा पामन् पामा विचर्चिका यह चार नाम खाजके है यह चारो स्त्रीलिंगवाची शब्द है कडू खर्जू कडूया यह तीन नाम खुजलीके है यह तीनों स्त्रीलिंगवाची शब्द है विस्फोट पिटक यह दो नाम फोडेके है यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगमेंभी होते है॥५३॥ व्रण ईर्म अरुष् यह तीन नाम घावके है तिसमें व्रणशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होता है और शेष नपुंसकलिंगमेंही होतेहै और जो कि घाव सदा गलित रहता है वह नाडीव्रण संज्ञिक है यह शब्द पुलिंग है कोठ मडलक कुष्ठ श्वित्र यह चार नाम कुष्ठरोगके है दुर्नामक अर्शस् यह दो नाम ववासीररोगके हैं॥५४॥

आनाहस्तु विबन्धः स्याद्ग्रहणीरुक् प्रवाहिका ॥ प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥ ५५ ॥ व्या

धिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेहभगंदराः[1] ॥ अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

आनाह निबंध यह दो नाम उस रोगके हैं जिससें कि मल मूत्र रुकजाता है इसकों मलबद्धरोग कहते हैं. ग्रहणीरुज् प्रवाहिका यह दो नाम संग्रहणीरोगके हैं प्रच्छर्दिका वमि वमथु यह तीन नाम वमनरोगके हैं इसकों उलटीभी कहते हैं. तिसमें आदिके दोनों शब्द स्त्रीलिंग हैं और वमथु पुंलिंग है यह तीनों समानार्थवाचक हैं ॥ ५५ ॥ और रोगके भेद हैं विद्रधि यह एक नाम स्त्रीलिंग उदरादिकेकेविषैं गंडभेदका और आदिशब्दसें कपालकर्ण प्रमेह आदिका जाननेयोग्य हैं. ज्वर मेह भगंदर यहभी व्याधिभेद हैं. अश्मरी मूत्रकृच्छ यह दो नाम मूत्रकृच्छ्के हैं यहाँसें लेकर शुक्रशब्दकी अवधिसें पूर्व मूर्च्छितशब्दपर्यन्त जो शब्द हैं वह तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ५६ ॥

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ॥ वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥ ग्लानग्लास्नू आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ॥ आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः समौ पामनकच्छुरौ ॥५८॥

[1] श्लीपदं पादवल्मीकं केशघ्नस्त्विन्द्रलुप्तकः ।

श्लीपद पादवल्मीक यह दो नाम श्लीपदरोगके हैं इसकों वादलभी कहते हैं केशघ्न इंद्रलुप्तक यह दो नाम मस्तिककेशरोगके हैं

रोगहारिन् अगदकार भिषज् वैद्य चिकित्सक यह पांच नाम वैद्यके हैं. वार्त्त निरामय कल्य यह तीन नाम रोगवर्जितके हैं और जो कि रोगसें छूट गया है. वह उल्लाघ संज्ञिक है ॥५७॥ ग्लान ग्लास्नु यह दो नाम रोगादिकके वशसें हर्षवर्जितके हैं आमयाविन् विकृत व्याधित अपटु आतुर अभ्यमित अभ्यान्त यह सात नाम रोगीके हैं पामन कच्छुर यह दो नाम खाजयुक्तके हैं ॥ ५८ ॥

दद्रुणो दद्रुरोगी स्यादर्शोरोगयुतोऽर्शसः ॥ वातकी वातरोगी स्यात्सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥ स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी ॥ उन्मत्त उन्मादवति श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥

दद्रुण दद्रुरोगिन् यह दो नाम दादवालेके हैं और जो कि ववासीरके रोगसें युक्त है वह अर्शस् संज्ञिक है. वातकिन् वातरोगिन् यह दो नाम वातरोगवालेके हैं. सातिसार अतिसारकिन् यह दो नाम अतीसाररोगवालेके हैं ॥ ५९ ॥ क्लिन्नाक्ष चुल्ल चिल्ल पिल्ल यह चार नाम क्लेदयुक्त नेत्रवालेके इसकों चुंधाभी कहते हैं और यह तीनों शब्द चुल्लआदिक क्लेदयुक्त नेत्रमेंभी वर्त्ते हैं उन्मत्त उन्मादवत् यह दो नाम उन्मादवालेके हैं श्लेष्मल श्लेष्मण कफिन् यह तीन कफयुक्तके हैं॥६०

न्युब्जो भुग्ने रुजा वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ ॥ किलासी सिध्मलोऽन्धोऽ-

हृङ्मूर्छाले मूर्तमूर्छितौ ॥ ६१ ॥ शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ॥ मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

जो रोगसें भुग्न अर्थात् टेढा होजाता है वह न्युब्ज संज्ञिक है भाव यह है कि जिसकी रोगसें टेढी पीठ और मुख नीचा हो जाता है उसकों न्युब्ज कहते है वृद्धनाभि तुन्दिल तुन्दिभ यह तीन नाम उसके है जिसकी कि वातादिकसें ऊची टूडी होजाती है किलासिन् सिध्मल यह दो नाम सीपरोगवालेके हैं अध अदृश् यह दो नाम अंधेके है मूर्च्छित यह तीन नाम मूर्च्छितके हैं ॥६१॥ शुक्र तेजस् रेतस् बीज वीर्य इन्द्रिय यह छे नाम वीरजके है मायु पित्त यह दो नाम पित्तके हैं कफ श्लेष्मन् यह दो नाम कफके हैं त्वच् असृग्धरा यह दो नाम चर्मके हैं यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम् ॥ उत्तप्तं शुष्कमांसं स्याद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥ रुधिरेऽसृग्लोहितास्रक्तक्षतजशोणितम् ॥ बुक्काग्रमांसं हृदयं हृन्मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥

पिशित तरस मांस पलल क्रव्य आमिष यह छे नाम मांसके है उत्तप्त शुष्कमांस वल्लूर यह तीन नाम शुके मांसके हैं जिसमें वल्लूर शब्द तीनों लिंगवाची है ॥ ६३ ॥ रुधिर असृज् लोहित अस्र रक्त क्षतज शोणित यह सात नाम रुधिरके है बुक्का अग्रमांस यह दो नाम हृदयके अन्तर्गत कमलाकार मांसभेदके है इसकों कलेजाभी कहते है हृदय हृद् यह दो नाम हृदयास्यग्निप्रदेशके है मेदस् वपा वसा यह तीन नाम चर्बीके है ॥ ६४ ॥

पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या नाडी तु धमनि॰ शिरा ॥ तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गोर्दं किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥ अन्त्रं पुरीतत् गुल्मस्तु प्लीहा पुंस्यथ वल्लसा ॥ स्नायुः स्त्रियां कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥

और जो कि पिछारीकी गल्रेकी नस हे वह मन्या संज्ञिक है नाडी धमनि शिरा यह तीन नाम नाडीके है, तिलक क्लोम यह दो नाम मांसपिण्डविशेषके है इसकों पुप्फुस कहते हैं मस्तिष्क गोर्द यह दो नाम मस्तिकसंभूत घृताकारस्नेहके है इसकों गोद कहते है किट्ट मल यह दो नाम कर्णादिकमे स्थित हुए मैलके है जिसमें मलशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमे होता है ॥ ६५ ॥ अन्त्र पुरीतत् यह दो नाम अन्त्रके हैं इसकों आतभी कहते है गुल्म प्लीहन् यह दो नाम बाँयेकोखमें स्थित हुए मांसपिण्डविशेषके हैं जिसमें प्लीहनशब्द पुलिंगमें होता है कोई प्लीहाशब्द टावन्तभी कहते है वल्लसा स्नायु यह दो नाम अंगमत्यंगोंकी संधियोंके ब-

न्धनरूपनाडीके हैं यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं कालखण्ड यकृत् यह दो नाम दहनीकोखमें स्थितहुए मांसपिण्डके हैं यह दोनों समानलिंग हैं ॥ ६६ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला दूषिका नेत्रयोर्मलम्[1] ॥ मूत्रं प्रस्राव उच्चारावस्करौ शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥ पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्ठाविशौ स्त्रियौ ॥ स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला यह तीन नाम लारके हैं और जो कि नेत्रोंका मल है वह दूषिका संज्ञिक है इसकों कीचडभी कहते हैं मूत्र प्रस्राव यह दो नाम मूत्रके हैं उच्चार अवस्कर शमल शकृत् ॥ ६७ ॥ पुरीष गूथ वर्चस्क विष्ठा विश् यह नौ नाम विष्ठाके हैं तिसमें गूथ वर्चस्क यह दो शब्द पुंनपुंसकलिंग हैं. विष्ठा विश् यह दोनों शब्द स्त्रीलिंग हैं. कर्पर कपाल यह दो नाम कपालके हैं तिसमें कपालशब्द पुंनपुंसकलिंगवाची है. कीकस कुल्य अस्थि यह तीन नाम हड्डके हैं ॥ ६८ ॥

स्याच्छरीरास्थ्नि कंकालः पृष्ठास्थ्नि तु कशेरुका ॥ शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥

[1] नासामलं तु सिंघाणं पिंजूषं कर्णयोर्मलम् ॥ जो कि नाकका मैल है वह सिंघाण संज्ञिक है और जो कि कानोंका मैल है वह पिंजूष संज्ञिक है यह अर्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनोऽथ कलेवरम् ॥ गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥ कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ॥ पादाग्रं प्रपदं पादः पदङ्घ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

और जो कि समस्त शरीरके हड्डोंका पींजरा है वह कंकाल संज्ञिक है और पीठके हड्डमें कशेरुका शब्द वर्त्ते हैं और शिरके हाडमें करोटि शब्द वर्ते है यह शब्द स्त्रीलिंग है बगलके हड्डमें पर्शुका शब्द वर्ते है ॥ ६९ ॥ अंग प्रतीक अवयव अपघन यह चार नाम शरीरके अंगके हैं कलेवर गात्र वपुष् संहनन शरीर वर्ष्मन् विग्रह ॥ ७० ॥ काय देह मूर्त्ति तनु तनू यह बारह नाम शरीरके हैं तिसमें देहशब्द नपुंसक तथा पुंलिंग दोनोंमें होता है और मूर्ति आदिक तीनों स्त्रीलिंगकेविषैं होते हैं. पादाग्र प्रपद यह दो नाम पाँवके अगाडोके हैं. पाद पद् अंघ्रि चरण यह चार नाम पाँवके हैं तिसमें चरणशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ७१ ॥

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ॥ जङ्घा तु प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥ सक्थि क्लीबे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वङ्क्षणः ॥ गुदं त्वपानं पायुर्ना वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

और उन पाँवोंकी जो आसपासकी गाँठें हैं वह घुटिक गुल्फ संज्ञिक है यहाँ गाँठोंको दोहोनेसें द्विवचन है और उन पाँवोंका जो नीचेका प्रदेश है, वह पार्ष्णि-संज्ञिक है यह शब्द पुलिंग है जंघा प्रसृता यह दो नाम जाँघके हैं. जानु उरुपर्वन् अ-ष्ठीवत् यह तीन नाम जानुके है तिसमें अ-ष्ठीवत्शब्द पुनपुंसक लिंगमें होता है ॥७२॥ सक्थि ऊरु यह दो नाम जानुके ऊपरके भागके है तिसमें सक्थि नपुंसकलिंगमें होता है और ऊरु पुलिंग है और उस ऊरुकी सन्धि वंक्षणसंज्ञिक है यह शब्द पुल्लिंगमें होता है गुद अपान पायु यह तीन नाम विष्ठाके निकलनेके द्वारके हैं तिसमें पायुशब्द पुलिंग है और नाभिसें नीचेका भाग है वह वस्तिसंज्ञिक है यह शब्द स्त्रीपुंलिंग दोनोंमें होता है ॥ ७३ ॥

कटो ना श्रोणिफलकं कटिः श्रोणिः ककुद्मती ॥ पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥ कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ॥ स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथावु-पस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥

और जो कमरका फलक है, वह कट-संज्ञिक है यह शब्द पुलिंग है कटि श्रोणि ककुद्मती यह तीन नाम कमरके हैं और दोनों कमरका जो पिछला भाग है वह नितम्बसंज्ञिक है और दोनों कमरका जो अगला भाग है वह जघनसंज्ञिक है ॥ ७४ ॥ और जो कि गड्ढे नितम्बमें स्थित है वह कुकुन्दरसंज्ञिक है कुकुन्दर शब्द स्त्रीपुलिंग दोनोंसें वर्जित है इसमें द्विवचन दो होनेसें अनित्य है स्फिच् कटिप्रोथ यह दो नाम कमरमें स्थितहुए मांसपिण्डोंके है तिसमें स्फिच्शब्द स्त्रीलिंगमें होता है यहां द्विवचन दो होनेसे हैं अगारी कहे जाँयगे जो भग और शिश्न उनमें उपस्थशब्द वर्ते है॥७५॥

भग योनिर्द्वयोः शिश्नो मेढ्रो मेहनशेफसी॥मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥ पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं स्तनौ कुचौ ॥ चूचुकं तु कुचाग्रं स्यान्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥ उरो वत्सं च वक्षश्च पृष्ठं तु चरमं तनोः ॥ स्कन्धो भुजशिरोंऽसोऽस्त्री संधी तस्यैव जत्रुणी ॥ ७८ ॥

भग योनि यह दो नाम भगके हैं तिसमें योनि शब्द दोनों लिंगमें होता है. शिश्न मेढ़ मेहन शेफस् यह चार नाम शिश्नके हैं मुष्क अण्डकोश वृषण यह तीन नाम अण्डकोशके हैं पीठके पासके भागमें त्रिक शब्द वर्ते है, अर्थात् यह एक नाम पीठके बीचके नीचेके भागमें है॥७६॥ पिचण्ड कुक्षि जठर उदर तुन्द यह पांच नाम पेटके हैं स्तन कुच यह दो नाम स्तनोंके हैं चूचुक कुचाग्र यह दो नाम कुचके अग्रभा-

गके हैं क्रोड भुजांतर ॥ ७७ ॥ उरस् वत्स वक्षस् यह पांच नाम छातीके हैं. तिसमें क्रोड शब्द पुंलिंग नहीं है, किन्तु स्त्रीनपुंसकलिंग है जो कि शरीरका पिछिला भाग है वह पृष्ठसंज्ञिक है. स्कन्ध भुजशिरस् अंस यह तीन नाम कन्धाके हैं. तिसमें अंसशब्द पुंनपुंसकलिंगवाची है. उस कन्धेकी जो सन्धि है वह जत्रुसंज्ञिक है ॥ ७८ ॥

बाहुमूले उभे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरधः ॥ मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥ भुजबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्कफोणिस्तु कूर्परः ॥ अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

बाहुमूल कक्ष यह दो नाम कांखोंके हैं. यह दोनों शब्द एकार्थवाचक है. उन कांखोंके नीचेका भाग पार्श्वसंज्ञिक है. यह शब्द पुंनपुंसकलिंग है. मध्यम अवलग्न मध्य यह तीन नाम शरीरके मध्यभागके हैं. तिसमें मध्यशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है. पिछारीके जो दो भुजा तथा बाहुशब्द हैं वह दोनों स्त्रीपुंलिंगमें होते हैं ॥ ७९ ॥ भुज बाहु प्रवेष्ट दोष् यह चार नाम भुजाके हैं. कफोणि कूर्पर यह दो नाम कुहनीके हैं. इसके ऊपरका भाग प्रगण्डसंज्ञिक है और उसके नीचेका भाग प्रकोष्ठसंज्ञिक है॥८०॥

मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः ॥ पञ्चशाखः शयः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥ अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी ॥ मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

मणिबन्धसें लेकर अर्थात् कलाईसे लेके कनगुलीपर्यन्त जो हाथका स्थूल बाहिरका भाग है, वह करभसंज्ञिक है. पंचशाख शय पाणि यह तीन नाम हाथके हैं. तर्जनी प्रदेशिनी यह दो नाम अंगूठेकी पासकी अंगुलीके हैं ॥ ८१ ॥ अंगुली करशाख यह दो नाम अंगुलीमात्रके है अंगुष्ठ प्रदेशिनी मध्यमा अनामिका कनिष्ठा यह पांच नाम एक२ अंगूठेसें लेकर कनगुलीतकके हैं॥८२॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ॥ प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥ अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ॥ पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ ॥ ८४ ॥

पुनर्भव कररुह नख नखर यह चार नाम नखके हैं. इसकों नौ तथा नाखूनभी कहते हैं. तिसमें नखशब्द पुंनपुंसक है और नखरशब्दभी स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है. तर्जनी आदिक तीन अंगुलियोंसहित फैलेहुए अंगूठेमें क्रमसें प्रादेश ताल गोकर्ण शब्द वर्त्ते हैं. जैसें तर्जनीसहित जो फैला हुआ अंगूठा है वह प्रादेशसंज्ञिक है और मध्यमासहित जो फैला हुआ अंगूठा

है वह तालसंज्ञिक है और अनामिकासहित जो फैला हुआ अंगूठा है वह गोकर्णसंज्ञिक है ॥ ८३ ॥ और कनगुलीसहित जो फैला हुआ अंगुष्ठ है वह वितस्ति द्वादशांगुलसंज्ञिक है साहचर्यसे वितस्तिशब्द पुलिंग जानना और फैली हुई अंगुलियोंवाले हाथमें चपेट प्रतल प्रहस्त शब्द वर्तेहै ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ॥ पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिस्तौ युतावञ्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥ प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो मुष्ट्या तु बद्धया॥ सरत्निः स्यादरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

बायें दायें दोनों फैलेहुए हाथ मिलकर संहतलसंज्ञिक है और समस्तकूबडा किया हुआ हाथ प्रसृतिसंज्ञिक है इसको खोंचभी कहते है दो प्रसृति मिलकर अंजलिसंज्ञिक है यह शब्द पुलिंग है ॥ ८५ ॥ फैला है कर जिसमें ऐसे प्रकोष्ठ अर्थात् कोनीसें नीचेके भागमें हस्त शब्द वर्त्ते है और वहही हस्त बंधीहुई मुष्टीसे उपलक्षित हो तौ सरत्निसंज्ञिक है और नहीं है कनगुली जिसकेविषे ऐसी मुष्टिसें उपलक्षित हस्त अरत्नि संज्ञिकहै मुष्ट्या तथा मुष्टिना इन प्रयोगोंकर मुष्टिशब्द स्त्रीपुलिंगवाची जानना चाहिये ॥ ८६ ॥

व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ॥ ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाणे पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥ कण्ठो गलोऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कंधरेत्यपि ॥ कम्बुग्रीवा त्रिरेखा साऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥

तिरछी फैली हुई हाथसहित बाहुओंका जो अन्तर है वह व्याम संज्ञिक है ऊपरकों फैले है भुजा और हाथ जिसके ऐसे पुरुषका जो मान अर्थात् प्रमाण है उसमें पौरुष शब्द वर्ते है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ ८७ ॥ कंठ गल यह दो नाम कंठके है यह ग्रीवाके अग्रभागमें वर्त्ते है ग्रीवा शिरोधि कंधरा यह तीन नाम गुदींके है और जो कि ग्रीवा तीन रेखाओंसें युक्त है वह कंबुग्रीवा है अवटु घाटा कृकाटिका यह तीन नाम ग्रीवा और शिरकी संधिके पिछले भागके है ॥ ८८ ॥

वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ॥ क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥ ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी॥ अधस्ताच्चिबुकं गण्डौ कपोलौ तत्परा हनुः ॥ ९० ॥

वक्त्र आस्य वदन तुंड आनन लपन मुख यह सात नाम मुखके है घ्राण गंधवहा घोणा नासा नासिका यह पाँच नाम नाकके है तिसमें घ्राणशब्द नपुंसकलिंगमें होता है ॥ ८९ ॥ ओष्ठ अधर रदनच्छद दशनवासस् यह चार नाम होठाके नीचेके भागमें

चिवुक शब्द वर्त्ते है. गण्ड कपोल यह दो नाम गालके हैं और उन गालोंसें परें चिवुकके नीचेका भाग हनुसंज्ञिक है. यह शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु पुंलिंगमेंभी होता है ॥ ९० ॥

रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम्॥रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥ ९१ ॥ ललाटमलिकं गोधिरूर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ॥ कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्ष्णः कनीनिका ॥ ९२ ॥

रदन दशन दंत रद यह चार नाम दाँतोंके हैं. तालु काकुद यह दो नाम तालुके हैं. रसज्ञा रसना जिह्वा यह तीन नाम जीभके हैं और होठके जो वायें दायें अन्तके भाग हैं वह सृक्किणी संज्ञिक है. यह नपुंसकलिंगवाचक सृक्किन् शब्दभी होता है ॥ ९१ ॥ ललाट अलिक गोधि यह तीन नाम भालके हैं. इसकों माथा कहते हैं. तिसमें गोधिशब्द पुंलिंगमें होता है. और जो कि नेत्रोंसें ऊपरके भाग हैं वह भ्रूसंज्ञिक है. यह भ्रू दो होनेसें द्विवचनान्त है. यह शब्द स्त्रीलिंग है. और जो कि नाकके ऊपर भौंओंका मध्यभाग है वह कूर्चसंज्ञिक है. यह स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगवाची है और जो नेत्रकी कनीनिका अर्थात् नेत्रके बीचमें कृष्णमंडल है वह तारकासंज्ञिक है ॥ ९२ ॥

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी॥ दृग्दृष्टी चास्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च ॥ ९३ ॥ अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ॥ कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

लोचन नयन नयन नेत्र ईक्षण चक्षुष् अक्षि दृश् दृष्टि यह आठ नाम नेत्रके हैं. अस्रु नेत्राम्बु रोदन अस्र अश्रु यह पांच नाम नेत्रके जलके हैं. इसकों आंसू कहते हैं ॥ ९३ ॥ और जो कि नेत्रोंके अन्त हैं वह अपांगसंज्ञिक है. अपांगकरके देखनेमें कटाक्ष शब्द वर्त्ते है. कर्ण शब्दग्रह श्रोत्र श्रुति श्रवण श्रवस् यह छै नाम कानके हैं. तिसमें श्रुतिशब्द स्त्रीलिंग है ॥ ९४ ॥

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ चिकुरः कुन्तलो वालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥ तद्वृन्दे कैशिकं कैश्यमलकाश्चूर्णकुन्तलाः ॥ ते ललाटे भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

उत्तमांग शिरस् शीर्ष मूर्धन् मस्तक यह पाँच नाम शिरके हैं. तिसमें मूर्द्धन्शब्द पुंलिंग और मस्तकशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है. चिकुर कुन्तल वाल कच केश शिरोरुह यह छै नाम केशके हैं ॥ ९५ ॥ और उनकेशोंके समूहमें कैशिक कैश्य शब्द वर्त्ते हैं. अलक चूर्णकुन्तल यह दो नाम टेढे केशोंके हैं और जो कि अलक ललाटपर लम्बमान हैं वह भ्रमरक

संज्ञिक है काकपक्ष शिखण्डक यह दो नाम बालशिखाके है ॥ ९६ ॥

कवरी केशवेशोऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः ॥ शिखा चूडा केशपाशी व्रतिनस्तु सटा जटा ॥ ९७ ॥ वेणिः प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे॥ पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ॥९८॥ तनूरुहं रोम लोम तद्वृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे ॥ आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥

कवरी केशवेश यह दो नाम केशबंधनकी रचनाके है मोती रस्सी आदिकोंसें बधे हुए केश धम्मिल्लसंज्ञिक है शिखा चूडा केशपाशी यह तीन नाम चौटीके है सटा जटा यह दो नाम व्रतवालेकी चौटीके हैं ॥ ९७ ॥ वेणि प्रवेणी यह दो नाम सर्पाकार रचितकेशवेशके है शीर्षण्य शिरस्य यह दो नाम निर्मल केशमें वर्त्ते है कचपर्यायसें परे पाश पक्ष हस्त यह तीनों शब्द कलापार्थ अर्थात् केशसमूहवाची है जैसें कचपाश केशपाश केशपक्ष कुन्तलहस्त॥९८॥ तनूरुह रोमन् लोमन् यह तीन नाम रोमके है पुरुषके मुखपर उन रोमोंकी वृद्धि होतेमते श्मश्रु शब्द वर्त्ते है इसको डाढी कहते है आकल्प वेष नेपथ्य प्रतिकर्मन् प्रसाधन यह पाँच नाम अलंकृतकी शोभाके है ॥ ९९॥

दशैते त्रिष्वलंकर्ताऽलंकरिष्णुश्च मण्डितः ॥ प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥ विभ्राड् भ्राजिष्णुरोचिष्णू भूषणं स्यादलंक्रिया ॥ अलंकारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥ मण्डनं चाथ मुकुटं किरीटं पुंनपुंसकम् ॥ चूडामणिः शिरोरत्नं तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥

जो कि अगारी कहे जायँगे यह दश शब्द तीनों लिंगमें होते है अलंकर्तृ अलंकरिष्णु यह दो नाम अलंकार करनेवालेके है मंडित प्रसाधित अलंकृत भूषित परिष्कृत यह पाँच नाम अलंकार कियेहुएके है॥१००॥ विभ्राज् भ्राजिष्णु रोचिष्णु यह तीन नाम अतिशयकरके शोभायमानके है भूषण अलंक्रिया यह दो नाम भूषणक्रियाके है अलंकार आभरण परिष्कार विभूषण ॥ १०१ ॥ मंडन यह पाच नाम अलंकार गहनेके है मुकुट किरीट यह दो नाम मुकुटके है तिसमें किरीटशब्द पुंनपुंसक दोनों लिंगवाची है चूडामणि शिरोरत्न यह दो नाम शिरोमणिके है हारके मध्यमें स्थितहुआ मणि तरलसंज्ञिक है इसको पदक कहते है१०२॥

बालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ कर्णिका तालपत्रं स्यात्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥ ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं स्याल्ललन्तिका ॥ स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥

वालपाश्या पारितथ्या यह दो नाम सीमन्तभूषणके हैं पत्रपाश्या ललाटिका यह दो नाम ललाटभूषणके हैं. इसकों वन्दीवेना आदिक कहते हैं. कर्णिका तालपत्र यह दो नाम कर्णभूषणके हैं. इसकों कर्णफूल कहते हैं. कुंडल कर्णवेष्टन यह दो नाम कुंडलके हैं ॥ १०३ ॥ ग्रैवेयक कंठभूषा यह दो नाम गुदीके गहनेके हैं. लंबन ललंतिका यह दो नाम नाभीपर्यन्त लंबी कंठीके हैं. और जो कि नाभिपर्यन्त लंबी कंठी सुवर्णोंसें वनी हो तौ वह मालम्बिका संज्ञिक है और यदि मोतियोंसें बनी हो तौ उरःसूत्रिका संज्ञिक है ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ॥ हारभेदा यष्टिभेदाद्गुच्छगुच्छार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥ अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका॥ सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥ आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम्॥केयूरमङ्गदं तुल्ये अङ्गुलीयकमूर्मिका १०७॥

हार मुक्तावली यह दो नाम मुक्ताहारके हैं. और यदि यह मुक्तावली सौ लडवाली होवे तौ देवच्छदसंज्ञिक है. लडोंके भेदसें हारभेद हैं. जैसें गुच्छ यह एक नाम वत्तीस लडवाले हारका है. गुच्छार्ध यह एक नाम चौवीश लडवाले हारका है. गोस्तन यह एक नाम चार लडवाले हारका है ॥ १०५ ॥ अर्धहार यह एक नाम वारह लडवाले हारका है. माणव यह एक नाम वीश लडवाले हारका है. एकावली यह एक नाम एक लडवाले हारका है और जो कि एकावली सत्ताईश मोतियोंसें वनाई हुई है वह नक्षत्रमाला संज्ञिक है ॥ १०६ ॥ आवापक पारिहार्य कटक वलय यह चार नाम कलाईके गहनेके हैं. इसकों पौंचीभी कहते हैं. तिसमें वलयशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है. केयूर अंगद यह दो नाम वाजूवन्दोंके हैं. यह समानलिंग हैं. अंगुलीयक ऊर्मिका यह दो नाम अंगुलीके आभरणके हैं इसकों अंगूठीभी कहते हैं ॥ १०७ ॥

साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा स्यात्कङ्कणं करभूषणम् ॥ स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥१०८॥ क्लीबे सारसनं चाथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु ॥ पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥ हंसकः पादकटकः किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ॥ त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिर्दश त्रिषु ॥ ११० ॥

और जो कि अंगूठी रामनामादिक अक्षरोंसहित है, वह अंगुलिमुद्रा संज्ञिक है. कंकण करभूषण यह दो नाम कंकणके हैं. स्त्रीकी कमरके आभूषणमें मेखला कांची

१ एकयष्टिर्भवेत्कांची मेखला त्वष्टयष्टिका ॥ रसना षोडश ज्ञेया कलापः पंचविंशकः ॥ १ ॥

सप्तकी रशना ॥ १०८ ॥ सारसन यह पाँच नाम वर्त्ते हे तिसमें सारसन शब्द नपुसकलिंगमें होवे है और पुरुषकी कमरके आभूषणमें शृंखल शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है पादांगद तुलाकोटि मजीर नूपुर ॥ १०९ ॥ हंसक पादकटक यह छै नाम नूपुरके हैं इसको पाँयजेव (बिछुआ, पैजनी) भी कहते है तिसमें नूपुरशब्द पुनपुसकलिंगमें होताहै किंकिणी क्षुद्रघंटिका यह दो नाम घुगुरुओंके है त्वच् फल कृमि रोमन यह चार नाम वस्त्रकी योनि अर्थात् कारणके हे वस्त्रके कारणको चार प्रकारका होनेसें वस्त्रभी चार प्रकारका होता है क्षौमादि इस शब्दके विना वाल्क आदिक निष्प्रवाण्यन्त दश शब्द तीनो लिंगमें होते है ॥ ११० ॥

वाल्कं क्षौमादि फालं तु कार्पासं वादरं च तत् ॥ कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्कवं मृगरोमजम् ॥ १११॥ अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ॥ तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥

जो क्षौमादिक वस्त्र हे वह वाल्कसंज्ञिक हे भाव यह है क्षुमा अतसीका बनाहुआ वस्त्र आदिशब्दसें सन आदिकका बनाहुआ वस्त्र वाल्कसंज्ञिक है फाल कार्पास वादर यह तीन नाम कपासके बनेहुए वस्त्रके है कृमियोंकी गुदासें निकले हुए कुड्मलाकार कोशकर उत्पन्न कियाहुआ वस्त्र कौशेय संज्ञिक है और मृगरोमसें उत्पन्न हुआ वस्त्र राकव संज्ञिक है यहाँ मृगशब्दकरके पशुमात्र जानलैना ॥ १११ ॥ अनाहत निष्प्रवाणि तन्त्रक नवाबर यह चार नाम नूतनवस्त्रके है इसको कोरावस्त्र कहते हैं और जो धुएहुए वस्त्रोका जोडा है वह उद्गमनीय संज्ञिक है ॥ ११२ ॥

पत्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्यं महाधनम् ॥ क्षौमं दुकूलं स्याद्द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥ ११३ ॥ स्त्रिया बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्त्रयोर्द्वयो[1] ॥ दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

और जो धोयाहुआ रेशमवस्त्र है वह पत्रोर्ण संज्ञिक है और जो कि बहुतसे मोलका वस्त्रादिक है वह महाधन संज्ञिक है यह शब्द तीनों लिंगमें होताहै क्षौम दुकूल यह दो नाम पाटाम्बरके हैं निवीत प्रावृत यह दो नाम प्रावृतवस्त्रके हैं इसको गोट मगजीभी कहते है यह शब्द तीनों लिंगमें होते है ॥ ११३ ॥ और वस्त्रके दोनों वस्त अर्थात् अन्तभाग छोरोंमें दशा शब्द वर्त्ते हे यह शब्द स्त्रीलिंग और बहुवचनमें होता है, दैर्घ्य आयाम आरोह यह तीन नाम वस्त्रादिककी लंबाईके हे परिणाह वि-

१ तिसमें च शब्दसें तंत्रकभी तीनों लिंगमें होता है

शालता यह दो नाम वस्त्रादिककी चौंडाईके हैं ॥ ११४ ॥

पटच्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तककर्पटौ ॥ वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥ सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ॥ निचोलः प्रच्छदपटः समौ रल्लककम्बलौ ११६ ॥

पटच्चर जीर्णवस्त्र यह दो नाम पुराने वस्त्रके हैं. नक्तक कर्पट यह दो नाम पुराने कपडेके टुकडेके हैं. यह शब्द दोनों आपसमें समान हैं. वस्त्र आच्छादन वासस् चैल वसन अंशुक यह छे नाम वस्त्रके हैं ॥ ११५ ॥ सुचेलक पट यह दो नाम सुन्दरवस्त्रके हैं. तिसमें पटशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगवाचक है. वराशि स्थूलशाटक यह दो नाम मोटे वस्त्रके हैं. निचोल प्रच्छदपट यह दो नाम उस वस्त्रके हैं. जिसकरकें कि वीणा डोलिकादिक ढके जाते हैं. रल्लक कंवल यह दो नाम कंवलके हैं. आपसमें समान लिंग है ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंशुके ॥ द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥ संव्यानमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ॥ नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

अन्तरीय उपसंव्यान परिधान अधोंशुक यह चार नाम अधोवस्त्रके हैं. प्रावार उत्तरासंग बृहतिका ॥ ११७ ॥ संव्यान उत्तरीय यह पाँच नाम उस वस्त्रके हैं, जो कि कन्धेपर रक्खा जाता है. इसको दुपट्टाभी कहते हैं. तिनमें प्रावार उत्तरासंग यह दो समानलिंग हैं चोल कूर्पासक यह दो नाम स्त्रियोंके कुचोंके ढकनेवाले वस्त्रके हैं इसको चोलीभी कहते हैं. तिनमें कूर्पासक शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होताहै. जाड़ा और पवनका निवारण होता है जिसमें ऐसे ढकनेवाले वस्त्रमें नीशार शब्द वर्ते हैं इसको रजई (लिहाफ दुलाई) भी कहते हैं

अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् ॥ स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥ अस्त्री वितानमुल्लोचो दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ॥ प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥

और जो कि उत्तम स्त्रियोंका अर्धोरुक वस्त्र है अर्थात् उत्तम स्त्रियोंके आधे ऊरुपर जो वस्त्र स्थित है, वह चंडातकसंज्ञिक है. इसको परकर (लहंगा)भी कहते हैं. तिसमें चण्डातक पुंनपुंसकलिंगमें होता है और जो कि वस्त्रादिक पादाग्रपर्यन्त प्राप्त होताहै वह आप्रपदीनसंज्ञिक है. यह तीनों लिंगमें होताहै.इसको नीचा लहंगा कहते हैं॥११९॥ वितान उल्लोच यह दो नाम घाम आदिकोंके दूर करनेकेलिये उपर बांधे हुए वस्त्रके हैं इसको चंदोवा तथा चांदनीभी कहते हैं।

तिसमें वितानशब्द पुनपुंसकलिंग है दूष्य आदिक वस्त्रके घरमे वर्त्ते है इसकों डेरा (राहुटी-तंबू)भी कहते है प्रतिसीरा जवनिका तिरस्करिणी यह तीन नाम जवनिकाके है इसकों पडदा (कनात)भी कहते है ॥१२०॥

परिकर्माङ्गसंस्कारः स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ॥ उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥ स्नानं चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकोऽथ प्रबोधनम् ॥ अनुबोधः पत्रलेखा पत्राङ्गुलिरिमे समे ॥ १२२ ॥

परिकर्मन् अंगसंस्कार यह दो नाम कुंकुमादिककर शरीरके संस्कारमात्रके है मार्ष्टि मार्जना मृजा यह तीन नाम प्रोक्षणादिककर देहके निर्मल करनेके है इसकों पोंछनाभी कहते है उद्वर्त्तन उत्सादन यह दो नाम पिष्टादिककर शरीर मलके दूर करनेके है यह दोनों समान है आप्लाव आप्लव॥१२१॥ स्नान यह तीन नाम स्नानके है चर्चा चार्चिक्य स्थासक यह तीन नाम चन्दनादिककर शरीरके विलेपविशेषके है प्रबोधन अनुबोध यह दो नाम गतगन्धका फिर गन्धप्रकट करनेके है जैसे कस्तूरी आदिकका मद्यादिकसे गंध प्रकट होता है पत्रलेखा पत्रांगुलि यह दो नाम कस्तूरी केशरादिककर कपोल आदि अंगोंकेविषे रचीहुई पत्रवल्लीके है यह कलिंगादिक देशोंमें प्रसिद्ध है यह दोनों समान लिंग है ॥ १२२ ॥

तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ॥ द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियामथ कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने ॥ रक्तसंकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

तमालपत्र तिलक चित्रक विशेषक यह चार नाम ललाटपर कस्तूरी आदिककर बनायेहुए तिलकके है तिसमें दूसरा शब्द तिलक और चौथा शब्द विशेषक यह स्त्रीलिंगमें नहीं होते है, किन्तु पुनपुंसकलिंगमें होते है कुंकुम ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्मन् अग्निशिख वर बाह्लीक पीतन रक्त संकोच पिशुन धीर लोहितचन्दन यह ग्यारह नाम कुंकुमके है ॥ १२४ ॥

लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तो द्रुमामयः ॥ लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञमथ जायकम् ॥ १२५ ॥ कालीयकं च कालानुसार्यं चाथ समार्थकम् ॥ वंशकागुरुराजार्हलोहंकृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥ कालागुर्वगुरु स्यात्तन्मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ॥ यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥ बहुरूपोऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ॥ तुरुष्कः पिण्डकः सिह्लो यावनोऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥ श्रीवासो वृकधूपोऽपि

१ श्रीसंज्ञ यह लक्ष्मीपर्यायनामक है

श्रीवेष्टसरलद्रवौ ॥ मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चाथ कोलकम् ॥ १२९ ॥ कक्कोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम् ॥ घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

लाक्षा राक्षा जतु याव अलक्त द्रुमामय यह छे नाम लाखके हैं. लवंग देवकुसुम श्रीसंज्ञ यह तीन नाम लौंगके हैं जायक ॥ १२५ ॥ कालीयक कालानुसार्य यह तीन नाम पीतचन्दनके हैं. वंशिक अगुरु राजार्ह लोह कृमिज जोंगक ॥ १२६ ॥ कालागुरु यह सात नाम अगरके हैं. जो कि अगरमल्लिगन्धि है वह मंगल्या संज्ञिक है. यक्षधूप सर्जरस राल सर्वरस ॥ १२७ ॥ बहुरूप यह पांच नाम रालके हैं. वृकधूप कृत्रिमधूपक यह दो नाम अनेक पदार्थोंकी बनाई हुई धूपके हैं. तुरुष्क पिण्डक सिल्ह यावन यह चार नाम लोहवानके हैं. पायस ॥ १२८ ॥ श्रीवास वृकधूप श्रीवेष्ट सरलद्रव यह पांच नाम देवदारुधूपके हैं. मृगनाभि मृगमद कस्तूरी यह तीन नाम कस्तूरीके हैं. कोलक ॥ १२९ ॥ कंकोल कोशफल यह तीन नाम कंकोलके हैं. कर्पूर घनसार चंद्रसंज्ञ सिताभ्र हिमवालुका यह पांच नाम कपूरके हैं तिसमें कर्पूरशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ १३० ॥

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम् ॥ तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥ तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ॥ कुचन्दनं चाथ जातीकोशजातीफले समे ॥ १३२ ॥

गंधसार मलयज भद्रश्री चन्दन यह चार नाम चन्दनके हैं तिसमें चन्दन पुंनपुंसकलिंगमें होता है. तैलपर्णिक यह एक नाम उज्वल और शीतलचन्दनका है. गोशीर्ष यह एक नाम कमलकीसमान गंधवाले चन्दनका है. हरिचन्दन यह एक नाम कपिलवर्णचन्दनका है यह शब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ १३१ ॥ तिलपर्णी पत्रांग रंजन रक्तचन्दन कुचन्दन यह पांच नाम लालचन्दनके हैं. जातीकोश जातीफल यह दो नाम जायफलके हैं यह शब्द समानलिंग हैं ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकक्कोलैर्यक्षकर्दमः ॥ गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥ चूर्णानि वासयोगाः स्युर्भावितं वासितं त्रिषु ॥ संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् १३४

कर्पूर अगर कस्तूरी कंकोल इन्होंके समभाग करके इकट्ठा कियाहुआ लेपविशेष यक्षकर्दम संज्ञिक है. गात्रानुलेपनी वर्ति वर्णक विलेपन यह चार नाम शरीरके अनुलेप योग्य पीसेहुये तथा घिसेहुये सुगन्धित द्रव्यके हैं इसको विलेपन कहते हैं. कोई उबटन बोलते हैं ॥ १३३ ॥ चूर्ण वासयोग यह दो नाम

१ चंद्रसंज्ञ चंद्रपर्यायनामक है

पटवासादि चूर्णमात्रके है भावित वासित यह दो नाम गधद्रव्यसे सुगन्धितहुए वस्तुके है यह शब्द तीनों लिंगमें होते है गध माला धूपादिकोंकर जो सस्कार है वह अधिवासन संज्ञिक है ॥ १३४ ॥

माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि केशमध्ये तु गर्भकः ॥ प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरो न्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥ प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत् ॥ यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरसि शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥

माल्य माला स्रज् यह तीन नाम मालाके है मस्तिकपर केशके मध्यमें धारण की हुईमाला गर्भक सज्ञिक है और जो कि माला शिखाकेविषैं लम्बमान है वह प्रभ्रष्टक सज्ञिक है.और जो कि माला अगारी ललाटपर्यन्त धारण की हुई है वह ललामक सज्ञिक है ॥ १३५ ॥ और जो कि माला कठसे सीधी लम्बमान है वह प्रालम्ब सज्ञिक है और जो कि माला छातीपर तिरछीपडी हुई है वह वैकक्षिक सज्ञिक है आपीड शेखर यह दो नाम शिखाकेविषै धारण की हुई मालामात्रके है ॥ १३६ ॥

रचना स्यात्परिस्पन्द आभोग. परिपूर्णता ॥ उपधानं तूपबर्ह. शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥ शयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्का. खट्वया समा॰ ॥ गेन्दुक कन्दुको दीप प्रदीप. पीठमासनम् ॥ १३८ ॥

रचना परिस्पन्द यह दो नाम माला-आदिककी रचना है आभोग परिपूर्णता यह दो नाम समस्त उपचारवाली परिपूर्णताके है उपधान उपबर्ह यह दो नाम तकियाके है. शय्या शयनीय ॥ १३७ ॥ शयन यह तीन नाम शय्याके हैं मच पर्यक पल्यक खट्वा यह चार नाम खाटके है इसकों पलगभी कहते है गेन्दुक कन्दुक यह दो नाम गेंदके है दीप प्रदीप यह दो नाम दीपकके है. पीठ आसन यह दो नाम आसनके है॥१३८॥

समुद्गक. संपुटकः प्रतिग्राह॰ पतद्ग्रहः॥ प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवासक॰ ॥ १३९ ॥ दर्पणे मुकुरादर्शौ व्यजनं तालवृन्तकम् ॥

इति मनुष्यवर्ग॰ ॥ ६ ॥

समुद्गक सपुटक यह दो नाम सपुटके है इसको डब्बाभी कहते है प्रतिग्राह पतद्ग्रह यह दो नाम पतद्ग्रहके है इसको पीकदानभी कहते हैं प्रसाधनी कंकतिका यह दो नाम कघीके है पिष्टात पटवासक यह दो नाम वकुचेके है इसको बुकाभी कहते है॥१३९॥ दर्पण मुकुर आदर्श यह तीन नाम दर्पणके है व्यजन तालवृतक यह दो नाम बीजनाके है इतिमनुष्यवर्ग।

सततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ॥ वंशोऽन्ववाय सतानो वर्णा स्युर्ब्राह्मणादय॰ ॥ १ ॥ विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ॥ राज-

बीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥

सन्तति गोत्र जनन कुल अभिजन अन्वय वंश अन्ववाय सन्तान यह नवनाम वंशके हैं तिसमें सन्ततिशब्द स्त्रीलिंगवाचक है और ब्राह्मणादिक वर्ण संज्ञिक हैं ॥ १॥ विप्र क्षत्रिय विश् शूद्र यह चारो वर्ण चातुर्वण्य संज्ञिक कहे हैं. राजबीजिन् राजवंश्य यह दो नाम राजवंशमें उत्पन्न हुएके हैं बीज्य कुलसंभव यह दो नाम कुलमात्रमें उत्पन्न हुएके हैं ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः॥ ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥ आश्रमोऽस्त्री द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ॥ विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः॥ ४॥

महाकुल कुलीन आर्य सभ्य सज्जन साधु यह छे नाम सज्जनके हैं. ब्रह्मचारिन् यह एक नाम कर्म मन वाणीसे सब अवस्थामें सदैव मैथुनके त्यागनेवालेका है. गृहिन् यह एक नाम घरमें रहकर स्त्रीपुत्रादिकोंका संग्रह रखनेवालेका है. वानप्रस्थ यह एक नाम वनमें रहकर तपस्या करनेवालेका है. भिक्षु यह एक नाम उसका है जो कि समस्तको त्यागि ज्ञानात्माकर ब्रह्मोपासक है. इन चारोंमें आश्रम शब्द वर्त्ते है. यह शब्द पुंनपुंसकलिंगवाचक है. द्विजाति अग्रजन्मन भूदेव वाडव विप्र ब्राह्मण यह छे नाम ब्राह्मणमात्रके हैं. और जो कि ब्राह्मण यज्ञादिकोंसे युक्त है वह षट्कर्मन संज्ञिक है ॥ ३ ॥ ४ ॥

विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः ॥ धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः॥५॥ धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ॥ दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

विद्वस् विपश्चित् दोषज्ञ सत् सुधी कोविद बुध धीर मनीषिन् ज्ञ प्राज्ञ संख्यावत् पण्डित

---

१ इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा॥ प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः षटकर्मा विप्रउच्यते ॥ १ ॥

१ मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि॥ वैशेषिके स्यादौलूक्यः सौगतः शून्यवादिनि १ नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक आर्हकः॥ चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्ये सांख्यकापिलौ२

१ मीमांसक जैमिनीय यह दो नाम मीमांसाशास्त्रके जाननेवालेके हैं. वेदान्तिन् ब्रह्मवादिन् यह दो नाम वेदान्तशास्त्रके जाननेवालेके हैं वैशेषिक औलूक्य यह दो नाम द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायअभाव इन सात पदार्थोंके कहनेवालेके हैं. सौगत शून्यवादिन् यह दो नाम जगत्कारण शून्य है ऐसा जाननेवाले नास्तिकके हैं ॥ १ ॥ नैयायिक अक्षपाद यह दो नाम न्यायशास्त्रके जाननेवालेके हैं. स्याद्वादिक आर्हक यह दो नाम मोक्ष है वा नहीं है इसप्रकार कहनेवालेके हैं. चार्वाक लौकायतिक यह दो नाम देहात्मवादी बौद्ध मतवालेके हैं. सांख्य कापिल यह दो नाम सांख्यशास्त्रके जाननेवालेके हैं॥२॥

कवि॥५॥धीमत् सूरि कृतिन् कृष्टि लब्धवर्ण विचक्षण दूरदर्शिन् दीर्घदर्शिन् यह बाईश नाम पण्डितके है श्रोत्रिय छान्दस यह दो नाम वेदपाठिके है यह शब्द आपसमें सधीन है ॥ ६ ॥

उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः ॥ मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥ ७ ॥ यष्टा च यजमानश्च स सोमवति दीक्षितः॥ इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥

उपाध्याय अध्यापक यह दो नाम वेदादिकके पढानेवालेके है निषेक (गर्भाधान) आदिशब्दसें पुंसवनादिक इन कर्मोंके करनेवाला जो पित्रादिक है वह गुरु संज्ञिक है मन्त्र वेद तिसकी व्याख्या करनेवाला आचार्य संज्ञिक है और जो कि यज्ञके विषें ऋत्विजोंको आज्ञा करता है वह व्रतिन्॥ ७॥ यष्टृ यजमान संज्ञिक है. और जो कि यजमान सोमवाले यज्ञमें ऋत्विजोंको आज्ञा करे वह दीक्षित संज्ञिक है इज्याशील यायजूक यह दो नाम यजनशीलके हे और जो कि विधिसें यज्ञकर्त्ता है वह यज्वन् संज्ञिक है॥८॥

स गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः सोमपीथी तु सोमपाः ॥ सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥ अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु यः ॥ लब्धानुज्ञः समावृत्तः सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥

और जो कि बृहस्पतिकी इष्टिकरकें यज्ञ करता है वह स्थपति संज्ञिक है सोमपीथिन् सोमपा यह दो नाम सोमयाजीके है और जिसनें सर्वस्वदक्षिण यज्ञ यजन किया है वह सर्ववेदस् संज्ञिक है ॥ ९ ॥ और जो कि शिक्षादिक अंगोंसहित प्रवचन वेदमें अध्ययन करनेवाला है वह अनूचान संज्ञिक है और जिस अनूचाननें गुरुके सकाशसें गृहस्थादिक अन्यआश्रमकी प्राप्तिकेलिये आज्ञा पाई है वह समावृत्त संज्ञिक है अभिषव स्नान करनेपर यज्ञादिक करनेवाला सुत्वन् संज्ञिक है ॥ १० ॥

छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥ सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवश्चितवानग्निमग्निचित् ॥ पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥

छात्र अन्तेवासिन् शिष्य यह तीन नाम शिष्यके हैं शैक्ष प्राथमकल्पिक यह दो नाम आरम्भ किया है अध्ययन जिन्होंने ऐसे बटुओंके नाम है एकही ब्रह्मव्रत आचार है जिनका ऐसे एकशाखाध्यायी ब्रह्मचारी परस्पर सब्रह्मचारिन् संज्ञिक है ॥ ११ ॥

१ उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः॥ साङ्गं च सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ १ ॥

एकही है गुरु जिनका ऐसे ब्रह्मचारी परस्पर सतीर्थ्य संज्ञिक हैं. और जो कि अग्निको संचय करता है वह अग्निचित् संज्ञिक है पारंपर्य अर्थात् लोकपरंपराकर जो उपदेश है उसमें ऐतिह्य इतिह यह दो शब्द वर्त्ते हैं इसमें इतिहशब्द अव्ययसंज्ञिक है॥१२॥

उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ॥ यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥ पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः॥ एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

और जो कि प्रथम ज्ञान है वह उपज्ञा संज्ञिक है और जानकरके जो आरम्भ है वह उपक्रम संज्ञिक है. जैसें ग्रन्थका उपक्रम अर्थात् ज्ञानपूर्वक आरम्भ है. यज्ञ सव अध्वर याग सप्ततन्तु मख क्रतु यह सात नाम यज्ञके हैं॥ १३ ॥ पाठ होम अतिथियोंकी सेवा तर्पण बलि यह ब्रह्मयज्ञादिनामक पांचो महायज्ञ संज्ञिक हैं. तिसमें पाठ अर्थात् विधिपूर्वक वेदादिकका पठन है वह ब्रह्मयज्ञ है. और होम अर्थात् वैश्वदेव होम है वह देवयज्ञ है. और अतिथियोंकी सपर्या अर्थात् घरआये हुओंका अन्नादिकसें तोषण है वह मनुष्ययज्ञ है. तर्पण अर्थात् पित्रोंकी अन्नोदकसें तृप्ति करना है वह पितृयज्ञ है. और बलि अर्थात् बलिहरण है वह भूतयज्ञ है ॥ १४ ॥

१ अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्॥ होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥१॥

समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः ॥ आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥ प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात्सदस्या विधिदर्शिनः ॥ सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥

समज्या परिषद् गोष्ठी सभा समिति संसद् आस्थानी आस्थान सदस् यह नौ नाम सभाके हैं तिसमें आस्थानशब्द नपुंसकलिंग है और सदस् स्त्री तथा नपुंसक दोनों लिंगमें होता है ॥ १५ ॥ हविर्गेह अर्थात् यज्ञके घृतके घरसें जो पूर्वदेशमें सदस्यादिकोंका घर है वह प्राग्वंश संज्ञिक है कोई यज्ञशालाके पूर्वपश्चिम खम्बोंपर रक्खेहुए दीर्घकाष्ठकों कहते हैं. और जो यज्ञकर्ममें विधि अर्थात् वेदोक्तक्रियाकलापकों देखते हैं वह सदस्य संज्ञिक हैं सभासद् सभास्तार सभ्य सामाजिक यह चार नाम सभासदोंके हैं ॥ १६ ॥

अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात् ॥ आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७॥ वेदिः परिष्कृता भूमिः समे स्थण्डिलचत्वरे॥ चषालो यूपकटकः कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १८ ॥

यजुर्वेद सामवेद ऋग्वेदके जाननेवाले ऋत्विज क्रमसें अध्वर्यु उद्गातृ होतृ सज्ञिक है जैसें यजुर्वेदका जाननेवाला ऋत्विज अध्वर्यु, सामवेदके जाननेवाला ऋत्विज उद्गातृ, ऋग्वेदका जाननेवाला ऋत्विज होतृसज्ञिक है और जो कि यजमानने आग्नीध्र ब्रह्मोद्गातृ होत्रध्वर्य्वादिक सोलह धनोंकरके वरण किये है वह ऋत्विज याजक सज्ञिक है॥१७॥ और जो कि पृथिवी यज्ञकेवास्ते अलङ्कृत की है वह वेदि सज्ञिक है स्थण्डिल चत्वर यह यज्ञकेवास्ते सस्कार कियेहुये पृथिवीके भागके नाम है यह आपसमें समान लिंग है और जो कि यूपकटक है अर्थात् यज्ञके खम्बके शिरपर जो कि वलयाकार काष्ठविकार है वह चपाल सज्ञिक है और जो यज्ञकी पृथिवीपर अत्यजादिकोंका दर्शन निवारण करनेकेलिये अतिघनी दुप्रवेशवारि है वह कुबा सज्ञिक है इसको टट्टीभी कहते है ॥ १८ ॥

यूपाग्रं तर्म निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ॥ दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥ अग्नित्रयमिदं त्रेता प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ॥ समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः२०

यूपाग्र तर्मन् यह दो नाम यज्ञके खम्बके अग्रभागके है अग्निकी सिद्धिकेवास्ते मथनेयोग्य जो काष्ठ है उसमें अरणि शब्द वर्त्ते है यह शब्द दोनों स्त्रीपुलिंगमे होता है दक्षिणाग्नि गार्हपत्य आहवनीय यह तीन अग्निविशेष है ॥ १९ ॥ यह तीनों अग्नि मिलकर त्रेता सज्ञिक है और जो कि अग्नि मन्त्रादिकोंसें सस्कार किया है वह प्रणीत सज्ञिक है. अग्निकेविषे प्रयोग विद्यमान है जिनका ऐसे वह समूह्य परिचाय्य उपचाय्य सज्ञिक है अर्थात् यह तीन अग्निके धारणार्थ स्थलविशेषमें प्रयुक्त होते है ॥ २०॥

यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ॥ तस्मिन्नानाय्योऽथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥२१॥ ऋक् सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने ॥ गायत्रीप्रमुखं छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥

और जो गार्हपत्यसें लेकर दक्षिणाग्नि प्रवेश की जावे है वह आनाय्य सज्ञिक है अग्नायी स्वाहा हुतभुक्प्रिया यह तीन नाम अग्निकी प्रियाके है यह स्वाहाशब्द द्रव्यवाची होनेसें अव्यय नही है ॥ २१ ॥ अग्निसमिन्धनमें अर्थात् समिधाओंके फेंकनेकर अग्निके प्रजरनेमें जो ऋचा प्रयुक्त होवे है वह सामिधेनी धाय्या सज्ञिक है गायत्री उष्णिक् आदिक छन्दस् सज्ञिक है हव्यपाकमें चरु शब्द वर्त्ते है अर्थात् अग्निमुखमें हवन कियेहुए अन्नकों चरु कहते है यह शब्द पुल्गि है ॥ २२ ॥

आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः ॥ धवित्रं व्यजनं तद्यद्-

चितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥ पृषदाज्यं सदध्याज्ये परमान्नं तु पायसम् ॥ हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने पात्रं स्रुवादिकम् ॥ २४ ॥

पकेहुए गरम दूधमें दधिके योगसे जो विकार हो जाता है वह आमिक्षा संज्ञिक है और मृगचर्मकर रचित जो व्यंजन है वह धवित्र संज्ञिक है ॥ २३ ॥ दधिसहित घृतमें पृषदाज्य शब्द वर्त्ते हैं. परमान्न पायस यह दो नाम क्षीरान्नके हैं. इसको खीरभी कहते हैं. दैव पित्र्य अन्नमें अर्थात् देवपितृसंबधि अन्नमें क्रमसे हव्य कव्य शब्द वर्त्ते हैं भाव यह है कि देवोंकेलिये अग्निमुखद्वारा दियाहुआ अन्न हव्य संज्ञिक है और पित्रोंकेलिये विप्रमुखद्वारा दियाहुआ अन्न कव्य संज्ञिक है. स्रुवचमसादिक पात्र संज्ञिक हैं ॥ २४ ॥

ध्रुवोपभृज्जुहूर्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः ॥ उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥ परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ॥ वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥

ध्रुवा उपभृत् जुहू यह तीन स्त्रीलिंग शब्द स्रुचके भेद हैं. स्रुव यह एक नाम स्रुवाका है यह शब्द पुंलिंग है. किन्तु कोशान्तरमें स्त्रीलिंगभी दीखता है. जो पशुयज्ञके विषें अभिमंत्रितकरके वध है वह उपाकृत संज्ञिक है ॥ २५ ॥ परंपराक शमन प्रोक्षण यह तीन नाम वधार्थक अर्थात् यज्ञसंबन्धी पशुके वधवाची हैं. प्रमीत उपसंपन्न प्रोक्षित यह तीन नाम यज्ञकेवास्ते मारेहुए पशुमात्रमें वर्त्ते हैं. यह शब्दवाच्यलिंग हैं अर्थात् विशेष्यलिंगवाचक हैं ॥ २६ ॥

सान्नाय्यं हविरग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ॥ दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥ त्रिष्वथ क्रतुकर्मेष्टं[१] पूर्तं[२] खातादि कर्म यत् ॥ अमृतं विघसो[३] यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥

जो हवि विशेष है वह सान्नाय्य संज्ञिक है और जो कि अग्निके विषें हवन किया है वह वषट्कृत संज्ञिक है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है. और जो यज्ञकेविषें दीक्षान्त अर्थात् दीक्षाके समाप्त करनेवाला इष्टिपूर्वक स्नान विशेष है वह अवभृत संज्ञिक है. जो उस यज्ञकर्मके योग्य वस्तु है वह यज्ञिय संज्ञिक है. यह शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ २७ ॥ जो कि यज्ञकर्म है वह इष्ट संज्ञिक है. और जो खातादि अ-

---

१ एकाग्निकर्महवनं त्रेतायां यच्च हूयते ॥ अन्तर्वेद्यां च यद्दानमिष्टं तदभिधीयते ॥ १ ॥

२ पुष्करिण्यः सभावापी देवतायतनानि च ॥ आरामश्च विशेषेण पूर्तं कर्म विनिर्दिशेत् ॥ २ ॥

३ विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः ॥ विघसोभुक्तशेषं स्यादग्निशेषमथामृतम् ॥ १ ॥

र्थात् वापीकूपादिक कर्म है वह पूर्त संज्ञिक है यज्ञशेष और भोजनशेषमें क्रमसे अमृत विघस शब्द वर्त्ते है भाव यह है कि यज्ञके बचेहुए पुरोडाशादिकका नाम अमृत है और देवपित्रादिकोंके भोजनसे बचेहुएका नाम विघस है ॥ २८ ॥

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने॥ विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥ प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ॥ मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम ॥ ३० ॥

त्याग विहापित दान उत्सर्जन विसर्जन विश्राणन वितरण स्पर्शन प्रतिपादन ॥२९॥ प्रादेशन निर्वपण अपवर्जन अंहति यह तेरह नाम दानके कहते है तिसमें अंहति स्त्रीलिंग है मृतकके वास्ते उस मृतकके नियत दिनमें अर्थात् मरणदिनसे लेकर दशदिनपर्यन्त जो पिण्डादिकदान है वह और्ध्वदैहिक संज्ञिक है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ ३० ॥

पितृदानं निवापः स्याच्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ॥ अन्वाहार्यं मासिकोऽशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम्॥३१॥ पर्येषणा परीष्टिश्चाऽन्वेषणा च गवेषणा ॥ सनिस्त्वध्येषणा याच्ञाऽभिशस्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥

पितृदान निवाप यह दो नाम पित्रोंके उद्देशकरके जो दान है उसके है. और शास्त्रसे जो पितृसंबन्धी कर्म है वह श्राद्ध संज्ञिक है और मासिक श्राद्ध अर्थात् अमावास्याके श्राद्धमें अन्वाहार्य शब्द वर्त्ते है दिनका जो अष्टम अंश है वह कुतप संज्ञिक है यह शब्द पुनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ३१ ॥ पर्येषणा परीष्टि यह दो नाम श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी भक्तिपूर्वक सेवाके है अन्वेषणा गवेषणा यह दो नाम धर्मादिकके ढूंढनेके है सनि अध्येषणा यह दो नाम गुरु आदिकको किसी अर्थमें प्रार्थनाकर नियुक्त करनेके है याच्ञा अभिशस्ति याचना अर्थना यह चार नाम याचनाके है ॥ ३२ ॥

षट् तु त्रिष्वर्घ्यमर्घार्थे पाद्यं पादाय वारिणि ॥ क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥ स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ॥ प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्चाभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ ३४ ॥

अगारी कहेहुए अर्घ्य पाद्य आतिथ्य आतिथेय आवेशिक आगन्तु यह छे शब्द तीनों लिंगमें होते है अर्घार्थ अर्थात् पूजोपचारके अर्थ जो जल है उसमें अर्घ्य शब्द वर्त्ते है ओर पादके अर्थ जो जल है उसमें पाद्य शब्द वर्त्ते है और क्रमसे आतिथ्य

१ दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करे ॥ सकल कुतपोज्ञेय पितृणादत्तमक्षयमिति॥२॥

१दूराच्चोपगत श्रान्त वैश्वदेवउपस्थितम् ॥ अतिथिं त विजानीयान्नातिथि पूर्वमागत १

आतिथेय यह दो शब्द अतिथिके अर्थ जो कर्म है उसमें और अतिथिके विषें जो साधु है उसमें वर्त्ते है. भाव यह है कि आतिथ्य यह एक नाम अतिथिके अर्थ जो कर्म है उसका है. आतिथेय यह एक नाम अतिथिकेविषें जो साधु है उसका है ॥ ३३ ॥ आवेशिक आगन्तु अतिथि गृहागत यह चार नाम अतिथिके हैं तिसमें अतिथिशब्द पुंलिंग है. प्राघूर्णिक प्रावुणक यह दो नाम अभ्यागतके हैं. अभ्युत्थान गौरव यह दो नाम उठनेपूर्वक सत्कारके हैं ॥ ३४ ॥

पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्यार्चार्हणाः समाः॥वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्या-प्युपासना॥३५॥व्रज्याऽटाट्या पर्य-टनं चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः॥उपस्पर्श-स्त्वाचमनमथ मौनमभाषणम्॥३६॥

पूजा नमस्या अपचिति सपर्या अर्चा अर्हणा यह छे नाम पूजाके हैं वरिवस्या शुश्रूषा परिचर्या उपासना यह चार नाम उपासनाके हैं ॥ ३५ ॥ व्रज्या अटा अ-ट्या पर्यटन यह चार नाम भ्रमण करनेके हैं. ईर्यापथ अर्थात् ध्यानमौनादिक योगमा-र्गमें जो स्थिति है वह चर्या संज्ञिक है. उ-पस्पर्श आचमन यह दो नाम आचमनके हैं मौन अभाषण यह दो नाम मौनके हैं ॥३६॥

आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽवृत्परिपाटी अ-नुक्रमः ॥ पर्यायश्चातिपातस्तु स्या-त्पर्यय उपात्ययः ॥ ३७ ॥ नियमो व्रतमस्त्री तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ औपवस्तं तूपवासो विवेकः पृथगा-त्मता ॥ ३८ ॥

आनुपूर्वी आवृत् परिपाटि अनुक्रम पर्याय यह पांच नाम परिपाटीके हैं तिसमें आनुपूर्वी शब्द स्त्रीलिंगकेविषें विकल्पकरकें होताहै अर्थात् स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग दोनोंमें होता है. अतिपात पर्यय उपात्यय यह तीन नाम अतिक्रमके हैं ॥ ३७ ॥ नियम व्रत यह दो नाम व्रतमात्रके हैं ति-समें व्रत पुंनपुंसकलिंग है. वह व्रत जो कि उपवास चांद्रायणादिकपुण्य है वह जानना. अथवा जो कि उपवासकृच्छ्रचांद्रायण प्रा-जापत्य नक्तभोजनादिक व्रत है वह पुण्य संज्ञिक है. औपवस्त उपवास यह दो नाम उपवासके हैं और जो कि पृथक् स्वरूपता है वह विवेक है जैसें चैतन्य जडका विवेक ॥ ३८ ॥

---

१ प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः॥ वाल्मीकश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः ॥

प्राचेतस आदिकवि मैत्रावरुणि वाल्मीक यह चार नाम वल्मीकमुनिके हैं. गाधेय विश्वा-मित्र कौशिक यह तीन नाम विश्वामित्रमुनिके हैं १. व्यास द्वैपायन पाराशर्य सत्यवतीसुत यह चार नाम व्यासमुनिके हैं यह डेढश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिरथाञ्जलिः ॥ पाठे ब्रह्माञ्जलिः पाठे विप्रुषो ब्रह्मबिन्दव. ॥ ३९ ॥ ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमौ ॥ मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥ ४० ॥

वृत्त सदाचारपालन अध्यन वेदाभ्यास इन दोनोंकी ऋद्धि अर्थात् सम्पत्ति ब्रह्मवर्चस् संज्ञिक है और जो कि वेदके पाठमें अजलि है वह ब्रह्मांजलि संज्ञिक है भाव यह है कि यह एक नाम उसका जो कि अध्ययनके आदिमें हाथोंकी प्रणवोच्चारपूर्वक अजलि की जाती है वेदके पाठमें जो कि मुखसें जलबिन्दु निकलते है वह ब्रह्मबिंदु संज्ञिक है ॥३९॥ ध्यान और योगके आसनमें ब्रह्मासन शब्द वर्त्ते है कल्प विधि क्रम यह तीन नाम विधि अर्थात् नियोगशास्त्रके है जो आद्यविधि है वह मुख्य संज्ञिक हे जैसें व्रीहियोंकरके यजन करे और जो उसमुख्यसें अधम अर्थात् गौण है वह अनुकल्प संज्ञिक है जैसें व्रीहियोंके न होनेपर नीवारोंकर ही यजन करे ॥ ४० ॥

संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुते· ॥ समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ॥ ४१ ॥ भिक्षु· परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ तपस्वी तापस पारिकाङ्क्षी वाचंयमो मुनि ॥ ४२ ॥

सस्कारपूर्वक जो श्रुतिका ग्रहण है वह उपाकरण संज्ञिक हे पादग्रहण अभिवादन यह दो नाम नामगोत्रके कथनपूर्वक नमस्कार विशेषके है यह दोनों शब्द समानलिंग है ॥ ४१ ॥ भिक्षु परिव्राज् कर्मंदिन् पाराशरिन् मस्करिन् यह पाच नाम सन्यासीके है तपस्विन् तापस पारिकाक्षिन् यह तीन नाम तपोयुक्तके है वाचयम मुनि यह दो नाम वाणीके रोकनेवालेके है ॥ ४२ ॥

तपःक्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ऋषयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती ॥ ४३ ॥ ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते॥ यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ ॥ ४४॥ स्थाण्डिलश्चाथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः ॥ पवित्रः प्रयतः पूतः पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः ॥ ४५ ॥

और जो कि तपके क्लेशके सहनेवाला है वह दांत संज्ञिक है वर्णिन् ब्रह्मचारिन् यह दो नाम ब्रह्मचारीके है ऋषि सत्यवचस् यह दो नाम ऋषिमात्रके है और जो कि व्रती आप्लुत है अर्थात् जिस वेदव्रतवालेनें समावर्त्तन कर्म किया हे वह स्नातक संज्ञिक है ॥ ४३ ॥ जीता हे इन्द्रियोका समूह जिन्होंनें ऐसे जो पुरुष है वह यतिन् यति संज्ञिक हे जो नियमके वशसें स्थंडिल अर्थात् भूमिविशेषपर शयन करता है वह

स्थंडिलशायिन् ॥ ४४ ॥ स्थांडिल संज्ञिक है. विरजस्तमस् द्वयातिग यह दो नाम सत्वगुणवाले व्यासादिकोंके हैं. पवित्र प्रयत पूत यह तीन नाम पवित्रके हैं. पाखण्ड सर्वलिंगिन् यह दो नाम बौद्धक्षपणाकादिक दुःशास्त्रवर्त्तियोंके हैं ॥ ४५ ॥

पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनामासनं वृषी ॥४६॥ अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ स्वाध्यायः स्याज्जपः सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ॥ ४७ ॥

व्रतकेविषैं ब्रह्मचारीका जो पलाशसंबन्धी अर्थात् ढाकका दण्ड है वह आषाढ संज्ञिक है. और वेणुसंबन्धी अर्थात् वांसका जो दण्ड है वह रांभ संज्ञिक है. कमंडलु कुंडी यह दो नाम व्रतवालोंके जलपात्रका है तिसमें कमंडलुशब्द पुंनपुंसकलिंग है. और जो कि व्रतधारियोंका आसन है वह वृषी संज्ञिक है ॥ ४६ ॥ अजिन् चर्मन् कृत्ति यह तीन नाम मृगादिकके चर्मके हैं तिसमें कृत्तिशब्द स्त्रीलिंग है. और जो कि भिक्षाओंका समूह है वह भैक्ष संज्ञिक है. स्वाध्याय जप यह दो नाम वेदाभ्यासके हैं. सुत्या अभिषव सवन यह तीन नाम सोमाभिषवके हैं ॥ ४७ ॥

सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् ॥ दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ॥ ४८ ॥ शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ॥ नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम्[1] ॥ ४९ ॥

समस्त पापोंके नाश करनेवाला जो जप है वह अघमर्षण संज्ञिक है यह शब्द तीन लिंगमें होता है. दोनों पक्षान्त अर्थात् अमावास्या पौर्णमासीके विषैं जो पृथक् २ यज्ञ रचेगये हैं वह क्रमसें दर्श पौर्णमास संज्ञिक हैं. भाव यह है कि अमावास्याके दिन जो यज्ञ रचागया है वह दर्श और पौर्णमासीके दिन जो यज्ञ रचागया है वह पौर्णमास है ॥ ४८ ॥ शरीरमात्रकरकेंही साधनकी अपेक्षा है जिसकी ऐसा जो नित्यकर्म है अर्थात् शरीरमात्र कर साधनेयोग्य जो नित्यकर्म है वह यम संज्ञिक है. आगन्तुसाधन अर्थात् बाह्यसाधन है जिसमें ऐसा जो नित्यकर्म है वह नियम संज्ञिक है. भाव यह है कि मृत्तिका जलादिकसें साधने योग्य नित्यही कियाहुआ जो कर्म है वह नियम संज्ञिक है ॥ ४९ ॥

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे॥ प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥ ५० ॥ अङ्गुल्यग्रे तीर्थं

१ क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु ॥ क्षौर भद्राकरण मुंडन वपन यह चार नाम मुण्डनके हैं. यह शब्द तीनों लिंगमें होते हैं. यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है ॥१॥

दैवं स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् ॥ मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः पित्र्यं मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥ ५१ ॥

दक्षिणहाथपर धारण कियेसतै जो ब्रह्मसूत्र है वह उपवीत सज्ञिक है और अन्य अर्थात् वामहाथपर धारण कियेसतै जो ब्रह्मसूत्र है वह प्राचीनावीत सज्ञिक है और जो कि ब्रह्मसूत्र अर्थात् जनेऊ कठमें लगा होकर पडा है वह निवीत सज्ञिक हे ॥ ५० ॥ अगुलियोंके अग्रभागमें जो तीर्थ हे वह दैव सज्ञिक है और स्वल्पागुलि अर्थात् अनामिका और कनिष्ठिका इन दोनों छोटी अगुलियोंकी जडमें जो तीर्थ है वह काय सज्ञिक है और अगुष्ठागुलि अर्थात् अंगूठा और तर्जनीके मध्यभागमें जो तीर्थ है वह पित्र्य सज्ञिक है और अगूठेके जडमें जो तीर्थ है वह ब्राह्म सज्ञिक है ॥ ५१ ॥

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ॥ देवभूयादिकं तद्वत्कृच्छ्रं सांतपनादिकम् ॥ ५२ ॥ संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा ॥ नष्टाग्निः कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ॥ ५३ ॥

ब्रह्मभूय ब्रह्मत्व ब्रह्मसायुज्य यह तीन नाम ब्रह्मभावके हे तिसीप्रकार देवभूय आदिक है अर्थात् देवभूय देवत्व देवसायुज्य यह तीन नाम देवभावके है सातपन आदिक कृच्छ्र सज्ञिक है आदिशब्दसें प्राजापत्यादिक जानने ॥ ५२ ॥ सन्यासपूर्वक भोजनके त्यागनेमें प्राय शब्द वर्ते है यह शब्द पुलिंग है वीरहन् नष्टाग्नि यह दो नाम नाश कियेहुए अग्निवालेके है और जो लोभ यानी दूसरेके धनादिके अभिलापसें मिथ्याही ईर्यापथकल्पना अर्थात् कपटकरकें ध्यानमौनादिक सपादन है वह कुहना सज्ञिक है ॥ ५३ ॥

व्रात्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः ॥ धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः ॥ ५४ ॥ सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥ अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ॥ ५५ ॥

जो सस्कार हीन अर्थात् सस्कारोपनयनकर उपनयनके कहे हुए गौण कालसें पीछे वर्जित है वह व्रात्य सज्ञिक है और जो अस्वाध्याय अर्थात् अपनी शाखाके अध्ययनसें शून्य है वह निराकृति सज्ञिक है धर्मध्वजिन् लिंगवृत्ति यह दो नाम जीविकाकेवास्ते जटादिक धारण करनेवालेके है अवकीर्णिन् क्षतव्रत यह दो नाम नाश कियेहुए ब्रह्मचर्यवालेके है ॥ ५४॥ जिसके सोवेसतै अंशुमान् सूर्य अस्त होवें और जिसके सोतेसतै उदय होवै वह यथाक्रम अभिनिर्मुक्त अभ्युदित सज्ञिक है भाव यह

१ गोमूत्र गोमय क्षीर दधि सर्पि कुशोदकम्॥ एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्र सान्तपन स्मृतम्१॥

है कि जिसके सोतेसमय सूर्य अस्तहोते हैं वह अभिनिर्मुक्त संज्ञिक है और जिसके सोतेपर सूर्य उदय हों वह अभ्युदित संज्ञिक है ॥ ५५ ॥

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान् विवाहोपयमौ समौ ॥ ५६ ॥ तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम्॥ व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ॥ ५७ ॥ त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः स्निग्धा वरस्य ये॥५८॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

ज्येष्ठभाई अनूढ अर्थात् अविवाहित रहनेपर स्त्रीके ग्रहणसें छोटाभाई परिवेत्तृ संज्ञिक है भाव यह है कि जबतककि बडे भाईका विवाह न हुआ हो तबतक छोटा भाई अपना विवाह करलेवे तो वह छोटा भाई परिवेत्तृ संज्ञिक है. और उसका बडा भाई परिवित्ति संज्ञिक है. विवाह उपयम ॥ ५६ ॥ परिणय उद्वाह उपयाम पाणिपीडन यह छे नाम विवाहके हैं. व्यवाय ग्राम्यधर्म मैथुन निधुवन रत यह पांच नाम मैथुनके हैं ॥५७॥ धर्म वेदविहितयज्ञादिक, काम यथाविधि स्त्रीसेवन, अर्थ (धन) इन तीनोंकरकें जो कहाजाता है वह त्रिवर्ग संज्ञिक है. और मोक्षसहित धर्म काम अर्थ इनकरकें जो कहाजाता है वह चतुर्वर्ग संज्ञिक है. और इन चारों सबलोंकर जो कहाजाता है वह चतुर्भद्र संज्ञिक है. और जो वर जमाईके स्निग्ध अर्थात् तुल्य अवस्थावाले हैं वह जन्य संज्ञिक हैं ॥ ५८ ॥

इतिब्रह्मवर्गः ॥

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ॥ राजा राट् पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥ १॥ राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः॥ चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

मूर्धाभिषिक्त राजन्य बाहुज क्षत्रिय विराज् यह पांच नाम क्षत्रियके हैं. राजन् राज् पार्थिव क्ष्माभृत् नृप भूप महीक्षित् यह सात नाम राजाके हैं ॥ १ ॥ और जो कि राजा प्रणताशेषसामन्त है अर्थात् जिसराजाकों समस्त देशान्तरोंके राजा नम्र होते हैं वह अधीश्वर संज्ञिक है. चक्रवर्त्तिन् सार्वभौम यह दो नाम समुद्रपर्यन्त पृथिवीके स्वामीके हैं. और उस चक्रवर्तीसे जो कि अन्य राजा है वह मण्डलेश्वर संज्ञिक है ॥ २ ॥

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ॥ शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राडथ राजकम् ॥ ३ ॥ राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् ॥ मन्त्री धीसचिवोऽमात्योऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

जिसनें राजसूय यज्ञ करकें यजन किया है और जो बारह मडलका स्वामी है और जो अपनी आज्ञासें राजाओंकों शिक्षा करता हे वह सम्राज् सज्ञिक है राजक ॥३॥ राजन्यक यह शब्द क्रमसें नृपति और क्षत्रियोंके समूहमें वर्त्ते है अर्थात् राजक यह एक राजाओंके समूहका है राजन्यक यह एक नाम क्षत्रियोंके समूहका है मन्त्रिन् धीसचिव अमात्य यह तीन नाम बुद्धिके सहायिकके हैं और जो कि उस धीसचिवसें अन्य कर्मोपयुक्त सचिव है वह कर्मसचिव सज्ञिक है ॥ ४ ॥

महामात्राः प्रधानानि पुरोधास्तु पुरोहित॰ ॥ द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥ प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः ॥ रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थोऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥

महामात्र प्रधान यह दो नाम मुख्य राजाओंके सहायिकोंके है इसकों प्रधान कहते है पुरोधस् पुरोहित यह दो नाम पुरोहितके है व्यवहारोंके ऋणादिकविषयमें वादी प्रतिवादीकर रचेहुए विवादोंके द्रष्टा अर्थात् निर्णय करनेवालेमें प्राड्विवाक अक्षदर्शक यह दो शब्द है उसकों न्यायाधीशभी कहते है ॥ ५ ॥ प्रतीहार द्वारपाल द्वा स्थ द्वा स्थित दर्शक यह पाच नाम द्वारपालके है रक्षिवर्ग अनीकस्थ यह दो नाम राजाओंके रक्षा करनेवाले गणके है अध्यक्ष अधिकृत यह दो नाम अधिकारीके है यह शब्द दोनों समानार्थ है ॥ ६ ॥

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिषु ॥ भौरिकः कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ७ ॥ अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः ॥ सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

जो एक ग्रामकेविषै अधिकृत अर्थात् अधिकारी है वह स्थायुक सज्ञिक है और जो बहुतसे ग्रामोंके विषै अधिकारी है वह गोप सज्ञिक है. भौरिक कनकाध्यक्ष यह दो नाम सुवर्णके अधिकारीके है रूप्याध्यक्ष नैष्किक यह दो नाम चादीके अधिकारीके है ॥ ७ ॥ और जो कि जन रनवासमें अधिकारी है वह अन्तर्वंशिक सज्ञिक है सौविदल्ल कचुकिन् स्थापत्य सौविद यह चार नाम उनके है जो कि पुरुष राजाओंकी स्त्रियोंके घरपर वेंत लेकर पहरेपर खडे रहतेहै ॥ ८ ॥

पण्ढो वर्षवरस्तुल्यो सेवकार्थ्यनुजीविनः ॥ विषयानन्तरो राजा शत्रुर्मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥ उदासीनः परतरः पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ॥ रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥

१ प्राड्विवाकका लक्षण अन्यग्रथसे लिखतेहै
विवादानुगत पृष्ट्वा पूर्ववाक्य प्रयत्नत ॥
विचारयति येनासौ प्राड्विवाकस्तत स्मृत ॥१॥

द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः॥ अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥

षण्ढ वर्षवर यह दो नाम रनवासमें रहनेवाले नपुंसकमात्रके हैं यह शब्द समानार्थ हैं. सेवक अर्थिन् अनुजीविन् यह तीन नाम सेवकके हैं. विषयानन्तर जो राजा है अर्थात् अपनें देशसें मिलाहुआ जो राजा है वह शत्रु संज्ञिक है. और इस शत्रुसेंपरें जो राजा है वह मित्र संज्ञिक है. अर्थात् अन्यराजासें अलदहा जो राजा है वह मित्र संज्ञिक है ॥ ९ ॥ और शत्रुमित्र इन दोनोंसें परें जो राजा है वह उदासीन संज्ञिक है. और पिछारी देशमें वर्त्तमान जो राजा है वह पार्ष्णिग्राह संज्ञिक है. भाव यह है कि शत्रुके जीतनेके लियें राजाकों अगारी चलेजानेपर पीछें जो उसके देशकी ग्रहण करनेकी इच्छा करता है वह पार्ष्णिग्राह संज्ञिक है. रिपु वैरिन् सपत्न अरि द्विषत् द्वेषण दुर्हृद ॥ १० ॥ द्विष् विपक्ष अहित अमित्र दस्यु शात्रव शत्रु अभिघातिन् पर अराति प्रत्यर्थिन् परिपंथिन् यह उन्नीश वैरीके हैं ॥ ११ ॥

वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत्॥ सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥ यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ॥ चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ १३

वयस्य स्निग्ध सवयस् यह तीन नाम तुल्य अवस्थावाले प्रियके हैं. मित्र सखि सुहृद् यह तीन नाम मित्रके हैं सख्य साप्तपदीन यह दो नाम मित्रताके हैं अनुरोध अनुवर्त्तन यह दो नाम अनुकूलताके हैं ॥ १२ ॥ यथार्हवर्ण प्रणिधि अपसर्प चर स्पश चार गूढपुरुष यह सात नाम गुप्तबात कहनेवाले हलकारेके हैं. आप्त प्रत्ययित यह दो नाम विश्वासीके हैं ॥ १३ ॥

सांवत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकावपि ॥ स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥ तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिः समौ॥ लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥

सांवत्सर ज्योतिषिक दैवज्ञ गणक मौहूर्त्तिक मौहूर्त्त ज्ञानिन् कार्त्तान्तिक यह आठ नाम ज्योतिषशास्त्रके जाननेवालेके हैं इसकों जोशी कहते हैं ॥ १४ ॥ तांत्रिक ज्ञातसिद्धान्त यह दो नाम शास्त्रके जाननेवालेके हैं. सत्रिन् गृहपति यह दो नाम सदैव अन्नादिक दान करनेवालेके हैं यह शब्द समानार्थ हैं. लिपिकर अक्षरचण अक्षरचंचु लेखक यह चार नाम लेखकके हैं ॥ १५ ॥

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ ॥ स्यात्संदेशहरो दूतो दूत्यं तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥ अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ॥ स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्र-

दुर्गबलानि च ॥ १७ ॥ राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥

लिखित अक्षरसस्थान लिपि लिबि यह चार नाम लिखेहुए अक्षरके है तिसमें लिपि और लिबि यह दो स्त्रीलिंग है संदेशहर दूत यह दो नाम संदेशा देनेवाले दूतके है और उस दूतके भाव और कर्ममें दूत्य शब्द होता है ॥ १६ ॥ अध्वनीन अध्वग अध्वन्य पाथ पथिक यह पाच नाम राहगीरके है इसकों रास्तागीरभी कहते हैं स्वामी राजा अमात्य (मन्त्री) सुहृद् (मित्र) कोश (धनगृह) राष्ट्र (देशवर्त्ती पृथिवी) दुर्ग (किला) बल (सेना) यह सात ॥ १७ ॥ राज्याग प्रकृतिशब्दवाच्य हैं. और पुरवासियोंकी पंक्तिभी प्रकृति संज्ञिक है सन्धि यह एक नाम सुवर्णादिककर वैरीकी प्रीति सिद्ध करनेका है यह शब्द पुंलिंग है विग्रह यह एक नाम शत्रुके महलमें दाह लूट खसोटकर धनके ग्रहण करनेका है यान यह एक नाम वैरीकेप्रति जीत चाहनेवालेके गमन करनेका है आसन यह एक नाम शक्तिके प्रतिबन्ध होनेपर कालके उलघन करनेकेलिये दुर्गादिक रचकर स्थित रहनेका है द्वैध यह एक नाम बलीकेसाथ सलाह और निर्बलीके साथ विग्रह करनेका है. आश्रय यह एक नाम शत्रुकरके पीडित हुएकों बली राजादिकका आश्रय करनेका है ॥ १८ ॥

षड्गुणाः शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ॥ क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥ स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ॥ सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥

संधि विग्रह यान आसन द्वैध आश्रय यह छे गुण संज्ञिक हैं प्रभावोत्साहमन्त्रसें उत्पन्न हुई तीन शक्ति है भाव यह है जो की कोशदण्डसें उत्पन्न हुआ तेज है वह प्रभावशक्ति है और जो कि विक्रमादिककर उन्नति है वह उत्साहशक्ति है और जो कि सन्धिविग्रहादिकोंकी मन्त्रकरके यथावत् स्थिति है वह मन्त्रशक्ति है क्षय अष्टवर्गका घटना स्थान अष्टवर्गका समान रहना वृद्धि अष्टवर्गका बढना यह तीनों नीतिशास्त्र जाननेवालोंके मध्यमें त्रिवर्ग संज्ञिक है॥१९॥ कोशधनका समूह दण्ड अर्थात् दम या सेना इनसें उत्पन्न हुआ जो तेज है वह

---

१ सामलक्षण और ग्रन्थसे लिखते है-- परस्परोपकाराणा दर्शन गुणकीर्त्तनम् ॥ सम्बन्धस्य समाख्यानमायत्या सम्प्रकाशनम् ॥ वाचा पेशलया साधु तवाहमिति चार्पणम् १

२ अष्टवर्गका लक्षण अन्यग्रथसे लिखते हैं-- कृषिर्वणिक्पथो दुर्गं सेतु कुञ्जरबन्धनम् ॥ खनिर्बल करादान शून्याना च निवेशनमिति २

प्रताप प्रभाव संज्ञिक है. सामन् यह एक नाम प्रियवचनादिककर सलाह करनेका है. दान यह एक नाम धनादिकके अर्पण करनेका है. भेद यह एक नाम मिलेहुए शत्रुओंको भेदनकरके अपने आधीन करनेका है. दण्ड यह एक नाम दण्ड देनेका है. यह चारों उपाय चतुष्टय संज्ञिक है ॥ २० ॥

साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमथो समौ ॥ भेदोपजापावुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥ पञ्च त्रिष्वपडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ॥ विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु ॥ समौ विस्रम्भविश्वासौ भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् २३

साहस दम दण्ड यह तीन नाम दण्डके हैं. सामन् सान्त्व यह दो नाम सलूखके हैं. भेद उपजाप यह दोनों समानलिंग नाम मिलेहुओंको अलहदा करनेके है. इसकों फितूरभी कहते हैं. धर्मादिककर जो परीक्षा करना है वह उपधा संज्ञिक है. भाव यह है कि धर्म अर्थ काम तथा भयकरके जो मंत्री आदिकोंकी इच्छा जाननी है उसकों उपधा कहते हैं ॥ २१ ॥ और जो कि तृतीयादि जनोंकरके अप्रत्यक्ष है वह अपडक्षीण संज्ञिक है. भाव यह है कि जो कि सलाह आदिक दो करके की जावै है और उसकों तृतीयादिक मनुष्य नहीं जानते हैं वह अपडक्षीण संज्ञिक हैं. अपडक्षीण-आदिक निःशलाकान्त पांचशब्द तीनों लिंगमें होतेहैं. विविक्त विजन छन्न निःशलाक रहस् ॥ २२ ॥ रह उपांशु यह सात नाम निर्जनदेशके हैं इसकों एकान्त जगहभी कहते हैं. तिनमें रहस्‌शब्द नपुंसक है. और रह और उपांशु शब्द अलिंग अर्थात् अव्यय हैं. और जो उस रह एकान्तमें वार्त्तादिक हो उसमें रहस्य शब्द वर्त्ते हैं. यह शब्द तीनों लिंगमें होता है. विस्रम्भ विश्वास यह दो नाम विश्वासके हैं यह आपसमें समान लिंग हैं यथोचित स्वरूपसें जो भ्रंश है अर्थात् पतन है वह भ्रेष संज्ञिक है ॥ २३ ॥

अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ॥ युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥ न्याय्यं च त्रिषु षट् संप्रधारणा तु समर्थनम् ॥ अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥ शिष्टिश्चाज्ञा च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तूद्दानबन्धने ॥ २६ ॥

अभ्रेष न्याय कल्प देशरूप समंजस यह पांच नाम नीतिके हैं. युक्त औपयिक लभ्य भजमान अभिनीत ॥ २४ ॥ न्याय्य यह छे नीतिसेंयुक्त हुए द्रव्यादिकके हैं. यहाँ वत् शब्द युक्तादिकोंका पर्यायत्व प्रकाश करनेकेवास्ते है. यह छेओ शब्द तीनों लिं-

गर्मे होते है समवारणा समर्थन यह दो नाम युक्त प्रयुक्तकी परीक्षाके है अववाद निर्देश निदेश शासन ॥२५॥ शिष्टि आज्ञा यह छे नाम आज्ञाके है संस्था मर्यादा धारणा स्थिति यह चार नाम मर्यादाके है आगस् अपराध मन्तु यह तीन नाम अपराधके है उद्दान बधन यह दोनों समानलिंग नाम बन्धनके है ॥ २६ ॥

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो बलिः ॥ घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥ उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ॥ यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥

जो द्विगुना दण्ड है वह द्विपाद्य संज्ञिक है भागधेय कर बलि यह तीन नाम कर्षकआदिकोंसें राजाओंकर ग्रहण करनेयोग्य भागके है इसको कर कहते है घट्ट नदीतीरादिकस्थान आदिशब्दसें गुल्म प्रतोल्यादिक इनकेविषें जो देनेयोग्य राजग्राह्यभाग है वह शुल्क संज्ञिक है इसको महशूल कहते है प्राभृत प्रदेशन ॥ २७ ॥ उपायन उपग्राह्य उपहार उपदा यह छे नाम राजा गुरु आदिकोंके दर्शनादिकमें अर्पण को हुए वस्तुके हैं इसको भेंट (नजराना)भी कहते है तिसमें उपदा शब्द स्त्रीलिंग है जो देय धनादिक यौतकादिक है अर्थात् जो धन यौतक वरकन्याकों विवाहादिक कालमें देनेयोग्य है आदिशब्दसें जो भाइयोंके देनेयोग्य है वह सुदाय हरण संज्ञिक है भाव यह है कि यह दो नाम कन्यादानके समय वा व्रतभिक्षादिककेविषे दियेहुए द्रव्यके है ॥

तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः ॥ सादृष्टिकं फलं सद्य उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥ अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम्॥ महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम्॥ ३०॥

तत्काल तदात्व यह दो नाम वर्त्तमानकालके है और जो कि उत्तर अर्थात् आनेवाला काल है वह आयति संज्ञिक है जो तत्कालही फल है वह सादृष्टिक संज्ञिक है और जो उत्तर अर्थात् होनेवाला फल है वह उदर्क संज्ञिक है ॥ २९ ॥ वह्नि (अग्न्युत्पात) तोय (अतिवृष्ट्यादिक) इनका कियाहुआ जो भय है वह अदृष्ट संज्ञिक है अपने वा दूसरेके देशमें उत्पन्न हुआ जो चोरादिकभय है वह दृष्ट संज्ञिक है महीभुज राजाओंको अपने सहायोंसें उठाहुआ जो भय है वह अहिभय संज्ञिक है ॥ ३० ॥

प्रक्रिया त्वधिकारः स्याच्चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ नृपासनं यत्तद्भद्रासनं सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥ हैमं छत्रं त्वातपत्रं राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ॥ भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥

प्रक्रिया अधिकार यह दो नाम व्यवस्थाके स्थापनके हैं. चामर प्रकीर्णक यह दो नाम चौंरके हैं. नृपासन भद्रासन यह दो नाम मणिआदिकसें बनायेहुए राजाके आसनके हैं. और जो कि यदि नृपासन सुवर्णसें बना है तो वह सिंहासन संज्ञिक है छत्र आतपत्र यह दो नाम छत्रके हैं. और यदि राजाका छत्र हो तो वह नृपलक्ष्मन् संज्ञिक है. भद्रकुंभ पूर्णकुंभ यह दो नाम पूर्णकलशके हैं. भृंगार कनकालुका यह दो नाम सुवर्णके बनायेहुये पात्रके हैं३१ ३२

निवेशः शिबिरं षण्ढे सज्जनं तूपरक्षणम् ॥ हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥ दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥ इभः स्तम्बेरमः पद्मी यूथनाथस्तु यूथपः ॥ मदोत्कटो मदकलः कलभः करिशावकः॥३५॥

निवेश शिबिर यह दो नाम सेनाके वासस्थानके हैं. सज्जन उपरक्षण यह दो नाम सेनाकी रक्षाकेलिये नियुक्त कियाहुआ प्रहरिकादिक चिन्हके हैं इसको पहरा तथा गस्तभी कहते हैं. यह दोनों नपुंसकलिंग हैं. हाथी घोडा रथ पैदल यह चार सेनांग हैं ॥ ३३ ॥ दन्तिन् दन्तावल हस्तिन् द्विरद अनेकप द्विप मतंगज गज नाग कुंजर वारण करिन् ॥ ३४ ॥ इभ स्तम्बेरम पद्मिन् यह पन्दरह नाम हाथीके हैं. यूथनाथ यूथप यह दो नाम यूथमें मुख्य हाथीके हैं. मदोत्कट मदकल यह दो नाम मदसें उन्मत्त हुए हाथीके हैं. कलभ करिशावक यह दो नाम हाथीके बच्चेके हैं॥३५।

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः समावुद्वान्तनिर्मदौ ॥ हास्तिकं गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥ गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः ॥ कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥

प्रभिन्न गर्जित मत्त यह तीन नाम उस हाथीके हैं जिसकें कि मद चिचाता हो. उद्वान्त निर्मद यह दो नाम दूर हुए मदवाले हाथीके हैं. हास्तिक गजता यह दो नाम हाथियोंके समूहमें वर्त्ते हैं. करिणी धेनुका वशा यह तीन नाम हथिनीके हैं ॥३६॥ हाथीका कपोल अर्थात् गाल कट संज्ञिक है. मद दान यह दो नाम मदोदकके हैं. वमथु करशीकर यह दो नाम हाथीकी शूंडसें निकलेहुए जलकणके हैं. हाथीके शिरके पिण्ड कुम्भ संज्ञिक है यह शब्द दो होनेसें द्विवचनान्त है. उन कुम्भोंके बीचमें जो आकाशस्थान है वह विदु संज्ञिक है यह शब्द पुंलिंग है ॥ ३७ ॥

अवग्रहो ललाटं स्यादीषिका त्वक्षिकूटकम् ॥ अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥ अधः

कुम्भस्य वाहित्थं प्रतिमानमधोऽस्य यत् ॥ आसनं स्कन्धदेशः स्यात्पद्मकं विन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

हाथीका जो ललाट (माथा) है वह अवग्रह संज्ञिक है ईपिका अक्षिकूटक यह दो नाम हाथीके नेत्रगोलकके हैं और जो हाथीका अपागदेश अर्थात् नेत्रका अन्त-भाग है वह निर्याण संज्ञिक है और जो कि हाथीकी कानकी जड है वह चूलिका संज्ञिक है ॥ ३८ ॥ और कुम्भका नीचेका भाग वाहित्थ संज्ञिक है और इस वाहित्थका जो नीचेका भाग है वह प्रतिमान संज्ञिक है और हाथीका स्कधदेश आसन संज्ञिक है और जो कि हाथीके देहपर विन्दुसमूह है वह पद्मक संज्ञिक है ॥ ३९ ॥

पार्श्वभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु योऽग्रतः ॥ द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात्॥ ४० ॥तोत्रं वैणुकमालानं वन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खला॥ अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥

और जो कि हाथीके आसपासका भाग है वह पक्षभागसंज्ञिक है और जो कि हाथीका अग्रभाग है वह दन्तभागसंज्ञिक है और जो कि हाथीके अगारी और पिछारीके जघादिक देश है वह दोनों क्रमसें गात्र अवर संज्ञिक हैं भाव यह है कि जो कि हाथीका अगारीका जघादिक देश है वह गात्रसंज्ञिक है और जो कि पिछारीका जघादिक देश है वह अवर संज्ञिक है॥ ४०॥ तोत्र वेणुक यह दो नाम हाथीके हॉकनेके चाबुकके है हाथीके बाधनेके आधाररूप खम्बमें आलान शब्द वर्त्ते है शृखला अदुक निगड यह तीन नाम हाथीके पॉवमें बाधनेकी शाखरके है इसको बेडीभी कहते है तिसमें निगडशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंग है अकुश सृणि यह दो नाम अकुशके है तिसमे अकुश पुनपुसकलिंग है और सृणि स्त्रीलिंग है ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे ॥ प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥ वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजवन्धनी॥घोटके वीतितुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः ॥ ४३॥ वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः॥आजानेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुवाहिनः॥४४॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा यह तीन नाम हाथीके मध्यभागमें बाधनेकी चामकी रस्सीके हैं कल्पना सज्जना यह दो नाम नायकके चढानेकेवास्ते हाथीके सजावनेके है यह दोनों शब्द समानलिंग है प्रवेणी आस्तरण वर्ण परिस्तोम कुथ यह पाच नाम हाथीकी पृष्ठवर्त्ती बिछौनाके है इसको हाथीकी झूलभी कहते है तिसमें कुथशब्द स्त्रीपुर्लिग दोनोंमें होता है ॥ ४२ ॥ और जो कि

हस्त्यश्व असार है अर्थात् जो कि हाथीया घोडा युद्धके योग्य नहीं है वह वीत संज्ञिक है. और जो कि गजबन्धनी अर्थात् हाथीके बांधनेकी जगह है वह वारी संज्ञिक है. इसकों हाथीखानाभी कहते हैं. घोटक वीति तुरग तुरंग अश्व तुरंगम ॥ ४३ ॥ वाजिन् वाह अर्वन् गंधर्व हय सैन्धव सप्ति यह तेरह नाम घोडेके हैं. और जो कि घोडा कुलीन अर्थात् उत्तमजातिसें उत्पन्न हुएहैं वह आजानेय संज्ञिक हैं. और जो कि घोडा साधुवाही अर्थात् सुन्दर चलते हैं वह विनीत संज्ञिक हैं ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ॥ ययुरश्वोऽश्वमेधीयो जवनस्तु जवाधिकः ॥४५॥ पृष्ठ्यः स्थौरी सितः कर्को रथ्यो वोढा रथस्य यः ॥ बालः किशोरो वाम्यश्वा वडवा वाडवं गणे ॥ ४६ ॥

वनायुज पारसीक काम्बोज बाह्लिक यह चार घोडाओंके भेद हैं और जो कि घोडा अश्वमेध यज्ञकेवास्ते योग्य है वह ययु संज्ञिक है. और जो कि घोडा वेगकरके अधिक है वह जवन संज्ञिक है ॥ ४५ ॥ पृष्ठ्य स्थौरिन् यह दो नाम जलादिक बोझके वहनेवाले घोडेके हैं. और जो कि शुक्ल घोडा है वह कर्क संज्ञिक है. और जो कि घोडा रथके वहनेवाला है वह रथ्य संज्ञिक है. और घोडेका जो बाल है वह किशोर संज्ञिक है इसकों वछेडा कहते हैं. वामी अश्वा वडवा यह तीन नाम घोडीके हैं और घोडियोंके समूहमें वाडव शब्द वर्त्ते है॥४६॥

त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ॥ कश्यं तु मध्यमश्वानां हेषा ह्रेषा च निःस्वनः ॥ ४७ ॥ निगालस्तु गलोद्देशो वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ॥ आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥

और जो कि मार्ग घोडेकर एक दिनमें प्राप्त होवे है वह आश्वीन संज्ञिक है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है. जो कि घोडाओंका मध्यभाग है वह कश्य संज्ञिक है. घोडाओंका शब्द हेषा ह्रेषा संज्ञिक है इसकों हींसनभी कहते है ॥ ४७ ॥ और जो कि घोडेका गलोद्देश है अर्थात् गले और हँसलीकी संधि है वह निगाल संज्ञिक है. घोडाओंके समूहमें आश्वीय आश्व शब्द वर्त्ते हैं. यहाँ वत्प्रत्ययकरके आदेश दोनों शब्दोंकी तुल्यता जतानेके लियें है. आस्कन्दित यह एक नाम घोडेकी उस चालका है जिसमें कि वेगसें आर्त्तहुआ घोडा न सुनता है न देखता हैं इसकों भरपल्ला (भरधांव चाल) कहते हैं. धौरितक यह एक नाम चतुरतायुक्त सरलगतिका है. इसकों तुरकी गामचालभी कहते हैं. रेचित यह एक नाम मध्यमवेगकरकें चक्रकी समान भ्रमनेका है इसकों दुरकी चाल कहते हैं.

वल्गित यह एक नाम अग्रशरीरकों समुल्लासकरकें खोटे स्थलादिकमें मुखकों समेटकर चलनेका है इसकों बाजीचाल कहते है प्लुत यह एक नाम अगले पिछले भागकों उठाकर क्रमसें आरोपण करनेका है इसकों चौक चाल कहते हैं ॥ ४८ ॥

गतयोऽमूः पञ्च धारा घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ॥ कविका तु खलीनोऽस्त्री शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥ ४९॥ पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले वालहस्तश्च वालधिः ॥ त्रिपूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥

यह पाचोगति धारा संज्ञिक है और घोडेकी घोणा नाक प्रोथ संज्ञिक है यह शब्द पुनपुसकलिंगमें होता है कविका खलीन यह दो नाम लगामके है तिसमें खलीन शब्द पुनपुसकलिंग है शफ खुर यह दो नाम घोडेको टापके है इसकों सुम कहते है तिसमें शफशब्द नपुसकलिंगमें होता है और खुरशब्द पुलिंग है ॥ ४९ ॥ पुच्छ लूम लागूल यह तीन नाम घोडेकी पूछके हैं तिसमें पूछशब्द पुनपुसकलिंग है वालहस्त वालधि यह दो नाम केशगमूहयुक्त पूछके अग्रभागके हैं उपावृत्त लुठित यह दो नाम श्रमके दूर करनेकेलिये वार २ पृथिवीपर आसपासके भागोंकर लोटे हुए घोडेमें वर्त्ते है यह दोनों शब्द तीनों लिंगमे होते है॥५०॥

याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ॥ असौ पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥ कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम्॥ क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद्गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥ ५२ ॥

युद्धही है अर्थ प्रयोजन जिसका ऐसे चक्रयुक्तयानमें शताग स्यदन रथ यह तीन नाम वर्त्ते है अर्थात् यह तीन नाम युद्धके रथके है और जो कि चक्रयुक्त यान युद्धके वास्ते नहीं होता है वह पुष्परथ संज्ञिक है अर्थात् यह एक नाम क्रीडारथका है॥५१॥ कर्णीरथ प्रवहण डयन यह तीन नाम ऊपरवस्त्रादिकसें ढकेस्त्रियोके बैठनेके रथविशेषके हैं यह तीनों समानार्थ है अनस् शकट यह दो नाम गाडाके है तिसमें अनस्शब्द नपुसकलिंगमें होता हे और शकट पुनपुसकलिंग है और जो शकट कबलिवाह्यक है अर्थात् बैलोंकर वहनेयोग्य है वह गन्त्री संज्ञिक है इसकों गाटी कहते हैं ॥ ५२ ॥

शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला प्रेङ्खादिका स्त्रियाम् ॥ उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥ पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ॥ रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

शिबिका याप्ययान यह दो नाम पालखीके हैं दोला प्रेखा यह दो नाम हिंडोलाके है कोई इसको डोलीभी कहते हैं आदिशब्दसें शयन खट्वा वाहादिकभी दोला संज्ञिक है

यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं. व्याघ्रके चर्मसें मढेहुए रथमें द्वैप वैयाघ्र यह दोनों शब्द वर्त्ते हैं ॥ ५३ ॥ श्वेत पीले कंबलसें मढाहुआ रथ पाण्डुकंबलिन् संज्ञिक है. कंबलादिक अर्थात् कंबल वस्त्र रेशमआदिसें मढेहुए रथमें कांबल वास्त्र आदिशब्दसें दौकूल आदिकशब्द वर्त्ते हैं भाव यह है कि जो कि कम्बलसें रथ मढा हो वह कांबल संज्ञिक है और जों कि वस्त्रसें रथ मढा हो वह वास्त्र संज्ञिक है. और जो दुकूलसें रथ मढा हो वह दौकूल संज्ञिक है ॥ ५४ ॥

त्रिषु द्वैपादयो रथ्या रथकट्या रथव्रजे ॥ धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥ चक्रं रथाङ्गं तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ॥ पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ॥ ५६ ॥

यह द्वैप वैयाघ्रादिक शब्द तीनों लिंगमें होते हैं रथ्या रथकट्या यह दो नाम रथके समूहमें वर्त्ते हैं. धुर् यानमुख यह दो नाम रथादिकके अग्रभागके हैं इसकों धुर कहते हैं तिसमें धुर् शब्द स्त्रीलिंग और यानमुख नपुंसकलिंगमें वर्त्ते है. रथांग अपस्कर यह दो नाम रथके अंगमात्रके हैं ॥ ५५ ॥चक्र रथांग यह नाम पहियेके हैं. तिस चक्रके अन्तमें अर्थात् पृथिवीके स्पर्श करनेवाले भागमें नेमि प्रधि शब्द वर्त्ते हैं. तिसमें नेमि स्त्रीलिंग और प्रधि पुंलिंग है. पिण्डिका नाभि यह दो नाम पहियेके मण्डलाकार मध्यभागका नाम है. अक्ष नाम धुराके अग्रभागमें पहियेके धारण करनेकेवास्ते जो कील आरोपण कीजाती है उसमें अरणि शब्द वर्त्ते है. यह शब्द दोनों स्त्रीपुंलिंगमें होता है ॥ ५६ ॥

रथगुप्तिर्वरूथो ना कूवरस्तु युगंधरः॥ अनुकर्षो दार्वधःस्थं प्रासङ्गो ना युगाद्युगः ॥ ५७ ॥ सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ॥ परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम्॥५८॥

रथगुप्ति वरूथ यह दो नाम शस्त्रादिकोंकी रक्षाकेलिये रथका जो लोहादिमय परदा कियाजाता है उसके हैं तिसमें वरूथ पुलिंग है. कूवर युगंधर यह दो नाम जिसमें कि रथके घोडे बाँधे जाते हैं उस काष्ठके हैं. और जो कि काष्ठ रथके नीचे स्थित है वह अनुकर्ष संज्ञिक है. युगात् अर्थात् युगकर चलनेवाला जो रथाश्वादिक तिसका जो युग जुआ है वह प्रासंग संज्ञिक है यह शब्द पुलिंग है ॥५७॥ समस्त हाथी घोडा आदिक वाहन यान युग्य पत्र धोरण संज्ञिक हैं. और जो कि परंपरा वाहन है अर्थात् जो कि पालकी आदिक वाहन परंपराकर नरादिकोंकर वहाजाता है वह वैनीतक संज्ञिक है यह शब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ५८ ॥

आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ॥ नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥५९॥ सव्येष्टृदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ॥ रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥

आधोरण हस्तिपक हस्त्यारोह निषादिन् यह चार नाम हाथीमानके है नियतृ प्राजितृ यतृ सूत क्षत्तृ सारथि ॥ ५९ ॥ सव्येष्टृ दक्षिणस्थ यह आठ नाम रथकुटुम्बी अर्थात् रथके हाँकनेवालेके है रथिन् स्यन्दनारोह यह दो नाम रथपर चढकर लडनेवालेके हैं अश्वारोह सादिन् यह दो नाम घोडेके सवारके है ॥ ६० ॥

भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ सेनाया समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥ बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ॥ परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥

भट योध योद्धृ यह तीन नाम युद्ध करनेवाल्के है सेनारक्ष सैनिक यह दो नाम सेनाके रक्षा करनेवाले पहरेदारोंके हैं और जो सेनाकेविषे समवेत अर्थात् इकठे रहते हैं वह सैन्य सैनिक संज्ञिक है ॥ ६१ ॥ और जो सहस्र करके बली है अर्थात् जिनकी सेनामें हजार जोधा रहते है वह साहस्र सहस्रिन् संज्ञिक है परिधिस्थ परिचर यह दो नाम उसके है जो कि सेनापतिके चारोंतरफ विचरता रहता है सेनानी वाहिनीपति यह दो नाम सेनापतिके है॥६२॥

कञ्चुको वारवाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ॥ बध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥ शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ॥ उरच्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

कचुक वारवाण यह दो नाम सन्नाह चोलकादिकके है तिसमें वारवाणशब्द पुनपुमकलिंग हैं और सकचुकपुरुष मध्यभागमें दृढताकेवास्ते कचुकके ऊपर जो बाँधते है वह सारसन अधिकाग संज्ञिक है इसको कमरपट्टी कहते है शीर्षक ॥ ६३ ॥ शीर्षण्य शिरस्त्र यह तीन नाम टोपके है तनुत्र वर्मन् दशन उरच्छद ककटक जगर कवच यह सात नाम कवचके है इसको बक्खतर कहते है तिसमें कवचशब्द पुनपुसकलिंगमें होता है ॥ ६४ ॥

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ॥ संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥ त्रिष्वामुक्तादयो वर्मभृतां कावचिकं गणे ॥ पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजय ॥ ॥ ६६ ॥ पद्गश्च पदिकश्चाऽथ पादातं पत्तिसंहतिः ॥ शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥६७॥

आमुक्त प्रतिमुक्त पिनद्ध अपिनद्ध यह चार नाम उसके हैं जो कि कंचुकादिकको पहरेहुएका है. सन्नद्ध वर्मित सज्ज दंशित व्यूढकंकट यह पांच नाम उसके हैं जो कि कवचको धारण कियेहुए है ॥ ६५ ॥ यह आमुक्त आदिक शब्द तीनों लिंगमें होते हैं जैसें [आमुक्ता शाटी—आमुक्तः कंचुकः—आमुक्तं वस्त्रम्—] इसीप्रकार सन्नद्धा आदिक जानने. कवचधारियोंके समूहमें कावचिक शब्द होता है. पदाति पत्ति पदग पादातिक पदाजि ॥ ६६ ॥ पद्ग पदिक यह सात नाम पैदलके हैं. पैदलोंका समूह पादात संज्ञिक है. शस्त्राजीव कांडपृष्ठ आयुधीय आयुधिक यह चार नाम शस्त्रसें जीविका करनेवालेके हैं यह शब्द आपसमें समान हैं६७

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्खवत् ॥ अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥ ६८ ॥ धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः ॥ स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥

कृतहस्त सुप्रयोगविशिख कृतपुंख यह तीन नाम बाणके फेंकनेमें चतुर पुरुषके हैं इसको तीरन्दाज कहते हैं. और जो कि लक्ष्यसें भ्रष्टबाणवाला है अर्थात् जिसका बाण निशानेपर नहीं लगता है वह अपराद्धपृषत्क संज्ञिक है ॥ ६८ ॥ धन्विन् धनुष्मत् धानुष्क निषंगिन् अस्त्रिन् धनुर्धर यह छे नाम धनुषधारीके हैं. काण्डवत् काण्डीर यह दो नाम बाणधारीके हैं. शाक्तीक शक्तिहेतिक यह दो नाम बरछी धारण करनेवालेके हैं६९

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपर्श्वधहेतिकौ ॥ नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्यात्समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७० ॥ चर्मी फलकपाणिः स्यात्पताकी वैजयन्तिकः ॥ अनुप्लवः सहायश्चाऽनुचरोऽभिचरः समाः ॥ ७१ ॥

यष्टि (लाठी) और पर्श्वध (फरसा) हैं शस्त्र जिनके ऐसे जो लोग हैं वह याष्टीक पारश्वधिक संज्ञिक हैं अर्थात् याष्टीक यह एक नाम लाठी धारण करनेवालेका है पारश्वधिक यह एक नाम फरसा धारण करनेवालेका है. और जो कि तलवार शस्त्रवाला है वह निस्त्रिंशिक संज्ञिक है. प्रासिक यह एक नाम सांग धारण करनेवालेका है कौन्तिक यह एक नाम भाला धारण करनेवालेका है यह दोनों शब्द समानलिंग है ॥ ७० ॥ चर्मिन् फलकपाणि यह दो नाम ढालके धारण करनेवालेके हैं. पताकिन् वैजयन्तिक यह दो नाम पताकाके धारण करनेवालेके हैं. अनुप्लव सहाय अनुचर अभिचर यह चार नाम सहायकके हैं यह शब्द समानार्थ हैं ॥ ७१ ॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः ॥ पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥ जङ्घालोऽतिजव-

स्तुल्यौ जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ ॥ तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

पुरोग अग्रेसर प्रष्ठ अग्रतःसर पुरःसर पुरोगम पुरोगामिन् यह सात नाम अगारी चलनेवालेके है मन्दगामिन् मथर यह दो नाम धीरै २ चलनेवालेके है॥७२॥जघाल अतिजव यह दो नाम अत्यन्तचलनेवालेके है जघाकरिक जाघिक यह दो नाम उसके है जो कि जघाके बलसें जीविका करता है इसकों हलकाराभी कहते है यह शब्द समानलिंग है तरस्विन् त्वरित वेगिन् प्रजविन् जवन जव यह छै नाम जलदी चलनेवालेके है ॥ ७३ ॥

जय्यो यः शक्यते जेतु जेयो जेतव्यमात्रके ॥ जैत्रस्तु जेता यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७४ ॥ सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि ॥ ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥

जो कि जीतनेकों समर्थ होवै वह जय्य सज्ञिक हे जैसें रामकर रावण जय्य है जेय यह एक नाम जेतव्यमात्रमें वर्त्ते है अर्थात् यह एक नाम जीतनेयोग्यका है जैसें मन जेय हे न कि जय्य जेत्र जेतृ यह दो नाम जीतनेवालेके है और जो कि शत्रुओंकेप्रति अलं अर्थात् सामर्थ्यकरकें लडनेकों सन्मुख जाता है ॥ ७४ ॥ वह अभ्यमित्र्य अभ्यमित्रीय अभ्यमित्रीण सज्ञिक हे और जो कि ऊर्जपराक्रमके अतिशयकरकें युक्त है वह ऊर्जस्वल ऊर्जस्विन् सज्ञिक है ॥ ७५ ॥

स्यादुरस्वानुरसिलो रथिनो रथिको रथी ॥ कामंगाम्यनुकामीनो ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥ शूरो वीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णुश्च जित्वरः ॥ सायुगीनो रणे साधुः शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥

उरस्वत् उरसिल यह दो नाम बडी छातीवालेके है रथिन रथिक रथिन् यह तीन नाम रथके स्वामीके है और जो कि कामगामी है अर्थात् जो कि इच्छानुकूल गमन करता है वह अनुकामीन सज्ञिक है और जो बहुधा गमनशील है वह अत्यतीन सज्ञिक है ॥ ७६ ॥ शूर वीर विक्रान्त यह तीन नाम शूरके है जेतृ जिष्णु जित्वर यह तीन नाम जयशीलके हैं जो कि रणमें साधु अर्थात् सग्राममें कुशल है वह सायुगीन सज्ञिक है यह शस्त्राजीव आदिक सायुगीनान्त शब्द तीनों लिंगमें होते हैं ॥ ७७ ॥

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः ॥ वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥ व्यूहस्तु बलविन्यासो भेदा दण्डादयो

---

१ व्यूहका लक्षण और ग्रन्थमें लिखा है मुखे रथा स्था पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदातय ॥ पार्श्वयोश्च गजा कार्या व्यूहोय परिकीर्तित १

२ कामन्दकने दण्डादिलक्षण कहा है तिर्यग्वृत्तिस्तु दण्डः स्याद्भोगोऽन्वावृत्तिरेव च॥ मडल सर्वतोवृत्ति पृथग्वृत्तिरसहत ॥ २ ॥

युधि ॥ प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतना अनीकिनी चमू वरूथिनी बल सैन्य चक्र अनीक यह ग्यारह नाम सेनाके हैं. इसमें अनीकशब्द पुंनपुंसकलिंग दोनोंमें होताहै ॥ ७८ ॥ जो बलविन्यास अर्थात् जो सेनाकी रचना विशेषकरकें स्थिति है वह व्यूह संज्ञिक है. युद्धमें व्यूहके दण्ड आदिकभेद विशेष हैं सेनाकी जो दण्डकीसमान तिरछी स्थिति है वह दण्ड है आदिशब्दसें भोगमंडलादिक जानने. प्रत्यासार व्यूहपार्ष्णि यह दो नाम व्यूहके पिछलभागके हैं. सैन्यपृष्ठ प्रतिग्रह यह दो नाम सेनाके पिछलेभागके हैं॥७९॥

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका ॥ पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥ सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ॥ अनीकिनी दशानीकिन्यऽक्षौहिण्यथ संपदि ॥ ८१ ॥ संपत्तिः

१ अक्षोहिणीका लक्षणभी और ग्रन्थसें लिखते हैं—
अक्षौहिण्यामित्यधिकैः सप्तत्याह्यष्टभिः शतैः॥ संयुक्तानि सहस्राणि गजानामेकविंशतिः २१८७०। एवमेवरथानान्तु संख्यानं कीर्तितं बुधैः २१८७० पंचषष्टिसहस्राणि षट्शतानि दशैव तु ॥ संख्यातास्तुरगास्तज्ज्ञैर्विना रथतुरंगमैः ६५६१०। नृणा शतसहस्राणि सहस्राणि तथा नव ॥ शतानि त्रीणि चान्यानि पंचाशच्च पदातयः ॥ १०९३५०॥

श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपत्त्यां विपदापदौ॥ आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥ धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ॥इष्वासोऽप्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥८३॥

जिसमें एक हाथी एक रथ तीन घोडा पांच पैदल हैं वह सेना पत्ति संज्ञिक है. समस्त तिगुनें पत्तिसेनाके अंग गजादिकोंकर यथोत्तर क्रमसें सेनामुखादिक नाम होवे हैं ॥ ८० ॥ जैसें तीन पत्तियोंका सेनामुख और तीन सेनामुखोंका गुल्म और तीन गुल्मोंका गण और तीन गणोंकी वाहिनी और तीन वाहिनियोंकी पृतना और तीन पृतनाओंकी चमू और तीन चमूओंकी अनीकिनी और तीन अनीकिनियोंकी दशानीकिनी और तीन दशानीकिनियोंकी अक्षौहिणी होवेहै. संपद् ॥ ८१ ॥ संपत्ति श्री लक्ष्मी यह चार नाम संपदाके हैं. विपत्ति विपद् आपद् यह तीन नाम आपदाके हैं. आयुध प्रहरण शस्त्र अस्त्र यह चार नाम शस्त्रमात्रके हैं. धनुष् चाप धन्वन् शरासन कोदंड कार्मुक इष्वास यह सात नाम धनुषके हैं तिसमें धनुष् और चाप शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग हैं. कर्णका धनुष कालपृष्ठ संज्ञिक है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसकौ ॥ कोटिरस्याटनी गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥ लस्तकस्तु

धनुर्मध्यं मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः॥ स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

गांडीव गांडिव यह दो नाम कपिध्वज (अर्जुन)के धनुषके है यह दोनों शब्द पुनपुसकलिंग है, कोटि अटनी यह दो नाम इस धनुषके प्रांतभागमें वर्ते है अर्थात् यह नाम धनुषके आसपासके किनारेके है गोधा तल यह दो नाम प्रत्यचाके प्रहारके निवारणकेविषे वर्ते है इन शब्दोंमें व्यक्तिद्वयसें द्विवचन है ॥ ८४ ॥ और जो कि धनुषका मध्यभाग है वह लस्तक संज्ञिक है मौर्वी ज्या शिंजिनी गुण यह चार नाम धनुषकी प्रत्यचाके है इसकों चिल्लाभी कहते है प्रत्यालीढ आलीढ आदिशब्दसें समपद वैशाख मंडल यह पांच धनुषधारियोंकी स्थितिके भेद है जैसें वांईजंघाके फैलानेपूर्वक दहनी जंघाके समेटनेकर जो स्थिति है वह प्रत्यालीढ है और दक्षिणजंघाके फैलानेपूर्वक वांईजंघाके समेटनेकर जो स्थिति है वह आलीढसंज्ञिक है और पॉवोंकी तुल्यताकर जो स्थिति है वह समपदसंज्ञिक है और विलाँदभरके अन्तरकर जो पाँवोंकी स्थिति है वह वैशाखसंज्ञिक है और मण्डलाकार जो दोनों पाँवोंका धारण करना है वह मंडल संज्ञिक है ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्य शरव्यं च शराभ्यास उपासनम् ॥ पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥ कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ॥ प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः पक्षो वाजस्त्रिषूत्तरे ॥ ८७ ॥

लक्ष लक्ष्य शरव्य यह तीन नाम निशानके है शराभ्यास उपासन यह दो नाम बाणके फेंकनेके अभ्यासके है पृषत्क बाण विशिख अजिह्मग खग आशुग ॥ ८६ ॥ कलम्ब मार्गण शर पत्रिन् रोप इषु यह बारह नाम बाणके है तिसमें इषुशब्द स्त्रीपुलिंग दोनोंमें होता है प्रक्ष्वेडन नाराच यह दो नाम लोहमयबाणके है पक्ष वाज यह दो नाम बाणके कंकादिकपक्षके है यहाँसें उत्तरवाची निरस्तआदिक लिप्तकान्त शब्द तीनों लिंगमें होते है ॥ ८७ ॥

निरस्तः प्रहिते बाणे विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ ॥ तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधिर्द्वयोः ॥ ८८ ॥ तूण्यां खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः ॥ कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

फेंकेहुए बाणमें निरस्त शब्द वर्ते है विषाक्त दिग्ध लिप्तक यह तीन नाम विषसें सनेहुए बाणमें वर्ते है तूण उपासंग तूणीर निषंग इषुधि ॥ ८८ ॥ तूणी यह छे नाम तरकसके है तिसमें इषुधिशब्द स्त्रीपुलिंग दोनोंमें होता है खड्ग निस्त्रिंश चन्द्रहास असि रिष्टि कौक्षेयक मंडलाग्र करवाल कृपाण यह नौ नाम तरवारके हैं ॥ ८९ ॥

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्यान्मेखला तन्निबन्धनम् ॥ फलकोऽस्त्री फलं चर्म संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥ द्रुघणो मुद्गरघनौ स्यादीली करवालिका ॥ भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ परिघः परिघातनः ॥ ९१ ॥

त्सरु यह एक नाम तलवार कटार खंजीर छुरी आदिकोंकी मूठमें वर्त्ते है. और जो कि उस तलवारका निबन्धन है वह मेखला संज्ञिक हैं. इसकरकें प्रहार करतेहुए हाथसें तलवार नहीं निकलसक्ती है. कोई इसकों डालीभी कहते हैं. फलक फल चर्मन् यह तीन नाम ढालके हैं तिसमें फलकशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है. और जो कि इस ढालकी मुष्टि अर्थात् पकडनेकी जगह है वह संग्राह संज्ञिक है ॥ ९० ॥ द्रुघण मुद्गर घन यह तीन नाम मुद्गरके हैं. ईली करवालिका यह दो नाम छोटा तलवारकी समान एक धारवाले शस्त्रके हैं. इसकों खांडा कहते हैं. भिन्दिपाल सृग यह दो नाम पत्थरोंके फेंकनेमें साधनरूप रस्सीके बनेहुए यंत्रविशेषके हैं इसकों गोफण कहते हैं. यह दोनों शब्द समान हैं. परिघ परिघातन यह दो नाम लोहसें बंधीहुई हाथकी बरावर लाठीके हैं ॥ ९१ ॥

द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ॥ स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥ वा पुंसि शल्यं शङ्कुर्ना शर्वला तोमरोऽस्त्रियाम् ॥ प्रासस्तु कुन्तः कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९३ ॥

कुठार स्वधिति परशु परश्वध यह चार नाम कुठारके हैं इसकों फरसा कहते हैं. तिसमें कुठारशब्द पुंनपुंसकलिंग दोनोंमें होता है. शस्त्री असिपुत्री छुरिका असिधेनुका यह चार नाम छुरीके हैं ॥ ९२ ॥ शल्य शंकु यह दो नाम वाणाग्र शस्त्रविशेषके हैं इसकों फल कहते हैं. तिसमें शल्यशब्द विकल्पसे पुंलिंगमें होता है. और शंकुशब्द पुंलिंग है सर्वला तोमर यह दो नाम गुर्जके हैं तिसमें तोमरशब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है. प्रास कुन्त यह दो नाम भालाके हैं इसकों सांगभी कहते हैं. कोण पालि अश्रि कोटि यह चार नाम तलवार आदिकशस्त्रोंके अन्तभागके हैं इसकों नोंकभी कहते हैं तिसमें पालिआदिक शब्द स्त्रीलिंग हैं ॥ ९३ ॥

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंनहनार्थकः ॥ लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥ यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ॥ यात्रा व्रज्याऽभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

सर्वाभिसार सर्वौघ सर्वसन्नहन यह तीन नाम चतुरंगसेनाके इकठे करनेके हैं इसकों जमावभी कहते हैं. सर्वसन्नहनार्थक इसके पदका यह अर्थ है कि सर्वसन्नहनही है अर्थ. अर्थात् सबका इकठा करना ही अर्थ जिसका सो सर्वसन्नहनार्थक है. नामसंख्यामें

सर्वसन्नहन शब्द होता है यह शब्द नपुसकलिंग है अस्त्रधारी राजाओंकी महानवमी दशमीकेविषैं नीराजनके समयमें शस्त्रसमर्पणारूप जो विधि है वह लोहाभिसार सञ्ज्ञिक है ॥ ९४ ॥ अरिनाम शत्रुके समीप जो सेना सहित गमन है वह अभिषेणन सञ्ज्ञिक है यात्रा व्रज्या अभिनिर्याण प्रस्थान गमन गम यह छै नाम यात्राके है ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसरणं प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥ वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकाऽर्थकाः ॥ स्युर्मागधास्तु मगधा वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

आसार प्रसरण यह दो नाम सेनाके विस्तारके है प्रचक्र चलित यह दो नाम चलीहुई सेनाके है सग्राममें अहित वैरियोंके प्रति अभीत निडर शूरका जो गमन है वह अभिक्रम सञ्ज्ञिक है ॥ ९६ ॥ वैतालिक बोधकर यह दो नाम उनके है जो कि प्रात काल राजाओंकों स्तुतिके पाठकरके जगाते है चाक्रिक घाटिक यह दो नाम उनके है जो कि जगानेके समय घटाके प्रहारकर राजाओंकी प्रशसा करते है मागध मगध यह दो नाम उनके हैं जो कि राजाके अगारी वशकी स्तुति करते है वदिन् स्तुतिपाठक यह दो नाम राजादिकोंकी स्तुतिके पाठ करनेवालोके है इनको भाटभी कहते है कोई इन मागधादिक चारोंको एकार्थ कहते है ॥ ९७ ॥

संशप्तकास्तु समयात्सङ्ग्रामादनिवर्तिनः ॥ रेणुर्द्वयोः स्त्रिया धूलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥ चूर्णे क्षोदः समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले॥ पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

और जो कि शपथकर सग्रामसें नहीं निवृत्त होवे है वह सशप्तक सञ्ज्ञिक है भाव यह है कि जो कि प्रतिज्ञाकर विनाजीतें सग्राममेंसे नहीं लौटते है वह सशप्तक हैं रेणु धूलि पासु रजस् यह चार नाम धूलिके है तिसमें रेणु स्त्रीपुलिंग दोनोंमें होता है और धूलिशब्द स्त्रीलिंगमें होता है और पासुशब्द पुलिंग है और रजस्शब्द स्त्रीपुलिग दोनोंमें नही होता है किन्तु नपुसकलिंगमें होता है ॥ ९८ ॥ चूर्ण क्षोद यह दो नाम पिसीहुई धूलिके हैं समुत्पिंज पिंजल यह दो नाम अत्यन्त आकुल हुई सेनाआदिकोंमें वर्त्ते हैं पताका वैजयन्ती केतन ध्वज यह चार नाम पताकाके हैं तिसमें ध्वजशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंगमें होता है ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ॥ अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥ आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ॥ अहमहमिका तु सा स्यात्परस्पर यो

भवत्यहंकारः ॥ १०१ ॥ द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ॥ शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

और जो कि अनिभय देनीवाली युद्ध-भूमि है वह वीराशंसन संज्ञिक है. अहंपूर्व अहंपूर्व अर्थात मैं अगारी होताहूं २ इत्यादि आग्रहपूर्वक जो युद्ध है वह अहंपूर्विका संज्ञिक है यह शब्द स्त्रीलिंगमें होता है ॥ १००॥ और गर्वसे जो कि आत्माकेविषें संभावना है अर्थात् सामर्थ्यका प्रकट करना है वह आहोपुरुषिका है भाव यह है कि मैंहीं पुरुष हूं ऐसे अहंकारवाला जो है वह अहोपुरुष है और उसका जो भाव है वह आहोपुरुषिका संज्ञिक है. मैं समर्थ हूं इत्यादिक जो परस्पर अहंकार होता है वह अहमहमिका संज्ञिक है ॥ १०१ ॥ द्रविण तरस् सहस् बल शौर्य स्थामन् शुष्म शक्ति पराक्रम प्राण यह दश नाम पराक्रमके हैं. विक्रम अतिशक्तिता यह दो नाम अतिपराक्रमके हैं ॥ १०२ ॥

वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥ मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं सांपरायिकम् ॥ अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥ संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ अभ्यामर्दसमाघातसङ्ग्रामाभ्यागमाहवाः॥१०५॥ समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः ॥ नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥

रण निवृत्त होनेपर श्रमकी शान्तिकेलिये अथवा होनेवाले रणकेविषें उत्साहकी वृद्धिकेलिये जो वीरोंका मदिराका पान है वह वीरपाण संज्ञिक है. युद्ध आयोधन जन्य प्रधन प्रविदारण ॥ १०३ ॥ मृध आस्कन्दन संख्य समीक सांपरायिक समर अनीक रण कलह विग्रह ॥ १०४ ॥ संप्रहार अभिसंपात कलि संस्फोट संयुग अभ्यामर्द समाघात संग्राम अभ्यागम आहव॥१०५॥ समुदाय संयत् समिति आजि समित् युध् यह इकवीश नाम युद्धके हैं. तिसमें समर आदिक तीन नाम पुंनपुंसकलिंगमें होते हैं. और संयत् आदिक पांचो शब्द स्त्रीलिंग हैं नियुद्ध बाहुयुद्ध यह दो नाम बाहुयुद्धके हैं तुमुल यह एक नाम रणके संकुलमें वर्त्ते है. अर्थात यह एक नाम संग्रामकी परस्पर संबाधाका है ॥ १०६ ॥

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्करिणां घटना घटा ॥ क्रन्दनं योधसंरावो बृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥ विस्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरौ समौ ॥ प्रसभं तु बलात्कारो हठोऽथ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥

क्ष्वेडा सिंहनाद यह दो नाम वीरोके सिंहनादके समान नादविशेषके है. और जो कि हाथियोंकी युद्धमें घटना है अर्थात् सघट्टन है वह घटा और जो कि जोधाओंका पालीपूर्वक जो शब्द है वह क्रदन सज्ञिक है और जो कि हाथियोंकी गर्जना है वह बृहित सज्ञिक है ॥ १०७ ॥ और जो कि धनुषका शब्द है वह विस्फार सज्ञिक है पटह आडबर यह दोनो समानलिंगवाचो नाम सग्रामकी ध्वनिके है प्रसभ बलात्कार हट यह तीन नाम हटके है स्खलित छल यह दो नाम युद्धमर्यादासे चलनेके हैं इसकों धोखाभी कहते है ॥ १०८ ॥

अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ॥ मूर्छा तु कश्मलं मोहोऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥ अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः॥ वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥ प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ॥ अपक्रमोऽपयानं च रणे भङ्गः पराजयः॥१११॥

अजन्य उत्पात उपसर्ग यह तीन नाम शुभाशुभ जतानेवाले उत्पातके हैं तिसमें अजन्यशब्द नपुसकलिंग है यह तीनों शब्द समानार्थ है मूर्च्छा कश्मल मोह यह तीन नाम मूर्च्छाके है अवमर्द पीडन यह दो नाम सस्यादिकोंसे युक्त हुए देशकों पीडित करनेके है ॥ १०९ ॥ अभ्यवस्कन्दन अभ्यासादन यह दो नाम छलसें दबानेके है. इसकों छायाभी कहते है. विजय जय यह दो नाम शत्रुकों हराकर पायेहुए उत्कर्षके हैं इसकों जीत कहते है वैरशुद्धि प्रतीकार वैरनिर्यातन यह तीन नाम वैर मिटानेके हैं ॥ ११० ॥ प्रद्राव उद्द्राव सद्राव सदाव विद्रव द्रव अपक्रम अपयान यह आठ नाम भागनेके है और जो कि सग्रामकेविषें भग है, वह पराजय सज्ञिक है ॥ १११ ॥

पराजितपराभूतौ त्रिषु नष्टतिरोहितौ ॥ प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥ प्रवासनं परासनं निषूदनं निहिंसनम् ॥ निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ॥ ११३ ॥ निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥ उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च॥ आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥

पराजित पराभूत यह दो नाम जीते हुए के है निलीन तिरोहित यह दो नाम छिपे हुएके है यह पराजित आदिक चारोंशब्द तीनों लिंगमें होते है, क्योंकि त्रिषु यह पद काकनेत्रकीसमान दोनोंमें युक्त होता है. प्रमापण निबर्हण निकारण विशारण॥११२॥ प्रवासन परासन निषूदन निहिसन निर्वासन सज्ञपन निर्ग्रन्थन अपासन ॥ ११३ ॥

निस्तर्हण निहनन क्षणन परिवर्जन निर्वापण विशसन मारण प्रतिघातन ॥ ११४ ॥ उद्वासन प्रमथन क्रथन उज्जासन आलम्भ पिंज विशर घात उन्माथ वध यह तीश नाम मारनेके हैं ॥ ११५ ॥

स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ॥ अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥११६ ॥ परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ॥ मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥

पंचता कालधर्म दिष्टान्त प्रलय अत्यय अन्त नाश मृत्यु मरण निधन यह दश नाम मरणके हैं. तिसमें मृत्युशब्द स्त्रीपुंलिंग दोनोंमें वर्त्ते है, और निधनशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ११६ ॥ परासु प्राप्तपंचत्व परेत प्रेतसंस्थित मृत प्रमीत यह सात नाम मरेहुएके हैं, यह परासु आदिक शब्द तीनों लिंगमें होते हैं. चिता चित्या चिति यह तीन नाम चिताके हैं. यह शब्द स्त्रीलिंगमें होते हैं ॥ ११७ ॥

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ॥ श्मशानं स्यात्पितृवनं कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥ प्रग्रहोपग्रहौ वन्द्यां कारा स्याद्बन्धनालये ॥ पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥ आयुर्जीवितकालो ना जीवातुर्जीवनौषधम् ॥

॥ इति क्षत्रियवर्गः ॥८॥

जो कि अपमूर्ध अर्थात् मस्तकहीन नर्त्तनक्रियायुक्त शरीर है, वह कबन्ध संज्ञिक है. इसकों धड कहते हैं. यह शब्द पुंनपुंसकलिंग है. श्मशान पितृवन यह दो नाम प्रेतभूमिके हैं. इसकों मरेघट कहते हैं. कुणप शव यह दो नाम निर्जीव शरीरके हैं. इसकों मुर्दा कहते हैं. तिसमें शवशब्द पुंनपुंसक लिंगकेविषें होता है ॥ ११८ ॥ प्रग्रह उपग्रह वंदी यह तीन नाम चोरादिकोंके बन्धनके हैं. इसकों कैदभी कहते हैं. बन्धनके घरकेविषें कारा शब्द वर्त्ते हैं, इनकों कैदखाना कहते हैं. असु प्राण यह दो नाम प्राणोंके हैं. यह दोनों शब्द पुंलिंग और बहुवचनमें होते हैं. जीव असुधारण यह दो नाम प्राण धारण करनेके है ॥ ११९ ॥ जीवनसें युक्त जो काल है, वह आयुष् संज्ञिक है. और जो जीवनका औषध अर्थात रखनेका उपाय है, वह जीवातु संज्ञिक है. यह शब्द पुंलिंग है

॥ इति क्षत्रियवर्गः ॥

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ॥ आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥ स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ॥ सेवा श्ववृत्तिरनृतं कृषिरुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

ऊरव्य ऊरुज अर्य वैश्य भूमिस्पृश् विश् यह छे नाम वैश्यके हैं. आजीव जीविका वार्त्ता वृत्ति वर्त्तन जीवन यह छे नाम जी-

विकामात्रके है ॥ १ ॥ कृषि खेतीका जोतना खोदना आदिक, पाशुपाल्य गोरक्षणादिक, वाणिज्य वेचना खरीदना आदिक, यह तीन वृत्ति अर्थात् वैश्योंकी जीविकाके भेद हैं इनमें कृषिशब्द स्त्रीलिंगमें होता है, और जो कि सेवा है, अर्थात् पराये चित्तका अनुवर्त्तन हे, वह श्ववृत्ति हे, और जो कि कृषिनाम कर्षणवृत्ति है, वह अनृत संज्ञिक है बाजार आदिकोंमें गिरेहुए कणोंका एक २ कर ग्रहण करना उछ संज्ञिक है और खेत आदिकोंमें स्वामीकर त्यागेहुए कणोंका ग्रहण करना शिल संज्ञिक है यह दोनों उछ, और शिलवृत्ति ऋत संज्ञिक है ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते ॥ सत्यानृतं वणिग्भावः स्यादृणं पर्युदश्चनम् ॥ ३ ॥ उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ॥ याच्ञयाप्तं याचितकं निमयादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

और याचित अयाचित अन्नादिकोंके विषे यथासंख्य ऋत अमृत यह दो शब्द होते हैं भाव यह है कि, प्रतिदिन तडुलादिककी जो याचा है, वह ऋत संज्ञिक है, और जो कि अजगरकी वृत्तिकी समान याचाके विना अन्नादिक प्राप्त होता है, वह अमृत संज्ञिक है, और जो कि वणिग्भाव अर्थात् वाणिज्य क्रयविक्रयादिक है, वह सत्यानृत संज्ञिक है ऋण पर्युदचन ॥ ३ ॥ उद्धार यह तीन नाम ऋणके है प्रयोग कुसीद वृद्धिजीविका यह तीन नाम उसके हैं जो कि ऋणसबन्धी कालांतर द्रव्यकरके जीविका है, इसकों व्याज (सूद)भी कहते है और जो कि याञ्चा अर्थात् माँगनेकरके मिले, वह याचितक संज्ञिक है. और जो कि निमय अर्थात् लैनेदेनेसें मिलता है, वह आपमित्यक संज्ञिक है ॥ ४ ॥

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ॥ कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥ क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषकश्च कृषीवलः ॥ क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥

उत्तमर्ण अधमर्ण यह दो नाम क्रमसें प्रयोक्ता और ग्राहकोंके है, अर्थात् ऋणके देनेलैनेवालोंके है. भाव यह है, जो कि प्रयोक्ता ऋणका देनेवाला है, वह उत्तमर्ण संज्ञिक है और जो कि ग्राहक ऋणका लेनेवाला है, वह अधमर्ण संज्ञिक है इसकों कर्जदार कहते है कुसीदिक वार्धुषिक वृद्ध्याजीव वार्धुषि यह चार नाम उसके है, जो कि ऋणको देकर उसकी वृद्धिसें जीविका करता है ॥ ५ ॥ क्षेत्राजीव कर्षक कृषिक कृषीवल यह चार नाम खेती करनेवालेके है जो कि खेत व्रीहि और शालिकी उत्पत्तिमें उचित है, वह व्रैहेय शालेय संज्ञिक है. भाव यह है, कि जिस खेतमें कि

व्रीहि उत्पन्न होते हैं, वह व्रैहेय है, और जिसमें कि शालि उत्पन्न होते हैं वह शालेय है ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत् ॥ तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभङ्गाद्द्विरूपता ॥ ७ ॥ मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवक्षमम्[1] ॥ बीजाकृतं तूप्तकृष्टे सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

और जो कि खेत यवादिकोंका भवन अर्थात् यवादिकोंकी उत्पत्तिमें उचित है, वह यव्यादिक है. जैसें यव्य यह एक नाम यवोंकी उत्पत्तिवाले खेतका है. यवक्य यह एक नाम छोटे यवोंकी उत्पत्तिवाले खेतका है. षष्टिक्य यह एक नाम षाटीकी उत्पत्तिवाले खेतका है. तिल्य तैलीनकी समान माषादिकोंको क्षेत्रविषयमें द्विरूपभाव होता है, जैसे तिल्य तैलीन यह दो नाम तिलोंकी उत्पत्तिवाले खेतके हैं. माष्य माषीन यह दो नाम उड़दकी उत्पत्तिवाले खेतके हैं. उम्य औमीन यह दो नाम अलसीकी उत्पत्तिवाले खेतके हैं. अणव्य आणवीन यह दो नाम छोटे नाजवाले खेतके हैं. भंग्य भांगीन यह दो नाम भांगवाले खेतके हैं ॥ ७ ॥ और जो कि खेत शेष अर्थात् कहेहुए व्रीहि आदिकोंसें अन्य मुद्ग आदिकधान्योंकी उत्पत्तिमें योग्य हो, वह मौद्गीन कौद्रवीणादिक संज्ञिक है. जैसे मौद्गीन यह एक नाम मूँगकी उत्पत्तिवाले खेतका है. कौद्रवीण यह एक नाम कोदोंकी उत्पत्तिवाले खेतका है. आदिशब्दसे चाणकीन जौधमीन कालायीन कौलत्थीन मैयंगवीन आदिक शब्द इसीप्रकार जाननें. और जो कि खेत उप्तकृष्ट है अर्थात् आदिमें बोया और पीछें जोता है, वह बीजाकृत संज्ञिक है. सीत्य कृष्ट हल्य यह तीन नाम जुतेहुए खेतके हैं ॥ ८ ॥

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ॥ द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥ द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ॥ खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

त्रिगुणाकृत तृतीयाकृत त्रिहल्य त्रिसीत्य यह चार नाम तीनवार जुतेहुए खेतके हैं. और इसीप्रकार द्विगुणाकृत क्षेत्रमें पूर्वके समस्त शब्द जोडने चाँहियें जैसे द्विगुणाकृत द्वितीयाकृत द्विहल्य द्विसीत्य यह चार नाम

१ शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम्। शाकके क्षेत्रादिकमें शाकशाकट शाकशाकिन यह दो नाम वर्त्ते हैं. यह अर्द्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है

[1] द्रोणादिकका लक्षण अन्यग्रंथसें लिखते हैं- पलं प्रकुंचकं मुष्टिः कुडवस्तच्चतुष्टयम् ॥ चत्वारः कुडवाः प्रस्थश्चतुःप्रस्थं तथाढकम् ॥ अष्टाढको भवेद्द्रोणो द्विद्रोणः शूर्प उच्यते॥सार्धशूर्पो भवेत्खारी द्विशूर्पाद्द्रोण्युदाहृता । तमेव भारं जानीयाद्वाहो भारचतुष्टयम् ॥

दोवार जुतेहुए खेतके है और इसी दोवार जुतेखेतमें शबाकृत शब्दभी वर्ते हे अर्थात् शबाकृतशब्दकों मिलाकर यह पाच नाम एकार्थवाचक हैं ॥ ९ ॥ द्रोणाढकादिपरिमितधान्यके वापादिक अर्थात् खेतआदिकमें द्रौणाढकादिक शब्द होते है जैसे द्रोणमात्र वोया जाय जिस खेतमें वह द्रौणिक. आढक मात्र बोयाजाय अन्न जिस खेतमे वह आढकिक सज्ञिक है आदिशब्दसें प्रास्थिक कौडविक आदिक शब्द जानने वापादि इस शब्दके आदिशब्दसें पचादिक शब्द जाननें जैसे द्रोणमात्र अन्नादिक पकाया जाय जिस कडाहमें वह द्रौणिक सज्ञिक है इसीप्रकार औरभी जाननें और जो कि खेत खारीवाप है वह खारीक सज्ञिक है भाव यह है कि खारीमात्र अन्न बोया जिस खेतमें वह खारीक सज्ञिक है. उत्तमर्ण आदिक खारीकान्तशब्द तीनों लिंगमें होते हे१०

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु॥ कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥ लोष्टानि लेष्टवः पुंसि कोटिशो लोष्टभेदनः ॥ प्राजनं तोदनं तोत्रं खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

वप्र केदार क्षेत्र यह तीन नाम खेतके हैं तिसमे वप्रशब्द पुनपुसकलिंगमें होता है इसक्षेत्रके समूहमें कैदारक कैदार्य क्षेत्र कैदारिक यह चार चार नाम वर्ते हैं॥ ११ ॥ लोष्ट लेष्टु यह दो नाम मिट्टीके टुकडेके है. इसकों ढेला कहते हैं तिसमें लेष्टुशब्द पुलिंगमें होता है कोटिश लोष्टभेदन यह दो नाम ढेलेके फोडनेवाली मुगरी वा परेलेके हैं. प्राजन तोदन तोत्र यह तीन नाम बैलोंके हाँकनेके पैनेके हैं खनित्र अवदारण यह दो नाम कसीके है ॥ १२ ॥

दात्रं लवित्रमाबन्धो योत्रं योक्त्रमथो फलम् ॥ निरीशं कुटकं फालः कृषको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥ गोदारणं च सीरोऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ॥ ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥

दात्र लवित्र यह दो नाम दांतीके है. इसकों हँसियाभी कहते हैं आबन्ध योत्र योक्त्र यह तीन नाम जोतेकी रस्सीके हैं. फल निरीश कुटक फाल कृषक यह पाच नाम उसके है, जो कि काष्ठ हलके नीचे रहता है, और जिसका अग्रभाग लोहेसें बधा रहता है कोई आचार्य ऐसा कहते है आदिके तीन नाम उसके हैं, जिस काष्ठमें कि फाल बधा रहता है, अर्थात् जिसकों कि पनिहारी कहते है और अन्तके दो नाम फालके हैं लागल हल ॥ १३ ॥ गोदारण सीर यह चार नाम हलके है शम्या युगकीलक यह दो नाम हलके शटाके है तिसमें शम्याशब्द स्त्रीलिंग है और जो कि हलका दड है, वह ईषा सज्ञिक है इसको हरस कहते हैं कोई इसाडभी कहते हैं और जो कि हलपद्धति

अर्थात् हलकी रची हुई रेखा है. वह सीता संज्ञिक है. इसकों कुंडभी कहते हैं ॥ १४ ॥

पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ॥ आशुर्व्रीहिः पाटलः स्याच्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥ तोक्मस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः॥ हरेणुरेणुकौ चास्मिन्कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

और जो कि पशुओंके वन्धन निमित्त काष्ठ गाढा जाता है वह मेधि खलेदारु संज्ञिक है. इसकों मेढभी कहते हैं. तिसमें मेधि शव्द पुंलिंगमें होता है. आशु व्रीहि पाटल यह तीन नाम धानके हैं. शित शूकयव यह दो नाम जौओंके हैं. यह दोनों शव्द समानलिंग हैं ॥ १५ ॥ और यदि जो कि जौ हरितवर्ण हो तो उसमें तोक्म शव्द वर्त्ते है. कलाय सतीनक हरेणु रेणुक यह चार नाम मटरके हैं. कोरदूष कोद्रव यह दो नाम कौदोंके हैं ॥ १६ ॥

मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ ॥ वनमुद्गे सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥ सिद्धार्थस्त्वेष धवलो गोधूमः सुमनः समौ ॥ स्याद्यावकस्तु कुल्माषश्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

मंगल्यक मसूर यह दो नाम मसूरके हैं. मकुष्ठक मयुष्ठक वनमुद्ग यह तीन नाम व-[illegible]गके हैं. सर्षप तंतुभ कदंवक यह तीन नाम सरसोंके हैं ॥ १७ ॥ और जो कि सरसों उज्वल है, वह सिद्धार्थ संज्ञिक है. गोधूम सुमन यह दो नाम गेहूंके हैं. यह शव्द समानार्थ हैं. यावक कुल्माष यह दो नाम कुल्माषके हैं. इसकों कुरथीभी कहते हैं. चणक हरिमन्थक यह दो नाम चनाके हैं ॥ १८ ॥

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ॥ क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥ स्त्रियौ कङ्गुप्रियङ्गू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा ॥ मातुलानी तु भङ्गायां व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

तिलपेज तिलपिंज यह दो नाम निष्फल तिलमें वर्त्ते हैं. क्षव क्षुताभिजनन राजिका कृष्णिका आसुरी यह पांच नाम राईके हैं ॥ १९ ॥ कंगु प्रियंगु यह दो नाम कँगुनीके हैं. यह दोनों शव्द स्त्रीलिंग हैं. अतसी उमा क्षुमा यह तीन नाम अलसीके हैं. मातुलानी भंगा यह दो नाम भांगके हैं. और व्रोहिभेद अणु है. इसकों सावाँभी कहते हैं. यह शव्द पुंलिंग है ॥ २० ॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्कणिशं सस्यमञ्जरी ॥ धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥२१ नाडी नालं च काण्डोऽस्य पलालोऽस्त्री स निष्फलः ॥ कडङ्गरो वुसं क्लीवे धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

सस्य धान्यका जो शूक सूक्ष्म सूईकी-

समान अग्रभाग है, वह किशारु सञ्ज्ञिक है इसको धान्यका तीकुर कहते है. और जो कि सस्य (धान्य) की मजरी है, वह कणिश सञ्ज्ञिक है, इसको वालि कहते है धान्य व्रीहि स्तम्बकरि यह तीन नाम धान यवादिक अन्नमात्रके है और जो तृण यवादिकोंका गुच्छा है वह स्तम्ब सञ्ज्ञिक है ॥ २१ ॥ और जो इस गुच्छाका काड है, वह नाडीनाल सञ्ज्ञिक है इसको नरई कहते है और जो कि काड निष्फल है, अर्थात् फलग्रहण करनेसे निष्फल होगया है, वह पलाल सञ्ज्ञिक है इसको प्यारभी कहते है यह शब्द पुनपुसकलिंग है कडगर बुस यह दो नाम भूसेके हैं और धान्यकी त्वचामें पुलिगवाची तुष शब्द वर्ते है इसको भुसी कहते हैं ॥ २२ ॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्बा त्रिपूत्तरे ॥ ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥ माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ शालयः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥

श्लक्ष्ण बारीक तीक्ष्ण पैना ऐसा जो यवादिकका अग्रभाग है, उसमें शूक शब्द होता है इसको तीकुर कहते है यह शब्द पुनपुसकलिंग है शमी शिवा यह दो नाम फलीके है यहांसे उत्तर अर्थात अगाडीके शब्द तीनों लिंगमें होते हैं ऋद्ध आवसित यह दो नाम उस धान्यके है, जो कि तृणोंको दूरिकरके इकट्ठा किया है, पूत बहुलीकृत यह दो नाम शूप आदिकसे शोधेहुए धान्यके हैं ॥ २३ ॥ शमीधान्य अर्थात् फलीके धान्यमें माष आदिक होते है शूकधान्य अर्थात् तीकुरवाले धान्यमें यव आदिक होते है कलम आदिक तथा षष्टिक आदिक शालि सञ्ज्ञिक हैं अर्थात् यह धानोंके भेद है यह माष यव शालि कलम षष्टिकादिक पुलिंगमें होते है ॥ २४ ॥

तृणधान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥ प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री चालनी तितउः पुमान् ॥ स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिटौ कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥

नीवार यह मुनियोंका अन्नभेद है बहुवचनसे श्यामकादिक ग्रहण कियेजाते हैं यह तृणधान्य सञ्ज्ञिक है गवेधु गवेधुका यह दो नामभी मुनियोंके अन्नविशेषके है, इसको पैनाभी कहते है यह दोनों शब्द स्त्रीलिंग है अयोग्र मुसल यह दो नाम मूसलके है तिसमें मुसल शब्द स्त्रीलिंगसे वर्जित है अयोग्र मुसल यह दो नाम मूसलके हैं तिसमें मुसल शब्द स्त्रीलिंगसे वर्जित है अर्थात पुनपुसकलिंग है उदूखल उलूखल यह दो नाम ओखलीके है ॥ २५ ॥ प्रस्फोटन शूर्प यह दो नाम सूपके है तिसमें शूर्पशब्द स्त्री-

लिंगवर्जित है. चालनी तितउ यह दो नाम चालनीके हैं. तिसमें तितउशब्द पुंलिंग है. स्यूत प्रसेव यह दो नाम थैलीके हैं. कंडोल पिट यह दो नाम वांशके पत्ता आदिकोंसे बनाये हुए बर्त्तनके हैं. इसकों छपरा कहते हैं. कट किलिंजक यह दो नाम वंशादिकके विकारके हैं. इसकों वोरा कहते हैं॥ २६ ॥

समानौ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ॥ पौरोगवस्तदध्यक्षः सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ॥ आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥

यह पूर्वोक्त समानलिंग हैं. रसवती पाकस्थान महानस यह तीन नाम रसोईके घरके हैं. और जो कि उस रसोईके स्थानका अध्यक्ष (मालिक) है, वह पौरोगव संज्ञिक है. सूपकार बल्लव ॥२७॥ आरालिक आंधसिक सूद औदनिक गुण यह सात नाम रसोई बनानेवालेके हैं. आपूपिक कांदविक भक्ष्यकार यह तीन नाम भक्ष्यकार पुआआदि पकवानोंके बनानेवालेके हैं. इसकों हलवाईभी कहते हैं. यह पौरोगव आदिक तीनों लिंगमें होते हैं ॥ २८ ॥

अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ॥ अङ्गारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥ हसन्यप्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ॥ क्लीबेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥

अश्मंत उद्धान अधिश्रयणी चुल्लि अन्तिका यह पांच नाम चूल्हेके हैं, अंगारधानिका अंगारशकटी हसन्ती ॥ २९ ॥ हसनी यह चार नाम अंगीठीके हैं. अंगार अलात उल्मुक यह दो नाम ऊकेके हैं. तिसमें अंगारशब्द स्त्रीलिंग नहीं है, किन्तु पुंनपुंसकलिंग है. अम्बरीष भ्राष्ट्र यह दो नाम चना आदिक अन्नोंके भूंजनेके पात्रके हैं. तिसमें अम्बरीषशब्द नपुंसकलिंगमें होता है. कन्दु स्वेदनी यह दो नाम भट्टी वा भाडके हैं तिसमें स्त्रीलिंग कन्दुशब्द विकल्पकरके पुंलिग है. और स्वेदनीशब्द नित्यही स्त्रीलिंगमें होता है ॥ ३० ॥

अलिञ्जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका ॥ पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥ घटः कुटनिपावस्त्री शरावो वर्धमानकाः ॥ ऋजीषं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

अलंजर मणिक यह दो नाम बडे घडेके हैं इसकों मटका कहते हैं. कर्करी आलु गलन्तिका यह तीन नाम चाँवलआदिके धोवनेके उपयोगी पात्रके हैं इसकों माद कहते हैं. पिठर स्थाली उखा कुंड यह चार नाम थाली वावटलोईके हैं. कलश घट कुट निप यह चार नाम कलशके हैं तिसमें क-

लशशब्द तीनों लिंगमें होता है और घटशब्द स्त्रीपुलिंग दोनोंमें होता है शराव वर्द्धमानक यह दो नाम सरवाके है यह दोनों शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंग है ऋजीप पिष्टपचन यह दो नाम पीसेहुए अन्नादिकके पाकके उपयोगीपात्रके है इसकों तवा कढाई भी कहते है कंस पानभाजन यह दो नाम दूध आदिके पीनेके पात्रके है तिसमें कंसशब्द पुनपुंसकलिंग है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

कुतूः कृत्ते स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ॥ सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥ दर्विः कम्बिः खजाका च स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ॥ अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुरस्य तु नालिका ॥ ३४ ॥

और जो कि कृत्ति अर्थात् चर्मका स्नेहपात्र तैलादिकका आधारपात्र है वह कुतू संज्ञिक है इसकों कुप्पा बोलते है और जो कि छोटा कुप्पा है वह कुतुप संज्ञिक है यह शब्द पुंलिंग है समस्त कहेहुए स्यूतादिक पात्र आवपन भांड पात्र अमत्र भाजन संज्ञिक है ॥ ३३॥ दर्वि कंबि खजाका यह तीन नाम करछीके हैं तर्दू दारुहस्तक यह दो करछीके भेद है तिसमें तर्दू शब्द पुलिंगमें होता है शाक हरितक शिग्रु यह तीन नाम शाकके है तिसमें शाक पुनपुंसकलिंग है और जो कि इस शाककी नालिका डंडी है ॥ ३४ ॥

कलम्बश्च कडम्बश्च वेसवार उपस्करः ॥ तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्लमथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥ मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ॥ जीरको जरणोऽजाजी कणा कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥ सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ॥ आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादथ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बुरु च धान्याकमथ शुण्ठी महौषधम् ॥ स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ३८

वह कलंब कडंब संज्ञिक है वेसवार उपस्कर यह दो नाम शाकादिकके सत्कारकेलिये बनायेहुए हलदी सरसों मिरच आदिकके चूर्णके है इसकों मसाला कहते है तिंतिडीक चुक्र वृक्षाम्ल यह तीन नाम चूकके है वेल्लज ॥ ३५ ॥ मरीच कोलक कृष्ण ऊषण धर्मपत्तन यह छै नाम मिरचके है जीरक जरण अजाजी कणा यह चार नाम जीरेके है और कालेजीरेमें ॥३६॥ सुषवी कारवी पृथ्वी पृथु काला उपकुंचिका यह छै नाम होते है अर्थात् यह

१ वेसवारका लक्षण आत्रेयसंहितामें लिखाहै
चित्रक पिप्पलीमूल पिप्पली चव्यनागरम् ।
धान्याक रजनीश्वेततंडुलाश्च समाशकाः ।
वेसवारइतिख्यात शाकादिषु नियोजयेदिति १

छै नाम काले जीरेके हैं. आर्द्रक शृंगबेर यह दो नाम अदरखके हैं. छत्रा वितुन्नक ॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बुरु धान्याक यह चार नाम धनियोंके हैं. शूंठी महौषध विश्व नागर विश्वभेषज यह पांच नाम सौंठिके हैं तिसमें विश्वशब्द स्त्रीनपुंसकलिंगमें होता हैं ॥ ३८ ॥

आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च ॥ अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्जिके ॥ ३९ ॥ सहस्रवेधि जतुकं बाल्हीकं हिङ्गु रामठम् ॥ तत्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥

आरनालक सौवीर कुल्माषाभिषुत अवन्तिसोम धान्याम्ल कुंजल कांजिक यह सात नाम कांजीके हैं ॥ ३९ ॥ सहस्रवेधिन् जतुका बाल्हीक हिंगु रामठ यह पांच नाम हींगके हैं और जो कि उस हींगकी पत्री है वह कारवी पृथ्वी बाष्पिका कवरी पृथु संज्ञिक है ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ॥ सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥४१॥ सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ॥ रौमकं वसुकं पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥

निशा कांचनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी यह पांच नाम हलदीके हैं. जो कि लवण (सामुद्र है) समुद्रसें उत्पन्न हुआहै वह अक्षीव वशिर संज्ञिक है ॥ ४१ ॥ सैन्धव शीतशिव माणिमन्थ सिन्धुज यह चार नाम सौंधेनोंनके हैं तिसमें सैन्धव शब्द पुंनपुंसकलिंग है. रौमक वसुक यह दो नाम सांभरनौंनके हैं. पाक्य विड यह दो नाम बनाये हुए नौंनमें वर्त्ते हैं. यह नौंन खारी मिट्टी पकाकर बनाया जाता है ॥ ४२ ॥

सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तत्र मेचके ॥ मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥ कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता ॥ स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥

सौवर्चल अक्ष रुचक यह तीन नाम मधुरलवणके हैं. इसकों संचलखारभी कहते हैं. और यदि सौवर्चल काला होवे तो उसमें तिलक शब्द वर्त्ते हैं. मत्स्यंडी फाणित यह दो नाम राबके हैं. खंडविकार शर्करा सिता यह तीन नाम खाँडके हैं कोई मत्स्यंडी आदिक पांच नाम खाँडके कहते हैं ॥ ४३ ॥ दधि आदिक कर जो दूधका विकार है वह कूर्चिका संज्ञिक है. रसाला मार्जिता यह दो नाम दही मधु खांड मिरच अदरख आदिसें बनाईहुई चटनीके हैं

१ कूर्चिकाका लक्षण और ग्रंथसें लिखते हैं. दध्नासह पयः पक्वं यत्तत्स्याद्दधिकूर्चिका । तक्रेण पक्वं यत्क्षीरं सा भवेत् तक्रकूर्चिका ॥१॥

तेमन निष्ठान यह दो नाम कढीके है वासितावधि अर्थात् वासितशब्दकी अवधिसें इधरके शब्द तीनों लिंगमें होतेहै ॥४४॥

शूलाकृतं भटित्रं स्याच्छूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ प्रणीतमुपसंपन्नं प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥ स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं संमृष्टं शोधितं समे ॥ चिक्कणं मसृणं स्निग्धं तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥

शूलाकृत भटित्र शूल्य यह तीन नाम शूलसें सस्कार कियेहुए मासादिकपदार्थके है उख्य पैठर यह दो नाम वटलोईमें पकेहुए अन्नादिकके हैं प्रणीत उपसपन्न यह दो नाम रसादिकसें युक्तहुए व्यजनादिकके है प्रयस्त सुसस्कृत यह दो नाम प्रयत्नसें सिद्ध कियेहुए घृत पक्वादिकके हैं ॥ ४५ ॥ पिच्छिल विजिल यह दो नाम मडयुक्त दध्यादिकके है समृष्ट शोधित यह दो नाम केश कीडाओंकों दूरकरके शोधेहुए अन्नादिकके है चिक्कण मसृण स्निग्ध यह दो नाम चिकनेपदार्थके है भावित वासित यह दो नाम पुष्पादिक द्रव्योंकर सुगंधितहुए अन्नादिकके है ॥ ४६ ॥

आपक्वं पौलिरभ्यूषो लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः ॥ पृथुकः स्याच्चिपिटको धाना भ्रष्टयवे स्त्रिय ॥ ४७ ॥ पूपोऽपूपः पिष्टक स्यात्करम्भो दधिसक्तवः ॥ भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिविः ॥४८॥

आपक्व पौलि अभ्यूष यह तीन नाम आधे भुनेहुए यवादिकोंके है अथवा घी आदिकसें भूनेहुए यवादिकके है लाज यह एक नाम खीलोंका है यह शब्द पुलिग और बहुवचनमें होता है अक्षत यह एक नाम भुनेहुए चाँवलोंका है और अखड चावलोंकोभी अक्षता कहते है यह शब्दभी पुलिग और बहुवचनमें होता है पृथुक चिपिटक यह दो नाम भिगोकर भूनेहुए धानके चाँवलके है धाना यह एक नाम भूनेहुए यवमें वर्ते है इसको बोरी कहते हैं यह शब्द नित्यही बहुवचन और स्त्रीलिंग है ॥ ४७ ॥ पूप अपूप पिष्टक यह तीन नाम चाँवलके चूनके बनाये हुए भक्ष्य भेदके है इसकों पुआ तथा वडाभी कहते है और जो कि दधियुक्त सत्तु है वह करभ सज्ञिक हैं भिःसा भक्त अधस अन्न ओदन दीदिवि यह छे नाम अन्नके है तिसमें भि सा स्त्रीलिंग है और ओदन पुंनपुंसकलिंग है और दीदिवि पुलिग है ॥ ४८ ॥

भिस्सटा दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ॥ मासराचामनिस्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥ यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च-

सा[१] ॥ गव्यं त्रिषु गवां सर्वं गोविट् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥

भिःसटा दग्धिका यह दो नाम जलेहुए अन्नके हैं. समस्त रसोंके अग्रभागमें मंड शब्द वर्त्ते है इसकों मॉडभी कहते हैं. यह शब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है और भातसें उत्पन्न हुएमाँडमें मासर आचाम निस्राव शब्द वर्त्ते हैं ॥ ४९ ॥ यवागू उष्णिका श्राणा विलेपी तरला यह पांच नाम द्रवनेवाले अन्नके हैं इसकों लपसी कहते हैं. गौओंका सब दूध दही आदिक गव्य संज्ञिक है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है. गोविष् गोमय यह दो नाम गोवरके हैं तिसमें गोविपूशब्द स्त्रीलिंग है और गोमय पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ५० ॥

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयः समम् ॥ पयस्यमाज्यदध्यादिद्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥ घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतम् ॥ तत्तु हैयंगवीनं यत् ह्योगोदोहोद्भवं घृतम् ॥ ५२ ॥

और जो कि शूकाहुआ है वह करीष संज्ञिक है यह शब्द पुंनपुंसकलिंग है. दुग्ध पयस् क्षीर यह तीन नाम दूधके हैं यह तीनोंशब्द समानार्थं हैं और जो कि दूधका विकार घृत दधि आदिक है वह पयस्य संज्ञिक है. जो कि दधि घनसेंइतर है अर्थात् पतला है वह द्रप्स संज्ञिक है ॥ ५१ ॥ घृत आज्य हविष् सर्पिष् यह चार नाम घृतके हैं नवनीत नवोद्धृत यह दो नाम लोनीघृतके हैं इसकों माखन कहते हैं. और ह्योगोदोहोद्भव अर्थात् पूर्वदिनके दूधसें है उत्पत्ति जिसकी ऐसा जो घृत है वह हैयंगवीन संज्ञिक है भाव यह है कि एकरात्रि वसेहुए दधिसे निकलेहुए घृतका यह नाम है ॥ ५२ ॥

दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ॥ तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥ मण्डं दधिभवं मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः ॥ अशनाया बुभुक्षा क्षुद्ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥

दण्डाहत कालशेय अरिष्ट गोरस यह चार नाम दंडसें मँथेहुए गोरसमात्रके हैं. तक्र उदश्वित् मथित यह तीन नाम क्रमसें पादाम्बु तथा अर्धाम्बु तथा निर्जल गोरसके हैं भाव यह है कि पादाम्बु चौथाई जलवाला दण्डसें मथा हुआ गोरस है वह तक्र संज्ञिक है. और जो कि (अर्धाम्बु) आधे जलवाला गोरस है वह उदश्वित् संज्ञिक है और जो कि निर्जल अर्थात् जलवर्जित दधि मंथनमात्रसें मथा है वह मथित संज्ञिक है ॥ ५३ ॥ और जो कि दहीसें उत्पन्न हुआ मॉड है वह मस्तु संज्ञिक है अर्थात्

१ म्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं कृसरस्तु तिलौदनम् ।

यह एक नाम वस्त्रसें निकलेहुए दधिके जलका है और जो कि नवीन दूध है अर्थात् नवीन व्यानीहुई गौके सात दिनतकका दूध है वह पीयूष संज्ञिक है अशनाया बुभुक्षा क्षुध् यह तीन नाम क्षुधाके हैं ग्रास कवल यह दो नाम ग्रासके हैं यह दोनों शब्द पुलिंग हैं ॥ ५४ ॥

सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ॥ उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥ जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ॥ सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥

सपीति तुल्यपान यह दो नाम साथमें पान करनेके हैं तिसमें सपीति स्त्रीलिंग है सग्धि सहभोजन यह दो नाम साथ जेवनेके हैं तिसमें सग्धिशब्द स्त्रीलिंग है उदन्या पिपासा तृष् तर्ष यह चार नाम प्यासके हैं जग्धि भोजन ॥ ५५ ॥ जेमन लेह आहार निघास न्याद यह पांच जेवनेके हैं सौहित्य तर्पण तृप्ति यह तीन नाम तृप्तिके हैं और जो कि भुक्तसमुज्झित अर्थात् पहिलें तो जो जेवलिया है पीछें त्याग दिया है वह फेला संज्ञिक है ॥ ५६ ॥

काम प्रकाम पर्याप्त निकामेष्ट यथेप्सितम् ॥ गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥ गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं द्वौ गवीश्वरे ॥ गोमान्गोमी गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवां व्रजे ॥ ५८ ॥

काम प्रकाम पर्याप्त निकाम इष्ट यथेप्सित यह छे नाम यथेच्छितके हैं यह शब्द क्रियाविशेषणभी होते हैं गोप गोपाल गोसंख्य गोदुह् आभीर वल्लव यह छे नाम गोपालके हैं इसकों ग्वालियाभी कहते हैं ॥ ५७ ॥ और जो कि गोमहिष्यादिक हैं अर्थात् गौ भैंस गधा बकरी आदिक चौपाये हैं वह पादबन्धन संज्ञिक है और जो कि गवीश्वर गौओंका स्वामी है उसमें गोमत् गोमिन यह दो शब्द वर्त्ते हैं. गोकुल गोधन यह दो नाम गौओंके समूहमें होते हैं ॥ ५८ ॥

त्रिष्वाशितंगवीनं तद्गावो यत्राशिताः पुरा ॥ उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥ अनड्वान्सौरभेयो गौरुक्ष्णां संहतिरौक्षकम् ॥ गव्या गोत्रा गवा वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥ ६० ॥

जहांकि पहिलें गौएं चुगाई हों वह स्थान आशित गवीन संज्ञिक है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है उक्षन् भद्र बलीवर्द ऋषभ वृषभ वृष॥५९॥अनडुह् सौरभेय गो यह नौ नाम बैलके हैं और जो कि उक्षनाम बैलोंका समूह है वह औक्षक संज्ञिक है और जो कि गौओंका समूह है वह गव्या गोत्रा है और जो कि वत्स(बच्छा)

और धेनुओंका समूह वह क्रमसे वात्सक धेनुक संज्ञिक है अर्थात् वात्सक यह एक नाम बच्छाओंके समूहका है. धेनुक यह एक नाम धेनुओंके समूहका है ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्याद्वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ॥ उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥ शकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्दम्यवत्सतरौ समौ ॥ आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥

और जो कि महान् वृष है यानी बडा बैल है वह महोक्ष संज्ञिक है. वृद्धोक्ष जरद्गव यह दो नाम बूढे बैलके हैं और जो कि उक्ष (बैल) उत्पन्न हैं अर्थात् बैलके भावको प्राप्तहुआ है वह जातोक्ष संज्ञिक है इसको कलोरबैल कहते हैं. और जो कि बैल तत्कालही हुआ है वह तर्णक संज्ञिक है ॥ ६१ ॥ शकृत्करि वत्स यह दो नाम बछडेके हैं. दम्य वत्सतर यह दोनों समानार्थ नाम चढतीहुई जवानीवाले बछडेके हैं और जो कि षंडतायोग्य बैल है वह आर्षभ्य संज्ञिक है. षंड गोपति इट्चर यह तीन नाम स्वेच्छाचारी बैलके हैं ॥ ६२ ॥

स्कन्धदेशे त्वस्य वहः सास्ना तु गलकम्बलः ॥ स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥ युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ॥ खनति तेन तद्वोढाऽस्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥

और इस बैलके स्कन्धदेशमें वह शब्द होता है अर्थात् यह एक नाम बैलके कंधेका है. सास्ना गलकम्बल यह दो नाम बैलके गलेके लटकेहुए चर्मके हैं. नस्तित नस्योत यह दो नाम बैलकी रस्सीकरके पोहीहुई नाकके हैं. प्रष्ठवाह् युगपार्श्वग यह दो नाम शान्त करनेकेलिये वाहनकेसाथमें कंधेपर बंधेहुए काष्ठवाले बैलके हैं ॥ ६३॥ युगादिकोंके वहनेवाले बैल युग्य प्रासंग्य शाकट संज्ञिक हैं. जैसे युगनाम जुआका वहनेवाला बैल युग्य संज्ञिक है. प्रासंगनाम उसका है जो कि बच्छडाओंके फिरानेके समय कंधेपर काष्ठ रक्खाजाता है इसके वहनेवाला बैल प्रासंग्य संज्ञिक है. और शकटनाम गाडीका वहनेवाला बैल शाकट संज्ञिक है. और जो कि उसकरके खोदे वा उसको वहे वा उसका होवे तो वह हालिक सैरिक है. जैसे हलकरके खोदे वा उस हलको वहे वा उसहलका संबन्धी जो बैल हो वह हालिक जानना. इसप्रकार सैरिकशब्दकी व्युत्पत्ति है सीरशब्द हलका पर्याय है ॥ ६४ ॥

धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः॥ उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ६५ स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ॥ माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु

नैचिकी ॥ वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शवलीधवलादयः ॥ ६७ ॥

धुर्वह धुर्य धौरेय धुरीण सधुरधर यह पाच नाम धुर धारण करनेवाले बैलके है एकधुरीण एकधुर एकधुरावह यह तीन नाम एकधुर वहनेवाले बैलके है ॥ ६५ ॥ और जो कि सब धुरकों वहता है वह सर्वधुरीण संज्ञिक है माहेयी सौरभेयी गो उस्रा मातृ शृंगिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुनी अघ्न्या रोहिणी यह नौ नाम गौके है और जो कि गौ गौओंमें उत्तम है वह नैचिकी संज्ञिक है वर्णादि अर्थात् वर्ण अग प्रमाण आदिकोंके भेदसे शवली धवला आदिक गौओंके नाम है जैसें वर्णभेदसें शवली यह एक नाम चित्रवर्णवाली गौका है धवला यह एक नाम शुक्लवर्णवाली गौका है और अगभेदसें लम्बकर्णी वक्रशृंगी आदिक गौओंके नाम जानने और प्रमाणभेदसें दीर्घा खर्वा वामनी आदिक गौओंके नाम जानने ॥ ६७ ॥

द्विहायनी द्विवर्षा गौरेकाब्दा त्वेकहायनी ॥ चतुरब्दा चतुर्हायण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥ वशा वन्ध्याऽवतोका तु स्रवद्गर्भाऽथ संधिनी ॥ आक्रान्ता वृषभेणाथ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥

अवस्थाभेदसें गौओंके नाम भेद कहते हैं जो कि गौ दोवर्षकी है वह द्विहायनी संज्ञिक है और जो कि गौ एकवर्षकी है वह एकहायनी संज्ञिक है और जो कि गौ चारवर्षकी है वह चतुर्हायणी संज्ञिक है और जो कि गौ तीनवर्षकी है वह त्रिहायणी संज्ञिक है ॥ ६८ ॥ वशा वन्ध्या यह दो नाम वाझ गौके है अवतोका स्रवद्गर्भा यह दो नाम अकस्मात् गिरेहुए गर्भवाली गौके है और जो कि मैथुनकेवास्ते बैलने दबाई है वह संधिनी संज्ञिक है बैलकेसमीप जानेसें गर्भके घात करनेवाली गौ वेहत् संज्ञिक है ॥ ६९ ॥

काल्योपसर्या प्रजने प्रष्ठौही बालगर्भिणी ॥ स्यादचण्डी तु सुकरा बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥ चिरसूता बष्कयिणी धेनुः स्यान्नवसूतिका ॥ सुव्रता सुखसंदोह्या पीनोध्नी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥

और जो कि प्रजन अर्थात् गर्भके ग्रहणमें प्राप्तकाल है वह गौ उपसर्या संज्ञिक है यह एक नाम उचितसमयपर गर्भग्रहण करनेवाली गौका है और जो कि गौ बाला तथा गर्भवती है वह प्रष्ठौही संज्ञिक है यह नाम प्रथम गाभन गायका है अचण्डी सुकरा यह दो नाम सीधी गौके हैं बहुसूति परेष्टुका यह दो नाम बहुत व्यानेवाली गौके है ॥ ७० ॥ चिरसूता बष्कयिणी यह दो नाम बहुतकालमें व्यानेवाली गौके है धेनु नवसूतिका यह दो नाम नवीन व्यानीहुई गौके हैं सुव्रता सुखसंदोह्या यह दो नाम

दुहनेमें सुशीला गौके हैं. पीनोध्नी पीवरस्तनी यह दो नाम मोठे २ थनोंवाली गौके हैं ७१

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥ ऊधस्तु क्लीबमापीनं समौ शिवककीलकौ ॥ न पुंसि दाम संदानं पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा यह दो नाम द्रोणभर दूध देनेंवाली गौके हैं. और जो कि साहूकारके घर करजकी शुद्धिपर्यन्त बंधक अर्थात् धरोहर या गहनेंमें रक्खीहुई गो धेनुष्या संज्ञिक है. और जो कि प्रत्येकवर्ष ब्याती है वह समांसमीना संज्ञिक है॥७२॥ ऊधस् आपीन यह दो नाम गौके थनके हैं यह दोनोंशब्द नपुंसकलिंग हैं. शिवक कीलक यह दो नाम गौओंके बांधनेंकेवास्ते गाढहुए काष्ठके हैं इसकों खूंटा कहते हैं यह दोनों शब्द समानलिंग हैं. दामन् संदान् यह दो नाम बाँधनेंकी रस्सीके हैं तिसमें दामन्शब्द पुंलिंगमें नहीं होता किन्तु नपुंसक और स्त्रीलिंगमें होताहै. पशुरज्जु दामनी यह दो नाम उस रस्सीके जिस बहुतसी गाँठोंवाली एकहीमें बहुतसें बैल बाँधेजाते हैं ॥ ७३ ॥

वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ॥ कुठरो दण्डविष्कम्भो मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥ उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः शिशुः॥ करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥

वैशाख मंथ मंथान मंथन् मंथदंडक यह पांच नाम दधिके मथनेंके दण्डके हैं इसकों रई कहतेहैं. कुठर दण्डविष्कंभ यह दो नाम उस खंबेके हैं जिनमें कि मथनेका दण्ड बंधा रहताहै. मंथनी गर्गरी यह दो नाम दधि मथनेंके पात्रके हैं यह दोनों शब्द समानार्थ हैं ॥ ७४ ॥ उष्ट्र क्रमेलक मय महांग यह चार नाम ऊंटके हैं और ऊंटका बच्चा करभ संज्ञिक है और लकडीके बनेंहुए पादबंधनोंसें युक्त हुए करभ ऊंटकेबच्चे शृंखलक संज्ञिक हैं ॥ ७५ ॥

अजा छागी शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे ॥ मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेष वृष्णय एडके ॥ ७६ ॥ उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ॥ चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥

अजा छागी यह दो नाम छेरीके हैं. शुभ छाग वस्त छगलक अज यह पांच नाम बकरेके हैं इसकों बोकडभी कहते हैं. मेढ्र उरभ्र उरण ऊर्णायु मेष वृष्णि एडक यह सात नाम मेंढेके हैं ॥ ७६ ॥ उष्ट्र उरभ्र अज इन्होंके समूहमें क्रमसें औष्ट्रक औरभ्रक आजक शब्द वर्ते हैं. जैसें उष्ट्र नाम ऊंटोंका समूह औष्ट्रक संज्ञिक है. उर-

भ्रनाम मेंढोंका समूह औरभ्रक संज्ञिक है और अजनाम बकरोंका समूह आजक संज्ञिक है चक्रीवत् बालेय रासभ गर्दभ खर यह पाच नाम गधाके है ॥ ७७ ॥

वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ॥ पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥ विक्रेता स्याद्विक्रयिकः क्रायिकक्रयिकौ समौ ॥ वाणिज्यं तु वणिज्या स्यान्मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥

वैदेहक सार्थवाह नैगम वाणिज वणिज् पण्याजीव आपणिक क्रयविक्रयिक यह आठ नाम वेचने खरीदनेसे वर्त्तमान हुए पुरुषके है इसकों वणियाँ कहते है ॥ ७८ ॥ विक्रेतृ विक्रयिक यह दो नाम वस्तुके वेचनेवालेके है क्रायिक क्रयिक यह दो नाम वस्तुके खरीदनेवालेके है यह दोनों शब्द समान है वाणिज्य वणिज्या यह दो नाम वणिजोंके है मूल्य वस्न अवक्रय यह तीन नाम वेचनेयोग्य वस्तुके मूल्यके है इसकों मोल कहते है ॥ ७९ ॥

नीवी परिपणो मूलधनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥ पुमानुपनिधिर्न्यास प्रतिदानं तदर्पणम् ॥ क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रके ८१ ॥

नीवी परिपण मूलधन यह तीन नाम उसके है, जो कि क्रयविक्रयादिकव्यवहारमें मूल धन है और जो कि फल मूल धनसें कालांतरमें सिद्ध हुआ है, वह लाभ है इसकों नफा कहते हैं. परिदान परीवर्त नैमेय निमय यह चार नाम लेनदेनके हैं ॥ ८० ॥ उपनिधि न्यास यह दो नाम धरोहरके हैं यह दोनों शब्द पुलिंग है और जो कि रखनेवालेके लियें उस धरोहरका अर्पण करना है वह प्रतिदान संज्ञिक है खरीदनेके विषयमें ग्राहक ग्रहण करे इसबुद्धिकर बाजारमें फैलाया हुआ वस्तु क्रय्य संज्ञिक है और खरीदनेयोग्यमात्र वस्तुमें क्रेय शब्द होताहै भाव यह है कि, खरीदनेयोग्य वस्तु कहींभी वर्त्तमान हो वह क्रेय संज्ञिक है ८१

विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु ॥ क्लीबे सत्यापनं सत्यंकार सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥८२॥ विपणो विक्रयः संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ॥ विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥

विक्रेय पणितव्य पण्य यह तीन नाम वेचनेयोग्य वस्तुके है क्रय्यादिकशब्द तीनों लिंगमें होतेहैं सत्यापन सत्यंकार सत्याकृति यह तीन नाम उसके है, जो कि मैंने अवश्यही इसमें खरीदना है इत्यादिक सत्य करना है तिसमें सत्यापन नपुंसकलिंगमें होता है और सत्याकृतिशब्द स्त्रीलिंगमें होताहै ॥ ८२ ॥ विपण विक्रय यह दो नाम वेचनेके है दशशब्दसे लेकर एकादि अठा

दशान्तशब्द संख्येय अर्थात् संख्यासंबन्धी विशेष्यकेविषें वर्त्तमान हुए तीनों लिंगमें होते हैं. जैसें [एका शाटी—एकः पटः—एकं वस्त्रम्—दश स्त्रियः—दश पुरुषाः—दश कुलानि—] इसीप्रकार अष्टादशपर्यन्त जाननें. हिशब्दसें इनशब्दोंकी संख्येयमेंही वृत्ति है. न कि संख्यामें. विंशत्यादिक अर्थात् वीससें लेकर परार्द्धपर्यन्त समस्त संख्यावाचीशब्द सदाँहीं एकवचनमें वर्त्तमानहुए संख्येय संख्यासंबन्धी विशेष्य और संख्याके विषें वर्त्तते हैं. संख्येयकेविषें जैसें [एकोनविंशतिः पटाः—विंशत्यापुरुषैः कृतम्—सन्ति शतं गावः] और संख्याके विषें जैसें—[पटानां विंशतिः—गवां शतम्] ॥ ८३ ॥

संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्तस्तासु चानवतेः स्त्रियः ॥ पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥ यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ॥ मानं तुलाऽङ्गुलिप्रस्थैर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥

और संख्यार्थमें द्विवचन बहुवचनभी होतेहैं. भाव यह है कि संख्यांतरके अर्थमें वर्त्तमान हुई विंशत्यादिक संख्यासें द्विवचन बहुवचनभी होतेहैं. जैसें—[द्वे विंशती—गवां शतानि—तिस्रो विंशतयः] तिनविंशत्यादिकोंके विषें वर्त्तमान हुए नवतिपर्यन्त शब्द स्त्रीलिंग हैं. पंक्ति नाम दशसंख्यासें लेकर दशगुना है अधिकजिसमें ऐसी संख्या शतसहस्रादिक संज्ञिक है. जैसें दशगुनी पंक्ति अर्थात् दशसंख्या शत संज्ञिक है. और दशगुना शत सहस्र संज्ञिक है. इसीप्रकार अयुतादिक जाननें ॥ ८४ ॥ यौतव द्रुवय पाय्य यह तीन नाम मानार्थक अर्थात् परिमाणवाचक हैं. इसकों तोल (माप) कहतेहैं. वह मान तुला अंगुलि प्रस्थ भेदोंकर तीन प्रकारका होता है. अर्थात् तुलामान अंगुलिमान प्रस्थमान संज्ञिक है. इसका उन्मानप्रमाण परिमाण शब्दोंकर क्रमसें व्यवहार होता है. पांच गुंजा यानी घुंघुची रत्तीं आद्यमाषक संज्ञिक हैं ॥ ८५ ॥

ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री पलं कर्षचतुष्टयम् ॥ सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥ तुला स्त्रियां पलशतं भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ॥ आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

और वह सोलह माष अक्ष कर्ष संज्ञिक है इसकों तोला कहते हैं. तिसमें कर्षशब्द पुंनपुंसकलिंग है और चारकर्ष पल संज्ञिक है. हेम सुवर्णके अक्षमें सुवर्ण विस्त यह

---

१ एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः ॥ अर्बुदमब्जखर्वनिखर्वमहापद्मशंकवस्तस्मात् ॥ १ ॥ जलधिश्चान्त्यं मध्यं परार्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः ॥ संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृताः पूर्वैरिति ॥ २ ॥ ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणन्तु सर्वतः । आयामस्तु प्रमाणं स्यात्संख्या भिन्ना तु सर्वत इति ॥२॥

दो नाम वर्त्ते है अर्थात् अश्शीरत्ती तुलेहुए सुवर्णके यह दो नाम हैं और उस सुवर्णके पलमें कुरुविस्त शब्द वर्त्ते है यह एक नाम ३६० रत्तीभर तुलेहुए सुवर्णका है ॥८६॥ और सौ पल तुला संज्ञिक हैं यह शब्द स्त्रीलिंगमें होताहै और बीश तुला भार संज्ञिक है और दशभार आचित संज्ञिक है और जो कि भार शाकट अर्थात् गाढीकर वहनेकों समर्थ है वहभी आचित संज्ञिक है ॥ ८७ ॥

कार्षापणः कार्षिकः स्यात्कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः ॥८८॥ कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ॥ पादस्तुरीयो भागः स्यादंशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥

१ इन प्रस्थादिकोंका लक्षण और मथर्से लिखते है—

पल प्रकुंचक मुष्टि कुडवस्तच्चतुष्टयम् । चत्वार कुडवा प्रस्थश्चतुष्प्रस्थ तथाढकम् । अष्टाढको भवेद्द्रोणो द्विद्रोण शूर्प उच्यते । सार्धशूर्पो भवेत्खारी द्विशूर्पा द्रोण्युदाहृता । तमेव भार जानीयाद्वाहो भारचतुष्टयम् । औरभी लक्षण लिखते है—अष्टमुष्टिर्भवेत्किंचित्किंचिदष्टौ तु पुष्कलम् । पुष्कलानि तु चत्वारि आढक परिकीर्तित ॥ चतुराढको भवेद्द्रोण इत्येव मानलक्षणम् १ अन्य २ श्लोक भेदमें तद्यथाभी अमरा २ है जैसे मगधदेशमें—द्रोणस्तुचापाः चतुर्थोदशाना स्यादाढको द्रोणचतुर्भाग स्यात्[illegible] ।

कार्षापण कार्षिक यह दो नाम रुपयाके है और ताम्रिक ताम्रसबन्धी कार्षिक कर्षप्रमाणमें पण शब्द वर्त्ते है इसकों पैसा कहते है यह तुलामान कहा और अंगुलिमान हस्तादिक नृवर्गमें कह आये अब प्रस्थमान कहते है आढक द्रोण खारी वाह निकुंचक कुडव प्रस्थ इत्यादिक शब्द परिमाणार्थवाचक पृथक् पृथक् है तिसमें आढक यह एक नाम चारशेरका है द्रोण यह एक नाम चार आढकोंका है खारी यह एक नाम तीनद्रोणोंका है वाह यह एक नाम चारभारोंका है निकुंचक यह एक नाम चार तोलाओंका है इसकों छटांक कहते हैं कुडव यह एक नाम पावशेरका है प्रस्थ यह एक नाम शेरभरका है तिसमें आढक और द्रोणशब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंगमें होते हैं और जो कि रुपया आदिकका चौथाई भाग है, वह पाद संज्ञिक है इसकों पावली कहते हैं अंश भाग वंटक यह तीन नाम भागमात्रके है इसकों बाँट कहते हैं ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ॥ हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा अपि ॥ ९० ॥ स्यात्कोपश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ॥ ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं रूप्यं तद्द्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥

द्रव्य वित्त स्वापतेय रिक्थ ऋक्थ धन वसु हिरण्य द्रविण द्युम्न अर्थ रै विभव

यह तेरह नाम धनके हैं ॥ ९० ॥ और कृताकृत हेमरूप्यमें, अर्थात् बने अनबने सोनेंचांदीमें कोश हिरण्य शब्द वर्त्ते हैं. और उन सोनेंचांदीसें जो कि अन्य ताँबा आदिक है, वह कुप्य संज्ञिक है और यदि वह दोनों सोनें चांदी आहत अर्थात् गढे हुये हों, तौ रूप्य संज्ञिक हैं ॥ ९१ ॥

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ॥ शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागोऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥ मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम् ॥ रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥

गारुत्मत मरकत अश्मगर्भ हरिन्मणि यह चार नाम मरकत मणिके हैं. शोणरत्न लोहितक पद्मराग यह तीन नाम माणिकके हैं. मौक्तिक ॥ ९२ ॥ मुक्ता यह दो नाम मोतियोंके हैं. विद्रुम प्रवाल यह दो नाम मूँगाओंके हैं. तिसमें विद्रुमशब्द पुंलिंगमें होता है और प्रवाल पुंनपुंसकलिंग है. रत्न मणि यह दो नाम पत्थरकी जाति मरकतादिक और मुक्तादिकोंके विषैंभी वर्त्तें हैं तिसमें मणिशब्द दोनों स्त्रीपुंलिंगमें होताहै ॥ ९३ ॥

१ रत्नका लक्षण और ग्रथसें लिखतेहैं–
कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ॥
एतानि पंच रत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुरिति १
सुवर्णं रजतं मुक्ताराजावर्त्तं प्रवालकम् ।
रत्नपंचकमाख्यातं शेषं वस्तु प्रचक्षते ॥ २ ॥

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ॥ तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥ चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ॥ रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ९५ ॥

स्वर्ण सुवर्ण कनक हिरण्य हेमन् हाटक तपनीय शातकुम्भ गांगेय भर्मन् कर्बुर ॥ ९४ ॥ चामीकर जातरूप महारजत कांचन रुक्म कार्त्तस्वर जाम्बूनद अष्टापद यह उन्नीश नाम सोनेके हैं. तिसमें अष्टापद शब्द पुंनपुंसकलिंगमें होता है ॥ ९५ ॥

अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ॥ दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥ रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ ताम्रकम् ॥ शुल्बं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्ठोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥

और जो कि अलंकाररूप सुवर्ण है, वह शृंगीकनक संज्ञिक है. दुर्वर्ण रजत रूप्य खर्जूर श्वेत यह पांच नाम चाँदीके हैं ॥ ९६ ॥ रीति आरकूट यह दो नाम पीतलके हैं. तिसमें रीतिशब्द स्त्रीलिंगमें होता है और आरकूट स्त्रीलिंगमें नहीं होता किन्तु, पुंनपुंसकलिंगमें होताहै. ताम्रक शुल्ब म्लेच्छमुख द्व्यष्ट वरिष्ठ उदुंबर यह छै नाम ताँबेके हैं ॥ ९७ ॥

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ॥ अश्मसारोऽथ मण्डूरं

शिङ्घाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥ सर्वं च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी॥ क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च पारदे ॥ ९९ ॥

लोह शस्त्रक तीक्ष्ण पिंड कालायस अयस् अश्मसार यह सात नाम लोहके है. तिसमें लोहशब्द पुनपुंसकलिंग है और उस लोहके मैलमें मडूर शिंघाण शब्द वर्त्ते है ॥ ९८ ॥ सबही तैजस सुवर्ण रजतादिक लोह संज्ञिक है और लोहका विकार कुशी संज्ञिक है क्षार काच यह दो नाम काचके हे चपल रस सूत पारद यह चार नाम पारेके है ॥ ९९ ॥

गवलं माहिषं शृङ्गमभ्रकं गिरिजामले ॥ स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥ तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ कर्परी दार्विका क्वाथोद्भवं तुत्थं रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥ रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं गन्धाश्मनि तु गन्धकः॥ सौगन्धिकश्च चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका॥१०२॥

और जो कि माहिष शृंग भैंसका सिंग है, वह गवल संज्ञिक है अभ्रक गिरिजामल यह दो नाम अभ्रकके है स्रोतोंजन सौवीर कापोताजन यामुन यह चार नाम सौवीराजनके हैं इसकों सुरमा कहतेंहै ॥१००॥ तुत्थाजन शिखिग्रीव वितुन्नक मयूरक कर्परी यह पाच नाम तुत्थाजनके है इसकों तूतिया (मोरचूद)भी कहते है यह नेत्रोंके रोगकों दूर करताहै और जो कि तुत्थ तुत्थाजन दार्विका क्वाथोद्भव अर्थात हलदीके क्वाथमें समभाग बकरीके दूधसें संस्कार किया है, वह रसाजन ॥ १०१ ॥ रसगर्भ तार्क्ष्यशैल संज्ञिक है, इसकों रसोत कहते है गन्धाश्मन् गंधिक सौगन्धिक यह तीन नाम गंधिकके है चक्षुष्या कुलाली कुलत्थिका यह तीन नाम नीले सुरमेके है ॥ १०२ ॥

रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ॥ पिंजरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥ गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ॥ बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः १०४

रीतिपुष्प पुष्पकेतु पुष्पक कुसुमाजन यह चार नाम तपाईहुई पीतलसें उत्पन्न हुए अजनके हैं, इसकों फूलाभी कहतेहै ।पिंजर पीतन ताल आल हरितालक यह पाच नाम हरितालके है ॥ १०३ ॥ गैरेय अर्थ्य गिरिज अश्मज शिलाजतु यह पाच नाम शिलाजीतके है बोल गंधरस प्राण गोपरस यह पाच नाम गोपरसके है. यह शब्द समानलिंग है ॥ १०४ ॥

डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम् ॥ नागसीसकयोगेष्टवप्रा-

१ सुवर्णं रजतं ताम्रं रीतिः कांस्यं तथा त्रपु॥ सीसं कालायसं चेत्यष्टौ लोहानि चक्षते॥२॥

णि त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥ रङ्ग-वङ्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम् ॥ स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजन-मित्यपि ॥ १०६ ॥

डिंडीर अब्धिकफ फेन यह तीन नाम समुद्रफेनके हैं. सिंदूर नागसंभव यह दो नाम सिन्दूरके हैं. नाग सीसक योगेष्ट वप्र यह चार नाम सीसेके हैं. त्रपु पिच्चट ॥ १०५ ॥ रंग वंग यह चार नाम राँगके हैं. पिचु तुल यह दो नाम रुईकपासके हैं. कमलोत्तर कुसुंभ वह्निशिख महारजन यह चार नाम कसूमके हैं ॥ १०६ ॥

मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि ॥ मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥ मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ॥ नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥ पाक्योऽथ स्वर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ॥ सौवर्चलं स्याद्रुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

मेषकंबल ऊर्णायु यह दो नाम कंबलके हैं. शशोर्ण शशलोमन् यह दो नाम खरगोसके रोमके हैं. मधु क्षौद्र माक्षिक यह तीन नाम मधुके हैं, इसकों सहत कहते हैं. आदि शब्दसें भ्रामर पौत्तक आदिक जाननें. मधूच्छिष्ट सिक्थक यह दो नाम मौमके हैं ॥ १०७ ॥ मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका यह चार नाम मैनशिलके हैं. नैपाली कुनटी गोला यह तीन नाम नेपालदेशकी मैनशिलके हैं. यवक्षार यवाग्रज ॥ १०८ ॥ पाक्य यह तीन नाम जलेहुए जौओंके अंकुरोंसें उत्पन्न हुए क्षारभेदके हैं इसकों जवाखार कहते हैं. सर्जिकाक्षार कापोत सुखवर्चक यह तीन नाम सज्जखारके हैं. सौवर्चल रुचक यह दो नाम संचलखारके हैं. यह पहलें कहदियाथा परन्तु क्षारकेप्रसंगसें फिर कहागया है. त्वक्क्षीरी वंशलोचना यह दो नाम बाँशसें उत्पन्न हुए औषधिविशेषके हैं. इसकों वंशलोचन कहते हैं ॥ १०९ ॥

शिग्रुजं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैक्षवम् ॥ ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥ गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ॥ त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

॥ इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

शिग्रुज श्वेतमरिच यह दो नाम सहजनेके बीजके हैं. और जो कि इक्षुसंबन्धी मूल अर्थात ऊखकी जड है, वह मोरट संज्ञिक है. ग्रंथिक पिप्पलीमूल चटिकाशिरस् यह तीन नाम पीपरामूलके हैं ॥ ११० ॥ गोलोमी भूतकेश यह दो नाम जटामांसीके हैं. पत्रांग रक्तचन्दन यह दो नाम रक्तचन्दनसदृश रक्तसार पतंगवृक्षके हैं त्रिकटु त्र्यूषण

व्योष यह तीन नाम इकट्ठी कीहुई सोंठि पिपरि मिरचोंके है त्रिफला फलत्रिक यह दो नाम इकट्ठे किये हुए हर्रं आवला बहेडोंके हैं ॥ १११ ॥

॥ इति वैश्यवर्गः ॥

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ॥ आ चण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥ शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ॥ शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥

शूद्र अवरवर्ण वृषल जघन्यज यह चार नाम शूद्रके है चांडालशब्द पर्यन्त अंबष्ठ-करणादिक सकीर्ण सज्ञिक है आदिशब्दसें उग्रादिकभी सकीर्ण जानने ॥ १ ॥ शूद्रा शूद्रजाति स्त्री विश् (वैश्य) इन दोनोंसें उत्पन्न हुआ पुत्र करण सज्ञिक है इसकी लेखनवृत्ति है वेश्या (वैश्यजाति स्त्री) द्विजन्मा (ब्राह्मण) सें उत्पन्न हुआ पुत्र अंबष्ठ सज्ञिक है इसकी चिकित्सावृत्ति है और शूद्र जाति स्त्री और क्षत्रियसें उत्पन्न हुआ पुत्र उग्र सज्ञिक है इसकी शस्त्रवृत्ति है और क्षत्रियजाति स्त्री और वैश्यसें उत्पन्न हुआ पुत्र मागध संज्ञिक है इसकी राजादिकोंकी स्तुति पाठादिक वृत्ति है ॥ २ ॥

माहिष्योऽर्याक्षत्रिययोः क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ॥ ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥ रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः ॥ स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

अर्या वैश्यजाति स्त्री और क्षत्रियसे उत्पन्न हुआ पुत्र माहिष्य सज्ञिक है इसकी ज्योतिष शकुनशास्त्र स्वरशास्त्र जीविका है और वैश्यजाति स्त्री और शूद्रसें उत्पन्न हुआ पुत्र क्षत्ता सज्ञिक है इसकी वृत्ति मृगयादिक है और ब्राह्मणीकेविषे क्षत्रियसें उत्पन्नहुआ पुत्र सूत सज्ञिक है इसकी जीविका हाथियोके बंधन तथा घोडाओंके फिरानेसें होतीहै और उसी ब्राह्मणीकेविषे वैश्यसे उत्पन्नहुआ पुत्र वैदेहक सज्ञिक है इसकी जीविका चौसठि कलाओंके कर्मके शिखानेसें होतीहै ॥ ३ ॥ करणी अर्थात् शूद्रजाति स्त्री और वैश्यसें उत्पन्नहुई स्त्रीकेविषे माहिष्य अर्थात् वैश्यजाति स्त्री और क्षत्रियसें उत्पन्नहुए पुरुषसें जिसका जन्म हुआहै वह रथकार सज्ञिक है इसकीवृत्ति रथकर्म इन्धनादिकोंसें होतीहै और जो कि ब्राह्मणीकेविषे शूद्रसें उत्पन्नहुआ है वह चांडाल सज्ञिक है इसकी वृत्ति मृतकके वस्त्रादिक तथा निन्दित मासोंकर होतीहै ॥४॥

कारुः[1] शिल्पी संहतैस्तैर्द्वयो श्रेणिः सजातिभिः ॥ कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठो मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥ कु-

१ तक्षा च तन्तुवायश्च नापितो रजकस्तथा ॥ पञ्चमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः ॥१॥

म्भकारः कुलालः स्यात्पलगण्डस्तु लेपकः॥ तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्तुन्नवायस्तु सौचिकः॥ ६॥

कारु शिल्पिन् यह दो नाम चित्रकारादिकके हैं. और उन्ही इकठेहुए सजातिशिल्पियोंकर श्रेणि शब्द होताहै अर्थात् यह एक नाम सजातीय शिल्पियोंके समूहका है. यह शब्द दोनों स्त्रीपुंलिंगमें होताहै. कुलक कुलश्रेष्ठिन् यह दो नाम शिल्पियोंके कुलके प्रधानके हैं. मालाकार मालिक यह दो नाम मालीके हैं ॥ ५॥ कुंभकार कुलाल यह दो नाम कुंभारके हैं. पलगंड लेपक यह दो नाम गृहादिकोंकेविषें लेप करनेवालेके हैं इसकों राज कहतेहैं. तन्तुवाय कुविन्द यह दो नाम कपडोंके बनानेवालेके हैं इसकों जुल्हाया तथा कोरी कहते हैं. तुन्नवाय सौचिक यह दो नाम वस्त्रोंके सीनेवालेके हैं इसकों दरजी कहतेहैं ॥ ६॥

रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः॥ पादूकृच्चर्मकारः स्याद्व्योकारो लोहकारकः॥ ७॥ नाडिंधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः॥ स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः॥ ८॥

रंगाजीव चित्रकर यह दो नाम वस्त्रादिकोंके रँगनेवालेके हैं इसकों रंगसाज तथा रंगरेजभी कहते हैं. शस्त्रमार्जक असिधावक यह दो नाम शस्त्रके पैनानेवालेके हैं इसकों शिकलीगर कहतेहैं. पादूकृत् चर्मकार यह दो नाम चँभारके हैं. व्योकार लोहकारक यह दो नाम लुहारके हैं ॥ ७॥ नाडिंधम स्वर्णकार कलाद रुक्मकारक यह चार नाम सुनारके हैं. शांखिक कांबविक यह दो नाम मनिहारके हैं. शौल्बिक ताम्रकुटक यह दो नाम कांसी तांबेके वर्त्तन बनानेवालेके हैं इसकों ठठेरा कहतेहैं ॥ ८॥

तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट् ॥ ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः॥ ९॥ क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः ॥ निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः॥ १०॥

तक्षन् वर्द्धकि त्वष्टृ रथकार काष्टतक्ष् यह पांच नाम वढईमात्रके हैं जो कि वढई ग्रामके आधीन होताहै वह ग्रामतक्ष संज्ञिक है और जो कि वढई अनधीनक अर्थात् अपने आधीन है वह कौटतक्ष संज्ञिक है ॥ ९॥ क्षुरिन् मुंडिन् दिवाकीर्त्ति नापित अंतावसायिन् यह पांच नाम नाईके हैं. निर्णेजक रजक यह दो नाम वस्त्रोंके धोनेवालेके हैं इसकों धोबी कहते हैं शौण्डिक मण्डहारक यह दो नाम मदिरासें जीविका करनेवालेके हैं इसकों कलाल कहतेहैं॥ १०॥

जाबालः स्यादजाजीवो देवाजीवस्तु देवलः॥ स्यान्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रातिहारिकः॥ ११॥

शैलालिनस्तु शैलूपा जायाजीवाः कृशाश्विनः ॥ भरता इत्यपि नटाश्चारणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥

जाबाल अजाजीव यह दो नाम बकरियोंके पालनेवालेके है इसकों गडरिया कहतेहै देवाजीव देवल यह दो नाम देवसेवासे जीविका करनेवालेके है इसकों पुजारी तथा पंडाभी कहतेहै माया शावरी यह दो नाम इन्द्रजालके है मायाकार प्रतिहारक यह दो नाम इन्द्रजालीके हैं इसको बाजीगरभी कहतेहै ॥ ११ ॥ शैलालिन् शैलूप जायाजीव कृशाश्विन् भरत नट यह छे नाम नटवाके है चारण कुशीलव यह दो नाम कत्थक नटविशेषोंके है ॥ १२ ॥

मार्दङ्गिका मौरजिकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ॥ वेणुध्माः स्युर्वैणविका वीणावादास्तु वैणिकाः॥१३॥ जीवान्तकः शाकुनिको द्वौ वागुरिकजालिकौ ॥ वैतंसिकः कौटिकश्च मासिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥

मार्दंगिक मौरजिक यह दो नाम मृदग बजानेवालेके है इसकों मृदगी पखवाजीभी कहतेहै पाणिवाद पाणिघ यह दो नाम ताँबीरजानेवालेके है वेणुध्मा वैणविक यह दो नाम बाँसुरी बजानेवालेके है तिसमें वेणुध्मा शब्द आकारान्त पुल्लिंग हे वीणावाद वैणिक यह दो नाम वीणा बजानेवालेके हैं ॥ १३ ॥ जीवांतक शाकुनिक यह दो नाम पक्षियोंके मारनेवालेके है इसकों चिडीमार कहते है. वागुरिक जालिक यह दो नाम जालकरके मृगादिकोंके बाँधनेवालेके है वैतंसिक कौटिक मांसिक यह तीन नाम मास बेचकर जीविका करनेवालेके है इसको कसाई कहतेहै यह तीनों शब्द शब्द समानार्थ है ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक् कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ॥ वार्तावहो वैवधिको भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥ विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ॥ निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥

भृतक भृतिभुज् कर्मकर वैतनिक यह चार नाम मजूरीसें जीविका करनेवालेके है इसकों चाकर तथा मजूर कहते है वार्त्तावह वैवधिक यह दो नाम संदेशा लेज नेवालेके है भारवाह भारिक यह दो नाम बोझ ले जानेवालेके है ॥ १५ ॥ विवर्ण पामर नीच प्राकृत पृथक्जन निहीन अपसद जाल्म क्षुल्लक इतर यह दश नाम नीचके है ॥ १६ ॥

भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ॥ नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥ पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ॥ मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्य शीतकोऽलसोऽनुष्ण ॥ १८ ॥

भृत्य दासेर दासेय दास गोप्यक चेटक नियोज्य किंकर भैष्य भुजिष्य परिचारक यह ग्यारह नाम दासके हैं ॥ १७ ॥ पराचित परिस्कन्द परजात परैधित यह चार नाम दूसरोंकर बढायेहुए पुरुषके हैं. मंद तुन्दपरिमृज आलस्य शीतक अलस अनुष्ण यह छै नाम आलसीके हैं ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ॥ चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥ निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ॥ भेदाः किरातशवरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥

दक्ष चतुर पेशल पटु सूत्थान उष्ण यह छै नाम चतुरके हैं. चंडाल प्लव मातंग दिवाकीर्त्ति जनंगम ॥ १९ ॥ निषाद श्वपच अंतेवासिन् चांडाल पुक्कस यह दश नाम चांडालके हैं. किरात शबर पुलिन्द यह तीन नाम म्लेच्छजाती चांडालेंके भेद हैं ॥२०॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ॥ कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥ शुनको भषकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः ॥ श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः सरमा शुनी ॥ २२ ॥

व्याध मृगवधाजीव मृगयु लुब्धक यह चार नाम व्याधके हैं. कौलेयक सारमेय कुक्कुर मृगदंशक ॥ २१ ॥ शुनक भषक श्वन् यह सात नाम कुत्तेके हैं. और जो कि योगित अर्थात् प्रयोगकरके उन्मत्तताको प्राप्तहुआ है वह कुत्ता अलर्क संज्ञिक है और जो कि कुत्ता मृगयाकुशल अर्थात् अहेरमें चतुर है वह विश्वकद्रु संज्ञिक है इसको शिकारीकुत्ता कहते हैं. सरमा शुनी यह दो नाम कुत्तियाके हैं ॥ २२ ॥

विट्चरः सूकरो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः पशुः ॥ आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥ दक्षिणारुर्लुब्धयोगाद्दक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ॥ चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ॥ चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं लोप्त्रं तु तद्धने॥२५॥

और जो कि ग्रामसंबन्धी सूकर है वह विट्चर संज्ञिक है. और जो कि तरुण पशु है वह वर्कर संज्ञिक है. आच्छोदन मृगव्य आखेट मृगया यह चार नाम शिकारके है तिसमें मृगयाशब्द स्त्रीलिंगमें होताहै ॥२३। लुब्धयोग अर्थात् व्याधके संबन्धसें दहने बगलमें है अरुघाव जिसके ऐसा हरिण दक्षिणेर्मन् संज्ञिक है. चौर ऐकागारिक स्ते दस्यु तस्कर मोषक ॥ २४ ॥ प्रतिरोधि परास्कन्दि पाटच्चर मलिम्लुच यह दश नाम चोरके हैं. चौरिका स्तैन्य चौर्य्य स्तेय यह चार नाम चोरीके हैं और उस चोरीके धनमें लोप्त्र शब्द वर्त्ते है ॥ २५ ॥

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ॥ उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद्वागुरा मृगवन्धनी ॥ २६ ॥ शुल्वं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ॥ उद्घाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः॥२७॥

मृगपक्षियोंके बाँधनेके निमित्त जो उपकरण फासजाल आदिक है वह वीतस संज्ञिक है उन्माथ कूटयत्र यह दो नाम उसके है जो कि मृगपक्षियोंके बाँधनेके निमित्त छलसें रक्खेहुए यत्रके है इसकों फदाभी कहते है वागुरा मृगबन्धनी यह दो नाम मृगोंके फाँसनेंकी रस्सी विशेषके है इसकों जालभी कहते है ॥ २६ ॥ शुल्व वराटक रज्जु वटी गुण यह पाच नाम रस्सीके है तिसमें रज्जु शब्द स्त्रीलिंग है और वटी शब्द तीनों लिंगमें होता है मर्हिनाम कूपसें जल उसारा जाता है जिस रस्सीकर वह उद्घाटन घटीयत्र संज्ञिक है इसकों पनभरभी कहते है ॥ २७ ॥

पुंसि वेमा वायदण्डः सूत्राणि नरि तन्तव ॥ वाणिर्व्यूति. स्त्रियौ तुल्ये पुंस्त लेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥ पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ॥ जतुत्रपुविकारे तु जातुप त्रापुपं त्रिषु ॥ २९ ॥

वमन् वायदड यह दो नाम वस्त्र बुननेके दडके है सूत्र ततु यह दो नाम सूतके है तिसमें ततु शब्द पुलिंगमें होता है वाणि व्यूति यह दो नाम बुननेके है यह दोनो शब्द तुल्यार्थ और स्त्रीलिंग है और लेप्यादिक कर्मकेविषै पुस्त शब्द वर्त्ते है अर्थात् यह एक नाम मिट्टी काठ लोह आदिककी बनाईहुई पुतलीका है ॥ २८ ॥ और जो कि वस्त्रदन्तादिकोंकर बनाईहुई पुत्रिका अर्थात् पुतली है वह पाचालिका संज्ञिक है जतु (लाख) त्रपु (राग) इन दोनोंके विकारमें जातुप त्रापुप शब्द होते है भाव यह है कि जातुप यह एक नाम लाखके विकारका है त्रापुप यह एक नाम रागके विकारका है यह दोनों शब्द तीनों लिंगमें होते है ॥ २९ ॥

पिटकः पेटक. पेटा मञ्जूषाऽथ विहङ्गिका ॥ भारयष्टिस्तदालम्बि शिक्यं काचोऽथ पादुका ॥ ३० ॥ पादूरुपानत्स्त्री सैवानुपदीना पदायता ॥ नद्ध्री वर्ध्री वरत्रा स्यादश्वादेस्ताडनी कशा ॥ ३१ ॥

पिटक पेटक पेटा मजूपा यह चार नाम पिटारी वा सिन्दूकके है विहगिका भारयष्टि यह दो नाम छींका आदिक टाँगनेकी लकडीके है इसकों खुटी कहते है और उस खुटीपर टगा जो रहता है यह शिक्य काच संज्ञिक है इसकों छींका कहते है पादुका ॥ ३० ॥ पाद उपानह् यह तीन

१ मृगा यत्र नश्यन्ति याभ्य यन्त्रणान्य र चर्मणा॥ लोहाले ह्रने प्राणि पुस्तमित्यभिधीयते ॥ १ ॥

नाम जूताओंके हैं यह तीनों शब्द स्त्रीलिंग हैं और जो कि जूता पाँवकीसमान विस्तृत है वह अनुपदीना संज्ञिक है इसको मोजा कहते हैं. नध्री वर्ध्री वरत्रा यह तीन नाम चामकी रस्सीके हैं. और अश्व (घोडा) आदिकोंके ताडनेवाली रस्सी कशा संज्ञिक है इसको कुर्रा कहते हैं ॥ ३१ ॥

चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः॥३२॥ व्रश्चनः पत्रपरशुरीषिका तूलिका समे ॥ तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥ ३३ ॥

चांडालिका कंडोलवीणा चंडालवल्लकी यह तीन नाम नीच जातिकी वीणाके हैं नाराची एषणिका यह दो नाम सुनारके कांटेके हैं. शाण निकष कष यह तीन नाम कसोटीके हैं इसपर घिसकर सोना परखा जाता है ॥ ३२ ॥ व्रश्चन पत्रपरशु यह दो नाम सुवर्णादिक काटनेके फरसेके हैं इसको रेतीभी कहते हैं. ईषिका तूलिका यह दो नाम शलाका भेदके हैं इसकों सलाई कहते हैं. तैजसावर्त्तनी मूषा यह दो नाम सुवर्णादिक तवानेके पात्रके हैं इसकों घरिया कहते हैं. भस्त्रा चर्मप्रसेविका यह दो नाम अग्नि जलानेके वास्ते बनाईहुई धौंकनीके हैं॥३३॥

आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे ॥ वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारणः ॥ ३४ ॥ क्रकचोऽस्त्री करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका ॥ सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा शिल्पं कर्म कलादिकम् ॥ ३५ ॥

आस्फोटनी वेधनिका यह दो नाम मणिआदिक वेधनेके उपयोगी शस्त्रभेदके हैं इसकों वर्मा कहते हैं. कृपाणी कर्त्तरी यह दो नाम उसकें जिसकरकें कि सुवर्णपात्रादिक कट जाते हैं इसकों कतरनी कहते हैं यह दोनों शब्द समानार्थ हैं. वृक्षादनी वृक्षभेदी यह दो नाम वृक्षके काटनेके शस्त्रभेदके हैं इसकों वसूलाभी कहते हैं. टंक पाषाणदारण यह दो नाम पत्थरके फोडनेवाले घनभेदके हैं इसकों टांकी कहते हैं ॥ ३४ ॥ क्रकच करपत्र यह दो नाम काष्ठादिक चीरनेवाले शस्त्रके हैं इसकों आरा कहते हैं. तिसमें क्रकच पुंनपुंसकलिंग है. आरा चर्मप्रभेदिका यह दो नाम चर्मके खंडन करनेवाले शस्त्रके हैं इसकों आरी कहते हैं. सूर्मी स्थूणा अयःप्रतिमा यह तीन नाम लोहेकी प्रतिमाके हैं जो कला गीत नृत्यादिक और आदिशब्दसें जो रथकारादिक कर्म है वह शिल्प संज्ञिक हैं ॥३५

प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ॥ प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिरुपमोपमानं स्यात् ॥ ॥ ३६ ॥ वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक् ॥ साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी ॥ ३७ ॥

प्रतिमान प्रतिबिम्ब प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया प्रतिकृति अर्चा प्रतिनिधि यह आठ नाम प्रतिमाके है तिसमें प्रतिनिधि शब्द पुलिंगमें होता है उपमा उपमान यह दो नाम उपमाके है ॥ ३६ ॥ सम तुल्य सदृक्ष सदृश सदृश् साधारण समान यह सात नाम सदृशके है यह सातो शब्द वाच्यलिंग अर्थात् विशेष्यलिंग है और जो कि उत्तरपद अर्थात् अग्रपदमें स्थित है निभसकाशादिक वहभी वाच्यलिंग है॥३७॥

निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ॥कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम् ॥ ३८ ॥ भरण्यं भरणं मूल्य निर्वेशः पण इत्यपि ॥ सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा ॥ ॥ ३९ ॥ गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकादम्बर्यः परिस्रुता ॥ मदिरा कश्यमद्ये चाप्यवदंशस्तु भक्षणम् ॥ ४० ॥

निभ सकाश नीकाश प्रतीकाश उपमा इत्यादिक नामभी सदृशके है आदिशब्दसें भूतरूप कल्पादिकभी नामसदृशार्थ जानने कर्मण्या विधाभृत्या भृति भर्मन् वेतन ॥ ३८ ॥ भरण्य भरण मूल्य निर्वेश पण यह ग्यारह नाम मजूरीके हे सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुत वरुणात्मजा ॥ ३९ ॥ गधोत्तमा प्रसन्ना इरा कादवरी परिस्रुता मदिरा कश्य मद्य यह तेरह नाम मदिराके है और जो कि व्यजन मदिरा पीनेकी रुचि वढानेके अर्थ भक्षण किया जाता है वह अवदंश सज्ञिक है ॥ ४० ॥

शुण्डापानं मदस्थानं मधुवारा मधुक्रमाः ॥ मध्वासवो माधवको मधु माध्वीकमद्ययोः ॥ ४१ ॥ मैरेयमासवः सीधुर्मेदको जगलः समौ ॥ संधानं स्यादभिषवः किण्वं पुंसि तु नग्नहूः ॥ ४२ ॥

शुडापान मदस्थान यह दो नाम मदिराके घरके है मधुवार मधुक्रम यह दो नाम मदिरा पीनेके समयके है मध्वासव माधवक मधु माध्वीक यह चार नाम महुआके फूलोंसे उत्पन्न हुई मदिराके है तिसमें मधु और माध्वीक शब्द दोनों स्त्रीपुलिंगमें नही होते, किंतु नपुसकलिंगमें होते है ॥४१॥ मैरेय आसव सीधु यह तीन नाम ऊख शाक आदिकसें उत्पन्न कीहुई मदिरा विशेषके है मेदक जगल यह दोनों समानार्थ नाम सुराकल्क अर्थात् मदिराके वचेहुए भागके है सधान अभिषव यह दो नाम मदिरा बनानेके है किण्व नग्नहू यह दो नाम तडुलादिक द्रव्यकर बनाईहुई मदिराके बीजके है तिसमें नग्नहू शब्द पुलिंगमें होता है ॥ ४२ ॥

कारोत्तरः सुरामण्ड आपानं पानगोष्ठिका ॥ चषकोऽस्त्री पानपात्रं सरकोऽप्यनुतर्षणम्॥४३॥धूर्तोऽक्षदे-

वीकितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृत्समाः॥स्युर्लग्न-
काः प्रतिभुवः सभिका द्यूतकारकाः४४

और जो कि मदिराका माँड है, वह कारोत्तर संज्ञिक है. आपान पानगोष्ठिका यह दो नाम मदिरा पीनेकी सभाके हैं. चषक पानपात्र यह दो नाम मदिरा पीनेके पात्रके हैं, तिसमें चषक स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है. सरक अनुतर्षण यह दो नाम मदिरा पीनेके हैं ॥ ४३ ॥ धूर्त्त अक्षदेविन् कितव अक्षधूर्त्त द्यूतकृत् यह पांच नाम जुए खेलनेवालेके हैं. यह शब्द सब समानार्थ हैं. लग्नक प्रतिभू यह दो नाम उसके हैं, जो कि ऋणादिककेविषैं जामिन होता है. सभिका द्यूतकारक यह दो नाम जुआ खिलानेवालेके हैं ॥ ४४ ॥

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ॥ पणोऽक्षेषु ग्लहोऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ॥ ४५ ॥ परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ अष्टापदं शारिफलं प्राणिद्यूतं समाह्वयः ॥ ४६ ॥ उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ॥ ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ॥ ४७ ॥

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

द्यूत अक्षवती कैतव पण यह चार नाम जुआके हैं. तिसमें द्यूत शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है. अक्ष (फांसा) के विषैं जो कि संकेत है, वह पण ग्लह संज्ञिक है. इसको वाजी तथा दाव कहते हैं. अक्ष देवन पाशक यह तीन नाम फांसोंके हैं ॥ ४५ ॥ और शारि नाम नर्दोंके चारोंतरफ लेजानेंमें परिणाय शब्द वर्त्ते है. अर्थात् यह एक नाम नर्दोंके इधर उधर चलानेका है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है. अष्टापद शारिफल यह दो नाम चौपडके हैं. और जो कि प्राणिद्यूत अर्थात् प्राणिनाम मेंढा मुरगा आदिकोंका द्यूत नाम युद्धरूप जुआ है, वह समाह्वय संज्ञिक है ॥ ४६ ॥ इस शूद्र वर्गमें जो यौगिक कुम्भकार मालाकार आदिकशब्द काव्यपुराणादिकमें पुंलिंगके विषैं ही बहुत प्रयोग होनेसें एकही लिंगमें कहेहैं, ते अन्यतः अर्थात् और जगह स्त्रीलिंगादियुक्त विशेष्यवृत्ति होतसतें ताद्धर्म्य अर्थात् तिस विशेष्य धर्मवाले होनेसें स्त्रीलिंगादिककेविषैं जानने. भाव यह है कि, इस शूद्रवर्गमें जो कि यौगिक कुम्भकार मालाकारादिकशब्द एकही पुंलिगमें दिखाये हैं,वह यदि विशेष्यवृत्ति होवैं, तो विशेष्यलिंग जाननें. और अपिशब्दसें रूढशब्द करण कुलादिकभी जातिवचनसें पुंलिंग और स्त्रीलिंगके

१ जिसके अंगोंकरके समर्थहुआ अर्थ जानाजाता है वह यौगिक है.

१ जिसकी अंगशक्तिकी अपेक्षा न करकें समूहशक्तिमात्रसें अर्थ जानाजाताहै वह रूढ है

विषे वर्त्तेहै यौगिकोके लिगातरप्रयोग यह है, जैसें [कुम्भकारी स्त्रीकुम्भकार कुलम्] और रूढशब्दोंके लिगातर प्रयोग यह है जैसे [करणी स्त्री—कुलाली स्त्री]ऐसें जाननें ॥४७॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने॥ द्वितीयकाण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥ इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने द्वितीयं काण्डं ॥ समाप्तम् ॥

इसप्रकार श्रीअमरसिंहकी कृतनाम और लिंगोंके अनुशासन जतानेवाले ग्रंथमें भूम्यादिक शब्दोंका काण्डसमूह साग (अंगोपागसहित) कहाहै ॥ १ ॥ श्रीमदमरसिंहकृतौ श्रीपाठकमगलसेनात्मजकाशिराम-विरचितभाषाटीकाया द्वितीयोभूम्यादिकाण्डः समाप्त ॥ २ ॥

तृतीयकाण्डम् ।

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ॥ लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

इसके अनतर तृतीयकाण्ड प्रारम्भ किया जाताहै—इस सामान्य साधारणकाण्डमें विशेष्यनिघ्न अर्थात् पूर्व कहे हुए स्त्रीदारादिरूपविशेष्यके आधीन है लिगवचन जिनके ऐसे जो सुकृत्यादिक शब्द, तथा सकीर्ण परस्पर विजातीय कर्मपारायणादिक जो शब्द, तथा नानार्थ अर्थात् अनेकार्थोंमें वर्त्तमान नाकलोकादिक जो शब्द, तथा अव्यय आङादिक जो शब्द, लिगादिसग्रह अर्थात् [स्त्रियामीदूद्विरामैकाच्] इत्यादिक जो शब्द आदिशब्दसें लकाशेफालिका जो शब्द तिन्होंकरकें पूर्वकहेहुए स्वर्गादिक वर्ग है आश्रय जिनके ऐसे तिन्ही २ विशेष्यनिघ्नादिक नामवाले वर्ग कहे जावेंगे भाव यह हे कि इस साधारण तृतीयकाण्डमें विशेष्यनिघ्न तथा सकीर्ण तथा अव्यय तथा लिगादिसग्रह इन शब्दोंकरकें वर्ग कहे जावेगे परतु वह वर्ग स्वतत्र नही है, किन्तु वर्गसश्रय अर्थात् पूर्वकहे हुए स्वर्गादिक वर्गोंके सबधी है ॥ १ ॥

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ॥ गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥ सुकृती पुण्यवान् धन्यो महेच्छस्तु महाशयः॥ हृदयालुः सुहृदयो महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

इस शास्त्रकेविषे रूपादिकभेदकरके बहुधा लिगनिर्णय है तिसीप्रकार इस विशेष्यनिघ्नवर्गमेंभी होताहै क्या ऐसा भ्रम दूर करनेके लिये व्यापकलक्षण कहतेहै—जैसें स्त्रीदारादिक पदोंकर जो विशेष्य स्त्रीदारादिरूप जिसप्रकार प्रस्तुत अर्थात् सगतहो तिसीप्रकार गुणद्रव्यक्रियायुक्त शब्द उस वि-

शेष्यके भेदक अर्थात् विशेषण होतेहैं. भाव यह है कि जैसे विशेष्यशब्दके लिंगवचन हों, तैसेही विशेषणशब्दके लिंगवचन होतेहैं. जैसें [सुकृतिनी स्त्री—सुकृतिनो दाराः—सुकृति कुलम्] यह गुणयुक्तका उदाहरणहै—[दण्डिनी स्त्री—दण्डिनोदाराः—दण्डि कुलम्] यह द्रव्ययुक्तका उदाहरण है [पाचिका स्त्री—पाचका दाराः—पाचकं कुलम्] ॥ २ ॥ सुकृतिन् पुण्यवत् धन्य यह तीन नाम भाग्यसंपन्नके हैं. महेच्छ महाशय यह दो नाम उदारचित्तवाले दयायुक्तके हैं. हृदयालु सुहृदय यह दो नाम शुभचित्तवालेके हैं. महोत्साह महोद्यम यह दो नाम वडे उद्यमवालेके हैं ॥ ३ ॥

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ॥ वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥ पूज्यः प्रतीक्ष्यः सांशयिकः संशयापन्नमानसः॥ दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

प्रवीण निपुण अभिज्ञ विज्ञ निष्णात शिक्षित वैज्ञानिक कृतमुख कृतिन् कुशल यह दश नाम प्रवीण अर्थात् ज्ञाताके हैं॥४॥ पूज्य प्रतीक्ष्य यह दो नाम पूजने योग्यके हैं. सांशयिक संशयापन्नमानस यह दो नाम संदेहयुक्त चित्तवालेके हैं. दक्षिणीय दक्षिणार्ह दक्षिण्य यह तीन नाम दक्षिणाके योग्यके हैं ॥ ५ ॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा वहुप्रदे ॥ जैवातृकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥ परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्धकः ॥ हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥

वदान्य स्थूललक्ष्य दानशौण्ड वहुप्रद यह चार नाम उसके हैं, जो कि दान देनेमें शूर होताहै. जैवातृक आयुष्मत् यह दो नाम वडीअवस्थावालेके हैं. अन्तर्वाणि शास्त्रवित् यह दो नाम शास्त्रके जाननेवालेके हैं ॥ ६ ॥ परीक्षक कारणिक यह दो नाम प्रमाणोंकर अर्थके निश्चय करनेवालेके हैं. इसकों पारखी कहते हैं वरद समर्द्धक यह दो नाम वर देनेवालेके हैं. हर्षमाण विकुर्वाण प्रमनस् हृष्टमानस यह चार नाम प्रसन्नचित्तवालेके हैं ॥ ७ ॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः॥दक्षिणे सरलोदारौ सुकलो दातृभोक्तरि ॥ ८ ॥ तत्परे प्रसितासक्ताविष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ॥ प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः॥९॥

दुर्मनस् विमनस् अन्तर्मनस् यह तीन नाम व्याकुलचित्तवालेके हैं. उत्क उन्मनस् यह दो नाम उत्कंठितके हैं. दक्षिण सरल उदार यह तीन नाम उदारके हैं. और जो देनेवाला है और वहही भोगनेवाला है उसमें सुकल शब्द वर्त्ते है. अर्थात् यह एक

नाम दाताभोक्ताका है ॥ ८ ॥ तत्पर प्रसित आसक्त यह तीन नाम तात्पर्ययुक्तके है. इष्टार्थोद्युक्त उत्सुक यह दो नाम चाँहेहुए अर्थमें उद्योग करनेवालेके है प्रतीत प्रथित ख्यात वित्त विज्ञात विश्रुत यह छै नाम प्रसिद्ध अर्थात् विख्यातके है ॥ ९ ॥

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहतलक्षणौ ॥ इभ्य आढ्यो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥ अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ॥ अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥ स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ॥ वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥

और जो कि गुणशौर्यादिकोंकर विख्यात है उसमें कृतलक्षण आहतलक्षण यह दो नाम वर्त्ते है इभ्य आढ्य धनिन् यह तीन नाम धनवालेके है स्वामिन् ईश्वर पति ईशितृ ॥ १० ॥ अधिभू नायक नेतृ प्रभु परिवृढ अधिप यह दश नाम स्वामीके है इसकों मालिक कहतेहै. अधिकर्द्धि समृद्ध यह दो नाम सुसपन्न अर्थात् भरेपूरेके है कुटुम्बव्यापृत ॥ ११ ॥ अभ्यागारिक उपाधि यह तीन नाम कुटुम्बपोषणादिक व्यापारयुक्तके हे तिसमें यह उपाधिशब्द नित्यही पुल्लिंग है और जो उत्तम अग और रूपसे युक्त है वह सिंहसंहनन संज्ञिकहै॥१२॥

निर्वार्यः कार्यकर्ता यः संपन्नः सत्त्वसंपदा ॥ अवाचि मूकोऽथ मनोजवसः पितृसंनिभः ॥ १३ ॥ सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ॥ लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान् स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥

और जो सत्वसपदा अर्थात् दुःखमें नहीं चलायमान होनेवाले मनरूप सपत्तिकर सपन्नहुआ कार्य करताहै वह निर्वार्य संज्ञिक है अवाच् मूक यह दो नाम उसके है जो कि बोलनेकों समर्थ नही है मनोजवस पितृसन्निभ यह दो नाम उसके है जो कि पिताकेतुल्य हो ॥ १३ ॥ वरकेअर्थ सत्कारकरके जो अलकृतकन्याको देताहै वह कूकुद संज्ञिक है लक्ष्मीवत् लक्ष्मण श्रील श्रीमत् यह चार नाम लक्ष्मीवानके हैं स्निग्ध वत्सल यह दो नाम पुत्रादिकोंकेविषे प्रेमयुक्तवालेके है ॥ १४ ॥

स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ॥ स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥ परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ॥ अधीनो निघ्न आपत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

---

१ यहा स्मृतिमें सत्वका लक्षण लिखतेहै— व्यसनेऽभ्युदये चापि ह्यविकारः सदा मतः तत्सत्त्वमिति च प्रोक्तं नयविद्भिर्बुधैः क्रियेति ॥ १ ॥

दयालु कारुणिक कृपालु सूरत यह चार नाम दयावालेके हैं. यह चारो शब्द समानार्थ हैं. स्वतंत्र अपावृत स्वैरिन् स्वच्छन्द निरवग्रह यह पांच नाम स्वेच्छाचारीके हैं ॥ १५ ॥ परतंत्र पराधीन परवत् नाथवत् यह चार नाम पराधीनके हैं. अधीन निघ्न आयत्त अस्वच्छन्द गृह्यक यह पांच नाम आधीनमात्रके हैं ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥ कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः क्रियावान्कर्मसूद्यतः ॥ स कार्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

खलपू बहुकर यह दो नाम संमार्जनादिक कर्म करनेवालेके हैं इसकों झाडू देनेवालाभी कहतेहैं. दीर्घसूत्र चिरक्रिय यह दो नाम उसके हैं जो कि थोडीदेरमें होनेवाले कार्यकों बहुत देरमें करताहै. जाल्म असमीक्ष्यकारिन् यह दो नाम उसके हैं जो कि गुणदोषोंकों न विचारकरके कार्य करता है और जो कि क्रियाओंके विषैं मंद अर्थात् आलसी वा मूर्ख है वह कुंठ संज्ञिक है ॥ १७ ॥ कर्मक्षम अलंकर्मीण यह दो नाम कार्यमें सामर्थ्यवान् पुरुषके हैं. और जो कि कार्योंमें उद्युक्त अर्थात् उद्योगी रहताहै वह क्रियावत् संज्ञिक है. कार्म कर्मशील यह दो नाम सदाहीं कार्यमें प्रवृत्त रहनेवालेके हैं. कर्मशूर कर्मठ यह दो नाम उसके हैं जो कि आरम्भ कियेहुए कर्मकों प्रयत्नसें समाप्त करताहै ॥ १८ ॥

भरण्यभुक्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ॥ अपस्नातो मृतस्नात आमिषाशी तु शौष्कलः ॥ १९ ॥ बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ॥ परान्नः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽद्मरः ॥ २० ॥

भरण्यभुज् कर्मकर यह दो नाम उसके हैं जो कि मजूरी लेकर कार्य करताहै. तत्क्रिय अर्थात् वह कर्मही है क्रिया जिसकी ऐसा जो पुरुष है वह कर्मकार संज्ञिक है अर्थात् यह एक नाम उसका है जो कि विनाही मजूरीके कार्यमें उद्योगी रहता है अपस्नात मृतस्नात यह दो नाम उसकेहैं जिसनेकि मृतककों उद्देशकरकें स्नान कियाहै आमिषाशिन् शौष्कुल यह दो नाम मछलीका मांस खानेवालके हैं ॥ १९ ॥ बुभुक्षित क्षुधित जिघत्सु अशनायित यह चार नाम भूखेके हैं परान्न परपिण्डाद यह दो नाम पराये अन्नसें जीवनेवालेके हैं. भक्षक घस्मर अद्मर यह तीन नाम खानेवालेके हैं ॥ २० ॥

आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ॥ उभौ त्वात्मंभरिः कुक्षिंभरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥ सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी गृध्नुस्तु गर्ध-

नः ॥ लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक् समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥

आद्यून औदरिक यह दो नाम जीतनेकी इच्छासें वर्जितमें वर्त्ते है अर्थात् यह दो नाम भूखकर अत्यंत पीडितके हे और जो कि अपने पेटके भरनेवाला है उसमें आत्मंभरि कुक्षिंभरि यह दो नाम वर्त्ते है ॥ २१ ॥ सर्वान्नीन सर्वान्नभोजिन यह दो नाम सब वर्णोंके अन्न खानेवाले परमहंसादिकके हैं गृध्नु गर्धन यह दो नाम आकांक्षाशीलके है लुब्ध अभिलाषुक तृष्णज् यह तीन नाम अभिलाषवालेके हैं लोलुप लोलुभ यह दो नाम अतितृष्णावालेके हैं ॥ २२ ॥

सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्यादविनीतः समुद्धतः ॥ मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कमिताऽनुकः ॥ २३ ॥ कम्रः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः ॥ विधेयो विनयग्राही वचने स्थित आश्रवः ॥ २४ ॥

सोन्माद उन्मदिष्णु यह दो नाम उन्मादवालेके हैं इसकों सिरीवावलाभी कहतेहैं अविनीत समुद्धत यह दो नाम दुर्विनीतके है इसकों अन्यायी कहतेहै मत्त शौण्ड उत्कट क्षीव यह चार नाम मतवालेके है कामुक कमितृ अनुक ॥ २३ ॥ कम्र कामयितृ अभीक कमन कामन अभिक यह नौ नाम कामीके है विधेय विनयग्राहिन् वचनेस्थित आश्रव यह चार नाम वचन ग्रहण करनेवालेके है इसकों आज्ञाकारी कहते है ॥ २४ ॥

वश्यः प्रणेयो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ॥ धृष्टे धृष्णग्वियातश्च प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥२५॥ स्यादधृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ॥ अधीरे कातरस्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥

वश्य प्रणेय यह दो नाम वशीभूतके है निभृत विनीत प्रश्रित यह तीन नाम विनीतके है धृष्ट धृष्णज् वियात यह तीन नाम अविनीतके है प्रगल्भ प्रतिभान्वित यह दो नाम नवीन २ प्रकट होनेवाली बुद्धियुक्तके हैं इसकों प्रगल्भ कहतेहैं ॥ २५ ॥ अधृष्ट शालीन यह दो नाम सलज्जके है विलक्ष विस्मयान्वित यह दो नाम पराये धर्मशीलआदिकके विषैं अचरज माननेवालेके है अधीर कातर यह दो नाम भय क्षुधा पिपासा आदिकसें व्याकुलहुएके है त्रस्त भीरु भीरुक भीलुक यह चार नाम डरनेवालेके है ॥ २६ ॥

आशंसुराशंसितरि गृहयालुर्ग्रहीतरि॥ श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥ लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णुर्वन्दारुरभिवादके ॥ शरारुर्घातुको हिंस्रः स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥

नाम निकालेहुएके हैं. अपध्वस्त धिक्कृत यह दो नाम फटकारेहुएके हैं ॥ ३९ ॥ आत्तगर्व अभिभूत यह दो नाम दूर कियेहुए गर्ववालेके हैं. कोई आचार्य निष्कासित आदिक चारोंकों एकार्थ कहते हैं. दापित साधित यह दो नाम धनादिकके दिवानेवालेके हैं यह दोनों समानार्थ हैं. प्रत्यादिष्ट निरस्त प्रत्याख्यात निराकृत यह चार नाम निराकृतके हैं इसकों दूर कियाहुआभी कहते हैं ॥ ४० ॥

निकृतः स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ॥ मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥ अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो बद्धे कीलितसंयतौ॥ आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्कांदिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥

निकृत विप्रकृत यह दो नाम अपकार कियेहुएके हैं. विप्रलब्ध वंचित यह दो नाम ठगेहुएके हैं मनोहत प्रतिहत प्रतिबद्ध हत यह चार नाम मनमें ताडेहुएके हैं इसकों टूटा मनवाला कहतेहैं ॥ ४१ ॥ अधिक्षिप्त प्रतिक्षिप्त यह दो नाम निन्दा कियेहुए अथवा दुर्वचन कहेहुएके हैं. बद्ध कीलित संयत यह तीन नाम रस्सी आदिकसें बँधेहुएके हैं. आपन्न आपत्प्राप्त यह दो नाम आपदाकों प्राप्तहुएके हैं. कांदिशीक भयद्रुत यह दो नाम भयसें भागेहुएके हैं ॥ ४२ ॥

आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते संकसुकोऽस्थिरे ॥ व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ विहस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥ विक्लवो विह्वलः स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ॥ कश्यः कशार्हे संनद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥

आक्षारित क्षारित अभिशस्त यह तीन नाम लोकनिन्दासें दूषितहुएके हैं. संकसुक अस्थिर यह दो नाम चलायमानप्रकृतिवालेके हैं. व्यसनार्त्त उपरक्त यह दो नाम दुःखसें पीडितहुएके हैं. विहस्त व्याकुल यह दो नाम व्याकुलके हैं ॥ ४३ ॥ विक्लव विह्वल यह दो नाम शोकादिकसें शरीरभंगकों प्राप्तहुएके हैं. विवश अरिष्टदुष्टधी यह दो नाम उसकेहैं जिसकी समीपवर्त्तमानहुए मृत्युसें बुद्धि दूषित होजातीहै. कश्य कशार्ह यह दो नाम कुरां मारनेयोग्यके हैं. जो सन्नद्ध अर्थात् कवच पहरकर मारनेमें उद्यत हो उसमें आततायिन् शब्द वर्त्तै है ॥ ४४ ॥

द्वेष्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ॥ विष्यो विषेण यो वध्यो मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥ शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः समौ ॥ दोषैकदृक् पुरोभागी निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥

द्वेष्य अक्षिगत यह दो नाम वैरके योग्यके हैं. वध्य शीर्षछेद्य यह दो नाम वधके योग्यके हैं यह दोनों शब्द समानार्थ हैं.

जो कि विषकर मारनेयोग्य है वह विष्य सज्ञिक है और जो मुसलकर मारनेयोग्य है वह मुसन्य सज्ञिक है ॥ ४५ ॥ शिभ्विदान अकृष्णकर्मन् यह दो नाम पुण्यकर्मवालेके है इसकों पुण्यात्माभी कहतेहै चपल चिकुर यह दो नाम उसके हैं जो विना विचारेंही शीघ्र वधादिक कार्य करता है यह दोनों शब्द समानार्थ हैं दोषैकदृश् पुरोभागिन् यह दो नाम दोषमात्रही देखनेवालेके है निकृत अनृजु शठ यह तीन नाम उसके है जिसका कि अन्तःकरण टेढा रहता है इसकों शठ (कपटी) भी कहतेहै ॥ ४६ ॥

कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दुर्जनः खलः ॥ नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥ अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः ॥ कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचा ४८

कर्णेजप सूचक यह दो नाम कानमें पराईनिन्दा कहनेवालेके है इसकों चुगल कहतेहै. पिशुन दुर्जन खल यह तीन नाम आपसमें भेद करनेवालेके है इसकों दुर्जन कहतेहैं नृशंस घातुक क्रूर पाप यह चार नाम दूसरेसें द्रोह करनेवालेके है इसकों क्रूर कहतेहै धूर्त वंचक यह दो नाम ठगनेवालेके है ॥ ४८ ॥ अज्ञ मूढ यथाजात मूर्ख वैधेय बालिश यह छै नाम मूर्खके हैं कदर्य कृपण क्षुद्र किंपचान मितंपच यह पाच नाम उसकेहै जो कि अपने स्त्री पुत्रादिकोंको पीडित करताहुआ लोभसें धनकों इकट्ठा करताहै इसकों कजूंस कहते है॥४८॥

निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ॥ वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥ अहंकारवानहंयुः शुभंयुस्तु शुभान्वितः ॥ दिव्योपपादुका देवा नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥

निःस्व दुर्विध दीन दरिद्र दुर्गत यह पाच नाम दरिद्रीके है वनीयक याचनक मार्गण याचक अर्थिन् यह पाच नाम याचकके है ॥ ४९ ॥ अहंकारवत् अहंयु यह दो नाम अहंकारवालेके है शुभंयु शुभान्वित यह दो नाम शुभयुक्तके है और जो कि देव अर्थात् मातापितादिक दृष्टकारणकी नहीं अपेक्षा करनेवाले है वह दिव्योपपादुक सज्ञिक है अर्थात् यह एक नाम देवजातियोंका है और जो कि नृगवादिक (नर गौ अश्वादिक) जाति है वह जरायुज सज्ञिक हैं ॥ ५० ॥

स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ॥ उद्भिदस्तरुगुल्माद्या उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥ सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ॥ कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

---

१ (इतिनागिवर्ग)यह और पुस्तकोंमें विशेष है

और जो कि कृमि दंशादिक (कीडा डांस आदिक) जाति हैं वह स्वेदज संज्ञिक हैं. और जो कि पक्षी सर्पादिकजाति हैं वह अंडज संज्ञिक हैं. और जो कि तरुगुल्मादिक वृक्ष गुच्छा वेलि आदिक हैं वह उद्भिद् संज्ञिक हैं. उद्भिद् उद्भिज्ज उद्भिद यह तीन नाम वृक्षादिक जातिमात्रके हैं ॥५१॥ सुंदर रुचिर चारु सुषम साधु शोभन कान्त मनोरम रुच्य मनोज्ञ मंजु मंजुल यह बारह नाम सुन्दरके हैं ॥ ५२ ॥

तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ॥ अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम्॥५३॥निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः॥कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः॥५४॥

जिसके दर्शनसें दृष्टि तथा मनकी तृप्तिका अन्त नहीं होताहै वह आसेचनक संज्ञिक है. अभीष्ट अभीप्सित हृद्य दयित वल्लभ प्रिय यह छे नाम प्यारेके हैं॥५३॥ निकृष्ट प्रतिकृष्ट अर्वन् रेफ याप्य अवम अधम कुपूय कुत्सित अवद्य खेट गर्ह्य अणक यह तेरह नाम अधम अर्थात् नीचके हैं यह सब समानार्थ हैं॥ ५४ ॥

मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ॥ पूतं पवित्रं मेध्यं च वीध्रं तु विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥ निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ॥ असारं फल्गु शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥

मलीमस मलिन कच्चर मलदूषित यह चार नाम मलीनके हैं. पूत पवित्र मेध्य यह तीन नाम पवित्रके हैं. वीध्र यह एक नाम विमलार्थक है अर्थात् यह एक नाम स्वभावनिर्मलका है ॥ ५५ ॥ निर्णिक्त शोधित मृष्ट निःशोध्य अनवस्कर यह पांच नाम दूर कियेहुए मलवालेके हैं. असार फल्गु यह दो नाम निर्बलके हैं. शून्य वशिक तुच्छ रिक्तक यह चार नाम उसके हैं जिसकेपास कुछभी न हो इसको तुच्छभी कहतेहैं ॥ ५६ ॥

क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ॥ मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवरार्ध्यवत् ॥ ५७ ॥ परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम् ॥ श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

प्रधान प्रमुख प्रवेक अनुत्तम उत्तम मुख्य वर्य वरेण्य प्रवर्ह अनवरार्ध्य ॥ ५७॥ परार्ध्य अग्र प्राग्रहर प्राग्र्य अग्र्य अग्रीय अग्रिय यह सत्तरह नाम प्रधानके हैं इसको मुखिया कहतेहैं. तिसमें प्रधान शब्द नपुंसकलिंगमें सदैव होताहै. श्रेयस् श्रेष्ठ पुष्कल सत्तम अतिशोभन यह पांच नाम श्रेष्ठके हैं ॥ ५८ ॥

रपुरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभकुञ्जराः ॥ सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥ अप्राध्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ॥ विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥६०॥ वड्रोरु विपुलं पीनपीव्नी तु स्थूलपीवरे ॥ स्तोकाल्पक्षुल्लकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृश तनु ॥ ६१ ॥ स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः ॥ अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

यदि व्याघ्र पुंगव ऋषभ कुंजर सिंह शार्दूल नाग आदिशब्दसे सोमादिक शब्द उत्तरपदमें श्रेष्ठार्थगोचर, अर्थात् श्रेष्ठार्थवाचक होवें, तो पुल्लिंगमें होतेहैं जैसे [पुरुषव्याघ्र –पुरुषश्रेष्ठ.] ॥ ५९ ॥ अप्राध्य अप्रधान उपसर्जन यह तीन नाम अप्रधानके है तिसमें अप्रधान उपसर्जन यह दो शब्द दोनों स्त्रीपुल्लिंगसे वर्जित हैं किन्तु नपुंसकलिंगमेंही होते है विशंकट पृथु बृहत् विशाल पृथुल महत् ॥ ६० ॥ वड्र उरु विपुल यह नौ नाम बडेके हैं पीन पीव्न स्थूल पीवर यह चार नाम मोटेके हे स्तोक अल्प क्षुल्लक यह तीन नाम थोडेके हैं सूक्ष्म श्लक्ष्ण दभ्र कृश तनु ॥ ६१ ॥ मात्रा त्रुटि लव लेश कण अणु यह ग्यारह नाम सूक्ष्मके है तिसमें मात्रा और त्रुटिशब्द स्त्रीलिंगमें होते है और लवादिक चार शब्द पुल्लिंगमें होतेहै अल्पिष्ठ अल्पीयस् कनीयस् अणीयस् यह चार नाम अत्यल्प अर्थात् अति थोडेमें वर्ते है ॥ ६२ ॥

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ॥ पुरुहूः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥ परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् ॥ गणनीये तु गणेयं संख्याते गणितमथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥ विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ॥ समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

प्रभूत प्रचुर प्राज्य अदभ्र बहुल बहु पुरुहू पुरु भूयिष्ठ स्फार भूयस् भूरि यह बारह नाम बहुतके है ॥ ६३ ॥ जिन संख्यायोग्योंकी संख्या शतादिकसे आदिशब्दसे सहस्रसे परे हो, तो वह पर शत आदिशब्दसे पर सहस्र सहित हे भाव यह है कि, जिनकी संख्या सौसे अधिक हो, वह परशत संज्ञिक है और जिनकी संख्या सहस्रसे अधिक हो, वह पर सहस्र संज्ञिक है गणनीय गणेय यह दो नाम उसके हे, जो कि गिननेको योग्य हो संख्यात गणित यह दो नाम उसके है जिसकी गिनती करलीहो सम सर्व ॥ ६४ ॥ विश्व अशेष कृत्स्न समस्त निखिल अखिल निःशेष समग्र सकल पूर्ण अखण्ड अनूनक यह चौदह नाम सम्पूर्णके है ॥ ६५ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं तनु ॥ समीपे निकटासन्नसंनिकृष्टसनीडवत् ॥ ६६ ॥ सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ॥ उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥

घन निरन्तर सांद्र यह तीन नाम घनेके हैं. पेलव विरल तनु यह तीन नाम विरलेके हैं. समीप निकट आसन्न सन्निकृष्ट सनीड ॥ ६६ ॥ सदेश अभ्याश सविध समर्याद सवेश उपकंठ अन्तिक अभ्यर्ण अभ्यग्र अभितः यह पन्दरह नाम समीपके हैं. तिसमें अभितःशब्द अव्यय है ॥ ६७ ॥

संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि॥ नेदिष्ठमन्तिकतमं स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥ दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं दीर्घमायतम् ॥ वर्तुलं निस्तलं वृत्तं वन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥

संसक्त अव्यवहित अपदान्तर यह तीन नाम उसमिले हुएके हैं, जिसके मिलनेमें कुछ अन्तर न हो। नेदिष्ठ अन्तिकतम यह दो नाम अतिनिकटके हैं. दूर विप्रकृष्ट यह दो नाम दूरके हैं ॥६८॥ दवीयस् दविष्ठ सुदूर यह तीन नाम अत्यन्त दूरके हैं. दीर्घ आयत यह दो नाम दीर्घके हैं. वर्तुल निस्तुल वृत्त यह तीन नाम गोलके हैं. और जो कि उन्नतानत अर्थात् स्वभावसें ऊंचा और उपाधिवशसें कुछ नीचा हो वह वन्धुर संज्ञिक है ॥ ६९ ॥

उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गेऽथ वामने ॥ न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्युरवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥ अरालं वृजिनं जिह्ममूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ॥ आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥

उच्च प्रांशु उन्नत उदग्र उच्छ्रित तुंग यह छै नाम ऊंचेके हैं. वामन न्यच् नीच खर्व ह्रस्व यह पांच नाम ह्रस्वके हैं. अवाग्र अवनत आनत यह तीन नाम नवे हुएके हैं ॥ ७० ॥ अराल वृजिन जिह्म ऊर्मिमत् कुंचित नत आविद्ध कुटिल भुग्न वेल्लित वक्र यह ग्यारह नाम टेढेके हैं ॥ ७१ ॥

ऋजावजिह्मप्रगुणौ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ॥ शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥ स्थास्नुः स्थिरतरः स्थेयानेकरूपतया तु यः ॥ कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

ऋजु अजिह्म प्रगुण यह तीन नाम सीधेके हैं. व्यस्त अप्रगुण आकुल यह तीन नाम आकुलके हैं. शाश्वत ध्रुव नित्य सदातन सनातन यह पांच नाम नित्यके हैं ॥ ७२ ॥ स्थास्नु स्थिरतर स्थेयस् यह तीन नाम अतिस्थिरके हैं. और जो एकरूपता अर्थात् एकही स्वभाव कर कालका

व्याप्त करनेवाला है, वह कूटस्थ संज्ञिक है स्थावर जगमेतर यह दो नाम अचरके है ॥ ७३ ॥

चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम् ॥ चलनं कम्पनं कम्प्रं चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥ चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ॥ अतिरिक्तः समधिको दृढसंधिस्तु संहतः ७५

चरिष्णु जगम चर त्रस इग चराचर यह छे नाम चरके है चलन कंपन कम्प्र यह तीन नाम काँपनेवालेके है चल लोल चलाचल ॥ ७४ ॥ चञ्चल तरल पारिप्लव परिप्लव यह सात नाम चलनेवालेके है अतिरिक्त समधिक यह दो नाम अधिकहुएके है दृढसन्धि संहत यह दो नाम दृढपूर्वक जुडेहुएके है ॥ ७५ ॥

कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ॥ जरठं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥ पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥७७॥ नूत्नश्च सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ॥ अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥

[illegible] कठिन [illegible] निठुर दृढ [illegible] मूर्तिमत् मूर्त [illegible] हैं [illegible] ॥ ७६ ॥ पुरा-

प्रतन प्रत्न पुरातन चिरंतन यह पाच नाम पुरानेके है प्रत्यग्र अभिनव नव्य नवीन नूतन नव ॥ ७७ ॥ नूत्न यह सात नाम नवीनके है सुकुमार कोमल मृदुल यह तीन नाम कोमलके है अन्वक् अन्वक्ष अनुग यह तीन नाम पीछेके हैं यह तीनों अव्ययीभाव होनेसें नपुंसक तथा अव्यय है ॥ ७८ ॥

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ॥ एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥ अप्येकसर्ग एकाग्रोऽप्येकायनगतोऽपि सः ॥ पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥ अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ॥ मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्बणम् ८१

प्रत्यक्ष ऐन्द्रियक यह दो नाम नेत्रादिकोंसे जाननेके है अप्रत्यक्ष अतीन्द्रिय यह दो नाम [illegible] ॥ ७९ ॥ [illegible]

प्रव्यक्त उल्वण यह चार नाम स्पष्टके हैं ॥ ८० ॥ ८१ ॥

साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक एककः ॥ भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥ उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् ॥ अरुंतुदं तु मर्मस्पृगबाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥

साधारण सामान्य यह दो नाम साधारणके हैं. एकाकिन् एक एकक यह तीन नाम अकेलेके हैं. भिन्न अन्यतर एक त्व अन्येतर यह छै नाम भिन्नार्थवाचक हैं ॥ ८२ ॥ उच्चावच नैकभेद यह दो नाम अनेकप्रकारके हैं. उच्चंड अवलम्बित यह दो नाम जल्दीके हैं. अरुंतुद मर्मस्पृश् यह दो नाम मर्मस्थल भेदन करनेवालेके हैं.अबाध निरर्गल यह दो नाम बाधवर्जितके हैं ॥ ८३ ॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च ॥ वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥ संकटं ना तु संबाधः कलिलं गहनं समे ॥ संकीर्णे संकुलाकीर्णे मुण्डितं परिवापितम्॥८५॥

प्रसव्य प्रतिकूल अपसव्य अपष्ठु यह चार नाम विपरीतके हैं. इसको उलटा कहते हैं और जो कि बायाँ शरीर है वह सव्य संज्ञिक है. और जो कि, दाँयां शरीर है, वह अपसव्य संज्ञिक हैं ॥ ८४ ॥ संकट संबाध यह दो नाम थोडे अवकाशवाले मार्गादिकके हैं. तिसमें संबाधशब्द पुंलिंग है. कलिल गहन यह दो नाम दुःखकरके प्राप्त होनेयोग्यके हैं. संकीर्ण संकुल आकीर्ण यह तीन नाम मनुष्यादिकोंकर अत्यन्त मिलेहुएके हैं. मुंडित परिवापित यह दो नाम मुँडे हुएके हैं ॥ ८५ ॥

ग्रन्थितं संदितं दृब्धं विसृतं विस्तृतं ततम् ॥ अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्तप्रणिहिते समे ॥ ८६ ॥ वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते ॥ नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूता विद्धक्षिप्तेरिताः समाः ॥ ८७ ॥

ग्रंथित संदित दृब्ध यह तीन नाम गुहेहुएके हैं. विसृत विस्तृत तत यह तीन नाम फैलेहुएके हैं. अन्तर्गत विस्मृत यह दो नाम भुलेहुएके हैं. प्राप्त प्रणिहित यह दोनों समानार्थ नाम प्राप्त हुएके हैं ॥ ८६ ॥ वेल्लित प्रेंखित आधूत चलित आकंपित धुत यह छै नाम काँपे हुएके हैं. नुत्त नुन्न अस्त निष्ठ्यूत आविद्ध क्षिप्त ईरित यह सात नाम प्रेरणा किये हुएके हैं. यह सातों समानार्थ हैं ॥ ८७ ॥

परिक्षिप्तं तु निवृतं मूषितं मुषितार्थकम् ॥ प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिसृष्टे गुणिताहते ॥ ८८ ॥ निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्ठितरूषिते ॥ द्रुतावदीर्णे उद्गूर्णोद्यते काचितशिक्यिते ॥ ८९ ॥

परिक्षिप्त निवृत यह दो नाम परकोटा आदिककर सबतरफसें घेरेहुएके है मूषित मुषित यह दो नाम चुरायेहुएके है प्रवृद्ध प्रसृत यह दो नाम बढेहुए, तथा फैलेहुएके हैं न्यस्त निसृष्ट यह दो नाम रक्खेहुएके है गुणित आहत यह दो नाम गुणेंहुएके है ॥ ८८ ॥ निदिग्ध उपचित यह दो नाम समृद्धके है गूढ गुप्त यह दो नाम छिपेहुएके है गुठित रूषित यह दो नाम धूलिसें सनेंहुएके है. द्रुत अवदीर्ण यह दो नाम पिघलेहुएके है उद्गूर्ण उद्यत यह दो नाम उद्यतके है काचित शिक्यित यह दो नाम छीकेपर रक्खे हुएके है ॥ ८९ ॥

घ्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुद्कोद्धृते समे ॥ वेष्टितं स्याद्वलयित संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥ रुग्ण भुग्नेऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ॥ स्याद्विनाशोन्मुखं पक्क ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥

घ्राण घ्रात यह दो नाम सूँघेहुएके है दिग्ध लिप्त यह दो नाम विलेप कियेहुएके है समुद्क उद्धृत यह दो नाम कूपादिकसें उसारेहुए जलादिकके है यह दोनों शब्द समानार्थ है वेष्टित वलयित संवीत रुद्ध आवृत यह पाच नाम लपेटे हुएके है ॥९०॥ रुग्ण भुग्न यह दो नाम व्यथितके है निशित क्ष्णुत शात तेजित यह चार नाम शानआदिकसें पैनेंकियेहुए शस्त्रादिकके है. और जो कि विनाशके उन्मुख है, वह पक्व संज्ञिक है अर्थात् यह एकनाम उसका है, जिसका कि विनाश थोडे कालमें होनेवाला हो ह्रीत लज्जित यह तीन नाम लज्जितके है ॥ ९१ ॥

वृत्ते तु वृतव्यावृत्तौ संयोजित उपाहितः ॥ प्राप्य गम्यं समासाद्यं स्यन्नं रीणं स्नुतं स्नुतम् ॥ ९२ ॥ संगूढः स्यात्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हणः॥ विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥

वृत्त वृत व्यावृत्त यह तीन नाम वरण कियेहुएके है संयोजित उपाहित यह दो नाम संयोगकों प्राप्त हुएके है प्राप्य गम्य समासाद्य यह तीन नाम प्राप्त होनेके योग्यके है स्यन्न रीण स्रुत स्नुत यह चार नाम बहतेहुएके है ॥ ९२ ॥ संगूढ संकलित यह दो नाम जोडेहुए अंकादिकके है अवगीत ख्यातगर्हण यह दो नाम निंदितके हैं विविध बहुविध नानारूप पृथग्विध यह चार नाम बहुत तरहके है ॥ ९३ ॥

अवरीणो धिक्कृतश्चाप्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः ॥ अनायासकृतं फाण्टं स्वनित ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥ बद्धे संदानितं मूतमुद्दितं संदितं सितम् ॥ निष्पक्वे क्वथितं पाके क्षीराज्यहविषा शृतम् ॥ ९५ ॥

अवरीण धिक्कृत यह दो नाम धिक्कार कियेहुएके हैं. अवध्वस्त अवचूर्णित यह दो

पगतम् ॥ ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥ अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ॥ भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगिलितखादितप्सातम् ॥११०॥ अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ॥ क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ॥१११॥ क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्थाः ॥ साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठह्रसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥ बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ॥ ११३ ॥

बुद्ध बुधित मनित विदित प्रतिपन्न अवसित अवगत यह सात नाम जानेंहुएके हैं. ऊरीकृत उररीकृत अंगीकृत आश्रुत प्रतिज्ञात ॥ १०८ ॥ संगीर्ण विदित संश्रुत समाहित उपश्रुत उपगत यह ग्यारह नाम स्वीकार किये हुएके हैं. इसकों कबूल कियाहुआभी कहतेहैं. ईलित शस्त पणायित पनायित प्रणुत पणित पनित ॥ १०९ ॥ गीर्ण वर्णित अभिष्टुत ईडित स्तुत यह बारह नाम स्तुति किये हुएके हैं. भक्षित चर्वित लीढ प्रत्यवसित गिलित खादित प्सात ॥११०॥ अभ्यवहृत अन्न जग्ध ग्रस्त ग्लस्त अशित भुक्त यह चौदह नाम खाये हुएके हैं. क्षेपिष्ठ क्षोदिष्ठ प्रेष्ठ वरिष्ठ स्थविष्ठ बंहिष्ठ यह क्रमसें क्षिप्र क्षुद्र अभीप्सित पृथु पीवर बहुल शब्दोंके अतिशयार्थ हैं. जैसें जोकि अतिशयकरकें क्षिप्रहै वह क्षेपिष्ठ संज्ञिक है. और जोकि अतिशयकरकें क्षुद्रहै वह क्षोदिष्ठ संज्ञिकहै. यहाँ प्रिय उरु स्थूल शब्दोंकी जगह अभीप्सित पृथु पीवर शब्दोंका आदेश एकार्थ होनेंसे है जो कि अतिशयकरकें प्रिय है वह प्रेष्ठ संज्ञिक है. और जो कि अतिशयकरकें उरु है वह वरिष्ठ संज्ञिक है. और जो कि अतिशयकरकें स्थूल है वह स्थविष्ठ संज्ञिक है. और जो कि अतिशयकरकें बहुल है, वह बंहिष्ठ संज्ञिक है. साधिष्ठ द्राघिष्ठ स्फेष्ठ गरिष्ठ ह्रसिष्ठ वृंदिष्ठ यह क्रमसें बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृंदारकशब्दोंके अतिशय अर्थमें वर्त्ते हैं. जैसें जो कि अतिशयकरकें बाढ है वह साधिष्ठ संज्ञिक है. और जो कि अतिशयकरकें दीर्घ है वह द्राघिष्ठ संज्ञिक है. और जो कि अतिशयकरकें स्फिर है वह स्फेष्ठ संज्ञिक है. और जो कि अतिशयकरकें गुरु है वह गरिष्ठ संज्ञिक है और जो कि अतिशयकरकें ह्रस्व है वह ह्रसिष्ठ संज्ञिक है और जो कि अतिशयकरकें वृन्दारक है वह वृन्दिष्ठ संज्ञिक है यहाँ व्यायत बहु वामनशब्द क्रमसें दीर्घस्फिर ह्रस्वशब्दोंके पर्याय हैं ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ॥ ११३ ॥ इतिविशेष्यनिघ्नवर्गः

१ शीघ्र. २ नीच. ३ प्यारा. ४ वडा. ५ मोटा. ६ बहुत. ७ मजबूत. ८ वडा. ९ बहुत. १० वडा. ११ छोटा मुख्य.

प्रकृतिप्रत्ययाद्यर्थैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत् ॥ कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥ साकल्यासंगवचने पारायणतुरायणे ॥ यदृच्छा स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्था विलक्षणम् ॥ २ ॥

पहिले दोनोंकाडोंके विषे प्रकरणोंकर स्वर्गादिकनाम सजातीय निबद्ध कियेथे, और इसकाडमेंभी सुकृत्यादिकोंको विशेष्यके आधीन निबद्ध करचुके अब पहिलोंकी सकीर्णताके भयसें जो कि पहिले नहीं कहेथे, उनके सग्रहके वास्ते सकीर्णप्रारम्भ किया जाता है इसवर्गमें कर्मक्रियादिक भाववचन हैं, और अपरस्परादिक विशेष्याधीन हैं, और स्तम्बघ्नादिक करणवचन है, और आपूपिकादिक समूहवचन है, इसप्रकार मिले झुले वचन और मिले झुले अर्थ और लिंगोंकर इसवर्गको सकीर्ण कहते है क्योकि मिले हुए जाति अर्थोंको सकीर्ण बोल्ते है यदि कहो कि, इस विशेषविधानके अभाववाली सकीर्णतामें कैसें लिगज्ञान होनाचाहिये तिसमें उपाय कहते हैं—सकीर्णनामवाले इसवर्गमें लिंगसग्रहवर्गकी कहीहुइ रीतिसें प्रकृतिप्रत्ययार्थादिकोंकर लिंग पहचानें अर्थात्, प्रकृत्यर्थ और प्रत्ययार्थ और आदिशब्दसें रूपभेदादिकोंकर लिंग जानें तहाँ प्रकृत्यर्थ करकें जैसे—अपरस्पर—इत्यादिकमें प्रकृति नाम विशेष्यके आधीन लिंग जानना चाहिये, और प्रत्ययार्थकरकें जैसें—स्फाति—इत्यादिकमें स्त्रीपुंलिगाद्यर्थवाचक प्रत्ययके आधीन लिंग जानना चाहिये, और रूपभेदकर जैसें—कर्म—इत्यादिकमें क्लीब स्त्रीपुंलिगरूपभेदसें लिंग जानना चाहिये, और कहीं साहचर्यसें जैसें [डिंबे डमरविप्लवौ] इसवचनमें डिम्बशब्द पुलिंग जानना चाहिये क्योंकि इसके सहचरीय डमर विप्लव पुलिंग हैं कर्म क्रिया यह दो नाम क्रियाके है, और उस क्रियाकी निरंतरता प्राप्तहोनेमें अपस्पर यह एक नाम होता है जैसें [अपरस्पराः सार्था गच्छन्ति] अर्थात्, औरही औरसमूह निरंतर जा रहे है तिसमें अपरस्परशब्द क्रियाकी निरन्तरतामें एकवचन, तथा नपुसकलिंग होताहै जैसें [अपरस्पर गच्छन्ति] और क्रियावालोंकी निरन्तरतामें तीनों लिंगके विषे होता है ॥ १ ॥ जो कि साकल्यवचन और आसगवचन है, वह क्रममें पारायण परायण सज्ञिक है भाव यह है कि, पारायण यह एक नाम साकल्यवचनका है और परायण यह एकनाम आसगवचनका है यदृच्छा स्वैरिता यह दो नाम स्वतत्रताके हैं, और जो कि हेतुशून्य कारणवर्जित स्थिति है, यह विलक्षण सज्ञिक है ॥ २ ॥

शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ अवदानं कर्म वृत्तं काम्य-

दानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥ वशक्रिया संवननं मूलकर्म तु कार्मणम् ॥ विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम्॥४॥ पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ॥ सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥ आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदना न ना ॥ संमूर्छनमभिव्याप्तिर्याञ्चा भिक्षाऽर्थनाऽर्दना ॥ ६ ॥

शथम शम शान्ति यह तीन नाम शान्ति यानी चित्तके रोकनेके हैं. दान्ति दमथ दम यह तीन नाम दम यानी इंद्रियेंके रोकनेके हैं, और जो कि वर्त्ताहुआ कर्म है, यानी जो कि चरित्र पहिलें होचुका है, वह अवदान संज्ञिक है. और जो कि काम्य तुलापुरुषादिकका दान है, वह प्रवारण संज्ञिक है ॥ ३ ॥ वशक्रिया संवनन यह दो नाम मणिमंत्रादिकसें वश करनेके हैं, और जो कि मूलकर्म अर्थात् ओषधियोंके मूलोंकर जो कि उच्चाटनादिक कर्म है, वह कार्मण संज्ञिक है. विधूनन विधुवन यह दो नाम कांपनेके हैं. तर्पण प्रीणन अवन यह तीन नाम तृप्तिके हैं ॥ ४ ॥ पर्याप्ति परित्राण हस्तवारण यह तीन नाम मारनेकों तय्यार हुएके निवारण करनेके हैं. सेवन सीवन स्यूति यह तीन नाम सीनेंके हैं. विदर स्फुटन भिदा यह तीन नाम दो तुकडे होनेके हैं. इसकों फूटना कहते हैं ॥ ५ ॥ आक्रोशन अभीषंग यह दो नाम गाली देनेके हैं. संवेद वेदना यह दो नाम अनुभवके हैं. तिसमें वेदना शब्द पुंलिंग नहीं है,किन्तु स्त्रीनपुंसकलिंग है. संमूर्च्छन अभिव्याप्ति यह दो नाम सवतर्फ व्याप्तहोनेके हैं. याञ्चा भिक्षा अर्थना अर्दना यह चार नाम माँगनेके हैं ॥ ६ ॥

वर्धनं छेदनेऽथ द्वे आनन्दनसभाजने॥ आप्रच्छन्नमथाम्नायः संप्रदायः क्षये क्षिया ॥ ७ ॥ ग्रहे ग्राहो वशः कान्तौ रक्षणस्त्राणे रणः क्वणे ॥ व्यधो वेधे पचा पाके हवो हूतौ वरो वृतौ॥८॥ ओषः प्लोषे नयो नाये ज्यानिर्जीर्णौ भ्रमो भ्रमौ ॥ स्फातिर्वृद्धौ प्रथा ख्यातौ स्पृष्टिः पृक्तौ स्नवः स्नवे॥९॥ एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ प्रमा ॥ प्रसूतिः प्रसवे श्च्योते प्राघारः क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥

वर्द्धन छेदन यह दो नाम काटनेके हैं इसकों कपटनाभी कहते हैं. आनन्दन सभाजन आप्रच्छन्न यह तीन नाम स्वागतसं‑ प्रश्नादिकर रचे हुए आनन्दके हैं. आम्नाय संप्रदाय यह दो नाम गुरुपरंपरासें प्राप्त हुए उत्तम उपदेशके हैं. क्षय क्षिया यह दो नाम कम होनेके हैं ॥ ७ ॥ ग्रह ग्राह यह दो नाम ग्रहण करनेके हैं. वश कान्ति यह दो नाम इच्छाके हैं. रक्षण त्राण यह दो नाम रक्षाके हैं. रण क्वण यह दो नाम शब्द करनेके हैं. व्यध वेध यह दो नाम छेदनेके

है. पचा पाक यह दो नाम पकानेके है हव हूति यह दो नाम बुलानेके है वर वृति यह दोनाम लपेटनेके है ॥ ८ ॥ ओष प्लोष यह दो नाम जलानेके है नय नाय यह दो नाम नीतिके है ज्यानि जीर्णि यह दो नाम जीर्णहोनेके है भ्रम भ्रमि यह दो नाम भ्रान्तिके है. स्फाति वृद्धि यह दो नाम बढनेके है प्रथा ख्याति यह दो नाम विख्यात होनेके है स्पृष्टि पृक्ति यह दो नाम छूनेके है. स्नव स्रव यह दो नाम झिर्नेके है ॥ ९ ॥ एधा समृद्धि यह दो नाम बहुत होनेके है स्फुरण स्फुरणा यह दो नाम फरकनेके है. प्रमिति प्रमा यह दो नाम यथार्थज्ञानके है प्रसूति प्रसव यह दो नाम गर्भ छोडनेके है श्च्योत माघार यह दो नाम घीआदिकके टपकनेके है क्लमथ क्लम यह दो नाम ग्लानिके है ॥ १० ॥

उत्कर्षोऽतिशये संधिः श्लेषे विषय आश्रये ॥ क्षिपायां क्षेपणं गीर्णिर्गिरौ गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥ उन्नाय उन्नये श्रापः श्रयणे जयने जयः ॥ निगादो निगद मादो मद उद्वेग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥

उत्कर्ष अतिशय यह दो नाम अतिशयके है संधि श्लेष यह दो नाम मेलके है विषय आश्रय यह दो नाम आश्रयके है क्षिपा क्षेपण यह दो नाम प्रेरणाके हैं गीर्णि गिरि यह दो नाम निगलनेके है गुरण उद्यम यह दो नाम उद्यमके है ॥ ११ ॥ उन्नाय उन्नय यह दो नाम ऊपर लेजानेके हैं श्राय श्रयण यह दो नाम सेवाके है जयन जय यह दो नाम जीतके है निगाद निगद यह दो नाम कहनेके ह माद मद यह दो नाम हर्षके है उद्वेग उद्भ्रम यह दो नाम उद्वेगके है ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमलोऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः ॥ निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यादभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥ मुष्टिबन्धस्तु संग्राहो डिम्बे डमरविप्लवौ ॥ बन्धनं प्रसितिश्चारः स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तरि १४॥ निकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ॥ परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥ अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः ॥ प्रत्याहार उपादानं विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥

विमर्दन परिमल यह दो नाम कुंकुमादिकके मसलनेके है अभ्युपपत्ति अनुग्रह यह दो नाम अंगीकारके है और जो कि उस अनुग्रहसें विरुद्ध है, वह निग्रह संज्ञिक है इसको न माननाभी कहते है. अभियोग अभिग्रह यह दो नाम लडाईमें पुकारनेके है ॥ १३ ॥ मुष्टिबध संग्राह यह दो नाम मुष्टिकरके दृढपूर्वक पकडनेके है डिंब डमर विप्लव यह तीन नाम नरोंका लूटना आदिक पीडाविशेषके हैं. कोई आचार्य अशसकट-

हके यह तीन नाम बताते हैं. और कोई प्रल-यके बताते हैं. बंधन प्रसिति चार यह तीन नाम बन्धनके हैं. स्पर्श स्प्रष्टृ उपतप्तृ यह तीन नाम उपताप नाम रोगविशेषके हैं॥१४॥ निकार विप्रकार यह दो नाम अपकारके हैं. आकार इंग इंगित यह तीन नाम अभि-प्रायके अनुरूप चेष्टितके हैं. परिणाम विकार प्रकृतिसें अन्यप्रकार होनेके हैं. विकृति विक्रिया यह दो नाम विरुद्ध करनेके हैं. ॥ १५ ॥ अपहार अपचय यह दो नाम अपहरणके हैं. इसकों छीनलैना कहते हैं. समाहार समुच्चय यह दो नाम इकट्ठेकर-नेके हैं. प्रत्याहार उपादान यह दो नाम इन्द्रियोंके खेंचनेके हैं. विहार परिक्रम यह दो नाम पावोंसें चलनेके हैं ॥ १६ ॥

अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हारोऽभ्यव-कर्षणम्॥अनुहारोऽनुकारः स्यादर्थ-स्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥ प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्प्रवहो गमनं बहिः ॥ वियामो वियमो यामो यमः संयाम-संयमौ ॥ १८ ॥

अभिहार अभिग्रहण यह दो नाम चौरी-करनेके हैं. निर्हार अभ्यवकर्षण यह दो नाम बाणादिकके निकालनेके हैं. अनुहार अनुकार यह दो नाम विडंबनके हैं. इसकों नकलकरनाभी कहते हैं. अर्थ नाम धनादि-कके अपगममें व्यय शब्द होता है. इसकों खर्च कहते हैं ॥ १७ ॥ प्रवाह प्रवृत्ति यह दो नाम जलादिकोंकी निरन्तर गतिके हैं और जो कि बाहिर गमन है, वह प्रवह संज्ञिक है. वियाम वियम याम संयाम संयम यह छै नाम संयमके हैं ॥ १८ ॥

हिंसाकर्माभिचारः स्याज्जागर्या जा-गरा द्वयोः ॥ विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥ निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्पः परि-क्रिया ॥ विधुरं तु प्रविश्लेषेऽभिप्रा-यश्छन्द आशयः ॥ २० ॥

और जो कि हिंसाकर्म अर्थात्, हिंसाफ-लवाला जो कि कर्म जारणमारण आदिक है, वह अभिचार संज्ञिक है. जागर्या जागरा यह दो नाम जागनेके हैं. तिसमें जागराशब्द दोनों स्त्रीपुंलिंगमें होता है. विघ्न अन्तराय प्रत्यूह यह दो नाम विघ्नके हैं. और समीपके आश्रयमें उपघ्न शब्द वर्त्ते है ॥ १९ । निर्वेश उपभोग यह दो नाम उपभोगके हैं. परिसर्प परिक्रिया यह दो नाम कुटुम्बादिकके घेरनेके हैं. विधुर प्रविश्लेष यह दो नाम अत्यन्त वियोगके हैं. अभिप्राय छन्द आशय यह तीन नाम अभिप्रायके हैं ॥ २० ॥

संक्षेपणं समसनं पर्यवस्था विरोधन-म् ॥ परिसर्या परीसारः स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥ विस्तारो विग्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः॥ संवाहनं मर्दनं स्याद्विनाशः स्याद-दर्शनम् ॥ २२ ॥

सक्षेपण समसन यह दो नाम सक्षेपके हैं पर्यवस्था विरोधन यह दो नाम विरोधके है परिसर्या परीसार यह दो नाम सब-औरसें फैलनेके है आस्या आसना स्थिति यह तीन नाम स्थितिके है ॥ २१ ॥ विस्तार विग्रह व्यास यह तीन नाम विस्तारके है, और जोकि शब्दसबन्धी विस्तार है, वह विस्तर सज्ञिक है. सवाहन मर्दन यह दो नाम अगोंके मसलनेके है विनाश अदर्शन यह दो नाम विनाशके है ॥ २२ ॥

संस्तवः स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्पणम् ॥ नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्संनिधिः सनिकर्षणम् ॥ २३ ॥ लवोऽभिलावो लवने निष्पावः पवने पवः ॥ प्रस्तावः स्यादवसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥

सस्तव परिचय यह दो नाम इकठेकरनेके है प्रसर विसर्पण यह दो नाम घाव आदिकके फैलनेके है नीवाक प्रयाम यह दो नाम उसके है, जो कि धनधान्योंके विषे मनुष्योंका अतिशय आदर होता है सन्निधि सन्निकर्पण यह दो नाम समीपताके है ॥ २३ ॥ लव अभिलाव लवन यह तीन नाम धान्यादिकके काटनेके है निष्पाव पवन पव यह तीन नाम धान्यादिकोंके पवित्र करनेके है प्रस्ताव अवसर यह दो नाम प्रसगके है त्रसर सूत्रवेष्टन यह दो नाम नटीपर सूत्रलपेटनेके है ॥ २४ ॥

प्रजनः स्यादुपसरः प्रश्रयप्रणयौ समौ ॥ धीशक्तिर्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥ प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः॥ स्यादभ्यादानमुद्घात आरम्भः संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥

प्रजन उपसर यह दो नाम गर्भग्रहण करनेके है प्रश्रय प्रणय यह दो नाम प्रेमके है धीशक्ति निष्क्रम यह दो नाम बुद्धिके सामर्थ्यके है सक्रम दुर्गसचर यह दो नाम दुर्गमार्गके है कोई इन दो नामोंको दुर्गादिकोंमें प्रवेश करनेके कहते है तिसमें सक्रम शब्द स्त्रीलिंग नही है,किन्तु पुनपुसकलिंग हे ॥ २५ ॥ प्रत्युत्क्रम प्रयोग यह दो नाम युद्धके वास्ते अतिशय किये हुए उद्योगके है प्रक्रम उपक्रम यह दो नाम प्रथम आरम्भके है. आभ्यादान उद्धात आरम्भ यह तीननाम आरम्भमात्रके है सभ्रम त्वरा यह दो नाम सभ्रमके है ॥ २६ ॥

प्रतिबन्धःप्रतिष्टम्भोऽवनायस्तु निपातनम् ॥ उपलम्भस्त्वनुभवः समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥ विप्रलम्भो विप्रयोगो विलम्भस्त्वतिसर्जनम्॥ विश्रावस्तु प्रतिख्यातिरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥

प्रतिबध प्रतिष्टम्भ यह दो नाम प्रतिबधके हैं अवनाय निपातन यह दो नाम गिरानेके हैं. उपलभ अनुभव यह दो नाम

साक्षात्कारके हैं. समालंभ विलेपन यह दो नाम कुंकुमादिकसें विलेप करनेके हैं ॥ २७ ॥ विप्रलम्भ विप्रयोग यह दो नाम स्नेह तोडनेके हैं. विलंभ अतिसर्जन यह दो नाम अति दानके हैं, विश्राव प्रतिख्याति यह दो नाम अति प्रसिद्धिके हैं. अवेक्षा प्रतिजागर यह दो नाम वस्तुओंके देखनेके हैं ॥ २८ ॥

निपाठनिपठौ पाठे तेमस्तेमौ समुन्दने ॥ आदीनवास्रवौ क्लेशे मेलके सङ्गसंगमौ ॥ २९ ॥ संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ॥ परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥

निपाठ निपठ पाठ यह तीन नाम पढनेके हैं. तेम स्तेम समुंदन यह तीन नाम गीलेकरनेके हैं. आदीनव आस्रव क्लेश यह तीन नाम क्लेशके हैं. मेलक संग संगम यह तीन नाम संगमके हैं ॥ २९ ॥ संवीक्षण विचयन मार्गण मृगणा मृग यह पांच नाम वस्तुओंके ढूँढनेके हैं. परिरंभ परिष्वंग संश्लेष उपगूहन यह चार नाम आलिंगनके हैं. इसकों लिपटनाभी कहते हैं ॥ ३० ॥

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम् ॥ प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१॥ उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ॥ अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थकाः ॥ ३२ ॥

निर्वर्णन निध्यान दर्शन आलोकन ईक्षण यह पांच नाम देखनेके हैं. प्रत्याख्यान निरसन प्रत्यादेश निराकृति यह चार नाम निराकरणके हैं. इसकों दूर करनाभी कहते हैं ॥ ३१ ॥ और क्रमकरकें शयन अर्थवाले उपशाय विशाय शब्द हैं, अर्थात् यह दो नाम क्रमकरकें पहरेदार आदिकोंके सोनेके हैं. अर्त्तन ऋतीया हृणीया घृणा यह चार नाम जुगुप्सा अर्थात् घिनानेके हैं ॥ ३२ ॥

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ॥ पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥ प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ॥ स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३५ ॥

व्यत्यास विपर्यास व्यत्यय विपर्यय यह चार नाम विपर्ययके हैं. इसकों उलटा होनाभी कहते हैं. पर्यय अतिक्रम अतिपात उपात्यय यह चार नाम अतिक्रमके हैं. इसकों उल्लंघन करनाभी कहते हैं ॥ ३३ ॥ जो कि बुलाकर नोकर आदिकोंका भेजना है, उसे प्रतिशासन शब्द होता है, और जो यज्ञोंकेविषें द्विजन्मा ब्राह्मणोंकी स्तुतिभूमि अर्थात्, स्तुति करनेका देश है, वह संस्ताव संज्ञिक है ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्घनः ॥ स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥ आविधो विध्यते येन तत्र विष्वक्समे निघः ॥ उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

जिस काष्ठके विषें रखकर काष्ठ ताछा जाय, वह काष्ठरूप आधार उद्घन संज्ञिक है जिस शस्त्रसें कि स्तम्ब नाम तृणोंका गुच्छा काटा जाता है, वह स्तम्बघ्न स्तम्बघन संज्ञिक है इसकों खुरपा कहते है ॥ ३५ ॥ और जिसकरकें काष्ठादिक वेधा जाता है, वह आविध संज्ञिक है अर्थात् यह एक नाम वर्मा सूई आदिकका है और सब तरफसें समान लेवाई चौडाईवाले वृक्षमें निघ शब्द वर्त्ते है उत्कार निकार यह दो नाम धान्यके उत्क्षेपण अर्थवाले हैं अर्थात् यह दो नाम अन्नादिकके फटकनेके है ॥ ३६ ॥

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ॥ ३७ ॥ आरत्यवरतिविरतय उपरामेऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः॥निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ३८ जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूर्तिः ॥ उदजस्तु पशुप्रेरणमकरणिरित्यादयः शापे ॥ ३९ ॥ गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ॥ आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ॥ ४० ॥

निगार उद्गार विक्षाव उद्ग्राह यह नाम गरणादिकोंके विषें वर्त्ते है अर्थात् निगार यह एक नाम निगलनेका है उद्गार यह एक नाम उगलनेका है विक्षाव यह एक नाम छींकका है उद्ग्राह यह एक नाम डकारनेका है ॥ ३७ ॥ आरति अवरति विरति उपराम यह चार नाम उपरामके हैं इसकों थमनाभी कहते है निष्ठेव निष्ठ्यूति निष्ठेवन निष्ठीवन यह चार नाम अभिन्न अर्थात् एकार्थ हुए थूकनेके है तिसमें निष्ठेवन शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होता है॥३८॥ जवन जूति यह दो नाम वेगके है साति अवसान यह दो नाम अन्तके है ज्वर जूर्ति यह दो नाम ज्वरके हैं, और जो कि पशुओंकी प्रेरणा है, वह उदज संज्ञिक है और शापके विषें अकरणि आदिशब्दसें अजीवनि आदिक होते हैं. जैसें—रे पाप तू कैसें अकरणिकर नही लज्जित होता है और जैसें—हे शठ तेरी अजीवनि अर्थात् न जीवना होवे ॥ ३९ ॥ गोत्रान्त अर्थात् अपत्यार्थवाचक प्रत्ययान्तवाले औपगवादिक शब्दसें समूहार्थमें औपगवक आदिकशब्द होते है जैसें—औपगवोंका समूह औपगवक संज्ञिक है आदिशब्दसें इसीप्रकार गार्गक दाक्षक शब्द जानने और जो कि अचेत यानी जड अपूपादिकोंका समूह है, वह आपूपिक शाष्कुलिक इत्यादिक संज्ञिक है अर्थात् आपूपिक यह एक नाम पुओंके समूहका है

और शाष्कुलिक यह एक नाम पूरियोंके समूहका है ॥ ४० ॥

माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता ॥ हल्या हलानां ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ॥ ४१ ॥ द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठ्यमनुक्रमात् ॥ खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम् ॥ ४२ ॥ ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ॥ अपि साहस्रकारीषवार्मणाथर्वणादिकम् ॥ ४३ ॥

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

माणव नाम बालकोंका समूह माणव्य संज्ञिक है. सहाय नाम सखाओंका समूह सहायता संज्ञिक है. और हलोंका समूह हल्या संज्ञिक है. द्विजन्मा नाम ब्राह्मणोंका समूह ब्राह्मण्य वाडव्य संज्ञिक है ॥ ४१ ॥ पार्शुक नाम हड्डविशेष और पृष्ठ नाम पीठ इनदोनोंका समूह क्रमसें पार्श्व पृष्ठ्य संज्ञिक है. और खलोंका समूह खलिनी खल्या संज्ञिक है. और नृ नाम मनुष्योंका समूह मानुष्यक संज्ञिक है. ग्रामता यह एक नाम ग्रामोंके समूहका है. जनता यह एक नाम जनोंके समूहका है. धूम्या यह एक नाम धूमोंके समूहका है. पाश्या यह एक नाम फासोंके समूहका है. गल्या यह एक नाम बडे २ कासोंके समूहका है. यह पांचो नाम पृथक् २ जाननें. साहस्र यह एक नाम हजारोंके समूहका है. कारीष यह एक नाम उपलोंके समूहका है. वार्मण यह एक नाम कवचोंके समूहका है. आथर्वण यह एक नाम अथर्वणोंके समूहका है. आदिशब्दसें चार्मण आंगार चार्मिण आदिक शब्द जाननें.

इति संकीर्णवर्गः ॥

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः॥भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥ आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने ॥ पद्ये यशसि च श्लोकः शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥

इसके अनन्तर नानार्थवर्ग प्रारम्भ किया जाता है. यदि कहो कि, किस अर्थ अनेकार्थशब्द प्रारम्भ किये जाते हैं, क्योंकि वह शब्द तो पहिले कहे हुए वर्गोंमें कहदिये हैं. और यदि इसमें कहेजांयगे, तौ पहिले कैसें कहदिये तहाँ कहते हैं—इन कहेजानेवाले कान्तादिकवर्गोंके विषें कोई शब्द नानार्थ कहे हैं, वह पहिले कहेहुए पर्यायोंमें नहीं कहे. जैसें [मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः] और जो कि भूरिप्रयोग अर्थात्, जहॉ कहींभी काव्यादिकमें कवियोंनें बहुधा करकें प्रयुक्त किये हैं,जो नाक लोकादिकशब्द वह जिन पूर्व कहे हुए पर्यायोंमें दीखें हैं, तिन्ही पर्यायोंमें इन कान्तादिकवर्गोंके विषेंभी कहे हैं.जैसें नाक शब्द बहुधा प्रयोग होनेसें पहिले स्वर्ग आकाशमेंभी है.

फिर यहाँभी कहदिया है. और जम्बुक शब्द पहिले सृगालपर्यायोंके विषें कहाहै, और बहुधा प्रयोग न होनेसें वरुणपर्यायोंमें नही कहा,और यहाँ जम्बुकशब्द सृगाल और वरुण इन दोनोंमें कहाहै आकाश और त्रिदिव नाम स्वर्गमें नाक शब्द वर्त्ते है, और भुवन नाम स्वर्गादिक और जन मनुष्यमें लोक शब्द वर्त्ते है. पद्य नाम अनुष्टुप् आदिक छन्द और यशमें श्लोक शब्द वर्त्ते है, और शर नाम बाण और खड्ग तलवार इनमें सायक शब्द वर्त्ते हे ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ पृथुकौ चिपिटार्भकौ ॥ आलोकौ दर्शनद्योतौ भेरीपटहमानकौ ॥ ३ ॥ उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः कलङ्कोऽङ्कापवादयोः ॥ तक्षको नागवर्धक्योरर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥

क्रोष्टु नाम श्यार और वरुण यह दोनों जम्बुक संज्ञिक है चिपिट भुनेहुए धान चावल और शिशु नाम (बालक) यह दोनों पृथुक संज्ञिक है दर्शन और द्योत नाम प्रकाश यह दोनों आलोक संज्ञिक है. और भेरी और पटह नाम नगाडा यह दोनों आनक संज्ञिक हैं ॥ ३ ॥ उत्संग गोद और चिन्ह इन दोनोंमें अंक शब्द वर्त्ते है,और अंक नाम चिन्ह और अपवाद निन्दामें कलंक शब्द वर्त्ते है नाग नाम सर्पविशेष और वर्द्धकि बढईमें तक्षक शब्द वर्त्ते है और स्फटिक और सूर्यमें अर्क शब्द वर्त्ते है ॥ ४ ॥

मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः ॥ स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥ उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ॥ कमण्डलौ च करकः सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥

मारुत नाम पवन और वेधस् (ब्रह्मा) और ब्रध्न (सूर्य) इनमें क शब्द वर्त्ते है, यह शब्द पुलिंगमें होता है और शिर और अम्बु नाम जल इनमें नपुंसकलिंगवाची क शब्द वर्त्ते है तुच्छ धान्य और संक्षेप नाम अविस्तार और भक्तसिक्थक नाम अन्नका टुकडा इनमें पुलाक शब्द वर्त्ते है ॥ ५ ॥ उलूक नाम उल्लूपक्षी और हाथीकी पूछके जडके समीप गुदाके ढकनेवाले मांसपिण्डमें पेचक शब्द वर्त्ते है कमंडलुमें और चकारसें ओलोंमें और दाडिमादिकमें करक शब्द वर्त्ते है. सुगत नाम बुद्धमें और चकारसें गणेश तथा गरुडमें विनायक शब्द वर्त्ते है ॥ ६ ॥

किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च शूककीटे च वृश्चिकः ॥ प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥ स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च ॥ ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातक्यथ कट्फले ॥ ८ ॥ सिते च खदिरे सोमवल्कः स्यादथ सिह्लके ॥ तिलकल्के च पिण्याको बाह्लीकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

हस्त नाम हस्तप्रमाण और वितस्ति नाम विलांदमें किष्कु शब्द वर्त्ते है. शूककीट अर्थात् तीकुरकी समान रोमोंसें युक्त जो कीडा है, उसमें और चकारसें विच्छू और कर्कैटा और वृक्षविशेष और अष्टमराशिमें वृश्चिक शब्द होताहै, और प्रतिकूल और एकदेश अवयवके विषैं प्रतीक शब्द होताहै, तिसमें प्रतिकूलार्थक जो प्रतीक शब्द है, वह तीनोंलिंगमें होताहै. और जो कि अवयवार्थक प्रतीक शब्द है, वह पुंलिंगमें होताहै ॥ ७ ॥ भूँनिव नाम चिरायता और कत्तृण सुगंधित तृण और भूस्तृण जलतृण इन तीनोंमें भूतिक शब्द वर्त्ते है. ज्योत्स्लिका नाम चचैंडा और घोष नाम सेतफूलकी तुरई इन दोनोंमें कोशातकी शब्द वर्त्ते है. कट्फल नाम काँयफल और सेत खदिरमें सोमवल्क शब्द वर्त्ते है. सिल्हक लोहवान और तिलकल्क अर्थात् विना तेलवाले तिलके चूर्णमें पिण्याक शब्द वर्त्ते है, और रामठ नाम हींगके विषैं चकारसें बाल्हिकदेशमें और घोडामें और धीरेमें बाल्हिक शब्द वर्त्ते है ॥ ८ ॥ ९ ॥

महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ॥ रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिपु ॥ १० ॥ जैवातृकः शशाङ्केऽपि खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ॥ व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥

महेन्द्र नाम इंद्र और गुग्गुलु अर्थात् गूगल और व्यालग्राही सर्प पकडनेवाला इनमें कौशिक शब्द वर्त्ते है. रुज् रोग और ताप संताप और शंका भय इनमें आतंक शब्द वर्त्ते है. स्वल्प नाम अल्पके विषैं और अपिशब्दसें नीच तथा अतिछोटा तथा दरिद्रीमेंभी क्षुल्लक शब्द वर्त्ते है. यह शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ १० ॥ शशांक नाम चंद्रमाके विषैं अपिशब्दसें बडी अवस्थावालेके विषैं जैवातृक शब्द वर्त्ते है, और घोडेके खुरके विषैं अपिशब्दसें वटेर वा वतक नाम पक्षिभेदमें वर्त्तक शब्द वर्त्ते है. और व्याघ्रके विषैं अपिशब्दसें अग्नि तथा दिग्गजादिकके विषैं और सेतकमलादिकमें पुण्डरीक शब्द वर्त्ते है, तिसमें व्याघ्र तथा अग्नि तथा दिग्गजादिक अर्थमें तौ पुंडरीक पुंलिंग है. और सेतकमलादिकमें नपुंसकलिंग है. और यवानी नाम अजमायन ओषधिमें अपिशब्दसें मोरकी चोटी और प्रकाशमें दीपक शब्द वर्त्ते है ॥ ११ ॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्वानः स्वर्णेऽपि गैरिकम् ॥ पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्यादलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥ शीलान्वयावनूके द्वे शल्के शकलवल्कले ॥ साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥ दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ॥ दम्भेऽप्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥

कपि नाम बन्दर और क्रोष्टु श्यार और श्वन् नाम कुत्ता यह शालावृक संज्ञिक है, और सुवर्णके विषे अपिशब्दसें गेरू नाम धातुके विषे गैरिक शब्द वर्त्ते है, पीडार्थमें व्यलीक शब्द वर्त्ते है अप्रिय और असत्यमें अलीक शब्द वर्त्ते है ॥ १२ ॥ शील नाम स्वभाव अन्वय वंश यह दोनों अनूक संज्ञिक शकल नाम टुकडा और वल्कल अर्थात् कुत्ता यह दोनों शल्क संज्ञिक है सुवर्णके क सौ आठ कर्षमें और हेम नाम सुवर्ण-पात्रमें और उरोभूषण अर्थात् छातीके गहनेमें और पल नाम चारकर्षमें ॥ १३ ॥ और दीनार नाम साव्यवहारिकमें निष्क शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंगमें होताहै.शमल नाम विष्ठा और एनस् (पाप)इन दोनोंमें और दंभ(कपट)इसमें और अपिशब्दसें हाथीदाँत और घी तेलके अवशेषमें कल्क शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुसकलिंगमें होता है और शूल त्रिशूल और शिवजीके धनुषमें पिनाक शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होता है ॥ १४ ॥

धेनुका तु करेण्वा च मेघजाले च कालिका ॥ कारिका यातनावृत्त्योः कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥ करिहस्तेऽङ्गुलौ पद्मबीजकोश्या त्रिपूत्तरे ॥ वृन्दारकौ रूपिमुख्यावेके मुख्यान्यकेवलाः ॥ १६ ॥

करेणु नाम हथिनी और चकारसें नवीन व्याई हुई गौमें धेनुका शब्द वर्त्ते है और मेघजाल अर्थात् मेघोंके समूहमें और चकारसें देवताविषयमें कालिका शब्द होता है यातना नाम नरकक्लेश और वृत्ति विवरणश्लोक इन दोनोंमें कारिका शब्द वर्त्ते है कर्णभूषण कानके गहनेमें करिहस्त अर्थात् हाथीकी शूडके अग्रभागमें अंगुलीमें और पद्मबीजकोशी अर्थात् कमलके अंतर्गत कोशमें कर्णिका शब्द वर्त्ते है, यहांसें उत्तर स्वान्तशब्दोंसें पूर्व जो शब्द है, वह तीनोंलिंगमें होते है रूपी रूपवाला मुख्य श्रेष्ठ यह दोनों वृंदारक संज्ञिक हैं, और मुख्य और अन्य नाम न्यारा और केवल यह तीनों एक संज्ञिक हैं ॥ १५ ॥ १६॥

स्याद्दाम्भिकः कौक्कुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ललाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥

॥ इति कान्ताः ॥

---

१ भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम् ॥ सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टक १॥ पाकौ पक्तिशिशू मध्यरत्ने नेतरि नायक ॥ पर्यङ्क स्यात्परिकरे स्याद्व्याघ्रेऽपि च लुब्धक २ पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च देशिक ॥ खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च जालिक ३ पुष्परेणौ च किञ्जल्क शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपिच स्यात्कलोलेऽप्युत्कलिका यार्थक भाववृन्दयो ४ करिण्या चापि गणिका दारकौ ग्गल्भेदकौ॥ अन्धेऽप्यनेडमूक स्याट्टङ्को दर्पाश्मदारणे॥५॥

१ भूभृन्नितंब अर्थात् पर्वतका मध्यभाग

दांभिक नाम मायावी और जो कि समीपमेंही प्रेरण किये हुए नेत्रोंवाला है, यह दोनों कौक्कुटिक संज्ञिक हैं, और जो कि भृत्य क्रोध वा प्रसन्नताका चिन्ह जाननेंके- लिये प्रभुका भाल नाम ललाटकों देखता है, वह और जो कि कार्याक्षम अर्थात् कार्य- करनेकों असमर्थ हो, वह लालाटिक संज्ञिक है ॥ १७ ॥

॥ इति कान्ताः ॥

मयूखस्त्विट्करज्वालास्वलिबाणौ शि- लीमुखौ ॥ शङ्खो निधौ ललाटास्थि कम्बौ न स्त्रीन्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥ घृणिज्वाले अपि शिखे-

॥ इति खान्ताः ॥

इसके अनन्तर खान्तशब्दोंकों कहते हैं—त्विष नाम शोभा और कर नाम किरण और ज्वालाके विषे मयूख शब्द वर्त्ते है. अलि नाम भौंरा और बाण यह दोनों शिलीमुख संज्ञिक हैं. और निधि नाम खजानेके भेदमें और माथेके हड्डमें और कंबु नाम शंखमें शंख शब्द वर्त्ते है. इंद्रिय नाम चक्षुरादिक, अपिशब्दसें आकाश तथा शून्य तथा पुर तथा क्षेत्र तथा बिन्दु तथा संवेदन तथा देवलोक तथा क्षेममें ख शब्द वर्त्ते है. यह शब्द स्त्रीलिंग नहीं है ॥१८॥ घृणि नाम किरण और ज्वाला यह दोनों और अपिशब्दसें चोटी और प्रपद तथा मोरकी चोटी शिखा संज्ञिक है—

॥ इति खान्ताः ॥

वलय पहुंची वा कंकण चक्र पहिया इनमें कटक शब्द वर्त्ते है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है,और सूच्यग्र सुईके अग्र- भागमें क्षुद्रशत्रु अर्थात् तुच्छ वैरीमें और रोमह- र्षमें कंटक शब्द वर्त्ते है॥१॥पक्ति नाम पकाना और शिशु नाम बालक यह दोनों पाक संज्ञिक हैं. और मध्यरत्न अर्थात् रत्नोंका मध्य और नेता नायक इन दोनोंमें नायक शब्द वर्त्ते हैं. परिकर नाम फेंटमें पर्यंक शब्द वर्त्ते है, और व्याघ्रके- विषे अपिशब्दसें व्याधके विषें लुब्धक शब्द वर्त्ते है॥२॥ और वृंद नाम समूहमें अपिशब्दसें पिटारीमें पेटक शब्द वर्त्ते है.तिसमे समूहार्थवाची पेटकशब्द तीनों लिंगमें होता है. गुरु नाम बडेमें और देश्य नाम देशसंबन्धी पदार्थमें देशिक शब्द वर्त्ते है. ग्राम और फलक नाम ढाल यह दोनों खेटक संज्ञिक हैं. धीवर और अपिशब्दसें जाल फैलाकर पक्षियोंके बांधनेवालेमें जालिक शब्द वर्त्ते है॥३॥पुष्पकी रेणुमें चकारसें केसरमें किंजल्क शब्द वर्त्ते है.और स्त्रीधनमें और अपि- शब्दसें नदी आदिकपर राजाके देनेनिमित्त धनमें शुल्क शब्द वर्त्ते है.यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है, और कल्लोल नाम बडी जलकी लहरीमें और अपि शब्दसें फलकी कलीमें उत्कलिका शब्द वर्त्ते है. और भाव और वृन्द नाम समूहमें वार्द्धक शब्द वर्त्ते है ॥४॥ करिणी नाम हथिनी और अपिशब्दसें वेश्या और यूथिकामें गणिका शब्द वर्त्ते है. बाल और भेदक नाम फाटने वाला यह दोनों दारक संज्ञिक हैं. अंधेमें और अपिशब्दसें बहिरे गुंगेमें एडमूक शब्द वर्त्ते है. दर्प नाम गर्व और अश्मदारण (पत्थरके काटनेवाले) शस्त्रमें टंक शब्द वर्त्ते है. यह पांच श्लोक क्षेपक हैं, इसकारण टिप्पणीद्वारा व्याख्या किये हैं. ॥ ५ ॥

शैलवृक्षौ नगावगौ ॥ आशुगौ वायुविशिखौ शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥ पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च पूगः क्रमुकवृन्दयोः ॥ पशवोऽपि मृगा वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥२०॥ परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि ॥ गजेऽपि नागमातङ्गावपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥

शैल नाम पर्वत और वृक्ष यह दोनों नग अग संज्ञिक है वायु नाम पवन और विशिख (बाण) यह दोनों आशुग संज्ञिक है शर (बाण) और अर्क (सूर्य) और विहग (पक्षी) यह तीनों खग संज्ञिक है ॥ १९ ॥ पक्षी और सूर्य पतग संज्ञिक है चकारसें ॰लिंगभेदमेंभी जानना क्रमुक नाम सुपारी और वृंद नाम समूह इन दोनोंमें पुग शब्द वर्ते है, पशु नाम हरिणादिक और अपिशब्दसें मृगशीर्ष नक्षत्र और ढूंडना यह मृग संज्ञिक है और प्रवाहमें तथा जव नाम वेगमें और अपिशब्दसें विष्ठादिकके बाहिर निकालनेमें वेग शब्द वर्ते है ॥ २० ॥ कौसुमरेणु अर्थात् फूलसंबंधी रेणु और स्नानीय अर्थात् स्नान करनेयोग्य गंध चूर्णविशेष और आदिशब्दसें सुरतादिकके श्रमके दूर होनेके लियें कामशास्त्रादिककर कहाहुआ कर्पूरादिक चूर्णविशेष और रज नाम धूलि और अपिशब्दसें उपराग इनमें पराग शब्द वर्ते है. और गज नाम हाथीके विषें नाग मातंग शब्द वर्ते हैं अपि शब्दसें काद्रवेय तथा नागकेशर तथा नागवल्ली तथा हास्तिनपुर तथा मेघ तथा मुस्तकादिकमें नाग शब्द पुलिंग है. और सीसे और लौंगके विषें नपुंसकलिंग है और अपिशब्दसें चाडालके विषेंभी मातंगशब्द वर्ते है तिलकके विषें और अपिशब्दसें नेत्रके अंतभागमें तथा अंगहीनमें अपांग शब्द वर्ते है ॥ २१ ॥

सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ॥ योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥ भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः ॥ चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥

स्वभाव नाम प्रकृति और निर्मोक्ष नाम त्याग और निश्चय तथा अध्याय अर्थात् काव्यादिकका विरामस्थान, और सृष्टिरचना इनमें सर्ग शब्द वर्ते है सन्नहन कवच और उपाय सामादिक और ध्यान अर्थात् चित्तवृत्तिका रोकना और संगति (संगम) और युक्ति इत्यादिकमें योग शब्द वर्ते है ॥ २२ ॥ सुख और स्त्री हाथी घोडा आदिककी भृति अर्थात् मोल पालनभरणमें और अहि नाम सर्पके फणा तथा शरीरमें भोग शब्द वर्ते है चातक (पपैया) और हरिणमें और शबल नाम कर्बुरवर्णमें सारंग शब्द वर्ते है, तिनमें चातक और हरिणार्थवाचक सारंग शब्द पुलिंगमें होताहै. और शबलार्थमें सारंग शब्द तीनोंलिंगमें होता है॥२३॥

कपौ च प्लवगः शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ॥ यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥ स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ॥ लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौर्लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥ शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः॥ भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥

॥ इति गांताः ॥

कपि नाम वन्दरके विषें चकारसें मेंडक तथा सारथि आदिकमें प्लवग शब्द वर्त्ते है. शाप नाम गालीमें और पराभव (तिरस्कार) में अभिषंग शब्द वर्त्ते है. यानादिकोंके अंगमें अर्थात् रथ (गाडी) आदिकोंके अंगमें पुंलिंगवाचक युग शब्द वर्त्ते है, और युग्म नाम दोके विषें और कृतादि अर्थात् सत्यत्रेतादिकमें और आदिशब्दसें हस्तचतुष्टय और औषधभेदमें नपुंसकलिंगवाची युग शब्द वर्त्ते है ॥ २४ ॥ स्वर्ग देवलोक और इषु (वाण) और पशु अर्थात् गाय बैल और वाच् (वाणी) और वज्र और दिशा और नेत्र और घृणि (किरण) और भू (पृथिवी) और जल इनदशोंमें गो शब्द वर्त्ते है. यह शब्द लक्ष्यदृष्टि अर्थात् प्रयोगके अनुसार करके स्त्रीपुंलिंगमें जानने योग्य है. जैसें सुरभिके विषें गोशब्द स्त्रीलिंग है, और वृषभके विषें पुंलिंग है, और चिन्ह तथा शेफ अर्थात् लिंगेन्द्रिय इन दोनोंमें लिंग शब्द वर्त्ते है ॥२५॥ प्राधान्य प्रभुता और सानु नाम पर्वतकी चोटी और चकारसें पशुके अंगमें शृंग शब्द वर्त्ते है. मूर्धा (मस्तक) और गुह्य नाम योनि इन दोनोंमें वरांग शब्द वर्त्ते है. श्री नाम संपदा शोभा और काम (इच्छा) और माहात्म्य (ऐश्वर्य) और वीर्य और यत्न (प्रयत्न) और अर्क (सूर्य) और कीर्त्ति (यश) इनमें भग शब्द वर्त्ते है ॥ २६ ॥

॥ इति गान्ताः ॥

परिघः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रये ॥ मूल्ये पूजाविधावर्घोऽहोदुःखव्यसनेष्वघम् ॥ २७ ॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—

॥ इति घान्ताः ॥

इसके अनन्तर घान्तशब्दोंकों कहते हैं. परिघात यानी चारोंतरफसें मारनेमें और अस्त्र लोहमय लगुडमें परिघ शब्द वर्त्ते है, अपिशब्दसें योगभेदमेंभी जानना. वृंद नाम समूहमें और जलके प्रवाहमें ओघ शब्द वर्त्ते है. मूल्य नाम मोल और पूजाके विधानमें अर्घ शब्द वर्त्ते है. अंहस् नाम पाप और दुःख (जरामरणादिक) और व्यसन मृगया द्यूतादि इनमें अघ शब्द वर्त्ते है ॥ २७ ॥ इष्ट मनोज्ञ और अल्प नाम थोडेमें लघु शब्द वर्त्ते है

॥ इति घान्ताः ॥

काचाः शिक्यमृद्भेददृग्रुजः ॥ विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः पावके शुचिः ॥ २८ ॥ मास्यमात्ये चाप्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ॥ अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

॥ इति चान्ताः ॥

इसके अनन्तर चान्त शब्द कहते हैं शिक्य नाम छीका और मृद्भेद काच और दृग्रुज् अर्थात् नेत्रोंका रोग यह तीनों काचसंज्ञिक है. विपर्यास नाम विपरीतता और विस्तर विस्तार और चकारसें प्रतारणमें प्रपंच शब्द होता है पावक नाम अग्निमें मास नाम आषाढमें और अमात्य (मन्त्री) में और अत्युपध अर्थात् शुद्धचित्तमें और मेध्य नाम पवित्रमें और सित नाम श्वेतमें शुचि शब्द वर्त्ते है तिसमें शुचि शब्द अत्युपधपर्यन्त तो पुल्लिंगमें होता है और मेध्यादिकमें तीनों लिंगके विर्षे होताहै अभिष्वंग अर्थात् मिलाप और स्पृहा (इच्छा) और गभस्ति किरण और चकारसें प्रकाश और शोभाके विषे रुचि शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगमें होता है ॥ २९ ॥

॥ इति चान्ताः ॥

केकिताक्ष्यावहिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ॥ अजा विष्णुहरच्छागा गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥ धर्मराजौ जिनयमौ कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ॥ वलजे क्षेत्रपूर्द्वारे वल्गुदर्शना ॥ ३१ ॥

इसके अनन्तर जान्त शब्द कहते हैं केकी नाम मोर और ताक्ष्य गरुड यह दोनों अहिभुज संज्ञिक हैं दन्त नाम दांत और विप्र नाम ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और अंडज पक्षी यह तीनों द्विज संज्ञिक है विष्णु और हर (शिवजी) और छाग अर्थात् बकरा यह तीनों अज संज्ञिक है गोष्ठ अर्थात् गौओंका स्थान और अध्वा (मार्ग) और निवह (समूह) यह तीनों व्रज संज्ञिक हैं ॥ ३० ॥ जिन (बुद्ध) और यम (यमराज) यह दोनों धर्मराज संज्ञिक है और दन्त नाम हाथीके दांतमें अपिशब्दसें निकुंज नाम सघनवनमें कुंज शब्द होता है यह शब्द स्त्रीलिंगमें नहीं होता है, किन्तु पुनपुंसकलिंगमें होता है क्षेत्र-नाम खेत और पूर्द्वार (नगरका दरवाजा) यह दोनों वलज संज्ञिक हैं और वल्गुदर्शना

प्रसन्ने भल्लुकेऽप्यच्छो गुच्छः स्तवकहारयोः ॥ परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिंगकः ॥ १ ॥

इसके अनन्तर छान्त शब्दोंको क्षेपक होनेसें टिप्पणीमें कहते हैं प्रसन्ननाम निर्मल और भल्लुक नाम रीछमें अपिशब्दसें स्फटिकमें अच्छ शब्द वर्त्ते है, और स्तवक नाम गुच्छमें और हारमें गुच्छ शब्द वर्त्ते है वस्त्रके अंचलमें और जलके प्रान्तभागमें कच्छ शब्द वर्त्ते है तिसमें कच्छ शब्द जलप्रान्तके विषें तीनों लिंगवाचक होताहै ॥ १ ॥

अर्थात् उत्तमदर्शनवाली स्त्री वल्जा संज्ञिक है ॥ ३१ ॥

समे क्ष्मांशे रणेऽप्याजिः प्रजा स्यात्संततौ जने ॥ अब्जौ शङ्खशशाङ्कौ च स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥

सम क्ष्मांश अर्थात् समभूभागमें और रण संग्राममें आजि शब्द वर्त्ते है. संतति (सन्तान) और जन (मनुष्य) में प्रजा शब्द वर्त्ते है. शंख और शशांक (चंद्रमा) यह दोनों, और चकारसें कमल अब्ज संज्ञिक है. स्वक नाम अपनेमें और नित्यमें निज शब्द वर्त्ते है. यह शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ ३२ ॥

॥ इति जान्ताः ॥

पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः ॥ संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना ॥ ३३ ॥

॥ इति ञान्ताः ॥

इसके अनन्तर ञान्तशब्दोंको दिखाते हैं. आत्मा नाम पुरुष और प्रवीण नाम चतुर इन दोनोंमें क्षेत्रज्ञ शब्द वर्त्ते है. तिसमें क्षेत्रज्ञशब्द आत्माके विषे पुंलिंग है. और प्रवीणके विषे वाच्यलिंग यानी विशेष्यलिंग होता है. चेतना (बुद्धि) और हाथ भोयँ नेत्रादिकोंकर अर्थ सूचना अर्थात् प्रयोजन जताना यह दोनों संज्ञा संज्ञिक हैं ॥ ३३ ॥

॥ इति ञांताः ॥

काकेभगण्डौ करटौ गजगण्डकटी कटौ ॥ शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥ देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ॥ रसे कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥

इसके अनन्तर टान्त शब्दोंको कहते हैं. काक और इभगंड अर्थात् हाथीका कपोल यह दोनों करट संज्ञिक हैं. गजगंड अर्थात् हाथीका कपोल और कटि (कमरि) यह दोनों कट संज्ञिक हैं. खलति नाम रोगकरकें निष्केश शिरवाला और दुश्चर्म अर्थात् दुष्टत्वचावाला और महेश्वर इनमें शिपिविष्ट शब्द वर्त्ते है ॥ ३४ ॥ देवशिल्पी अर्थात् विश्वकर्माके विषे और अपिसब्दसें रविभेदमें और काष्ठके छीलनेवालेमें त्वष्टृ शब्द वर्त्ते है. दैव नाम पूर्व किये हुए कर्ममें अपिशब्दसें कालमें दिष्ट शब्द वर्त्ते है. यह शब्द स्त्रीपुंलिंग दोनोंमें नहीं होता. और जो कि दिष्ट शब्द कालार्थवाचक है, वह पुंलिंग है. रस नाम पिप्पली-आदिक रसभेदमें पुंलिंगवाची कटु शब्द

---

१ दोषज्ञौ वैद्यविद्वांसौ ज्ञो विद्वान्सोमजोऽपि च ॥ विज्ञौ प्रवीणकुशलौ कालज्ञौ ज्ञानिकुक्कुटौ

१ यह श्लोक क्षेपक है. इसका अर्थ यहहै, कि वैद्य नाम चिकित्सा करनेवाला और विद्वान् यह दोनों दोषज्ञ संज्ञिक हैं. और विद्वान् और सोमज बुध यह दोनों ज्ञ संज्ञिक हैं. और प्रवीण और कुशल यह दोनो विज्ञ संज्ञिक हैं और ज्ञानी और कुक्कुट (मुरगा) यह दोनों कालज्ञ संज्ञिक हैं.

होता है, और अकार्य अर्थात् करनेके अयोग्यमें नपुंसकलिंगवाची कटु शब्द वर्त्ते है और मत्सर और तीक्ष्णमें तीनों लिंगके विषे कटु शब्द होता है ॥ ३५ ॥

रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे ॥ मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥३६॥ अयोघने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ॥ सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥ आर्त्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्नकचे जटा॥व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिर्ज्ञानेऽक्षिण दर्शने॥३८॥ इष्टिर्यागेच्छयोः सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ॥ कष्टे तु कृच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥

पटुद्वौ वाच्यलिङ्गौ च

॥ इति टान्ताः ॥

क्षेम नाम कल्याण और अशुभ (अमंगल) और अभावमें रिष्ट शब्द वर्त्ते है और शुभ तथा अशुभ यह दोनों अरिष्ट संज्ञिक हैं तुशब्दसें सूतिकागृह तथा तक्र और आसव और मरणचिह्नमेंभी अरिष्टशब्द वर्त्ते है माया अर्थात् औरसे और आकारका दीखना और निश्चल अविकार आकाशादिक, और यन्त्र नाम मृगवधनविशेष और कैतव (कपट) और अनृत (असत्य) और राशिसमूह ॥ ३६ ॥ और अयोघन (लोहके कूटनेका शस्त्रविशेष) और शैलशृंग अर्थात् पर्वतका शिखर और सीराङ्ग यानी हलका अग्रभाग इन नौ वचनोंमें कूट शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होता है सूक्ष्मैला अर्थात् छोटी इलायची और काल (कालभेद) और अल्प अर्थात् लेशमात्र और संशय (संदेह) इनमें स्त्रीलिंगवाचक त्रुटि शब्द वर्त्ते है ॥ ३७ ॥ आर्ति नाम धनुषका अग्रभाग और उत्कर्ष (प्रकर्ष) और अग्निकोण यह तीनों कोटिसंज्ञिक हैं और संख्याभेदमेंभी कोटि शब्द होता है मूल नाम जडमें और लग्नकच अर्थात् मिलेहुए केशमें जटा शब्द वर्त्ते है फल और समृद्धि नाम संपदा इन दोनोंमें व्युष्टि शब्द वर्त्ते है ज्ञान तथा अक्षि नाम नेत्र और दर्शन इनमें दृष्टि शब्द वर्त्ते है॥ ३८॥ याग नाम यज्ञ और इच्छा इन दोनोंमें इष्टि शब्द वर्त्ते है और निश्चित अर्थात् निश्चय किये हुएमें और बहु अर्थात् बहुतमें सृष्ट शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है कृच्छ्र (दुःख) और गहन अर्थात् दुरधिगमात्मा यह दोनों कष्टसंज्ञिक है दक्ष (चतुर) और अमंद (तीक्ष्ण) और अगद (रोगहीन) इन तीनोंमें ॥३९ पटु शब्द वर्त्ते है यह दोनों कष्ट और पटु शब्द वाच्यलिंग यानी विशेष्यलिंग हैं

॥ इति टान्ता ॥

नीलकण्ठः शिवेऽपि च ॥ पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥ निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ॥

त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽति-
युवाल्पयोः ॥ ४१ ॥

॥ इति ठान्ताः ॥

इसके अनन्तर ठान्त शब्दोंको कहते हैं. शिव नाम महादेवमें अपिशब्दसें मोरमें नीलकंठ शब्द वर्त्ते है. अन्तर्जठर अर्थात् पेटके भीतरकी जगह और कुसूल नाम अन्नका घर और अन्तर्गृह अर्थात् घरकी बीचकी जगह इन शब्दोंमें कोष्ठ शब्द वर्त्ते है. यह शब्द पुंलिंगमें होता है ॥४०॥ निष्पत्ति नाम सिद्ध करना और नाश (अदर्शन) और अन्त (प्रध्वंस) यह तीनों निष्ठासंज्ञिक हैं. उत्कर्ष अर्थात् उत्कृष्टता और स्थिति नाम मर्यादा और दिशा इन तीनोंमें काष्ठा शब्द वर्त्ते है. अतिशस्त नाम अतिश्रेष्ठमें और अपिशब्दसें अतिवृद्धमें और बडे भ्रावामें और ज्येष्ठमासमें ज्येष्ठ शब्द वर्त्ते है. यह शब्द तीनों लिंगमें होता है. और अति युवा और अल्पमें कनिष्ठ शब्द वर्त्ते है, और अनुजके विषैंभी कनिष्ठ शब्द होता है. यह शब्दभी तीनों लिंगमें होता है ॥ ४१ ॥

॥ इति ठान्ताः ॥

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्गुडो गोले-
क्षुपाकयोः ॥ सर्पमांसात्पशू व्याडौ
गोभूवाचस्त्विडा इलाः ॥ ४२ ॥
क्ष्वेडा वंशशलाकाऽपि नाडी नाले-
ऽपि षट्क्षणे ॥ काण्डोऽस्त्री दण्डवा-
णार्ववर्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥
स्याद्भाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने॥

॥ इति डान्ताः ॥

इसके अनन्तर डान्त शब्द कहते हैं. लगुड नाम लाठीमें और अपिशब्दसें दमके विषें मानभेदमें यमराजमें सेनामें व्यूहभेदमें प्रकाण्डमें घोडामें कोणमें मन्थनमें अभिमानमें ग्रहमें सूर्यके पारिपार्श्वकमें दंड शब्द वर्त्ते है. गोल नाम मृत्तिकाआदिकका गुला और इक्षुपाक ऊखका विकार इन दोनोंमें गुड शब्द वर्त्ते है. सर्प और मांसके खानेवाला पशु व्याघ्र यह दोनों व्याडसंज्ञिक हैं. डकारलकारकी सवर्णता होनेसें यह शब्द व्यालभी वोलाजाता है. गो (गौ) और भू (पृथिवी) और वाच् (वाणी) यह तीनों इडा इलासंज्ञिक हैं ॥४२॥ और वंशशलाका अर्थात् जो कि पींजरा तथा शूप आदिकके वनानेके लियें वांशकी शलाका है, वह क्ष्वेडासंज्ञिक है. अपिशब्दसें पुंलिंगवाची यह शब्द विषमें तथा स्त्रीलिंगवाची सिंहनादमें वर्त्ते है. नालमें और षट्क्षण अर्थात् छैक्षणोंकर मिलेहुए कालमें नाडी शब्द वर्त्ते है. अपिशब्दसें शिरादिकके विषैंभी यह शब्द वर्त्ते है. दण्ड और वाण और अर्वा नाम नीच और वर्ग (विभाग) और अवसर (प्रस्ताव) और वारि (जल) इन छे शब्दोंमें काण्ड शब्द वर्त्ते है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है ॥ ४३ ॥ अश्वाभरण अर्थात् घोडेका गहना और

अमत्र (पात्र) इन दोनोंमें भाड शब्द वर्ते है और मूलवनियेंके धनमेंभी यह शब्द वर्ते है.

॥ इति डान्ता ॥

भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥ शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ॥

॥ इति ढान्ताः ॥

इसके अनन्तर ढान्त शब्द कहते है भृश नाम अत्यर्थ और प्रतिज्ञा नाम स्वीकार इन दोनोंमें बाढ शब्द वर्ते है और भृश अत्यर्थ और कृच्छ्र इन दोनोंमें प्रगाढ शब्द वर्ते है और दृढमेंभी प्रगाढ शब्द होता है॥४४॥और शक्त (समर्थ) और स्थूल यह दोनो दृढसंज्ञिक हैं.यह शब्द तीनों लिंगमें होता है विन्यस्त नाम रक्खा हुआ और संहत इकठा हुआ यह दोनों व्यूढसंज्ञिक है और यह शब्द पृथुलमें होता है

॥ इति ढान्ता ॥

भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे बाणो बलिसुते शरे ॥ ४५ ॥ कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे गणः ॥ पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च ॥ ४६ ॥ मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसंध्यादिके गुण. ॥ निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥

इसके अनन्तर णान्त शब्द कहते हैं अर्भक (बालक) मेंभी और स्त्रैणगर्भ अर्थात् स्त्रीसम्बन्धी गर्भमें भ्रूण शब्द वर्ते है बलिसुत नाम बलिके पुत्रमें और शर (बाण) में बाण शब्द वर्ते है ॥ ४५ ॥ अतिसूक्ष्ममें और धान्यांश अर्थात् धान्यके भागमें कण शब्द वर्ते है. संघात नाम समूहमें और प्रमथ नाम शिवजीके अनुचरमें गण शब्द वर्ते है द्यूत नाम फासोंकरके क्रीडामें और आदिशब्दसें मेषकुक्कुटादिकके युद्धादिकमें और उत्सृष्ट त्यागेहुए अर्थमें और भृति नाम मजदूरीमें और मूल्य नाम मोलमें और धनमें पण शब्द वर्ते है और चकारसें जूआके दावमें और खरीदने योग्य शाकादिकमेंभी यह शब्द वर्ते है ॥ ४६ ॥ मौर्वी नाम प्रत्यंचामें और द्रव्याश्रित रसगंधादिकमें और सत्व शौर्य संध्यादिकमें, अर्थात् सत्व रज आदिकमे और शौर्य चातुर्यादिकमें और संधिविग्रहादिकमें और आदिशब्दसें इंद्रिय रज्जुआदिकमें गुण शब्द होता है निर्व्यापारस्थितिमें और कालविशेष अर्थात् मुहूर्त्तके बारहवें भागमें, और उत्सव पुत्रजन्मादिकमें क्षण शब्द होता है और पर्वकविषैंभी यह शब्द होता है ॥ ४७ ॥

वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाऽक्षरे ॥ अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥ स्थाणुः शर्वेऽप्यथ द्रोणः काके प्याजौ रवे रणः ॥ ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

द्विजादि (ब्राह्मणक्षत्रियादिक) और शुक्लादि (शुक्लपीतादिक) और स्तुति (स्तव) इनमें वर्ण शब्द वर्त्ते है. और अक्षरके विषें वर्ण शब्द विकल्पकरकें नपुंसकलिंग है. भास्कर नाम सूर्यके विषें और वर्णभेदमें अपिशब्दसें सूर्यके सारथिमें और अव्यक्तराग तथा संध्यारागमें अरुण शब्द वर्त्ते है.तिसमें वर्णभेदमें जो अरुण शब्द होता है, वह तीनों लिंगके विषें वर्त्ते है ॥ ४८ ॥ शर्व नाम शिवजी और अपिशब्दसें स्तंभादिक स्थाणु संज्ञिक हैं. काकमें और अपिशब्दसें अश्वत्थामाके पितामें और परिमाण विशेषमें द्रोण शब्द होता है, आजि नाम संग्राममें और रव नाम शब्दमें रण शब्द वर्त्ते है. नापित नाम नाईके विषें ग्रामणी शब्द पुंलिंगमें होता है. और श्रेष्ठ नाम मुख्य और ग्रामाधिप नाम ग्रामके मालिकमें ग्रामणी शब्द तीनों लिंगमें होता है ॥ ४९ ॥

ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवोः ॥ हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥ त्रिषु पाण्डौ च हरिणः स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ॥ तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे जुगुप्सा करणे घृणे ॥ ५१ ॥

मेषादिक नाम मेष शश उष्ट्रादिकोंके लोम नाम वालमें और भौंओंके वीचके आवर्त्तमें ऊर्णा शब्द वर्त्ते है. मृगी और सुवर्णकी प्रतिमा और जो कि हरिता अर्थात् हरिद्वर्ण है, वह हरिणीसंज्ञिक है ॥ ५० ॥ पांडु नाम पांडुरवर्णमें चकारसें मृगभेदमें हरिण शब्द वर्त्ते है, यह शब्द तीनों लिंगमें होता है. वेश्म नाम घरके स्तंभमें अपिशब्दसें लोहकी प्रतिमामें स्थूणा शब्द वर्त्ते है. स्पृहा (वांच्छा) और पिपासा (प्यास) यह दोनों तृष्णासंज्ञिक हैं. जुगुप्सा (निन्दा) और करुणा (दया) यह दोनों घृणासंज्ञिक हैं ॥ ५१ ॥

वणिक्पथे च विपणिः सुरा प्रत्यक् च वारुणी ॥ करेणुरिभ्यां स्त्री नेभे द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥ शरणं गृहरक्षित्रोः श्रीपर्णं कमलेऽपि च ॥ विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु ॥ ५३ ॥ प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ॥ करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥ प्राण्युत्पादे संसरणमसंबाधचमूगतौ ॥ घण्टापथेऽथ वान्तान्ने समुद्गिरणमुन्नये ॥ ५५ ॥

वणिक्पथ (बाजार) चकारसें दुकानमें विपणि शब्द वर्त्ते है. प्रत्यक् नाम पश्चिम दिशा और सुरा (मदिरा) वारुणीसंज्ञिक हैं. इभी नाम हथिनीके विषें करेणु शब्द स्त्रीलिंग है, और इभ नाम हाथीके विषें करेणु शब्द पुंलिंग है. बल (पराक्रम) और धन द्रविण संज्ञिक है ॥ ५२ ॥ गृह (घर) और रक्षिता नाम रक्षाकरनेवालेमें

शरण शब्द वर्त्ते है कमलमें और अपिशब्दसें अरणिमें श्रीपर्ण शब्द वर्त्ते है विषमें और अग्निमर युद्धमें और लोहमें तीक्ष्ण शब्द वर्त्ते है यह शब्द नपुंसकलिंगमें होता है और जो कि खर नाम तिग्ममें तीक्ष्ण शब्द वर्त्ते है, वह तीनों लिंगोंमें होता है ॥ ५३ ॥ हेतु नाम कारण और मर्यादा सीमा और शास्त्र और इयत्ता नाम परिच्छेद और प्रमाता जाननेवाला इनमें प्रमाण शब्द वर्त्ते है, साधकतम अर्थात् क्रियाकी सिद्धिमें प्रकृष्टहेतु और क्षेत्र नाम सस्यका उत्पत्तिस्थान और गात्र नाम शरीर और इन्द्रिय इनमें, और अपिशब्दसें कर्मादिकमें करण शब्द वर्त्ते है ॥ ५४ ॥ प्राण्युत्पाद नाम प्राणियोंके जन्ममें और निर्याधसेनाके चलनेमें और घटापथ राजमार्गमात्रमें संसरण शब्द वर्त्ते है वातान्न नाम खाकर त्यागे हुए अन्नमें और उन्नय नाम जलपात्रादिके ऊपर लेजानेमें समुद्गिरण शब्द वर्त्ते है ॥ ५५ ॥

अतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ॥ प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥ संकीर्णौ निचिताशुद्धाविरिणं शून्यमूषरम् ॥

॥ इति णान्ता ॥

१ सेतौ च वरणो वेणी नदीभेदे कचोच्चये. सेतु नाम पुल औषधिविशेष और चकारसें प्रकारमें वरण शब्द वर्त्ते है नदीभेद और कचोच्चय अर्थात् वालोंके समूहमें वेणी शब्द वर्त्ते है यह आधा श्लोक और पुस्तकोंमें निर्दोष है.

इससें परे जो कि णान्त शब्द कहे जावेंगे, वह तीनों लिंगोंमें होवेंगे पशुशृंग नाम पशुके सींग और इभदन्त नाम हाथीके दांत इन दोनोंमें विषाण शब्द वर्त्ते है क्रमसें नीची हुई उर्वी नाम पृथिवीमें और प्रह्व नाम नम्रमें और चतुष्पथ नाम चहुटेमें प्रवण शब्द वर्त्ते है जो कि प्रवण शब्द चतुष्पथार्थवाची है, वह पुंलिंग है ॥ ५६ ॥ निचित नाम व्याप्त और अशुद्ध यह दोनों संकीर्णसंज्ञिक है. शून्य (निराश्रयदेश) और ऊपर स्थलविशेष यह दोनों इरिणसंज्ञिक है

॥ इति णान्ता ॥

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

इसके अनन्तर तान्त शब्दोंको कहते हैं देव और सूर्य यह दोनों विवस्वत्संज्ञिक हैं नद नाम सरिद्विशेष अर्णव (समुद्र) यह दोनों सरस्वत्संज्ञिक है ॥ ५७ ॥

पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ॥ अग्न्युत्पातौ धूमकेतू जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥ हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ पवनामरौ ॥ यन्ता हस्तिपके सूते भर्ता धातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥

पक्षी और तार्क्ष्य (गरुड) यह दोनों गरुत्मत्संज्ञिक है भास (पक्षिभेद) पक्षी (पक्षिमात्र) यह दोनों शकुन्त संज्ञिक है

अग्नि और उत्पात नाम धूममयी तारा यह दोनों धूमकेतुसंज्ञिक हैं. और मेघ तथा पर्वत यह दोनों जीमूतसंज्ञिक हैं ॥ ५८ ॥ पाणि नाम हाथ और नक्षत्र अर्थात् अश्विनीसे लेकर तेरहवाँ नक्षत्र यह दोनों हस्तसंज्ञिक हैं. पवन और अमर (देवता) यह दोनों मरुत्संज्ञिक हैं. हस्तिपक हाथीवानमें और सूत सारथिमें यन्तृ शब्द वर्त्ते है, धाता नाम धारणकरनेवाला और पोष्टा पुष्ट करनेवाला इन दोनोंमें भर्तृ शब्द वर्त्ते है५९

यानपात्रे शिशौ पोतः प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ॥ ग्रहभेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥ स्थपतिः कारुभेदेऽपि भूभृद्भूमिधरे नृपे ॥ मूर्धाभिषिक्तो भूपेऽपि ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥

यानपात्र और शिशु नाम बालकमें पोत शब्द वर्त्ते है. प्राण्यन्तर नाम भूतान्तरमें और मृत नाम मरेहुएमें प्रेत शब्द वर्त्ते है. ग्रहभेद और ध्वज नाम पताकामें केतु शब्द वर्त्ते है. पार्थिव नाम राजा और तनय (पुत्र) में सुत शब्द वर्त्ते है ॥ ६० ॥ कारुभेद नाम शिल्पिभेदमें और अपिशब्दसें जीवेष्टि नाम यज्ञके करनेवालेमें तथा कंचुकधारीमें स्थपति शब्द वर्त्ते है. भूमिधर पृथिवीके धारण करनेवालेमें तथा नृप नाम राजामें भूभृत् शब्द वर्त्ते है. भूप नाम पृथिवीपतिमें और अपिशब्दसें प्रधानमें तथा क्षत्रियमात्रमें मूर्धाभिषिक्त शब्द वर्त्ते है. स्त्रीकुसुम अर्थात् स्त्रीके रजमें अपिशब्दसें हेमन्तादिकमें ऋतु शब्द वर्त्ते है ॥ ६१ ॥

विष्णावप्यजिताव्यक्तौ सूतस्त्वष्टरि सारथौ ॥ व्यक्तः प्राज्ञेऽपि दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥ क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ॥ वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

विष्णुमें और अपिशब्दसें शिवजीमें अजित अव्यक्त यह दो शब्द वर्त्ते हैं. त्वष्टा नाम शिल्पिभेदमें और सारथिमें सूत शब्द वर्त्ते है. प्राज्ञ नाम पंडितमें अपिशब्दसें स्फुटमें व्यक्त शब्द वर्त्ते है. शास्त्र (तर्कादिक) और निदर्शन (उदाहरण) यह दोनों दृष्टान्तसंज्ञिक हैं ॥ ६२ ॥ सारथिमें और द्वाःस्थ नाम द्वारपाल ड्योढीवानमें और क्षत्रियजातिस्त्रीके विषें शूद्रसें उत्पन्न हुए पुत्रमें चकारसें दासीपुत्रमें क्षत्तृ शब्द वर्त्ते है. प्रकरण (प्रस्ताव) और प्रकार (भाव) और कार्त्स्न्य (साकल्य) और वार्ता इनमें वृत्तान्त शब्द होता है ॥ ६३ ॥

आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्विशेषयोः ॥ कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥ श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः ॥ इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥

समर नाम सयाम और नृत्यस्थान (नाचनेकी जगह) और नीवृद्विशेष अर्थात् देशविशेष इनमें आनर्त्त शब्द वर्त्ते हैं यम (धर्मराज) और सिद्धान्त और दैव पूर्व कियाहुआ कर्म और अकुशल कर्म पाप इनमें कृतान्त शब्द होता है ॥ ६४ ॥ श्लेष्मादि अर्थात् कफपित्तादिक और रसरक्तादिक अथात् रस रुधिर वसा मज्जादिक और महाभूत अर्थात् पृथिव्यादिक और तद्गुण अर्थात् महाभूतोंके गुण गंधादिक, और इन्द्रिय (चक्षुरादिक) और अश्मविकृति (मन शिलादिक) और शब्दयोनि (भू सत्ताया) इत्यादिक धातुसंज्ञिक है॥६५॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ॥ कासूसामर्थ्ययोः शक्तिर्मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥ विस्तारवल्ल्योर्व्रततिर्वसती रात्रिवेश्मनोः ॥ क्षयार्चयोरपचितिः सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

असर्वगोचर अर्थात् सबके न देखनेयोग्य जो राजाका कक्षान्तर अर्थात् राजधानी स्थानविशेष है, वह उसमें, और अपिशब्दसें अन्न पुरमें शुद्धान्त शब्द वर्त्ते है कासू नाम बरछी और सामर्थ्य इन दोनोंमें शक्ति शब्द वर्त्ते है काठिन्य (दृढता) और काय (शरीर) इन दोनोंमें मूर्त्ति शब्द वर्त्ते है ॥ ६६ ॥ विस्तारमें और वल्लि नाम वेलिमें व्रतति शब्द वर्त्ते है रात्रि और वेश्म नाम घर इन दोनोंमें वसति शब्द वर्त्ते है क्षय (हानि) अर्चा (पूजा) इन दोनोंमें अपचिति शब्द वर्त्ते है दान और अवसान अतमें साति शब्द वर्त्ते है ॥ ६७ ॥

आर्तिः पीडाधनुष्कोटयोर्जातिः सामान्यजन्मनोः ॥ प्रचारस्यन्दयो रीतिरीतिर्डिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥ उदयेऽधिगमे प्राप्तिस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥ वीणाभेदेऽपि महती भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९ ॥

पीडा और धनुष्कोटि यानी धनुषका अग्रभाग इन दोनोंमें आर्ति शब्द वर्त्ते है सामान्य (साधारण) और जन्म इन दोनोंमें जाति शब्द होता है प्रचार नाम लोकाचार और स्यंद नाम झिरना इन दोनोंमें रीति शब्द होता है. डिम्ब नाम सातप्रकारका विप्लव और प्रवासमें ईति शब्द वर्त्ते है ॥ ६८ ॥ उदय नाम उत्पत्ति और अधिगम (लाभ) इन दोनोंमें प्राप्ति शब्द वर्त्ते है. अग्नित्रय नाम दक्षिणगार्हपत्याहवनीयाख्य अग्निमें और युगमें त्रेता शब्द वर्त्ते है वीणाभेद अर्थात् नारदीवीणामें अपिशब्दसें महत्वयुक्त भार्यादिकमें महती शब्द होता है भस्म और संपदामें तथा अणिमादिकके विषें भूति शब्द होता है॥६९॥

नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्यथ संगरे॥ सङ्गे सभायां समितिः क्षयवासावपि

क्षिती ॥ ७० ॥ रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ॥ जगती जगति छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ७१ पङ्क्तिश्छन्दोऽपि दशमं स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ॥ पत्तिर्गतौ च मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः ॥ ७२ ॥ प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ॥ सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे श्रवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥

नागोंकी नदी और नगरी इन दोनोंके-विषैं भोगवती शब्द होता है. संगर नाम संग्रामके विषैं होता है. संग नाम संगमके विषैं और सभाके विषैं समिति शब्द होता है. क्षय (नाश) और वास (निवास) यह दोनों और अपिशब्दसें पृथिवी आदिक क्षिति-संज्ञिक हैं. ॥ ७० ॥ सूर्यकी आँच नाम ज्वाला और शस्त्र और अग्निकी ज्वाला हेतिसंज्ञिक हैं. जगत् लोक और छन्दविशेष और क्षिति (पृथिवी) अपिशब्दसें जन इत्यादिकमें जगती शब्द वर्त्ते है ॥ ७१ ॥ दशम छंद अर्थात् दशअक्षरके पादवाला छंद और अपिशब्दसें आवलि पंक्तिसंज्ञिक हैं. प्रभावमें अपिशब्दसें आनेवाले कालमें और संयममें और दीर्घतामें आयति शब्द वर्त्ते है. गतिमें और चकारसें वीरभेदमें तथा सेनाभेदमें पत्ति शब्द वर्त्ते है. पक्ष नाम मासार्धवाची और पक्षीका अवयववाची यह दो भेदके जो पक्ष हैं तिनके मूल नाम जडमें पक्षति शब्द वर्त्ते है. भाव यह है कि पक्ष नाम मासार्धका मूल प्रतिपदा तिथि पक्षति संज्ञिक है. और पक्ष नाम पक्षीके पक्षकी मूल (जड) पक्षतिसंज्ञिक है ॥ ७२ ॥ योनिमें और लिंगमें चकारसें प्रधानतामें और अमात्यादिकमें और स्वभावमें प्रकृति शब्द वर्त्ते है. कैशिक्यादिक वृत्तिसंज्ञिक हैं. आदिशब्दसें आरभटी सात्वती भारती शब्द जानने. और चकारसें जीविकामें और सूत्रके अर्थ खोलनेमेंभी वृत्तिशब्द वर्त्ते है. वालुका नाम वालू और अपिशब्दसें सिकतायुक्त देश सिकतासंज्ञिक हैं. तिसमें सिकता शब्द वालुकाके विषैं बहुवचनान्त तथा स्त्रीलिंग है. वेदमें और श्रवस् नाम कर्णमें और चकारसें वार्त्तामें तथा सुननेमें श्रुति शब्द वर्त्ते है ॥ ७३ ॥

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ॥ गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥ बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि ॥ वासिता स्त्रीकरिण्योश्च वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥

उत्पन्न किया है अत्यन्त अनुराग जिसके विषैं, ऐसी स्त्रीमें वनिता शब्द वर्त्ते है. क्षितिव्युदास नाम पृथिवीके छिद्रमें और अपिशब्दसें रक्षामें गुप्ति शब्द वर्त्ते है. और धारणमें तथा धैर्यमें धृति शब्द वर्त्ते है.

॥ ७४ ॥ क्षुद्रवार्त्ताकी औषधिविशेष और छन्दभेद अर्थात् नवम छद और महती नाम विपला यह तीनों बृहती संज्ञिक हैं स्त्री और करिणी नाम हथिनीके विषे वासिता शब्द वर्त्ते है वृत्ति (जीविका) और जनश्रुति (वृत्तान्त) इन दोनोंमें वार्त्ता शब्द वर्त्ते है ॥ ७५ ॥

वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते ॥ कलधौतं रूप्यहेम्नोर्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥ श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्युगपर्याप्तयोः कृतम् ॥ अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥

फल्गु नाम असार तुच्छ और अरोग नाम रोगरहित इन दोनोंमें वार्त्त शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगमें होता है और अप नाम जलोंके विषे घृत अमृत शब्द वर्त्ते है रूप्य नाम चादी ओर हेम (सुवर्ण) इन दोनोंमें कलधौत शब्द वर्त्ते है हेतु (कारण) और लक्ष्म नाम चिन्ह इन दोनोंमें निमित्त शब्द वर्त्ते है. ॥ ७६ ॥ शास्त्र और अवधृत नाम श्रवण किया इन दोनोंमें श्रुत शब्द वर्त्ते है और युग नाम प्रथम युगमें और पर्याप्त यानी अलमर्थमें कृत शब्द वर्त्ते है और जो कि जीवानपेक्षि साहसरूप कर्म है, वह और महाभीति अर्थात् महद्भय यह दोनों अत्याहित संज्ञिक हैं ॥ ७७ ॥

युक्ते क्ष्मादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ॥ वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥७८॥ महद्राज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु ॥ श्वेतं रूप्येऽपि रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥

युक्त नाम न्याय्य और क्ष्मादिक अर्थात् पृथिवी अप तेज वायु आकाश और ऋत नाम सत्य और प्राणी नाम जन्तु और अतीत नाम भूतकाल और सम नाम सदृश इनमें भूत शब्द वर्त्ते है यह तीनों लिंगोंमें होता है पद्य नाम श्लोक और चरित्र और अतीत नाम भूतकाल और दृढ और निस्तल नाम गोल इनमें वृत्त शब्द वर्त्ते है. तिसमें अतीतादिक अर्थमें वृत्त शब्द तीनों लिंगोंमें होता है ॥ ७८ ॥ राज्य और चकारसें बृहत् यह दोनों महत्संज्ञिक है जन्य नाम मनुष्योंकी निंदामें और गर्हित (निन्दित) में अवगीत शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है. रूप्य नाम चादीमें अपिशब्दसें शुक्लमें श्वेत शब्द वर्त्ते है हेम नाम सुवर्णमें और रूप्य नाम चादीमें और सित नाम शुक्लवर्णमें रजत शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है इस रजतशब्दसें परे वान्त शब्द तीनों लिंगोंमें होते है ॥ ७९ ॥

त्रिष्वतो जगदिङ्गेऽपि रक्तं नील्यादिरागि च॥अवदातः सिते पीते शुद्धे

बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥ युक्तेऽति-संस्कृते मर्षिण्यभिनीतोऽथ संस्कृतम्॥ कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्यनन्तोऽनवधावपि ॥ ८१ ॥

इंग नाम जंगममें और अपिशब्दसें भुवनमें जगत् शब्द वर्त्ते है. और नील्यादिरागि अर्थात् जो कि नील्यादिक रागयुक्त है वह रक्त संज्ञिक है. और चकारसें रक्तवर्ण और कुंकुम तथा ताम्रमेंभी रक्तशब्द वर्त्ते है. सित नाम श्वेत और पीत (पीला) और शुद्ध इन तीनोंमें अवदात शब्द वर्त्ते है. बद्ध नाम बँधा हुआ और अर्जुन शुक्ल यह दोनों सित संज्ञिक हैं ॥ ८० ॥ युक्त नाम न्याययोग्यमें अतिसंस्कृत नाम अतिश्रेष्ठमें और मर्षी नाम सहनेवालेमें अभिनीत शब्द वर्त्ते है. कृत्रिम नाम बनाये हुए घटादिकमें और लक्षणोपेत नाम शास्त्रोक्तलक्षणोपेत नाम शास्त्रोक्तलक्षणोंसें युक्तमें संस्कृत शब्द वर्त्ते है. अनवधि नाम निःसीमामें और अतिशब्दसें शेषादिकमें अनन्त शब्द वर्त्ते है ॥ ८१ ॥

ख्याते हृष्टे प्रतीतोऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ॥ विविक्तौ पूतविजनौ मूर्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥ द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ शिती धवलमेचकौ ॥ सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥

ख्यात नाम प्रसिद्धमें और हृष्ट नाम प्रसन्नमें प्रतीत शब्द वर्त्ते है. और कुलज नाम कुलीनमें और बुध नाम पंडितमें अभिजात शब्द वर्त्ते है. पूत नाम पवित्र और विजन नाम एकान्त यह दोनों विविक्त संज्ञिक हैं. मूढ नाम मोहकों प्राप्त हुआ और सोच्छ्रय यानी वृद्धियुक्त यह दोनों मूर्च्छित संज्ञिक हैं. अम्ल (चूक) और परुष नाम निष्ठुर यह दोनों शुक्त संज्ञिक हैं. धवल नाम उज्वल और मेचक कालावर्ण यह दोनों शिति संज्ञिक हैं. सत्य नाम सोच और साधु अर्थात् मान्य और विद्यमान और प्रशस्त श्रेष्ठ और अभ्यर्हित (पूजित) इनमें सत् शब्द वर्त्ते है ॥ ८३ ॥

पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥ जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता उत्थितास्त्वमी ॥ वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आदृतौ सादरार्चितौ ॥ ८५ ॥

॥ इति तान्ताः ॥

पूजित नाम पूजेहुएमें और अरात्यभियुक्त अर्थात् वैरीकर दवाये हुएमें और अगारी किये हुएमें पुरस्कृत शब्द वर्त्ते है. आश्रय नाम निवास और निवात नाम पवनवर्जित यह दोनों निवात संज्ञिक हैं. और जो कि वर्म (कवच) शस्त्रसें नहीं कटने योग्य है वहभी निवात संज्ञिक है ॥ ८४ ॥ जात

नाम उत्पन्न हुआ उन्नद्ध नाम गर्वा हुआ और प्रवृद्ध नाम बढा हुआ यह तीनों उच्छ्रित सञ्ज्ञिक हैं और यह वृद्धिमान् तथा प्रोद्यत तथा उत्पन्न शब्द उत्थित सञ्ज्ञिक है साद्रे नाम आदरयुक्त और अर्चित पूजित यह दोनों आद्दत सञ्ज्ञिक है ॥ ८५ ॥

॥ इति तान्ता ॥

अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु॥ निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥ समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे हितेऽपि च ॥ दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि॥८७॥

इसके अनन्तर थान्तशब्दोंको कहते हैं. अभिधेय नाम वाच्य और रै नाम धन और वस्तु नाम तत्व और प्रयोजन और निवृत्ति इनमें अर्थ शब्द वर्त्ते है निपान नाम कूप, जलाशय आगम नाम बौद्धशास्त्रमें अथवा शास्त्र इन दोनोंमें तथा ऋषियोंके सेवे हुए जलमें और गुरु (उपाध्याय) में तीर्थ शब्द वर्त्ते है ॥ ८६ ॥ शक्तिस्थ नाम शक्तियुक्तमें संबद्धार्थ नाम संबद्ध हुए अर्थमें और हित नाम अनुकूलमें समर्थ शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है क्षीणराग और वृद्ध (अतिवृद्ध) यह दोनों शब्द दशमीस्थ सञ्ज्ञिक है पदवी (मार्ग) और अविशब्दसे पंक्ति वीथी सञ्ज्ञिक है ॥ ८७ ॥

आस्थानीयत्नयोरास्था प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥

॥ इति थान्ताः ॥

अभिप्रायवशौ छन्दावब्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥ अपवादौ तु निन्दाज्ञे दायादौ सुतबान्धवौ ॥ पादा रश्म्यङ्घ्रितुर्यांशाश्चन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥

आस्थानी (सभा) और यत्न (प्रयत्न) इन दोनोंमें आस्था शब्द वर्त्ते है सानु नाम पर्वतका अग्रभाग और मान-(परिमाण) भेद इन दोनोंमें प्रस्थ शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंग है

॥ इति थान्ता ॥

इसके अनन्तर दान्तशब्दोंको कहते है अभिप्राय (आशय)और वश नाम आधीन यह दोनों छन्द सञ्ज्ञिक है जीमूत (मेघ) और वत्सर (वर्ष) यह दोनों अब्द सञ्ज्ञिक है ॥८८॥ निन्दा और आज्ञा अपवाद सञ्ज्ञिक है सुत नाम पुत्र और बांधव यह दोनों दायाद सञ्ज्ञिक है रश्मि (किरण) और अङ्घ्रि (चरण) और तुर्यांश नाम चौथा भाग

१ शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थ सस्थाधारे स्थितौ मतो.

१ शास्त्र और द्रविण नाम धनमें ग्रन्थ शब्द वर्त्ते है. आधारमें (स्थितिमें) और मृति नाम मरणमें संस्था शब्द वर्त्ते है यह अर्द्धश्लोक क्षेपक है

यह तीनों पाद संज्ञिक हैं. चंद्र (चंद्रमा) और अग्नि और अर्क (सूर्य) यह तीनों तमोनुद् संज्ञिक हैं. ॥ ८९ ॥

निर्वादो जनवादेऽपि शादो जम्बालशष्पयोः ॥ आरावे रुदिते त्रातर्याक्रन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥ स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ॥ गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥

जनवाद नाम लोकापवादमें और अपिशब्दसें निर्णय कीए हुए वादमें निर्वाद शब्द वर्त्ते हैं. जंबाल नाम कींच और शष्प नाम छोटी २ घास इन दोनोंमें शाद शब्द वर्त्ते है. आराव नाम शब्दमें और रुदित नाम दुखितके शब्दमें और त्राता नाम रक्षकमें और दारुण रण अर्थात् घोर संग्राममें आक्रन्द शब्द वर्त्ते है ॥ ९० ॥ अनुराग (अनुग्रह) में अपिशब्दसें प्रसन्नता और काव्यगुणमें प्रसाद शब्द वर्त्ते है. व्यंजनमें और अपिशब्दसें रसोई करनेवालेमें सूद शब्द वर्त्ते है. गोष्ठाध्यक्ष नाम गौओंके स्थानके स्वामीमें अपिशब्दसें बृहस्पति तथा श्रीकृष्णमें गोविन्द शब्द वर्त्ते है. हर्षमें आमोद मद यह दो शब्द वर्त्ते हैं. अपिशब्दसें आमोद शब्द अतिमनके हरनेवाले गंधमेंभी वर्त्ते है. और अपिशब्दसें मद शब्द गर्व और हाथीके मद तथा वीर्यमेंभी वर्त्ते हैं ॥ ९१ ॥

प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम् ॥ स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥ धर्मे रहस्युपनिषत्स्यादृतौ वत्सरे शरत् ॥ पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु ॥ ९३ ॥

प्राधान्य और राजलिंग अर्थात् राजाके चिन्ह छत्र चामरादिक और वृषांग नाम बैलके अंगमें ककुद् शब्द वर्त्ते है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होता है. ज्ञान और संभाषा नाम संभाषण और क्रियाकार (कर्मनियम) और आजि नाम युद्ध और नाम संज्ञा इनके विषें स्त्रीलिंग संविद् शब्द वर्त्ते है ॥ ९२ ॥ धर्म और रहस् नाम एकान्त इनमें उपनिषद् शब्द वर्त्ते है. ऋतु नाम ऋतुभेद और वत्सर नाम वर्ष इनमें शरद् शब्द वर्त्ते है. व्यवसिति नाम व्यवसाय निश्चय और त्राण (रक्षा) और स्थान और लक्ष्म (चिन्ह) और अंघ्रि (चरण) और वस्तु इनमें पद शब्द वर्त्ते है ॥ ९३ ॥

गोष्पदं सेविते माने प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ॥ त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू मृदू चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥ मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युर्द्वौ तु शारदौ ॥ प्रत्यग्राप्रतिभौ विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥

॥ इति दान्ताः ॥

सेवित नाम गौओंकरके सेवित हुए देशमें और मान नाम गौओंके खुरप्रमाणमें गोष्पद शब्द वर्त्ते है और प्रतिष्ठा (स्थान) और कृत्य (कार्य) यह दोनों आस्पद संज्ञिक है इससे परे वर्गसमाप्तिपर्यन्त दान्त शब्द तीनो लिंगोंमें होते है इष्ट नाम सुन्दर और मधुर यह दोनों स्वादु संज्ञिक है और अतीक्ष्ण अर्थात् जो कि तीखा न हो, और कोमल जो कि करा न होय यह दोनों मृदु संज्ञिक है ॥ ९४ ॥ मूढ नाम मूर्ख और अल्प (थोडा) और अपटु (अतीक्ष्ण) और निर्भाग्य अर्थात् भाग्यरहित यह मंद संज्ञिक है प्रत्यग्र (अतिनवीन) और अप्रतिम अर्थात् जो कि प्रगल्भ न हो यह दोनों शारद संज्ञिक है विद्वान् और प्रगल्भ यह दोनों विशारद संज्ञिक है ॥ ९५ ॥

॥ इति दान्ताः ॥

व्यामो वटश्च न्यग्रोधावुत्सेधः काय उन्नतिः॥ पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥ परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ॥ बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः॥९७॥

इसके अनन्तर धान्तशब्दोंको कहते हैं व्याम नाम फैलाई हुई दोनों भुजाओंका कुंडल और वट नाम बड यह दोनों न्यग्रोध संज्ञिक हैं काय नाम शरीर उन्नति (ऊँचाई) यह दोनों उत्सेध संज्ञिक है पर्याहार अर्थात् धान्यादिक और मार्ग नाम रास्ता यह दोनों विवध वीवध संज्ञिक हैं ॥ ९६ ॥ यज्ञियतरु नाम यज्ञसंबन्धी वृक्ष पलाशादिक तिसकी शाखाके विषे और उपसूर्यक नाम सूर्यके समीपवर्त्ती मंडल परिवेषाख्यमें परिधि शब्द वर्त्ते है साहूकारके घर ऋणके मोचनपर्यन्त विश्वासके लिये जो वस्तु रक्खा जाता है वह बंधक संज्ञिक है व्यसन नाम आपदा और चेतःपीडा अर्थात् मानसी व्यथा और अधिष्ठान नाम अध्यासन यह तीनों आधि संज्ञिक है ॥ ९७ ॥

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ॥ दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥ मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥ विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे बिलेऽवधिः ॥ ९९ ॥

समर्थ नाम योग्य अयोग्यकी परीक्षा और नीवाक नाम वनधान्यादिकोंके विषें जनोंका आदरातिशय और नियमअंगीकार यह तीनों समाधि संज्ञिक हैं दोषके सिद्ध करनेमें और जो कि प्रकृति प्रत्यय आगम आदेशके विषे विनश्वर अर्थात् नाशवान इत्संज्ञिक अक्षर हो उसमें ॥ ९८ ॥ और जो कि मुख्यपित्रादिकके पिछारी चलता है उस शिशु नाम बालकमें और प्रकृतके अनुवर्त्तनमें अर्थात् किये हुए कार्यके करनेकी निवृत्तिके अभावमें अनुबन्ध शब्द वर्त्ते है विष्णुमें और चंद्रमामें विधु शब्द

वर्त्ते है. परिच्छेद नाम सीमा और बिल नाम छिद्र इनमें अवधि शब्द वर्त्ते है ॥ ९९ ॥

विधिर्विधाने दैवेऽपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥ देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ॥ विधा विधौ प्रकारे च साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥

विधानमें और दैव नाम पूर्वके शुभाशुभकर्ममें और अपिशब्दसें ब्रह्मामें विधि शब्द वर्त्ते है. प्रार्थनामें और चर नाम हलकारेमें प्रणिधि शब्द वर्त्ते है. बुध वृद्ध शब्द पंडितमें वर्त्ते हैं. अपिशब्दसें बुध नाम चंद्रपुत्रमें वर्त्ते है और वृद्ध नाम बूढेमें वर्त्ते है. समुदय अर्थात् समूहमें अपिशब्दसें कांडमें और राजामें और कॉधेमें स्कंध शब्द वर्त्ते है. ॥ १०० ॥ देश नाम देशभेदमें और नदविशेषमें और अब्धि—(समुद्र) में पुंलिंग सिन्धु शब्द होता है. और सरित् नाम नदीके विषैं सिंधु शब्द स्त्रीलिंगमें होता है. विधि नाम विधानमें और प्रकारमें विधा शब्द वर्त्ते है. रम्य नाम सुन्दरमें और अपिशब्दसें वार्धुषिक और सज्जनमें साधु शब्द वर्त्ते है. यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ॥ संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥ मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽप्यन्धं तमस्यपि ॥ अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डितंमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥ ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्देशेऽथावलम्बितः ॥ अविदूरेऽप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ॥ १०४ ॥

॥ इति धान्ताः ॥

जाया (भार्या) और स्नुषा (पुत्रकी स्त्री) और स्त्री नाम स्त्रीमात्र वधू संज्ञिक हैं. लेप अर्थात् जिसकरकें देवस्थानादिक लीपे जाते हैं वह, और अमृत और स्नुही नाम सेहुंडवृक्ष यह तीनों सुधा संज्ञिक हैं. प्रतिज्ञा नाम स्वीकार और मर्यादा संधा संज्ञिक हैं. और संप्रत्यय (आदर) और स्पृहा (कांक्षा) श्रद्धा संज्ञिक है ॥ १०२ ॥ मद्य नाम मदिरामें और फूलके रसमें और क्षौद्र नाम सहतमें मधु शब्द वर्त्ते है. तमस् नाम अंधकारमें और अपिशब्दसें नेत्रहीनमें अंध शब्द वर्त्ते हैं. इस्सें परें धांतवर्गपर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें होते हैं. पंडितंमन्य अर्थात् जो कि आत्माकों पण्डित मानता है वह और गर्वित यह दोनों समुनद्ध संज्ञिक हैं ॥ ॥ १०३ ॥ अधिक्षेप अर्थात् निन्दाप्रयोगमें और निर्देशमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंका ब्रह्मबंधु नाम होता है. अवलंबित नाम आश्रित और अविदूर नाम समीपवर्त्ती और अपिशब्दसें बँधा हुआभी अवष्टब्ध संज्ञिक है. ख्यात नाम विख्यात और भूषित यह दोनों प्रसिद्ध संज्ञिक हैं ॥ १०४ ॥

॥ इति धान्ताः ॥

सूर्यवह्नी चित्रभानू भानू रश्मिदिवाकरौ ॥ भूतात्मानौ धातृदेहौ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥१०५॥ ग्रावाणौ शैलपाषाणौ पत्रिणौ शरपक्षिणौ ॥ तरुशैलौ शिखरिणौ शिखिनौ वह्निबर्हिणौ ॥ १०६ ॥

इसके अनन्तर नान्तशब्दोंको दिखाते हैं सूर्य और वह्नि नाम अग्नि यह दोनों चित्रभानु संज्ञिक है रश्मि (किरण) और दिवाकर (सूर्य) भानु संज्ञिक है धातृनाम ब्रह्मा और देह भूतात्मन् संज्ञिक हैं और मूर्ख और नीच पृथग्जन संज्ञिक है ॥ १०५ ॥ शैल (पर्वत) और पाषाण नाम पत्थर यह दोनों ग्रावन् संज्ञिक है शर (बाण) और पक्षी यह दोनों पत्रिन् संज्ञिक है तरु नाम वृक्ष और शैल (पर्वत) यह दोनों शिखरिन् संज्ञिक है वह्नि (अग्नि) और बर्हिन (मोर) यह दोनों शिखिन् संज्ञिक हैं ॥ १०६ ॥

प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहावथ सादिनौ ॥ द्वौ सारथिहयारोहौ वाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः ॥ १०७ ॥ कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः ॥ वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥

लिप्सा (वांछा) और उपग्रह नाम अनुकूल करना यह दोनों प्रतियत्न संज्ञिक हैं सारथि नाम रथादिकके हाँकनेवाला और हयारोह अर्थात् घोडेका सवार यह दोनों सादिन् संज्ञिक है और अश्व (घोडा) और इषु (बाण) और पक्षी यह तीनों वाजिन् संज्ञिक है ॥ १०७ ॥ कुल नाम वंशमें और जन्मभूमि अर्थात् जन्मके स्थानमें और अपिशब्दसें कुल मुख्यमें अभिजन शब्द वर्त्ते है वर्ष और अर्चि नाम ज्वाला वा किरण और व्रीहिभेद यह तीनों हायन संज्ञिक है चन्द्र और अग्नि और अर्क (सूर्य) यह तीनों विरोचन संज्ञिक है ॥ १०८ ॥

क्लेशेऽपि वृजिनो विश्वकर्मार्कसुरशिल्पिनोः ॥ आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥ शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ॥ घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ॥ ११० ॥

और क्लेशमें वृजिन शब्द वर्त्ते है अपिशब्दसें पाप तथा टेढेके विषें वृजिन शब्द नपुंसकलिंग है अर्क नाम सूर्य और सुरशिल्पी नाम देवशिल्पी इन दोनोंमें विश्वकर्मन् शब्द वर्त्ते है यत्न और धृति (धारणा) और बुद्धि और स्वभाव ब्रह्म (परमात्मा) और वर्ष्म (शरीर) यह आत्मन् संज्ञिक हैं ॥१०९॥ शक्र नाम इन्द्र और घातुक मत्तेभ अर्थात् मारनेवाला मतवाला हाथी और वर्षुकाब्द अर्थात् वर्षनेवाला मेघ यह सब घनाघन संज्ञिक हैं मेघमें और मूर्त्तिगुण—(काठिन्य) में पुंलिंग घन शब्द होता है और मूर्त्त नाम कठिनमें

और निरन्तर नाम घनेमें घनशब्द तीनों-लिंगके विषैं होता है ॥ ११० ॥

अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ॥ इनः सूर्ये प्रभौ राजा मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥ वाणिन्यौ नर्तकीदूत्यौ स्रवन्त्यामपि वाहिनी ॥ ह्लादिन्यौ वज्रतडितौ वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥

अर्थादि अर्थात् धनपशुकुलगुणादिक करके जो दर्प नाम गर्व है, उसमें और ज्ञानमें और प्रणय नाम प्रेममें और हिंसामें अभिमान शब्द वर्त्ते है. सूर्यमें इन शब्द वर्त्ते है. प्रभु नाम स्वामीमें और मृगांक नाम चंद्रमामें और क्षत्रियमें और नृप नाम नरपतिमें राजन् शब्द वर्त्ते है. ॥ १११ ॥ नर्त्तकी (नॉचनेवाली) और दूती यह दोनों वाणिनी संज्ञिक हैं. स्रवंती नाम नदी और अपिशब्दसें सेनामें वाहिनी शब्द वर्त्ते है. वज्र नाम कुलिश और तडित् नाम विजुली यह दोनों ह्लादिनी संज्ञिक हैं. वंदा नाम वृक्षके ऊपर उत्पन्न हुई लताविशेष यानी अमरवेलि इसमें और अपिशब्दसें विलासिनीस्त्रीमें कामिनी शब्द वर्त्ते है. ॥ ११२ ॥

त्वग्देहयोरपि तनुः सूनाऽधोजिह्विकापि च ॥ क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥ मन्देऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ॥ वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥

त्वचा और देह इन दोनोंमें और अपिशब्दसें विरल तथा कृश और अल्पमें तनु शब्द वर्त्ते है. अधोजिह्विका नाम गलकंठिका यानी घांटी और अपिशब्दसें पुत्री और वधस्थान सूना संज्ञिक है. क्रतु नाम यज्ञ और विस्तार फैलाव इन दोनोंमें स्त्रीलिंग वर्जित वितान शब्द होता है. और तुच्छक नाम शून्य और मंदके विषैं वितान शब्द तीनों लिंगोंमें होता है. ॥ ११३ ॥ कृत्यमें और केतु नाम ध्वजामें और उपनिमंत्रण यानी निवासमें केतन शब्द वर्त्ते है. वेद (ऋग्वेदादि) और तत्व (चैतन्य) और तप यह तीनों नपुंसलिंगवाची ब्रह्मन् संज्ञिक हैं. और विप्र (ब्राह्मण) और प्रजापति ब्रह्मा यह पुंलिंगवाची ब्रह्मन् संज्ञिक हैं ॥ ११४ ॥

उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम् ॥ आतञ्चनं प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥ व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ॥ स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥

उत्साहन (उत्साह करनेमें) और हिंसामें और सूचन नाम जतानेमें गंधन शब्द वर्त्ते है. प्रतीवाप नाम दूधआदिकमें तक्रादिकका डालना और जवन (वेग) और आप्यायन (तृप्त करना) इन अर्थों-

वाला आतचन शब्द है ॥ ११५॥ लाछन नाम चिन्ह और श्मश्रु (डाढी) और निष्ठान नाम भोजन और अवयव (भेद) इन अर्थोंमें व्यजन शब्द होता है लोकवाद नाम लोकनिन्दामें और पशु सर्प पक्षियोंके युद्धमें कौलीन शब्द वर्त्ते है ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ॥ अवकाशे स्थितौ स्थानं क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥ उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च॥ व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥

निःसरण नाम गृहादिकसें निकलनेमे और वनभेद यानी उपवनमें और प्रयोजनमें उद्यान शब्द वर्त्ते है अवकाशमें और स्थितिमें स्थान शब्द वर्त्ते है क्रीडाके विषे और आदिशब्दसें व्यवहारमें तथा जीवनेकी इच्छा आदिकमें परिदेवन शब्द वर्त्ते है ॥ ११७ ॥ पौरुष नाम पुरुषार्थमें और तन्त्र नाम कुटुम्बकृत्यमें और बैठे हुएके उठनेमें अपिशब्दसें पुस्तकमें तथा रणमें तथा मलरोगमें उद्यममें उत्थान शब्द वर्त्ते है प्रतिरोध तिरस्कार और विरोधके आचरणमें और अपिशब्दसें स्वातन्त्र्यकृत्यमें व्युत्थान शब्द वर्त्ते है ॥ ११८ ॥

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ॥ निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥ निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ॥ व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥

मारण नाम पाराआदिक धातुओंके मारनेमें और मृतसस्कार अर्थात् मृतकके अग्निदाहमें और गति नाम गमनमें और द्रव्यनाम धनमें और अर्थदापन नाम धनादिकके दिवावनेमें निर्वर्त्तन नाम अर्थके सिद्ध करनेमें और उपकरण नाम परिकर वा उपायमें और अनुव्रज्या नाम पिछारी चलनेमें और अपिशब्दसें सेना तथा मेढ्रमें साधन शब्द वर्त्ते है ॥ ११९ ॥ वैरशुद्धिमें और दान नाम त्यागमें और न्यासार्पण अर्थात् धरोहर सौंपनेमें निर्यातन शब्द वर्त्ते है विपद नाम विपत्तिमें भ्रश नाम नाशमें और कामज कोपज दोष अर्थात् शिकार जुआ स्त्री मदिरापान कामजदोषमें और वाक्पारुष्यादिक कोपजदोषमें व्यसन शब्द वर्त्ते है १२०

पक्ष्माक्षिलोम्नि किंजल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि ॥ तिथिभेदे क्षणे पर्व वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥ अकार्यगुह्ये कौपीनं मैथुनं संगतौ रते॥ प्रधानं परमात्मा धीः प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥

अक्षिलोम अर्थात् नेत्रके बालमें और किंजल्क नाम केसरमें और अति अल्प तन्तुआदिकके अंशमें यानी सूत आदिकके अतिसूक्ष्म अंशमें पक्ष्मन् शब्द वर्त्ते है तिथि-

भेद (अष्टमी अमावसी पौर्णमासी) आदिक तिथियोंमें और क्षण नाम उत्सवमें पर्वन् शब्द वर्त्ते है. नेत्रच्छद नाम नेत्रके ढकनेवाले चर्मपुटमें और अध्वा नाम मार्गमें वर्त्मन् शब्द वर्त्ते है ॥ १२१ ॥ अकार्य नाम नहीं करनेयोग्यमें तथा गुह्य नाम उपस्थ इंद्रियमें कौपीन शब्द वर्त्ते है. संगति नाम भार्यादिकसंबन्धमें और रत नाम सुरतमें मैथुन शब्द वर्त्ते है. परमात्मा (परमेश्वर) और धी (बुद्धि) प्रधान संज्ञिक हैं. बुद्धि और चिन्ह इन दोनोंमें प्रज्ञान शब्द वर्त्ते है ॥ १२२ ॥

प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधनं कुलनाशयोः ॥ क्रन्दने रोदनाह्वाने वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥ गृहदेहत्विट्प्रभावा धामान्यथ चतुष्पथे ॥ संनिवेशे च संस्थानं लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥

पुष्प और फल इन दोनोंके विषैं प्रसून शब्द वर्त्ते है.कुल और नाश इन दोनोंमें निधन शब्द वर्त्ते है. रोदन नाम रोना और आव्हान नाम बुलाना यह दोनों क्रन्दन संज्ञिक हैं. देह और प्रमाण इन दोनोंमें वर्ष्मन् शब्द वर्त्ते है. ॥ १२३ ॥ गृह और त्विष (प्रभा) और प्रभाव यह चार धामन संज्ञिक हैं. चतुष्पथ नाम चहूटेमें. और सन्निवेश (अंगविभागमें) संस्थान शब्द वर्त्ते है. और चकारसें मरणमें तथा आकृतिमेंभी सन्निवेश शब्द वर्त्ते है. चिन्ह और प्रधान इन दोनोंमें लक्ष्मन् शब्द वर्त्ते है. ॥ १२४ ॥

आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे ॥ आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥ अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ॥ रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥

संपिधान नाम छिपना और अपवारण नाम वस्त्रादिकसें ढकना यह दोनो आच्छादन संज्ञिक हैं. साधन नाम सिद्ध करनेमें और अवाप्ति नाम लाभमें और तोषण नाम तुष्टिमें आराधन शब्द वर्त्ते है ॥ १२५ ॥ चक्र नाम पहिया और पुर (नगर) और प्रभाव और अध्यासन नाम दबाकर बैठनेमें अधिष्ठान शब्द वर्त्ते है. स्वजातिश्रेष्ठ नाम जो कि अपनी जातिमें श्रेष्ठ उसमें और अपिशब्दसें मणिमेंभी रत्न शब्द वर्त्ते है. सलिल नाम जल और कानन नाम वन यह दोनों वन संज्ञिक हैं ॥ १२६ ॥

तलिनं विरले स्तोके वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ॥ समानाः सत्समैके स्युः पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥ हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ वेगिशूरौ तरस्विनौ ॥ अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्गतावपि ॥ १२८ ॥

॥ इति नान्ताः ॥

१लेख्ये भूम्यादिदानार्थे यातनाऽऽज्ञा च शासनम् । निदानमवसाने च सार्थे वार्धुषिके धनी ॥ १ ॥ कक्षापटेपि कौपीनं न ना खेदे

कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतावपि ॥ परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥ गोधुग्गोष्ठपती गोपौ हरविष्णू वृषाकपी ॥ बाष्पमूष्माश्रु कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥

विरल नाम वेगरा और स्तोक (अल्प) इन दोनोंमें तलिन शब्द वर्त्ते है यह शब्द वाच्यलिंग अर्थात् विशेष्यलिंग है और जैसें कि यह शब्द विशेष्यलिंग है वैसें उत्तर (अगारी) आनेवाले नानवर्ग समाप्तिपर्यन्त वाच्यलिंग है सत् (पंडित) और सम (सदृश) और एक यह तीनों समान संज्ञिक है खल (दुर्जन) और सूचक (चुगल) यह दोनों पिशुन संज्ञिक है ॥ १२७ ॥ ऊन (अल्प) और गर्ह्य (निन्दायोग्य) यह दोनों हीन न्यून संज्ञिक है वेगी (वेगयुक्त) और शूर (बली) यह दोनों तरस्विन् संज्ञिक है अपराद्ध (अपराधवाला) और अभिग्रस्त नाम वैरीकर दबाया हुआ और व्यापद्गत अर्थात् प्राप्तहुई विपत्तिवाला यह सब अभिपन्न संज्ञिक है ॥ १२८ ॥

॥ इति नानार्थ ॥

पि वेदना ॥ द्युम्न वऽलेथ भार्यापि जातिदोषेऽपि लाछनम् ॥ २ ॥

यह दो श्लोक नान्तप्रकरणमें क्षेपक हैं

पृथिवी आदिकके दानके वास्ते लिखनेयोग्यमे यातना शब्द वर्त्ते है और आज्ञा शासन संज्ञिक है और अवसानमें निदान शब्द वर्त्ते है और सार्थ नाम धनयुक्त और वार्धुषिक नाम व्योहरमें धनिन् शब्द वर्त्ते है ॥ १ ॥ कासके वस्त्रमें कौपीन शब्द वर्त्ते है और खेदके विषे वेदना शब्द पुलिंग नही है किन्तु स्त्री नपुसकलिंग है और बलमें द्युम्न शब्द वर्त्ते है और भार्या और जातिदोषमें लाछन शब्द वर्त्ते है ॥ २ ॥

इसके अनन्तर षान्त शब्द कहते है भूषण नाम गहनेमात्रमें और बर्ह नाम मोरपाँखमें और तूणीर नाम तरकसमें और संहति नाम समूहमें और अपिशब्दसें काचीमें कलाप शब्द वर्त्ते है परिच्छद नाम पट मंडप आदिक उपकरणमें और पर्युप्ति अर्थात् चारोंओरसें बोनेमें और सलिलस्थिति अर्थात् जलके आधारमें परीवाप शब्द वर्त्ते है ॥ १२९ ॥ गोदुह् नाम गौओंका दूहनेंवाला और गोष्ठपति गौओंके स्थानका मालिक यह दोनों गोप संज्ञिक है हर नाम शिव और विष्णु यह दोनों वृषाकपि संज्ञिक हैं ऊष्म नाम गरम और अश्रु नाम आँसू यह दोनों बाष्प संज्ञिक है अथवा ऊष्माश्रु अर्थात् जो कि गरम आसू है वह बाष्प संज्ञिक है अन्न (भोजन) और आच्छादन (वस्त्र) यह दोनों कशिपु संज्ञिक हैं यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होता है क्योंकि अगारी कहाहुआ अस्त्रिया यह पद कशिपु और तल्प इन दोनोंके विषे अन्वित है ॥ १३० ॥

तल्पं शय्याट्टदारेषु स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ॥ प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥ भेद्यलिङ्गा अमी कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ॥ कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाह्नोऽष्टमेंऽशके ॥ १३२ ॥

॥ इति पान्ताः ॥

शय्या नाम पल्यंक और अट्ट (अटारी) और दारा (स्त्री) इनके विषें तल्प शब्द वर्त्ते है. स्तंब नाम तृणादिकके गुच्छामें अपिशब्दसें विस्तार तथा शाखामें विटप शब्द वर्त्ते है. यह तीनों शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगमें होते हैं. बुध नाम पंडित और मनोज्ञ नाम सुन्दर इन दोनोंमें प्राप्तरूप स्वरूप अभिरूप शब्द वर्त्ते हैं. यह तीनों शब्द भेद्यलिंग अर्थात् विशेष्यलिंग हैं ॥ १३१ ॥ कूर्मी नाम कच्छपी और वीणाभेद अर्थात् सरस्वतीकी वीणा कच्छपी संज्ञिक है. जो कि हरिणके रोमसें उत्पन्न हुआ पट नाम वस्त्र है उसमें और दिनके अष्टम भागमें कुतुप शब्द वर्त्ते है ॥ १३२ ॥

॥ इति पान्ताः ॥

१ रवर्णे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिंगकः; शिफा शिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि॥१॥शफं मूले तरूणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च । गुंफः स्याद्गुंफने वाहोरलंकारेच्च कीर्त्तितः ॥ २ ॥

यह दोश्लोक क्षेपक हैं इनका अर्थ यह है—रवर्ण नाम रकारके विषें रेफ शब्द पुंलिगमें होता है और कुत्सित (निन्दितके) विषें रेफशब्द वाच्यालिंग यानी विशेष्यलिंग है शिखा नाम चोटीके विषें और सरित नाम नदीके विषें और मासिका नाम जटामांसीके विषें और माताके विषें शिफा शब्द वर्त्ते है.॥१॥और वृक्षोंकी जडमें और गौ आदिक पशुओंके खुरमें शफ शब्द वर्त्ते है और गुंफन नाम गूहनेमें और भुजाओंके गहनेमें गुफ शब्द वर्त्ते है. ॥ २ ॥

॥ इति फान्ताः ॥

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने ॥ कम्बुर्ना वलये शङ्खे द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ॥१३३॥पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुंबहुत्वेऽपि पूर्वजान्॥ ॥ इति वान्ताः ॥ कुम्भौ घटेभमूर्धांशौ डिम्भौ तु शिशुबालिशौ ॥ १३४ ॥

इसके अनन्तर वकारकी सवर्णता होनेसें वान्त और वान्त शब्दकों कहते हैं. अंतराभवसत्व अर्थात् जो कि जन्म और मरणके बीचमें स्थित हुआ प्राणी है उसमें और अश्व नाम घोडामें और दिव्य गान करनेवाले विश्वावसुआदिकमें गंधर्व शब्द वर्त्ते है. वलय नाम पहुचीमें और शंखमें पुंलिग कंबु शब्द वर्त्ते है. सर्प और सूचक नाम चुगल यह दोनों द्विजिह्व संज्ञिक हैं ॥ १३३ ॥ यदि जो पूर्वशब्द प्राक् अर्थको कहै तो अन्यलिंग अर्थात् विशेष्यलिंग होता है. और यदि जो पूर्वशब्द पूर्वज पितामह आदिकको कहै तो पुंलिंग और बहुवचनमें होता है.

॥ इति वान्ताः ॥

इसके अनन्तर भान्त शब्दोंकों कहते हैं घट नाम कलश और इभमूर्द्धांश अर्थात् हाथीके मस्तकका भाग यह दोनों कुम्भ संज्ञिक है शिशु नाम बालक और बालिश नाम मूर्ख यह दोनों डिंभ संज्ञिक है॥१३४॥

स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ शंभू ब्रह्मत्रिलोचनौ ॥ कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा विस्रम्भः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥ स्याद्भेर्यां दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ॥ स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥

स्थूणा नाम घरका स्तंभ और जडीभाव नाम जडता यह दोनों स्तंभ संज्ञिक हैं ब्रह्मा और त्रिलोचन (महादेव) यह दोनों शंभु संज्ञिक है कुक्षि नाम उदर और भ्रूण नाम गर्भमें स्थित हुआ प्राणी और अर्भक (बालक) यह गर्भ संज्ञिक है प्रणय नाम स्नेहमें अपिशब्दसें विश्वास तथा वधमें विस्रम्भ शब्द वर्त्ते है ॥ ॥ १३५ ॥ भेरीके विषै दुंदुभि शब्द पुलिंगमें होता है और अक्ष नाम बालक्रीडाका उपकरण जिसकों तिर्तिरिंगि बोलते है उसमें दुंदुभि शब्द स्त्रीलिंगमें होता है महारजन नाम कसूममें नपुंसकलिंग कुसुंभ शब्द होता है और करक नाम कमंडलुमें पुलिंग कुसुंभ शब्द वर्त्ते है ॥ १३६ ॥

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ॥ सभा संसदि सभ्ये च त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः ॥ १३७ ॥

॥ इति भान्ताः ॥

किरणप्रग्रहौ रश्मी कपिभेकौ प्लवंगमौ ॥इच्छामनोभवौ कामौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८ ॥

क्षत्रियके विषै अपिशब्दसें मुख्यनृपमें तथा चक्रमध्यमें पुलिंग नाभि शब्द होता है और चकारसें नाभिशब्द प्राणीके अंगमें स्त्रीपुलिंगके विषै होता है और मृगभेदमें नाभिशब्द स्त्रीलिंग है गौकेविषै सुरभि शब्द स्त्रीलिंगमें होता है और चकारसें वसन्त तथा जातीफल तथा चंपकके विषै पुलिंग और सुगन्धि तथा मनोहरके विषै तीनों लिंगवाचक और सुवर्ण तथा कमलमें नपुंसकलिंग होताहै संसद् नाम सभा और सभ्य नाम सभाके बैठने योग्यमें सभा शब्द वर्त्ते है अध्यक्ष नाम स्वामीमें अपिशब्दसें प्यारेमें और लक्षणयुक्त घोडामें वल्लभ शब्द वर्त्ते है यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है. परन्तु लक्षणयुक्त घोडामें पुलिंग है॥१३७॥

॥ इति भान्ता. ॥

इसके अनन्तर मान्त शब्दोंकों कहते हैं. किरण और प्रग्रह नाम घोडाआदिकोंके बाधनेकी रस्सी यह दोनों रश्मि संज्ञिक हैं कपि नाम बन्दर और भेक नाम मेंडक यह दोनों प्लवगम संज्ञिक है इच्छा और मनोभव (कामदेव) यह दोनों काम संज्ञिक

हैं. शौर्य (सामर्थ्य) और उद्योग यह दोनों पराक्रम संज्ञिक हैं. ॥ १३८ ॥

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ॥ उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥ वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो नागरो वणिक् ॥ नैगमौ द्वौ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १४० ॥

पुण्य और यमराज तथा न्याय तथा स्वभाव तथा आचार तथा सोमप यानी सोमका पीनेंवाला यह सब धर्म संज्ञिक हैं. जो कि उपायपूर्वक आरंभ है, वह और उपधा नाम मंत्रियोंके शीलकी परीक्षाका उपाय और चकारसें चिकित्सा और विक्रम उपक्रम संज्ञिक है ॥ १३९ ॥ वणिक्पथ नाम वाणिज्य और पुर (नगर) और वेद यह निगम संज्ञिक हैं. नागर नाम नगरके रहनेवाला और वणिक् (वणियाँ) यह दोनों नैगम संज्ञिक हैं. बल नाम बलदेवाख्य श्रीकृष्णके भ्राताके विषें राम शब्द पुंलिंग है. और नील नाम काला और चारु (सुन्दर) और सित नाम श्वेत इनके विषें राम शब्द तीनों लिंगोंमें होता है ॥ १४० ॥

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः क्रान्तौ च विक्रमः ॥ स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्मस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४१ ॥ गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ॥ क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

शब्दादिक हैं पूर्व जिसके ऐसा ग्राम शब्द वृन्द नाम समूहमें वर्त्ते है. जैसें—शब्दग्रामः—अर्थात् शब्दोंका समूह और अपि शब्दसें ग्राममें तथा स्वरमें ग्राम शब्द होता है. क्रान्तिमें तथा चकारसें पराक्रममें विक्रम शब्द वर्त्ते है. स्तोत्रमें और अध्वर नाम यज्ञमें और वृंद नाम समूहमें स्तोम शब्द वर्त्ते है. कुटिल और अलस नाम आलसीमें जिह्म शब्द वर्त्ते है ॥ १४१ ॥ रुक् नाम रोगभेद स्तंब नाम कुशादिकोंका गुच्छा और सेना तथा चकारसें सेनाकी रक्षा गुल्म संज्ञिक हैं. स्वसृ नाम बहनि कुलस्त्री नाम कुलवधू इन दोनोंमें जामि शब्द वर्त्ते है. क्षिति (पृथिवी) और क्षांति (क्षमा) इनमें क्षमा शब्द वर्त्ते है. युक्त नाम योग्यमें क्षम शब्द वर्त्ते है. और शक्त नाम समर्थ और हित नाम प्रियमें क्षम शब्द तीनों लिंगमें होता है. ॥ १४२ ॥

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा ॥ ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥ सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये प्रधाने प्रथमस्त्रिषु ॥ वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वावधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥

१उष्णेऽपि घर्मश्चेष्टालंकारे भ्रान्तौ च विभ्रमः॥ उष्ण नाम गरममें तथा अपिशब्दसें पसीनेमें घर्म शब्द वर्त्ते है. चेष्टालंकार नाम (हावमें) और भ्रांतिमें चकारसें शोभामें विभ्रम शब्द वर्त्ते है.

हरित नाम हरा और कृष्ण नाम काला यह दोनों श्याम संज्ञिक हैं यह शब्द तीनों लिंगोंमें होता है शारिवा शतावरी और निशा नाम हलदी वा रात्रि श्याम संज्ञिक है. पुच्छ नाम पूछ और पुंड्र नाम अश्वादिकोंका ललाट चिह्न और अश्व (घोडा) और भूषा नाम आभूषण और प्राधान्य नाम प्रधान और केतु नाम ध्वजा इनमें ल लाम शब्द होता है ॥ १४३ ॥ अध्यात्म नाम आत्मामें अधिकार किया हुआ लिंगदेह और अपिशब्दसें कैतव और अतिअल्प सूक्ष्म संज्ञिक है आद्यमें तथा प्रधान नाम मुख्यमें प्रथम शब्द होता है यहासे मान्तवर्गपर्यन्त शब्द तीनों लिंगोंमें होते हैं वल्गु नाम सुन्दर और प्रतीप नाम विपरीत यह दोनों वाम संज्ञिक हैं. न्यून नाम अल्प और कुत्सित (निन्दित) यह दोनों अधम संज्ञिक है ॥ १४४ ॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ॥

॥ इति मान्ताः ॥

तुरंगगरुडौ तार्क्ष्यौ निलयापचयौ क्षयौ ॥१४५॥ श्वशुर्यौ देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ॥ पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः ॥१४६॥

जीर्ण (पुराना) और परिभुक्त अर्थात् भोगकर त्यागा हुआ यह दोनों यातयाम संज्ञिक हैं

॥ इति मान्ताः ॥

इसके अनन्तर यान्त शब्दोंको कहते हैं. तुरग (घोडा) और गरुड तार्क्ष्य संज्ञिक हैं निलय नाम घर और अपचय (घटना) यह दोनों क्षय संज्ञिक है. ॥१४५॥ देवर नाम पतिका भाई और श्याल नाम स्त्रीका भाई यह दोनों श्वशुर्य संज्ञिक है भ्रातृज नाम भाईका पुत्र और द्विष् नाम वैरी यह दोनों भ्रातृव्य संज्ञिक हैं रसदब्द नाम शब्द करनेवाला मेघ और इंद्र यह दोनों पर्जन्य संज्ञिक है और स्वामी और वैश्यमें अर्य शब्द वर्ते है ॥ १४६ ॥

तिष्यः पुष्ये कलियुगे पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥ प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥ १४७ ॥ रन्ध्रे शब्देऽथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ॥ स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥

पुष्य नाम पुष्य नक्षत्रमें और कलियुगमें तिष्य शब्द वर्ते है अवसर प्रस्तावमें और क्रममें पर्याय शब्द वर्ते है अधीन नाम आधीन और शपथ अर्थात् सौगन्द और ज्ञान और विश्वास और हेतु (कारण) इनमें ॥ १४७ ॥ और रंध्र नाम छिद्रमें और शब्द नाम विचादिक प्रत्ययोंमें प्रत्यय शब्द वर्ते है दीर्घद्वेष नाम बहुतकालका वैर और अनुताप नाम पछिताना इन दोनोंमें अनुशय शब्द वर्ते है असाकल्य नाम असमग्रतामें और हाथीयोंकी मध्यमगति अर्थात् जो कि न बहुत शीघ्र न बहुत मंद

गति है उसमें अपिशब्दसें पर्वतसें भ्रष्ट हुए मोटे २ पत्थरोंमें स्थूलोच्चय शब्द वर्त्ते है ॥ १४८ ॥

समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ॥ व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥ अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि ॥ युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ॥ १५० ॥

शपथ नाम सौगन्द और आचार और काल और सिद्धान्त तथा संविद् (संभाषा) यह समय संज्ञिक हैं. व्यसन द्यूतादिक और अशुभ दैव नाम अशुभ भाग्य और विपत्ति यह तीनों अनय संज्ञिक हैं ॥ १४९ ॥ अतिक्रम नाम उलंघनमें और कृच्छ्र नाम कष्टमें और दोषमें तथा दंडमें और अपिशब्दसें नाशमें अत्यय शब्द वर्त्ते है. आपदामें और युद्धमें और आयति नाम आनेवाले कालमें संपराय शब्द वर्त्ते है. श्वशुरमें और अपिशब्दसें पूजाके योग्यमें पूज्य शब्द वर्त्ते है ॥ १५० ॥

पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ ॥ संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥ विस्रम्भयाच्ञाप्रेमाणो विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥ विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥

पश्चादवस्थायि बल नाम जो कि सेनाके पिछले भागमें स्थित होवे है, वह और समवाय नाम समूह यह दोनों सन्नय संज्ञिक हैं. संघात नाम समूहमें और सन्निवेश नाम समीचीन वासस्थानमें और विस्तृतिमें संस्त्याय शब्द वर्त्ते है. ॥ १५१ ॥ विस्रम्भ नाम विश्वास और याञ्चा नाम माँगना और प्रेम नाम स्नेह यह तीनों प्रणय संज्ञिक हैं विरोधमें और अपिशब्दसें उन्नतिमें समुच्चय शब्द वर्त्ते है. जिसका जो जाना हुआ पदार्थ है उसमें और शब्दादिक अर्थात् शब्द स्पर्श रूप रस गंध इनमें और अपिशब्दसें देशमें विषय शब्द वर्त्ते है ॥ १५२ ॥

निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री सभायां च प्रतिश्रयः ॥ प्रायो भूम्न्यन्तगमने मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि ॥ १५३ ॥ रहस्योपस्थयोर्गुह्यं सत्यं शपथतथ्ययोः॥ वीर्यं बले प्रभावे च द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ॥ १५४ ॥

निर्यास नाम क्वाथ रसमें और अपिशब्दसें विलेपनादिकमें कषाय शब्द वर्त्ते है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है. सभामें और चकारसें आश्रय तथा अंगीकारमें प्रतिश्रय शब्द वर्त्ते है. भूमन् नाम बाहुल्य अर्थमें और अंतगमन अर्थात् जिसकरकें अंत यानी नाश प्राप्त होवै उस अभोजनमें प्राय शब्द वर्त्ते है. दैन्य दीनतामें और क्रतु नाम यज्ञमें और क्रोधमें मन्यु शब्द वर्त्ते है ॥ १५३ ॥ रहस्य नाम गोप्य यानी छिपानेयोग्यमें और उपस्थ इंद्रियमें गुह्य शब्द वर्त्ते है. शपथ नाम सौगन्दमें और त-

थ्यनाम सत्यमें सत्य शब्द वर्त्ते है बल नाम सामर्थ्यमें और प्रभावमें और चकारसें रेतसमें तथा शक्तिमें वीर्य शब्द वर्त्ते है भव्य नाम सत्वमें और गुणाश्रय पृथिव्यादिकमें चकारसें धनमें द्रव्य शब्द वर्त्ते है ॥१५४॥

धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ॥ कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं विशल्या दन्तिकाऽपि च ॥ १५५ ॥ वृषाकपायी श्रीगौर्योरभिख्या नामशोभयोः ॥ आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ॥ १५६ ॥ उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ॥ छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ॥ १५७ ॥

स्थानमें तथा गृहमें तथा भ नाम नक्षत्रमें तथा अग्निमें धिष्ण्य शब्द वर्त्ते है जो कि शुभ तथा अशुभ कर्म है, वह भाग्य सज्ञिक है यह शब्द ऐश्वर्यके विषेभी होता है कशेरु और हेम नाम सुवर्ण इनदोनोंमें गांगेय शब्द वर्त्ते है दंतिका नाम दन्तीवृक्ष और अपिशब्दसें अग्निशिखा तथा गिलोयभी विशल्या सज्ञिक है ॥ १५५ ॥ श्री (लक्ष्मी) और गौरी (पार्वती) में वृषाकपायी शब्द वर्त्ते है नाम और शोभामें अभिख्या शब्द वर्त्ते है आरंभ और निष्कृति (प्रायश्चित्त) और शिक्षा और पूजन तथा संप्रधारण (विचार) ॥ १५६ ॥ और उपाय और कर्म और चेष्टा और चिकित्सा यह नौ शब्द क्रिया सज्ञिक हैं सूर्यप्रिया नाम शनैश्चरकी माता और कान्ति और प्रतिबिम्ब तथा अनातप नाम छाँह यह छाया सज्ञिक है ॥१५७॥

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभबन्धने ॥ कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ॥ १५८ ॥ जन्यं स्याज्जनवादेऽपि जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ॥ गर्ह्याहीनौ च वक्तव्यौ कल्यौ सज्जनिरामयौ ॥ १५९॥

हर्म्यादिकके प्रकोष्ठ नाम अन्तर्गृहमें तथा काची नाम कौंधनीमें और मध्येभबधन यानी हाथीके कमरबांधनेकी रस्सीमें कक्ष्या शब्द वर्त्ते है, क्रिया (कर्म) और देवता नाम देवविशेष इनमें कृत्या शब्द वर्त्ते है और धनादिक करके भेदन करनेयोग्य पुरुषादिकके विषै कृत्या शब्द तीनों लिंगोंमें होता है ॥ १५८ ॥ जनवाद नाम निन्दित वादमें अपिशब्दसें युद्धादिकमें जन्य शब्द वर्त्ते है अन्त्यमें और अधम नाम नीचमें जघन्य शब्द वर्त्ते है. और अपिशब्दसें शिश्न इन्द्रियमेंभी जघन्य शब्द वर्त्ते है गर्ह्य नाम निन्दित और अहीन यह दोनों और चकारसें कहनें योग्य वक्तव्य सज्ञिक है सज्ज नाम मन्त्रादिकसें रक्षित और निरामय (नीरोग) यह दोनों कल्य सज्ञिक हैं. ॥ १५९ ॥

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ पुण्यं तु चार्वपि ॥ रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि वदान्यो वल्गुवागपि॥१६०॥न्याय्येऽपि मध्यं सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते[1] ॥

॥ इति यान्ताः ॥

आत्मवान् बुद्धिमान् और जो कि अर्थसें अनपेत अर्थात् वर्जित नहीं है, वह यह दोनों अर्थ संज्ञिक हैं. चारु नाम सुन्दरमें और अपिशब्दसें सुकृत तथा धर्ममें पुण्य शब्द वर्त्ते है. प्रशस्तरूप अर्थात् जिसका कि श्रेष्टरूप हो उसमें और अपिशब्दसें गढीहुई चांदी सोनेमें रूप्य शब्द वर्त्ते है. वल्गुवाक् नाम सुन्दर वाणीवाला और अपिशब्दसें देनेवालाभी वदान्य संज्ञिक है ॥ १६० ॥ न्याय्य नाम उचितमें तथा अपिशब्दसें मध्यभागमें मध्य शब्द वर्त्ते है. और सुन्दरमें तथा सोमदेवतावाले पुरोडाशादिकमें सौम्य शब्द वर्त्ते है. और तुशब्दसें बुधमें पुंलिंग सौम्य शब्द होताहै.

॥ इति यान्ताः ॥

निवहावसरौ वारौ संस्तरौ प्रस्तराऽध्वरौ ॥ १६१ ॥ गुरू गीर्पतिपित्राद्यौ द्वापरौ युगसंशयौ ॥ प्रकारौ भेदसादृश्ये आकाराविङ्गिताकृती ॥ १६२ ॥

इसकेअनन्तर रान्तशब्द कहते हैं. निवह नाम समूह और अवसर नाम पस्ताव यह दोनों वार संज्ञिक हैं. प्रस्तर नाम कुशमुष्टि वा कुशशय्या और अध्वर (यज्ञ) यह दोनों संस्तर संज्ञिक हैं ॥ १६१ ॥ गीर्पतिनाम बृहस्पति और पित्रादिक गुरु संज्ञिक हैं. आदिशब्दसें शास्त्रके पढानेवालाभी गुरु संज्ञिक है. युग और संशय नाम संदेह यह दोनों द्वापर संज्ञिक हैं. भेदविशेष और सादृश्य यह दोनों प्रकार संज्ञिक हैं. इंगित (चेष्टित) और आकृति (स्वरूप) यह दोनों आकार संज्ञिक हैं ॥ १६२ ॥

---

१ सर्वज्ञभिषजौ वैद्यौ कुल्या कुलवधू । सरित् । फलकल्याणयोर्भव्यं योग्यं सांप्रतिके त्रिषु ॥ १ ॥ क्रियाचारातिक्रमेपि जलाधारेपि चाशयः । दैत्याचार्येपि धिष्ण्यो ना कषायः सुरभावपि ॥ २ ॥ चंद्रोदये वितानेपि स्यादाम्नायोऽन्वये श्रुतौ ॥

यह ढाईश्लोक क्षेपक हैं इनका अर्थ यह है.

सर्वज्ञ और भिषज (चिकित्सा करनेवाला) यह दोनों वैद्य संज्ञिक हैं. कुलवधू और सरित् (नदी) कुल्या संज्ञिक हैं. फल तथा कल्याणमें भव्य शब्द वर्त्ते है. और सांप्रतिकमें तीनों लिंगोंकेविषै योग्य शब्द वर्ते है. चारातिक्रममें तथा अपिशब्दसें आरंभादिकमें क्रिया शब्द वर्त्ते है. और जलके आधारमें तथा अपिशब्दसे अभिप्रायमें आशय शब्द वर्त्ते है. और दैत्याचार्य शुक्रमें पुंलिंग तथा अपिशब्दसे स्थानादिकमें धिष्ण्य शब्द वर्त्ते है. सुरभि नाम सुगन्धिमें अपिशब्दसें क्वाथरसमें कषाय शब्द वर्त्ते है २ चंद्रोदयमें तथा वितानमें तथा अन्वयमें तथा श्रुतिनाम वेदमें आम्नाय शब्द वर्त्ते है.

किशारू सस्यशूकेषू मरू धन्वधराधरौ ॥ अद्रयो द्रुमशैलार्काः स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ॥ १६३ ॥ ध्वान्वारिदानवा वृत्रा बलिहस्तांशवः कराः ॥ प्रदरा भङ्गनारीरुग्बाणा अस्त्राः कचा अपि ॥ १६४ ॥

सस्यशूक नाम धान्यके तीकुरोंमें और इषु नाम बाणमें किंशारु शब्द वर्त्ते है कंकपक्षबाणमेंभी यह शब्द होताहै धन्वानाम निर्जलदेश तथा धराधर पर्वत यह दोनों मरु सज्ञिक हैं. द्रुम(वृक्ष)और शैल(पर्वत)और अर्क(सूर्य)यह तीनों अद्रि सज्ञिक है स्त्रियोंके स्तन (कुच) और अब्द (मेघ) यह दोनों पयोधर सज्ञिक है ॥१६३॥ ध्वान्तनाम अंधकार अरि(शत्रु) और दानव (दैत्यभेद) यह वृत्र सज्ञिक है बलिनाम राजा कर लेनेयोग्य भाग और हाथ और अंशु (किरण) यह कर सज्ञिक हैं भगनाम भाँग नारीरुक् स्त्रियोंका रोगभेद और बाण प्रदर सज्ञिक है कच (बाल) और अपिशब्दसें कोणभी अस्त्र सज्ञिक हैं ॥ १६४ ॥

अजातशृङ्गो गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च तूवरौ ॥ स्वर्णेऽपि राः परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः ॥ १६५ ॥ मुक्ताशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु ॥ कर्बुरेऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः ॥ १६६ ॥

नही उत्पन्न हुए है सींग जिसके ऐसा गोनाम बैल और काल नाम समयकेविषे नही है श्मश्रु अर्थात् डाढी जिसके ऐसा नर यह दोनों तूबर सज्ञिक है. सुवर्णकेविषें और अपिशब्दसें वित्तमानकेविषे रै शब्द वर्त्ते है पर्यंक नाम पलिका तथा परिवार (कुटुम्ब) इन दोनोंमें परिकर शब्द वर्त्ते है. ॥ १६५ ॥ मुक्ताशुद्धि अर्थात् मोतियोंके शुद्ध करनेमें तथा चकारसें तरनेमें तथा ऊचेस्वरमें तार शब्द वर्त्ते है वायु नाम पवनमें शार शब्द वर्त्ते है और वहही शारशब्द कर्बुरवर्णमें तीनों लिंगकेविषे होता है प्रतिज्ञा और आजि (युद्ध) और सविद् (क्रियाकार) यानी कर्मनियम और आपदाके विषे संगर शब्द वर्त्ते है ॥ १६६ ॥

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो रवावपि ॥ मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरुर्गुह्येऽप्यवस्करः ॥ १६७ ॥ आडम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ॥ अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च ॥ १६८ ॥

वेदभेदमें तथा गुप्तवाद अर्थात् एकान्तमें करनेयोग्य निश्चयमें मन्त्र शब्द वर्त्ते है रविनाम सूर्यमें और अपिशब्दसें सखामें मित्र शब्द वर्त्ते है मखनाम यज्ञमें यूपखण्डमें तथा अपिशब्दसें वज्रमें स्वरु शब्द वर्त्ते है गुह्य नाम उपस्थ इंद्रियमें अपिशब्दसें विष्ठामें अवस्कर शब्द वर्त्ते है. ॥ १६७ ॥ तूर्यरवनाम बाजोंके शब्दमें और हाथियोंके

गर्जनेमें आडंबर शब्द वर्त्ते है. अभियोग-नाम अभिग्रहणमें और चोरीमें तथा सन्नहन अर्थात् कवचादिकके ग्रहणमें अभियोग शब्द वर्त्ते है. ॥ १६८ ॥

स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोषे परिच्छदे ॥ विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम् ॥ १६९ ॥ द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्य्यप्यनन्तरे ॥ विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना पिङ्गले त्रिषु ॥ १७० ॥

जंगम नाम जंगमविशेष परिजनमें खड्गकोश अर्थात् तलवारके ढकनेवाले चर्मादिकमें और परिच्छद नाम उपकरण छत्र चौर आदिकमें परीवार शब्द वर्त्ते है. विटपी (वृक्ष) और दर्भमुष्टि नाम कुशोंकी मुष्टि और पीठाद्य आसन अर्थात् चौकी आदिक आसन विष्टर संज्ञिक हैं. ॥ १६९ ॥ द्वार नाम दरवाजेमें और द्वाःस्थनाम ड्योढीवानमें प्रतीहार शब्द होताहै. और अनन्तर द्वारपालमें अर्थात् अनन्तरकरके कहेहुए ड्योढीवानमें प्रतीहारी शब्द होताहै. विपुलनकुलमें अर्थात् वडे न्योलेमें और विष्णुमें पुंलिंग बभ्रु शब्द होताहै. और पिंगलवर्णमें बभ्रुशब्द तीनोंलिंगकेविषैं होताहै ॥१७०॥

सारो वले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु ॥ दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् ॥ १७१ ॥ महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुंनपुंसकम् ॥ मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु १७२

वलमें और स्थिरांशनाम वृक्षादिकके कठोरभागमें पुंलिंग और न्याय्यनाम न्याय्ययुक्तमें नपुंसक और वर नाम श्रेष्ठमें तीनोंलिंगोंके विषे सार शब्द होताहै. द्यूतकारनाम जुआरीमें और पणनाम वाजीमें पुंलिंग दुरोदर शब्द वर्त्ते है. और द्यूतनाम जुआमें नपुंसकलिंग दुरोदर शब्द वर्त्ते है ॥ १७१ ॥ महारण्य नाम वडेभारी वनमें दुर्गपथ नाम दुर्गममार्गमें पुंनपुंसकलिंग कान्तार शब्द होताहै. अन्य शुभद्वेषनाम दूसरेके शुभके वैरमें यानी पराई संपदाके न सहनेमें और तद्वत् नाम जो कि उस मत्सरतासें युक्त हो वह और कृपण इन दोनोंमें मत्सर शब्द वर्त्ते है. तिसमें पिछले दोनों अर्थोंकेविषैं मत्सरशब्द तीनोंलिंगमें होताहै. ॥ १७२ ॥

देवाहृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनाक्प्रिये ॥ वंशाङ्कुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना ॥ १७३ ॥ ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ॥ यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ॥ १७४ ॥ शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ॥ शर्करा कर्परांशेऽपि यात्रा स्याद्यापने गतौ॥१७५॥

देवाहृत अर्थात् देव सकाशसें वरेहुए इच्छित अर्थमें पुंलिंग और श्रेष्ठके विषैं

तीनों लिंगमें और मनाक्प्रिय नाम कुछ थोड़े प्यारेमें नपुसक वर शब्द होता है वशाकुरनाम वाशके अकुरमें स्त्रीलिगवर्जित और तरुभेदनाम वृक्षभेदमें और घटनाम कलशमें पुलिग करीर शब्द होता है॥१७३॥ चमू जघननाम सेनाके पिछले भागमें पुलिग और हस्तसूत्र अर्थात् जो कि मगलकेवास्ते मन्त्रोंसें अभिमन्त्रितकर सूत्र हाथमें बाँधा-जाता है उसमें स्त्रीलिगवार्जित पुनपुसकलि-गके विषे प्रतिसर शब्द वर्त्ते है यम (यमराज) और अनिल (पवन) और इद्र तथा चद्रमा तथा अर्क (सूर्य) और सिह तथा अशु (किरण) और वाजि (घोडा) ॥ १७४ ॥ और शुक (शुआ) और अहि (सर्प) और कपि (बन्दर) और भेक (मेंडक) इनके विषे पुलिग और कपिल वर्णके विषें तीनों लिगमें हरि शब्द वर्त्ते है कर्पराश नाम वालूके विषे और अपिशब्दसें खाडके विकारमें तथा वालूयुक्त देशमें रोगभेदमें तथा शकलमें शर्करा शब्द वर्त्ते है यापन नाम प्रस्थानमें तथा गति नाम गमनमें यात्रा शब्द वर्त्ते है और देवताओंके पूजनेके उत्सवमेंभी यह शब्द वर्त्ते है ॥ १७५ ॥

इरा भूवाक्सुराप्सु स्यात्तन्द्री निद्राप्रमीलयोः॥ धात्री स्यादुपमाताऽपिक्षितिरप्यामलक्यपि ॥ १७६ ॥ क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका॥ त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्रं मात्रा परिच्छदे ॥ १७७ ॥

भू (पृथिवी) वाक् (वाणी) और सुरा (मदिरा) और अप् (जल) इनके विषे इरा शब्द वर्त्ते है निद्रा और प्रमीला अर्थात् श्रमादिकसें जो कि सब इद्रियोंमें आलस आजाता है वह इन दोनोंमें तद्री शब्द वर्त्ते है उपमाता दूध देनेवाली तथा क्षिति (पृथिवी) और आमलकी वृक्षविशेष और अपिशब्दसें माताभी धात्री सज्ञिक है ॥ १७६ ॥ व्यगानाम अगहीन स्त्री और नटी (नाँचनेवाली) और वेश्या और सरघा नाम सहतकी माखी और कटकारिका नाम भटकटाई यह क्षुद्रा सज्ञिक है क्रूरमें अधम नाम नींचमें और अल्पनाम छोटेमें और अपिशब्दसें कृपणमें तथा दरिद्रमें तीनों लिगोंके विषे क्षुद्र शब्द वर्त्ते है परिच्छद नाम उपकरणमें अल्पनाम थोडेमें और परिमाणमें मात्रा शब्द वर्त्ते है ॥ १७७ ॥

अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कार्त्स्न्येऽवधारणे ॥ आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ॥ १७८ ॥ योग्यभाजनयोःपात्र पत्रं वाहनपक्षयोः ॥ निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं शस्त्रमायुधलोहयोः ॥ १७९ ॥

और कार्त्स्न्य नाम समग्रता अर्थमें और अवधारण नाम निश्चयार्थमें नपुमकलिंग मात्र शब्द होता है आलेख्यनाम भींति आ-

दिकपर अनेक वर्णोंका लिखना और आश्चर्य अचरज इन दोनोंमें चित्र शब्द वर्त्ते है. श्रोणि नाम कटि और भार्या (स्त्री)इनके विषैं कलत्र शब्द वर्त्ते है. ॥ १७८ ॥ योग्य और भाजन नाम वर्त्तन इन दोनोंमें पात्र शब्द वर्त्ते है. वाहन (अश्वादिक) और पक्ष नाम पांख इन दोनोंमें पत्र शब्द वर्त्ते है. निदेश (आज्ञा) और ग्रन्थ (व्याकरणादिक) इन दोनोंमें शास्त्र शब्द वर्त्ते है. आयुध नाम हतियार और लोह इन दोनोंमें शस्त्र शब्द वर्त्ते है ॥ १७९ ॥

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ॥ मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८० ॥ सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च॥ अजिरं विषये कायेऽप्यम्बरं व्योम्नि वाससि ॥ १८१ ॥

जटानाम वृक्षकी जड और अंशुक नाम वस्त्रभेद इन दोनोंमें नेत्र शब्द वर्त्ते है. पत्नी (स्त्री) और देह (शरीर) इन दोनोंमें क्षेत्र शब्द वर्त्ते है. क्रोड नाम सूकर और हल इनके मुखाग्रमें पोत्र शब्द वर्त्ते है. नामके विषैं और चकारसें पर्वत तथा कुलके विषैं गोत्र शब्द वर्त्ते है ॥ १८० ॥ आच्छादन वस्त्रमें और यज्ञमें सदा दान अर्थात् नित्य त्यागमें और वनमें और अपिशब्दसें कैतवमें सत्र शब्द वर्त्ते है. विषय नाम रूपादिकमें तथा काय (शरीर) में और अपिशब्दसें आंगनमें अजिर शब्द वर्त्ते है. व्योम (आकाश) और वासस् (वस्त्र) इनमें अंबर शब्द वर्त्ते है ॥ १८१ ॥

चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि क्षीरमप्सु च ॥ स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥ गुहादम्भौ गह्वरे द्वे रहोऽन्तिकमुपह्वरे ॥ पुरोऽधिकमुपर्यग्राण्यगारे नगरे पुरम् ॥ १८३ ॥

राष्ट्रनाम देशमें तथा अपिशब्दसें सेनामें और पहियामें और चाक आदिकमें चक्र शब्द वर्त्ते है. मोक्षमें अपिशब्दसें वर्ण तथा परम ब्रह्म और आकाशआदिकमें अक्षर शब्द वर्त्ते है. अप्नाम जलमें और चकारसें दुग्धमें क्षीर शब्द वर्त्ते है. भूरिशब्द तथा चंद्रशब्द यह दोनों सुवर्णमें वर्त्ते हैं. अपिशब्दसें वासुदेव तथा शिव तथा ब्रह्मामें पुंलिंग भूरिशब्द वर्त्ते है. और चंद्रशब्द कपूर आदिकमें वर्त्ते है. द्वारमात्रमें तथा अपिशब्दसें पुरके दरवाजेमें गोपुर शब्द वर्त्ते है. ॥ १८२ ॥ गुहा और दम्भ (कपट) यह दोनों गह्वर संज्ञिक हैं रहस (एकान्त) और अंतिक (समीप) यह दोनों उपह्वर संज्ञिक हैं. पुरस् तथा अधिक तथा उपरि यह तीनों अग्र संज्ञिक हैं. अगार नाम घरके विषैं और नगरकेविषैं पुर मन्दिर शब्द वर्त्ते हैं. और चकारसें पुरशब्द शरीरमें वर्त्ते है. ॥ १८३ ॥

मन्दिरं चाथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ॥ दरोऽस्त्रिया भये श्वभ्रे वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ॥ १८४ ॥ तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ॥ औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ॥ १८५ ॥

विषय नाम देशमें और उपद्रव (मरणादिक) में स्त्रीलिंगवर्जित राष्ट्र शब्द वर्त्ते है भयमें तथा श्वभ्रनाम छिद्रमें दर शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगकेविषैं होता है हीरकनाम हीरामें और पवि (वज्र) में स्त्रीलिंगवर्जित वज्र शब्द होता है ॥१८४॥ प्रधानमें तथा सिद्धान्तमें और सूत्रवायनाम सूत बुननेवालेमें और परिच्छद (उपकरण) में तन्त्र शब्द वर्त्ते है चामर दंड अर्थात् चमरसंबन्धी दंडमें औशीर शब्द पुल्लिंगवाची वर्त्ते है और शयन तथा आसनमें नपुंसकलिंग औशीर शब्द वर्त्ते है ॥ १८५ ॥

पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले ॥ व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः ॥ १८६ ॥ अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये ॥ छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च ॥ १८७ ॥

हाथीके हाथके अग्रभागमें और बाजेके पात्रके मुखमें और जलमें तथा व्योमनाम आकाशमें और खड्गफल नाम तलवारके मध्यभागमें और पद्म नाम कमलमें और तीर्थविशेष और ओषधिविशेषमें पुष्कर शब्द वर्त्ते है ॥ १८६ ॥ अवकाशमें और अवधिमें और परिधानमें और अन्तर्धि और भेदमें और तादर्थ्यमें और छिद्रमें और आत्मीयमें और विनाअर्थमें और बहिरर्थमें और अवसरमें और मध्यमें और अन्तरात्मामें और चकारसें सादृश्यमें अन्तर शब्द वर्त्ते है ॥ १८७ ॥

मुस्तेऽपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम् ॥ शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् ॥ १८८ ॥ गौरोऽरुणे सिते पीते व्रणकार्यप्यरुष्करः ॥ जठरः कठिनेऽपि स्यादधस्तादपि चाधरः ॥ १८९ ॥

मुस्तनाम मुस्तक यानी मोथामें और अपिशब्दसे स्थालीमें तथा मन्थानमें पिठर शब्द वर्त्ते है राजकशेरु नाम जटासे उत्पन्न हुए तृणका मूल यानी नागरमोथा और अपिशब्दसे सोंठमें और चतुरमें नागर शब्द वर्त्ते है. अन्धतमनाम बड़े गाढे अन्धकारमें और घातुकनाम हिंसकमें शार्वर शब्द वर्त्ते है तिसमें घातुकके विषैं शार्वरशब्द भेद्यलिंगक यानी विशेष्यलिंग है ॥ १८८ ॥ अरुण (लाल) में सितनाम श्वेतमें और पीतनाम पीलेमें गौर शब्द वर्त्ते है और व्रणके करनेवाला तथा व्रणिकारक भिलावाबृक्ष अरुष्कर शब्दक है कठिननाम

केर्रमें और अपिशब्दसे उदरमें जठर शब्द वर्त्ते है. अधस्तात् अर्थात् नीचेमें और अपिशब्दसें ओष्ठ तथा हीनमें अधर शब्द वर्त्ते है. ॥ १८९ ॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले ॥ उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्यादनुत्तरः ॥ १९० ॥ एषां विपर्यये श्रेष्ठे दूरानात्मोत्तमाः पराः ॥ स्वादुप्रियौ तु मधुरौ क्रूरौ कठिननिर्दयौ ॥१९१॥ उदारो दातृमहतोरितरस्त्वन्यनीचयोः॥मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः ॥ १९२ ॥

॥ इति रान्ताः ॥

अनाकुल नाम स्वस्थमें और अपिशब्दसें एकतानमें एकाग्र शब्द वर्त्ते है. व्यासक्तमें तथा आकुल अर्थात् अनेक अर्थोंमें रक्खेहुए चित्तवालेमें व्यग्र शब्द वर्त्ते है. उपरिनाम ऊपरवाची अर्थ और उदीच्य नाम उत्तरदिशाके विषैं वर्त्तमान और श्रेष्ठ नाम मुख्य इनमें उत्तर शब्द वर्त्ते है. और इन उपर्यादिक शब्दोंके विपरीत भावमें श्रेष्ठमें अनुत्तर शब्द वर्त्ते है. ॥ १९० ॥ दूर और अनात्मा नाम आत्मासें अन्य और उत्तम (श्रेष्ठ) यह तीनों पर संज्ञिक हैं. स्वादु और प्रिय (प्यारा) यह दोनों मधुर संज्ञिक हैं. कठिन (करां) और निर्दय नाम दयाहीन यह दोनों क्रूर संज्ञिक हैं ॥ १९१ ॥ दातृ नाम दानी और महत्नाम वडा इन दोनोंमें उदार शब्द वर्त्ते है. अन्य नाम दूसरा और नीच इन दोनोंमें इतर शब्द वर्त्ते है. मंद (मुर्ख) और स्वच्छन्द नाम स्वाधीन इन दोनोंमें. स्वैर शब्द वर्त्ते है. उद्दीप्तनाम प्रकाशमान और शुक्ल इन दोनोंमें शुभ्र शब्द वर्त्ते है ॥१९२॥

॥ इतिरान्ताः ॥

चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ॥ द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९३ ॥ कृतान्तानेहसोः कालश्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ॥ स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥

इसके अनन्तर लान्त शब्द दिखाते हैं. चूडा (शिखा) और किरीट नाम मुकुट और संयतकेश अर्थात् बंधेहुए बाल यह तीनों मौलि संज्ञिक हैं. द्रुमप्रभेद नाम वृक्षभेद और मातंग (हाथी) और कांड (बाण) और पुष्प (फूल) यह पीलु संज्ञिक हैं ॥ १९३ ॥ कृतान्त नाम मृत्यु और अनेहस् (समय) इन दोनोंमें काल शब्द वर्त्ते है. चतुर्थयुगमें और अपिशब्दसें कलहमें कलि शब्द वर्त्ते है. कुरंगनाम हरिणमें और अपिशब्दसें जलमें आकाशमें तथा कमलमें कमल शब्द वर्त्ते है. प्रावार नाम ओढनेके वस्त्रमें तथा अपिशब्दसें बैलके गलेके लटके हुए चर्ममें तथा नागराजमें तथा कृमिमें कंबल शब्द वर्त्ते है १९४

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ॥ स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः ॥ १९५ ॥ वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ॥ भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

करनाम राजाकेलियें देनेयोग्य भाग और उपहारभेद इन दोनोंमें पुलिंगके विषे बलि शब्द वर्ते है और प्राणीके अंगमें उत्पन्नहुए त्वक्संकोचमें स्त्रीलिंगके विषे बलि शब्द वर्ते है स्थौल्यनाम स्थूलता और सामर्थ्य और सेनाके विषे नपुंसकलिंग और काक तथा सीरीनाम बलदेवके विषे पुंलिंग बल शब्द होता है ॥ १९५ ॥ वात्यानाम पवनसमूहके विषे पुल्लिंगमें और वातासह अर्थात् पवनविकारके नसहनेवाले प्राणीके विषे तीनों लिंगमें वातूल शब्द होता है और अपिशब्दसें वातुल शब्दभी होता है शठकेविषें भेद्यलिंग यानी विशेष्यलिंग और श्वापद तथा सर्पकेविषें पुलिंगमें व्याल शब्द होता है ॥ १९६ ॥

मलोऽस्त्री पापविट्किट्टान्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ॥ शङ्कावपि द्वयोः कीलः पालि. स्त्र्यश्र्यङ्कपङ्क्तिषु ॥ १९७ ॥ कला शिल्पे कालभेदेऽप्याली सख्यावली अपि ॥ अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥

पाप और विष्ठा और किट नाम [illegible] दिकमें उत्पन्न हुआ मैल यह तीनों मल संज्ञिक है. यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंग है. रुक्नाम रोगविशेष और आयुध शस्त्रविशेष यह दोनों शूल संज्ञिक है यह शब्द स्त्रीलिंगसें वर्जित है. शंकुनाम छोहकी बनीहुई कीलकेविषे दोनों स्त्रीपुलिंगमें और अपिशब्दसें ज्वालाकेविषे कील शब्द वर्ते है. अश्रिनाम धारा या कोण और अंक नाम गोद या चिह्न और पंक्ति (पाँति) इनकेविषे स्त्रीलिंग पालि शब्द होता है ॥ १९७ ॥ शिल्पनाम गीतवाद्यादिक निपुणताकेविषे और कालभेद नाम तीश काष्ठारूप कालकेविषें और अपिशब्दसें मूल धनकी वृद्धिमें और अशमात्रमें और चन्द्रमाके सोलहवें भागमें कला शब्द वर्ते है. सखी और आवलि (पंक्ति) यह दोनों आलि संज्ञिक है और अपिशब्दसें सेतुमेंभी आलि शब्द होताहै अब्ध्यम्बुविकृतिनाम समुद्रके जलके विकारमें यानी चंद्रोदयादिक करके जो कि समुद्रके जलकी वृद्धि होती है. उसमें और कालमें और मर्यादामें तथा अपिशब्दसे नदीसमुद्रादिकके तीरमें और अक्लिष्ट मरणमें रोगमें वेला शब्द वर्ते है ॥ १९८ ॥

बहुला छत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ [illegible] त्रिषु ॥ लीलाविलासक्रियचपला [illegible] च ॥ १९ [illegible] [illegible]णोऽभिपीलाऽ [illegible] [illegible]यो ॥ [illegible] [illegible]प्यपि ॥ २०० ॥

कृत्तिकातारा और गौ (धेनु) बहुला संज्ञिक हैं. यह शब्द बहुत होनेसें बहुवचन है. और अग्निके विषैं बहुल शब्द पुंलिंग होताहै. और शित नाम कृष्णवर्णमें तीनों लिंगके विषैं बहुल शब्द होताहै. विलास तथा क्रिया इन दोनोंमें लीला शब्द वर्त्ते है. शर्करा अर्थात् वालू वा खांडका विकार उपला संज्ञिक है. और अपिशब्दसें पत्थरके विषैं पुंलिंग यह शब्द होताहै ॥१९९॥ शोणित नाम लालमें और अंभस् नाम जलमें कीलाल शब्द वर्त्ते है. आद्यमें और शिफा नाम वृक्षकी जडमें और भ नाम मूलनक्षत्रमें मूल शब्द वर्त्ते है. समूहमें और आनाय नाम सनसूतकी बनाई हुई रस्सियोंका समूह और गवाक्ष नाम झरोखा और क्षारक नाम नवीन पुष्पकी कली इनमें और अपिशब्दसें दंभमें जाल शब्द वर्त्ते है२००॥

शीलं स्वभावे सद्वृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम् ॥ छदिर्नेत्ररुजोः क्लीबं समूहे पटलं न ना ॥ २०१ ॥ अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं स्याच्चामिषे पलम् ॥ और्वानलेऽपि पातालं चैलं वस्त्रेऽधमे त्रिषु ॥ २०२ ॥

स्वभाव (प्रकृति) में और सद्वृत्त नाम सच्चरितमें शील शब्द वर्त्ते है. सस्य नाम वृक्षादिकोंके फलमें तथा हेतुकृत यानी हेतुकरकें सिद्ध कियेहुएमें फल शब्द वर्त्ते है. और बाणका अग्रभागभी फल संज्ञिक है. छदिस् यानी छानी और नेत्ररुज् नाम नेत्रोंका रोग इनके विषैं नपुंसकलिंग और समूहकेविषैं पुंलिंग नहीं किन्तु स्त्रीनपुंसकलिंग पटल शब्द होता है ॥ २०१ ॥ अधः नाम नीचे अर्थमें और स्वरूपमें स्त्रीलिंगवर्जित तल शब्द वर्त्ते है. आमिषनाम मांसकेविषैं पल शब्द वर्त्ते है. और यह शब्द उन्मानमेंभी होता है. और्वानल नाम वाडवाग्निमें और अपिशब्दसें छिद्रमें पाताल शब्द वर्त्ते हैं. वस्त्रके विषैं नपुंसक लिंग और अधम नाम नीचके विषैं तीनोंलिंगमें चैल शब्द वर्त्ते है ॥ २०२ ॥

कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः ॥ २०३ ॥ पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ॥ प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०४ ॥ करालो दन्तुरे तुङ्गे चारौ दक्षे च पेशलः ॥ मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्याल्लोलश्चलसतृष्णयोः॥२०५॥

॥ इति लान्ताः ॥

कीलोंकरकें व्याप्त हुए श्वभ्र नाम छिद्रमें कुकूल शब्द वर्त्ते है. और तुषानल नाम भुसीकी गारामें पुंलिंग कुकूल शब्द वर्त्ते है. निर्णीत नाम निश्चित अर्थमें नपुंसकलिंग और एक और कृत्स्न नाम समग्र अर्थ इन दोनोंमें तीनों लिंगवाचक केवल शब्द होता है ॥ २०३ ॥ पर्याप्ति (सामर्थ्य) और

क्षेम (कल्याण) और पुण्य इनके विषे नपुंसकलिंग और शिक्षित अर्थमें तीनों लिंगके विषे कुशल शब्द वर्त्ते है अंकुरमें तथा अपिशब्दसें नूतन पत्र और विद्रुम तथा वीणादंडके विषें स्त्रीलिंगवर्जित प्रवाल शब्द वर्त्ते है. जड नाम मूर्खमें और अपि-शब्दसे मोटेमें तीनोंलिंगके विषें स्थूल शब्द वर्त्ते है ॥ २०४ ॥ दंतुर नाम ऊंचे २ दाँतोंसें युक्तमें तथा तुंग नाम ऊंचेमें कराल शब्द वर्त्ते है चारु नाम सुन्दरमें और दक्ष नाम चतुरमें पेशल शब्द वर्त्ते है मूर्खमें तथा अर्भक नाम बालकमें और अपिश-ब्दसें बालोंमें तथा हाथी घोडोंकी पूँछमें बाल शब्द वर्त्ते है चल नाम चलायमान और सतृष्ण नाम कांक्षायुक्त इन दोनोंमें लोल शब्द वर्त्ते है २०५ ॥

॥ इति लान्ता ॥

दवदावौ वनारण्यवह्नी जन्महरौ भ-वौ ॥ मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशा-खिनरा धवाः ॥ २०६ ॥ अवयः शैलमेषार्का आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः॥ भाव: सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मज-न्मसु ॥ २०७ ॥

इसके अनन्तर वान्तशब्द कहते हैं वन और अरण्यवह्नि (वनाग्नि) यह दोनों दव दाव संज्ञिक हैं जन्म और हर (महा-देव) यह दोनों भव संज्ञिक है मंत्री नाम सलाह देनेवाला और सहाय यह दोनों सचिव संज्ञिक है पति (स्वामी) और शाखी (वृक्ष भेद) और नर (मनुष्य) यह धव संज्ञिक हैं ॥ २०६ ॥ शैल (पर्वत) और मेष (मेंढा) और अर्क (सूर्य) यह अवि संज्ञिक हैं. आज्ञा और आह्वान नाम बुलाना वा पुकारना और अध्वर (यज्ञ) यह हव संज्ञिक है. सत्ता और स्वभाव और अभिप्राय तथा चेष्टा तथा आत्मा तथा जन्म इनके विषे भाव शब्द वर्त्ते है ॥ २०७ ॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमो-चने ॥ अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृता-वपि निह्नवः ॥ २०८ ॥ उत्सेका-मर्षयोरिच्छाप्रसवे मह उत्सवः ॥ अ-नुभावः प्रभावे च सतां च मतिनि-श्चये ॥ २०९ ॥

उत्पाद नाम उत्पत्तिके विषें और फलमें तथा पुष्पमें तथा गर्भके छोडनेमें प्रसव शब्द वर्त्ते है सन्तान अर्थमेंभी प्रसवशब्द होता है अविश्वासमें और अपह्नव नाम अपला-पमें और निकृति नाम छलमें निह्नव शब्द वर्त्ते है ॥ २०८ ॥ उत्सेक नाम ऊपरको उगना और अमर्ष (क्रोध) इन दोनोंमें तथा इच्छाके प्रसर नाम वेगमें और मह नाम क्षण यानी आनन्दके अवसरमें उत्सव शब्द वर्त्ते है प्रभावमें और सत्पुरुषोंको मति नाम ज्ञानके निश्चयमें तथा चकारसें भाव सूचनमें अनुभाव शब्द वर्त्ते है॥२०९॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये ॥ शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः ॥ २१० ॥ ध्रुवो भभेदे क्लीबं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ॥ स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने ॥ २११ ॥

आद्योपलब्धि नाम प्रथम ज्ञानकेवास्ते जो स्थान है वह और जो कि जन्मका कारण पित्रादिक है वह प्रभव संज्ञिक है. और चकारसें जन्ममूलभी प्रभव संज्ञिक है. शूद्रास्त्रीकेविषैं विप्रतनय नाम ब्राह्मणसें उत्पन्नहुए पुत्रमें और शस्त्रमें पारशव शब्द माना है ॥ २१० ॥ भभेद नाम नक्षत्रभेदमें पुंलिंग और निश्चित अर्थमें नपुंसकलिंग और शाश्वत नाम नित्यमें तीनों लिंगके विषैं ध्रुव शब्द वर्त्ते है. ज्ञाति नाम सगोत्रमें तथा आत्मा (क्षेत्रज्ञ) के विषैं पुंलिंग स्व शब्द वर्त्ते है. और आत्मीय अर्थात् आत्मसंबन्धी पदार्थके विषैं तीनों लिंगमें स्व शब्द वर्त्ते है. और धनके विषैं स्त्रीलिंगवर्जित पुंनपुंसकलिंगके विषैं स्व शब्द वर्त्ते है॥२११॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी परिपणेऽपि च ॥ शिवा गौरीफेरवयोर्द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥ २१२ ॥ द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ॥ क्लीबं नपुंसकं षण्ढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥ २१३ ॥

॥ इति वान्ताः ॥

स्त्रियोंकी कटिके विषैं जो कि वस्त्रका बन्धन है उसमें और परिपण नाम बनियोंके मूल धनमें तथा अपिशब्दसें राजपुत्रादिकोंके बंधकमें नीवी शब्द वर्त्ते है. गौरी (पार्वती) और फेरव (स्यार) इन दोनोंमें शिवा शब्द वर्त्ते है. कलह और युग्म नाम दो इनमें द्वंद्व शब्द वर्त्ते है ॥ २१२ ॥ द्रव-वस्तु और असु (प्राण) और व्यवसाय नाम वीर्यातिशय इनके विषैं नपुंसकलिंग और जन्तुओंके विषैं स्त्रीलिंगवर्जित सत्व शब्द होता है. षंढ नाम हीजरामें नपुंसकलिंग क्लीव शब्द वर्त्ते है. और अविक्रम नाम आलसीमें वाच्यलिंग यानी विशेष्यलिंग क्लीवशब्द होताहै. बकारवकारकी सवर्णता होनेसें इस शब्दका यहाँ ग्रहण है. ॥२१३॥

॥ इति वान्ताः ॥

द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ ॥ द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥ २१४ ॥ रहःप्रकाशौ वीकाशौ निर्वेशो भृतिभोगयोः ॥ कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५ ॥

इसके अनन्तर शान्त शब्दोंको कहते हैं. वैश्य और मनुज (मनुष्य) यह दोनों विश् संज्ञिक हैं. चर नाम जो कि राजाका गुप्त पुरुष है और अभिमर (युद्ध) यह दोनों स्पश संज्ञिक हैं. पुंज (समूह) और मेषादिकराशि यह दोनों राशि संज्ञिक हैं.

कुल और मस्कर नाम वास यह दोनों वंग संज्ञिक हैं ॥ २१४ ॥ रह. (एकान्त) और प्रकाश यह दोनों वीकाश संज्ञिक हैं. भृति अर्थात् मजूरी और भोग (उपभोग) यह दोनों निर्वेश संज्ञिक हैं कृतांत नाम यममें पुंलिंगके विषें और क्षुद्र (कृपण) और कर्षक नाम खेती करनेवाला इन दोनोंके विषें तीनोंलिंगमें कीनाश शब्द होताहै ॥ २१५ ॥

पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्कुशमप्सु च ॥ दशाऽवस्थानेकविधाप्याशा तृष्णापि चायता ॥ २१६ ॥ वशा स्त्री करिणी च स्यादृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ॥स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि ॥ २१७ ॥

पद नाम व्याज यानी बहानेमें और लक्ष्य नाम निशानेमें और निमित्तमें अपदेश शब्द वर्त्ते है अप नाम जलोंके विषे नपुंसकलिंग और चकारसे रामपुत्रमें तथा दर्भमें तथा द्वीपमें पुंलिंग कुश शब्द होता है और जो कि अनेक प्रकारकी बाल्यादिकरूप अवस्था है वह दशा संज्ञिक है और अपिशब्दसे वस्त्रके अन्तभागमेंभी स्त्रीलिंग तथा बहुवचन दशाशब्द वर्त्ते है और जो आयत नाम दीर्घ तृष्णा (काला) है वह और चकारसे दिशाभी आशा संज्ञिक है ॥ २१६ ॥ स्त्री और करिणी नाम हथिनी वशा संज्ञिक है और चकारसे वाझ गौभी वशा संज्ञिक है ज्ञान नाम बुद्धिमें स्त्रीलिंग और ज्ञातानाम जाननेवालेमें तीनों लिंगके विषे दृश् शब्द वर्त्ते है यह शब्द दर्शन तथा नेत्रके विषेभी होता है साहसिक नाम विवेकवर्जित और कठोर (दृढ) और अमसृण नाम दुःस्पर्श यह कर्कश संज्ञिक है ॥ २१७ ॥

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि शिशावज्ञे च बालिशः ॥

॥ इति शान्ताः ॥

अति प्रसिद्धमें तथा अपिशब्दसे आतपमें प्रकाश शब्द वर्त्ते है. और शिशुनाम बालक और अज्ञनाम मूर्ख इनमें बालिश शब्द वर्त्ते है

॥ इतिशान्ता ॥

---

१ नाशः क्षये तिरोधाने जीवितेशः प्रिये यमे॥ नृशंसखड्गो निस्त्रिंशावंशुः सूर्यादिव करा १ आश्वारव्या शालिदीप्रार्थे पाशो बन्धनशस्त्रयो ॥

यह सार्धश्लोक और पुस्तकोंमें विशेष है इसका अर्थ यह है—

क्षयमें और तिरोधान नाम छापनेमें नाश शब्द वर्त्ते है और प्रियमें तथा यमराजमें जीवितेश शब्द वर्त्ते है नृशंस नाम क्रूर और खड्ग (तलवार) यह दोनों निस्त्रिंश संज्ञिक हैं सूर्यादिकके किरण और कर (हाथ) अंशु संज्ञिक है १ शालि नाम धान्यविशेष और शीघ्रार्थमें आशु नाम होय है और बंधन और शस्त्रमें पाश शब्द वर्त्ते है

सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१८ ॥ काकमत्स्यात्खगौ ध्वाङ्क्षौ कक्षौ तु तृणवीरुधौ ॥ अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ प्रैषः प्रेषणमर्दने ॥ २१९ ॥

इसके अनन्तर षान्त शब्दोंको कहते हैं. सुर (देवता) और मत्स्य नाम मछली यह दोनों अनिमिष संज्ञिक हैं. आत्मा (क्षेत्रज्ञ) और मानव (नर) यह दोनों पुरुष संज्ञिक हैं ॥ २१८ ॥ काक और मत्स्यात्खग अर्थात् मछलियोंका खानेवाला पक्षी बगुला आदिक यह दोनों ध्वांक्ष संज्ञिक हैं. तृण और वीरुध् नाम लता यह दोनों कक्ष संज्ञिक हैं. प्रग्रह नाम घोडा आदिकोंकी रस्सीमें और रश्मि नाम किरणमें अभीषु शब्द वर्त्ते है. प्रेषण नाम भेजनेमें और मर्दन नाम पीडामें प्रैष शब्द वर्त्ते है. ॥ २१९ ॥

पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ॥ शुक्ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ॥ २२० ॥ कोषोऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः॥ द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽथाक्षमिन्द्रिये ॥ २२१ ॥

सहायमें तथा अपिशब्दसें मासार्द्धादिकमें पक्ष शब्द वर्त्ते है. शिरोवेष्ट नाम पगडी और किरीट (मुकुट) इन दोनोंमें उष्णीष शब्द वर्त्ते है. शुक्ल नाम वृषणमें तथा मूषिक नाम मूसेमें तथा श्रेष्ठमें और सुकृत नाम धर्ममें और वृषभ नाम बैलमें वृष शब्द वर्त्ते है. ॥ २२० ॥ कुड्मल नाम कलीमें और खड्गपिधान नाम तरवारके म्यानमें तथा अर्थौघ नाम द्रव्यका समुदाय और दिव्य नाम शपथमें कोष शब्द वर्त्ते है. यह शब्द अस्त्री नाम पुंनपुंसकलिंगमें होवे है. द्यूत नाम जुआमें और अक्ष नाम फांसेमें और शारिफलकनाम चौपडमें और अपिशब्द आकर्षणमेंभी आकर्ष शब्द वर्ते है. और इंद्रियके विषैं अक्ष शब्द वर्त्ते है२२१

ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ॥ कर्षूर्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी ॥ २२२ ॥ पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषं विषमप्सु च॥ उपादानेऽप्यामिषं स्यादपराधेऽपि किल्बिषम् ॥ २२३ ॥

और द्यूतांग अर्थात् फांसेमें और कर्ष अर्थात् तोलभेदमें और चक्र अर्थात् पहियामें और व्यवहारमें और कलिद्रुम नाम विभीतक यानी बहेडेके वृक्षमें अक्ष शब्द ना अर्थात् पुंलिंग है. वार्त्ता (जीविका) और करीषाग्नि अर्थात् शूके हुए गोवरका अग्नि कर्षू संज्ञिक है. यह शब्द पुंलिंग है. और कुल्या नाम नदीभेदके नामवाला कर्षू स्त्रीलिंग है ॥ २२२ ॥ पुंभाव अर्थात् पुरुषके भावमें और तत्क्रिया अर्थात् उस पुरुषके कर्मके विषैं और चकारसें तेजके

विषें पौरुष शब्द वर्त्ते है अपनाम जलोंमें तथा चकारसें विषमें विष शब्द वर्त्ते है उपादान नाम उत्कोचमें और अपिशब्दसें मांसमें तथा सभोगमें और भोगनेयोग्य वस्तुमें आमिष शब्द वर्त्ते है. अपराधमें और अपिशब्दसें पापमें और रोगमें किल्बिष शब्द वर्त्ते है ॥ २२३ ॥

स्याद्वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ॥ प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा भिक्षा सेवार्थना भृतिः ॥ २२४ ॥ त्विड् शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कार्त्स्न्यनिकृष्टयोः ॥ प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ २२५ ॥

॥ इति षान्ताः ॥

वृष्टि नाम मेघ वर्षनेमें और लोकधात्वंश अर्थात् लोकधातु नाम जंबुद्वीप उसका अंश भारतादि खंड तिसमें और वत्सर नाम वर्षमें वर्ष शब्द वर्त्ते है यह शब्द स्त्रीलिंगवर्जित पुनपुंसकलिंगमें होताहै नृत्येक्षण नाम नृत्यका देखना और प्रज्ञा (बुद्धि) यह दोनों प्रेक्षा संज्ञिक हे सेवा और अर्थना (याञ्चा) और भृति अर्थात् मजदूरी यह भिक्षा संज्ञिक हैं और मागीहुई वस्तुमेंभी भिक्षा शब्द वर्त्ते है ॥ २२४ ॥ शोभा और अपिशब्दसें कान्ति तथा वाणी और रुचि त्विष् संज्ञिक हे पर नाम इससें अगारीके शब्द तीनों लिंगमें होतेहैं. कार्त्स्न्य नाम साकल्य और निकृष्ट नाम अधम इन दोनोंमें न्यक्ष शब्द वर्त्ते है. प्रत्यक्षमें और अधिकृत नाम नियुक्तमें अध्यक्ष शब्द वर्त्ते है अप्रेम नाम स्नेहके अभावमें और अचिक्कण नाम जो कि चिकना न हो उसमें रूक्ष शब्द वर्त्ते है ॥ २२५ ॥

॥ इति षान्ताः ॥

रविश्वेतच्छदौ हंसौ सूर्यवह्नी विभावसू ॥ वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ सारङ्गाश्च दिवौकसः ॥ २२६ ॥ शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ॥ पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ॥ २२७ ॥

इसकेअनन्तर सान्त शब्दोंको कहते हैं रवि नाम सूर्य और श्वेतच्छद (पक्षिभेद) यह दोनों हंस संज्ञिक हैं सूर्य और वह्नि (अग्नि) यह दोनों विभावसु संज्ञिक है तर्णक नाम गौका बच्छा और वर्ष यह दोनों वत्स संज्ञिक हैं सारंग (चातक) और चकारसें देवता दिवौकस् संज्ञिक हैं ॥ २२६ ॥ शृंगारादिक अर्थात् शृंगार वीर करुणादिकमें और विषमें और वीर्य नाम तेजमें और गुण अर्थात् स्वादु अम्लादिकमें और रागमें तथा द्रवमें रस शब्द वर्त्ते है कर्णपूर नाम कर्णके आभूषणविशेषमें तथा शेखर नाम शिरके आभूषणमें उत्तंस अवतंस शब्द वर्त्ते हैं. यह दोनों शब्द पुल्लिंगके विषे होते हे ॥ २२७ ॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसुः रत्ने धने वसु ॥ विष्णौ च वेधाः स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ॥ २२८ ॥ लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये हिंसा चौर्यादिकर्म च ॥ प्रसूरश्वापि भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते ॥ २२९ ॥

देवभेदमें तथा अनल नाम अग्निमें और रश्मि नाम किरणमें पुंलिंग वसु शब्द वर्त्ते है. रत्नमें तथा धनमें नपुंसक वसु शब्द वर्त्ते है. विष्णुके विषे और चकारसें ब्रह्माकेविषे वेधस् शब्द वर्त्ते है. हिताशंसा नाम हितका कहना यानी आशीर्वाद और अहिदंष्ट्रा नाम साँपकी डाढ इन दोनोंमें आशिस् शब्द वर्त्ते है. यह शब्द स्त्रीलिंग है ॥ २२८ ॥ प्रार्थना नाम याञ्चा यानी मागना और औत्सुक्य अर्थात् उत्सुकता यह दोनों लालसा संज्ञिक हैं. और तृष्णाकी अधिकतामेंभी लालसा शब्द होता है. और चौर्यादि कर्म अर्थात चोरी आदिक कर्म और चकारसें वधभी हिंसा संज्ञिक है. अश्वा (घोडी) और अपिशब्दसें माताभी प्रसू संज्ञिक है. भूद्यावौ नाम एकवचन करकें कहेहुये पृथिवी आकाश शब्द रोदस्यौ रोदसी संज्ञिक है ॥ २२९ ॥

ज्वालाभासौ न पुंस्यर्चिर्ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु ॥ पापापराधयोरागः खगबाल्यादिनोर्वयः ॥ २३० ॥ तेजःपुरीषयोर्वर्चो महस्तूत्सवतेजसोः ॥ रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे राहौ ध्वान्ते गुणे तमः ॥ २३१ ॥

ज्वाला तथा भास् (दीप्ति) के विषे अर्चिस् शब्द वर्त्ते है. यह पुंलिंगमें नहीं होता किन्तु स्त्री नपुंसकलिंगमें होता है. भ नाम नक्षत्र और द्योत नाम आकाश और दृष्टि नाम नेत्रके तारेका मध्यभाग इनके विषे ज्योतिस् शब्द वर्त्ते है. पाप और अपराध इन दोनोंके विषे आगस् शब्द वर्त्ते है. खग नाम पक्षी और बाल्यादिक अवस्थामें वयस् शब्द वर्त्ते है ॥ २३० ॥ तेज और पुरीष नाम विष्ठा इन दोनोंमें वर्चस् शब्द वर्त्ते है. उत्सव और तेज इन दोनोंमें महस् शब्द वर्त्ते है. गुण नाम गुणभेदमें तथा स्त्री पुष्प अर्थात् स्त्रीके आर्त्तवमें तथा चकारसें धूलिमें रजस् शब्द वर्त्ते है. राहु नाम ग्रहभेदमें और ध्वान्त नाम अन्धकारमें और गुण नाम गुणभेदमें तमस् शब्द वर्त्ते है.२३१

छन्दः पद्येऽभिलाषे च तपः कृच्छ्रादिकर्म च॥सहो बलं सहा मार्गो नभः खं श्रावणो नभाः ॥ २३२ ॥ ओकः सद्माश्रयश्चौकाः पयः क्षीरं पयोऽम्बु च ॥ ओजो दीप्तौ बले स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये ॥ २३३ ॥

पद्यनाम गायत्र्यादिक वृत्तमें और अभिलापमें और चकारसें स्वैराचारमें छन्दस् शब्द वर्त्ते है. और कृच्छ्रादि कर्म अर्थात कृच्छ्र नाम सांतपनादिव्रत और आदिश-

न्द्रसें चान्द्रायणादिक और चकारसें लोकान्तर तथा धर्ममें तपस् शब्द वर्त्ते है बल नाम बलवाचक सहस् शब्द नपुंसकलिंग है और मार्गनाम मार्गशीर्ष मासवाचक सहस् शब्द पुंलिंग है खनाम आकाशवाचक नभस् शब्द नपुंसकलिंग है और श्रावणमासवाचक नभस् शब्द पुलिंग है ॥ २३२ ॥ सद्म नाम गृहवाचक ओकस् शब्द नपुंसकलिंग है और आश्रयवाचक ओकस् शब्द पुलिंग है. क्षीर नाम दुग्ध और अम्बु नाम जल पयस् संज्ञिक है दीप्तिमें तथा बलमें ओजस् शब्द वर्त्ते है और इन्द्रियमें और निम्नगारय नाम नदीके वेगमें स्रोतस् शब्द वर्त्ते है ॥ २३३ ॥

तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽप्यतस्त्रिषु ॥ विद्वान्विदंश्च बीभत्सो हिंस्रोऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३४ ॥ वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान्कनीयांस्तु युवाल्पयोः ॥ वरीयांस्तूरुवरयोः साधीयान्साधुबाढयोः ॥ २३५ ॥

॥ इति सान्ताः ॥

प्रभावमें और दीप्तिमें तथा बलमें और शुक्रनाम वीरजमें तेजस् शब्द वर्त्ते है इससें परे सातवर्ग पर्यन्त शब्द तीनों लिंगमें होते हैं विद्वन् (ज्ञाता) और चकारसें आत्मज्ञभी विद्वस् संज्ञिक है हिंस्र नाम क्रूर और अपिशब्दसें रसभेदमें बीभत्स शब्द वर्त्ते है. यह कहेजानेवाले ज्यायस् आदिक साधीयस् शब्दपर्यन्त सात शब्द वृद्धादिक बाढपर्यंत शब्दोंके अतिशय अर्थमें जानने योग्य है ॥ २३४ ॥ वृद्ध नाम बडा और प्रशस्यनाम बडाई करनेयोग्य इन दोनोंके अतिशय अर्थमे ज्यायस् शब्द वर्त्ते है युवा और अल्पनामें थोडा इनदोनोके अतिशय अर्थमे कनीयस् शब्द वर्त्ते है उरु महान् और वर (श्रेष्ठ) इन दोनोंके अतिशय अर्थमें वरीयस् शब्द वर्त्ते है साधु और बाढनाम दृढ इन दोनोंके अतिशय अर्थमें साधीयस् शब्द वर्त्ते है ॥ २३५ ॥

॥ इतिसान्ताः ॥

दलेऽपि बर्हं निर्बन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः ॥ द्वारापीडे क्राथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥ २३६ ॥ तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च ॥ पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः ॥ २३७ ॥

इसके अनन्तर हान्तशब्द कहते है दलनाम पत्तेमें और अपिशब्दसें मोरपाखमेंभी बर्हं शब्द वर्त्ते है. निबन्धनाम आग्रह विशेष याना हठ और उपराग अर्थात् चन्द्रसूर्यका ग्रहण और अर्कादिक अर्थात् सूर्यादिक ग्रह ग्रह संज्ञिक हैं द्वार नाम दरवाजेमें और आपीड नाम शेखर यानी शिरके आभूषणोंमें और क्राथरस यानी काढेके रसमें नागदन्तक अर्थात् गृहादिककी भीतिमें स्थितहुए,दो कीलोंमें निर्व्यूह शब्द वर्त्ते है॥२३६॥

तुलासूत्र अर्थात् तराजूके सूतमें यानी जिसकों पकडकर कि तोलाजाता है और अश्वादिरश्मि अर्थात् घोडादिकोंकी रस्सीमें प्रग्राह प्रग्रह शब्द वर्त्ते हैं. पत्नी विवाहितस्त्री और परिजन (परिवार) और आदान (स्वीकार) और मूल तथा शाप यह परिग्रह संज्ञिक हैं ॥ २३७ ॥

दारेषु च गृहाः श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ॥ व्यूहो वृन्देऽप्यहिर्वृत्रेऽप्यग्नीन्द्वर्कास्तमोऽपहाः ॥ २३८ ॥ परिच्छदे नृपार्हेऽर्थे परिबर्हो–

॥ इति हान्ताः ॥

दारनाम स्त्रियोंके विषें और चकारसें घरकेविषें गृह शब्द वर्त्ते है. यह शब्द पुंलिंग तथा बहुवचनमें होता है. और उत्तमस्त्रीके श्रोणिनाम कटिमें और अपिशब्दसें सीजियोंमें तथा हाथीके आरोहमें तथा वस्त्रादिककी लंबाईमें और अवरोहमें आरोह शब्द वर्त्ते है. वृंदनाम समूहमें और अपिशब्दसें सेनाकी रचनामें व्यूह शब्द वर्त्ते है. और वृत्रनाम वृत्रासुरमें तथा अपिशब्दसें सर्पमें अहि शब्द वर्त्ते है. अग्नि और इंदु (चंद्रमा) और अर्क (सूर्य) यह तीनों तमोपह संज्ञिक हैं ॥ २३८ ॥ परच्छद नाम छत्र चामरादिकमें और नृपार्ह अर्थ अर्थात् राजाके योग्य द्रव्यमें परिवर्ह शब्द वर्त्ते है.

॥ इतिहान्ताः ॥

ऽव्ययाः परे ॥ आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ॥ २३९ ॥

इससेपरें कहेजानेवाले आङादिकशब्द अव्यय कहेजाते हैं. इस वर्गमें उन अव्यय शब्दोंका आरंभ पहिलेशब्दोंकी समान नानार्थ होनेसें किया गयाहै. ईषदर्थनाम अल्पार्थमें और अभिव्याप्ति अर्थात् सर्वत्र व्याप्ति होनेमें सीमार्थनाम मर्यादा अर्थमें और धातुयोगज अर्थात् धातुके योगसें उत्पन्नहुए अर्थमें आङ् अव्यय वर्त्ते है. इसमें ङकार उच्चारणकेवास्ते है. ॥ २३९ ॥

आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ॥ पापकुत्सेषदर्थे कु धिङ् निर्भर्त्सननिन्दयोः ॥२४०॥ चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये ॥ स्वस्त्याशीःक्षेमपुण्यादौ प्रकर्षे लङ्घनेऽप्यति ॥ २४१ ॥

और जो कि प्रगृह्यसंज्ञिक आ यह शब्द निपात है वह स्मृतिनाम याद करनेमें तथा वाक्यनाम वाक्यकी पूर्तिमें और अपिशब्दसें दया तथा समुच्चयकेविषेंभी वर्त्ते है. कोपनाम क्रोध और पीडा इन दोनोंमें आः अव्यय वर्त्ते है. पाप और कुत्सा (निन्दा) और ईषदर्थ अर्थात् अल्पार्थ इनकेविषें कु शब्द वर्त्ते है. निर्भर्त्सन अर्थात्

१ अव्ययके लक्षण लिखतेहैं–सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ॥ वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम् ॥ १ ॥

फटकारना और निन्दा दोषका प्रकट करना इन दोनोंमें धिक् शब्द वर्त्ते है ॥२४०॥ अन्वाचय तथा समाहार तथा इतरेतरयोग तथा समुच्चय अर्थमें च अव्यय वर्त्ते है आशी (आशीर्वाद) और क्षेम (कल्याण) यानी निरुपद्रव तथा पुण्यादिकमें स्वस्ति शब्द वर्त्ते है प्रकर्षनाम बाहुल्यार्थमें और लघन लाँघनेमें और अपिशब्दसे अत्यर्थमें अति शब्द वर्त्ते है ॥ २४१ ॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के च तु स्याद्भेदेऽवधारणे ॥ सकृत्सहैकवारे चाप्याराद्दूरसमीपयोः ॥ २४२ ॥ प्रतीच्या चरमे पश्चादुताप्यर्थविकल्पयोः ॥ पुनःसहार्थयोः शश्वत्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४३ ॥

प्रश्न और वितर्क इन दोनोंमें स्वित् शब्द वर्त्ते है चकारसे पादपूरणमें स्वित् शब्द वर्त्ते है भेदमें और अवधारण नाम निश्चयमें तु अव्यय वर्त्ते है सह नाम सहार्थमें और एकवारमें सह अव्यय वर्त्ते है दूर अर्थ और समीप अर्थ इन दोनोंमें आरात् शब्द वर्त्ते है ॥ २४२ ॥ प्रतीची नाम पश्चिमदिशामें और चरमनाम अनन्तरवर्ती कालादिकमें पश्चात् शब्द वर्त्ते है अप्यर्थ अर्थात् अपिशब्दका अर्थ समुच्चय और विकल्प अर्थ इन दोनोंमें उत शब्द वर्त्ते है पुनः नाम पुनः पुन अर्थ तथा सहार्थ इन दोनोंमें शश्वत् शब्द वर्त्ते है और प्रत्यक्ष और तुल्यार्थ इन दोनोंमें साक्षात् शब्द वर्त्ते है ॥ २४३ ॥

खेदानुकम्पासंतोषविस्मयामन्त्रणे बत ॥ हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः॥२४४॥प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ॥ इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु॥२४५॥

खेद अर्थमें तथा अनुकंपा अर्थात् कृपा अर्थमें और संतोष अर्थमें तथा विस्मय नाम आश्चर्य अर्थमें और आमन्त्रण नाम बुलावनेके अर्थमें बत अव्यय वर्त्ते है हर्ष (आनन्द) मे और अनुकंपा (कृपा) में और वाक्यका आरंभ और विषाद अर्थ इन दोनोंमें हन्त अव्यय वर्त्ते है ॥२४४॥ प्रतिनिधि नाम जो कि मुख्य करके सदृश है उसमें और वीप्सा नाम व्याप्त होनेकी इच्छा और लक्षणा और आदिशब्दसे इत्थंभूताख्यानादिकमें प्रयोगमें प्रति अव्ययका प्रक्षेप है हेतु नाम कारणार्थमें और प्रकरण नाम प्रकारार्थमें और प्रकाश अर्थमें और आदि शब्दमें एवमर्थमें और समाप्ति नाम अन्तवाचक अर्थमें इति अव्यय वर्त्ते है ॥ २४५ ॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थेऽग्रत इत्यपि ॥ यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे ॥ २४६ ॥ मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथो अथ ॥ वृथा निरर्थकाविध्योर्नानानेकोभयार्थयोः ॥ २४७ ॥

प्राचीनाम पूर्वदिशामें और प्रथमार्थमें और पुरार्थ अर्थात् बीतेहुए कालमें और अग्रतः अग्रवाचक अर्थमें पुरस्तात् अव्यय वर्त्ते है. साकल्यअर्थमें तथा अवधिअर्थमें तथा माननाम परिमाण अर्थमें तथा अवधारण नाम निश्चयार्थमें यावत् तावत् अव्यय होते हैं ॥ २४६ ॥ मंगलअर्थमें तथा अनन्तर अर्थमें और आरम्भ अर्थमें तथा प्रश्नमें तथा कात्स्न्यें अर्थ अर्थात् समग्रताके अर्थमें अथ अव्यय वर्त्ते है. निरर्थक अर्थ और अविधि अर्थात् विधिहीन इन दोनोंमें वृथा अव्यय होता है. अनेकार्थ तथा उभयार्थ इन दोनोंमें नाना अव्यय वर्त्ते है ॥ २४७ ॥

नु पृच्छायां विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरनु ॥ प्रश्नावधारणाऽनुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु ॥ २४८ ॥ गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वपि ॥ उपमायां विकल्पे वा सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २४९ ॥

पृच्छानाम प्रश्नार्थमें तथा विकल्पार्थमें और चकारसें अनुनय तथा प्रतीतार्थमें नु शब्द वर्त्ते है पश्चात् अर्थ और सादृश्यार्थ इन दोनोंमें अनु अव्यय वर्त्ते है. प्रश्नमें और अवधारण निश्चय अर्थमें और अनुज्ञानाम आज्ञाअर्थमें और अनुनय नाम समुझानेके अर्थमें और आमंत्रण नाम संबोधन अर्थमें ननु अव्यय वर्त्ते है ॥ २४८ ॥ गर्हा अर्थात् निन्दा अर्थमें और समुच्चय अर्थमें और प्रश्न अर्थमें और शंका अर्थमें और संभावना अर्थमें अपि अव्यय वर्त्ते है. उपमा अर्थकेविषें तथा विकल्पअर्थके विषें वा अव्यय वर्त्ते है. और अर्ध अर्थमें तथा जुगुप्सित निन्दित अर्थमें सामि अव्यय वर्त्ते है॥२४९॥

अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्धनि ॥ इवेत्थमर्थयोरेवं नूनं तर्केऽर्थनिश्चये ॥ २५० ॥ तूष्णीमर्थे सुखे जोषं किं पृच्छायां जुगुप्सने ॥ नाम प्राकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने२५१

सहअर्थमें तथा समीप अर्थात् निकट अर्थमें अमा अव्यय वर्त्ते है. वारिनाम जलमें और मूर्धानाम शिरमें और चकारसें सुखमें कं अव्यय वर्त्ते है. इवअर्थ नाम तुल्यार्थमें और इत्थंअर्थनाम इसप्रकार अर्थमें एवं अव्यय वर्त्ते है. तर्कमें और अर्थ निश्चय अर्थात् अर्थकी निश्चयमें नूनं अव्यय वर्त्ते है ॥ २५० ॥ तूष्णीमर्थ अर्थात् मौनअर्थ और सुखमें जोषं अव्यय वर्त्ते है. पृच्छा नाम प्रश्न अर्थमें और जुगुप्सन नाम निन्दा करनेमें किं अव्यय वर्त्ते है. प्राकाश्य नाम प्रसिद्धि अर्थमें और संभाव्यनाम कथंचित् अर्थमें और क्रोध अर्थमें और उपगम नाम सद्वेषके अंगीकार अर्थमें और कुत्सननाम निन्दामें नाम अव्यय वर्त्ते है ॥

अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ॥ हुं वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५२ ॥ पुनरप्रथमे

भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः ॥ स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ २५३ ॥

भूषणनाम अलंकार अर्थमें और पर्याप्तिनाम परिपूर्णता अर्थमे और शक्तिनाम सामर्थ्य अर्थमें और वारण अर्थात् निवारण अर्थमें इनका कहनेवाला अल अव्यय है वितर्कमें और परिप्रश्नमें हु अव्यय वर्त्ते है और अतिकनाम समीप और मध्य अर्थमें समया अव्यय वर्त्ते है ॥ २५२ ॥ अमथम अर्थमें तथा भेद नाम भेदार्थमें पुन अव्यय वर्त्ते है निश्चय अर्थमें और निषेध अर्थ अर्थात दूरकरनेमें नि अव्यय वर्त्ते है प्रबन्धमें चिरानाम चिरतन यानी बहुतकाल अर्थमें और अतीत नाम बीतेहुए कालमें और निकटअर्थमें और आगामिक अर्थात् आने वाले कालमें पुरा शब्द वर्त्ते है ॥ २५३ ॥

ऊर्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ॥ स्वर्गे परे च लोके स्ववार्तासंभाव्ययोः किल ॥ २५४ ॥ निषेधवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु ॥ समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ २५५ ॥ नामप्राकाश्ययोः प्रादुर्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ॥ तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे हा विषादशुगर्तिषु ॥ २५६ ॥ अहहेत्यद्भुते खेदे हि हेतावधारणे ॥

॥ इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

विस्तारमें और अगीकृति अर्थात् अंगीकार अर्थमें ऊररी ऊरी उररी यह तीन अव्यय वर्त्ते है स्वर्गनाम स्वर्गलोकमें तथा परलोकमें स्वः अव्यय वर्त्ते है वार्ता और संभाव्यनाम संभावना करनेयोग्य अर्थमें इन दोनोंमें किल अव्यय वर्त्ते है ॥ २५४ ॥ निषेध अर्थमें तथा वाक्यालकार नाम वाक्यभूषा अर्थमें और जिज्ञासा नाम जाननेकी इच्छा अर्थमें और अनुनय नाम सात्वनमें खलु अव्यय वर्त्ते है समीप अर्थमें और उभयतः अर्थात् उभयार्थमें और शीघ्र अर्थमें और साकल्यअर्थ अर्थात् समग्रता अर्थके विषे और अभिमुखनाम सन्मुख अर्थमें अभित शब्द वर्त्ते है ॥ २५५ ॥ नाम अर्थमें तथा प्राकाश्य नाम प्रसिद्धिअर्थमें प्रादु अव्यय वर्त्ते है अन्योन्य नाम परस्पर अर्थ और रहनाम एकान्त अर्थमें मिथ अव्यय वर्त्ते है अन्तर्धिनाम छिपनेअर्थमें तथा तिर्यगर्थ अर्थात् तिरछेअर्थमें तिर अव्यय वर्त्ते है और विषाद अर्थ तथा शुक् शोक अर्थ तथा आर्ति (पीडा) अर्थ इनमें विषाद अव्यय वर्त्ते है ॥२५६॥ अद्भुत नाम आश्चर्य अर्थमें और खेद अर्थमें अहह अव्यय वर्त्ते है और हेतु (कारण)में तथा अवधारण (निश्चय) अर्थमें हि अव्यय वर्त्ते है ॥

॥ इति नानार्थवर्ग समाप्त ॥

चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ॥ मुहुः पुनः पुनः शश्वदभी-

क्षणमसकृत्समाः ॥ १ ॥ स्राक् झटित्यञ्जसाह्नाय द्राङ् मङ्क्षु सपदि द्रुते ॥ बलवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥

चिराय चिररात्राय चिरस्य और आदिशब्दसें चिरेण चिरात् चिरं यह छै अव्यय चिरार्थक अर्थात् दीर्घकालवाचक हैं. मुहुः पुनःपुनः शश्वत् अभीक्ष्ण असकृत् यह पांच अव्यय समानार्थ हैं. यानी वार २ अर्थके बोधक हैं ॥ १ ॥ स्राक् झटिति अंजसा अह्नाय द्राक् मंक्षु सपदि यह सात अव्यय द्रुतनाम शीघ्रार्थमें वर्त्ते हैं. बलवत् सुष्ठु किमुत सु अति अतीव यह छै अव्यय निर्भरनाम अतिशय यानी बहुधा अर्थमें वर्त्ते हैं ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च वर्जने ॥ यत्तद्यतस्ततो हेतावसाकल्ये तु चिच्चन ॥ ३ ॥ कदाचिज्जातु सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ॥ आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥

पृथक् विना अन्तरेण ऋते हिरुक् नाना यह छै अव्यय वर्जन अर्थात् विनार्थमें वर्त्ते हैं. यत् तत् यतः ततः यह चार अव्यय हेतुनाम कारण अर्थमें वर्त्ते हैं. चित् चन यह दो अव्यय असाकल्य अर्थात् असमग्रतार्थमें वर्त्ते हैं. जैसें–[कश्चित्–कंचन] ॥३॥ कदाचित् जातु यह दो अव्यय किसीएक कालकेवाचक हैं. सार्धं साकं सत्रा समं सह यह पांच अव्यय सहार्थवाचक हैं. प्राध्वं यह एक अव्यय अनुकूलतार्थवाचक है. वृथा मुधा यह दो अव्यय व्यर्थमें वर्त्ते हैं॥४॥

आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमूत च ॥ तु हि च स्म ह वै पादपूरणे पूजने स्वति ॥ ५ ॥ दिवाह्नीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति॥ तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ संबोधनार्थकाः ॥ ६ ॥ स्युः प्याट् पाडङ्ग हे है भोः समया निकषा हिरुक् ॥ अतर्किते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥

आहो उताहो किमुत किं किमु उत यह छै अव्यय विकल्प नाम विकल्पनार्थमें वर्त्ते हैं. तु हि च स्म ह वै यह छै अव्यय पादपूरण अर्थात् श्लोकके चरणकी पूर्णतामें वर्त्ते हैं. सु अति यह दो अव्यय पूजन अर्थात् पूजार्थमें वर्त्ते हैं ॥ ५ ॥ दिवा यह अव्यय अहन् नाम दिनके विषैं वर्त्ते है. दोषा नक्तं यह दो अव्यय रजनि नाम रात्रिके विषैं वर्त्ते हैं. साचि तिरः यह दो अव्यय तिर्यगर्थ अर्थात् तिरछे अर्थमें वर्त्ते हैं. प्याट् पाट् अंग हे है भोः यह छै अव्यय संबोधनार्थ वाचक हैं. समया निकषा हिरुक् यह तीन अव्यय समीपता में वर्त्ते हैं. सहसा यह अव्यय अतर्कित अर्थात् नहीं तर्क कियेहुए यानी अकस्मात्

अर्थमें वर्त्ते है पुर. पुरत' अग्रतः यह तीन अव्यय अग्रार्थवाचक है ॥ ६ ॥ ७ ॥

स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा, ॥ किंचिदीपन्मनागल्पे प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥ व वा यथा तथैवैवं साम्येऽहो ही च विस्मये ॥ मौने तु तूष्णीं तूष्णीका सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥

स्वाहा श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा यह पाच अव्यय देवताके लिये हविर्दान अर्थात् घृत दान विशेषमें वर्त्ते हैं परन्तु स्वधा अव्यय पितृदानमें प्रसिद्ध है किंचित् ईषत् मनाक् यह तीन अव्यय अल्प नाम अल्पार्थमें वर्त्ते हैं प्रेत्य अमुत्र यह दो अव्यय भवांतर अर्थात् जन्मांतरके विषें वर्त्ते है ॥ ८ ॥ व वा यथा तथा इव एव यह छे अव्यय साम्य अर्थात् सादृश्यार्थमें वर्त्ते हैं अहो ही यह दो अव्यय विस्मय नाम आश्चर्यार्थमें वर्त्ते हैं. तूष्णीं तूष्णीका यह २ अव्यय मौन अर्थात् मौनार्थमें वर्त्ते हैं सद्य सपदि यह दो अव्यय तत्क्षण नाम तत्काल अर्थमें वर्त्ते हैं ॥ ९ ॥

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्देऽथान्तरेऽन्तरा ॥ अन्तरेण च मध्ये स्युः प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥ युक्ते द्वे सांप्रतं स्थानेऽभीक्ष्णं शश्वदनारते॥ अभावे नह्य नो नापि मास्म माऽल मा वारणे ॥ ११ ॥

दिष्ट्या समुपजोष यह दो अव्यय आनन्दमें वर्त्ते है अन्तरे अन्तरा अन्तरेण यह तीन अव्यय मध्यअर्थमें वर्त्ते है प्रसह्य यह एक अव्यय हठार्थ वाचक है ॥ १० ॥ सांप्रत स्थाने यह दो अव्यय युक्तअर्थमें वर्त्ते हैं अभीक्ष्ण शश्वत् यह दो अव्यय अनारत अर्थात् नित्य अर्थमें वर्त्ते है नहि अ नो न यह चार अव्यय अभाव अर्थमें वर्त्ते है मास्म मा अल यह तीन अव्यय वारण नाम निवारण यानी मने करना इस अर्थमें वर्त्ते है ॥ ११ ॥

पक्षान्तरे चेद्यदि च तत्त्वे त्वद्धाञ्जसा द्वयम् ॥ प्राकाश्ये प्रादुराविः स्यादोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥ समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ॥ अकामानुमतौ काममसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥

चेत् यदि यह दो अव्यय पक्षान्तरमें वर्त्ते है जैसें (सत्य चेत्तपसा च किम्) अर्थात् जो सत्य है तो तप करकें क्या है अद्धा अंजसा यह दो अव्यय तत्वार्थमें वर्त्ते है प्रादुः आविः यह दो अव्यय प्राकाश्य यानी स्पष्टता अर्थमें वर्त्ते है ओं एव परम यह तीन अव्यय मतनाम अंगीकारमें वर्त्ते है ॥ १२ ॥ समतत परित सर्वत विष्वक् यह चार अव्यय सर्वतरफ ऐसे अर्थवाचक हैं अकामानुमति अर्थात् अनिच्छानुमतिमें काम अव्यय वर्त्ते है.

असूयोपगम अर्थात् असूयापूर्वक स्वीकार अर्थमें अस्तु अव्यय वर्त्ते है ॥ १३ ॥

ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कच्चित्कामप्रवेदने ॥ निःषमं दुःषमं गर्ह्ये यथास्वं तु यथातथम् ॥१४॥ मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः॥१५॥

ननु यह एक अव्यय विरोधोक्ति अर्थात् विरोध कहनेमें वर्त्ते है. कच्चित् यह एक अव्यय कामप्रवेदन अर्थात् इच्छाके जतानेमें वर्त्ते है. निःषमं दुःषमं यह दो अव्यय गर्ह्य नाम निन्दा करने योग्यमें वर्त्ते हैं. यथास्वं यथायथं यह दो अव्यय यथायोग्य अर्थमें वर्त्ते हैं. ॥ १४ ॥ मृषा मिथ्या यह दो अव्यय वितथ नाम असत्यमें वर्त्ते हैं. यथार्थं यथातथं यह दो अव्यय सत्यमें वर्त्ते हैं. एवं तु पुनः वै वा यह पांच अव्यय अवधारण नाम निश्चयार्थवाचक हैं. ॥ १५ ॥

प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ॥ संवद्वर्षेऽवरे त्ववागामेवं स्वयमात्मना ॥ १६ ॥ अल्पे नीचैर्महत्युच्चैः प्रायो भूम्न्यद्रुते शनैः ॥ सना नित्ये बहिर्बाह्ये स्मातीतेऽस्तमदर्शने ॥ १७ ॥

प्राक् यह एक अव्यय अतीतार्थक अर्थात् व्यतीतकालवाचक हैं. नूनं अवश्यं यह दोनों अव्यय निश्चय अर्थमें वर्त्ते हैं. संवत् यह अव्यय वर्षमें वर्त्ते है. अर्वाक् यह एक अव्यय अवर नाम नीचे अर्थमें वर्त्ते है. आं एवं यह दो अव्यय अंगीकार अर्थमें वर्त्ते हैं. स्वयं यह एक अव्यय आत्म अर्थमें वर्त्ते. अर्थात् यह शब्द अपना वाचक है ॥ १६ ॥ नीचैः यह अव्यय अल्प अर्थवाचक है. उच्चैः यह अव्यय महत् अर्थवाचक है. प्रायः यह अव्यय भूमा नाम बाहुल्य अर्थमें वर्त्ते है. शनैः यह एक अव्यय अद्रुत अर्थात् अशीघ्र अर्थमें वर्त्ते है. सना यह एक अव्यय नित्य अर्थमें वर्त्ते है. बहिः यह एक अव्यय बाह्य अर्थमें वर्त्ते है. इसको बाहिरभी कहते हैं. स्म यह अव्यय अतीत अर्थात् भूत अर्थमें वर्त्ते है. अस्तं यह एक अव्यय अदर्शन अर्थात् न दीखनेमें वर्त्ते है. ॥ १७ ॥

अस्ति सत्त्वे रुषोक्तावु ऊं प्रश्नेऽनुनये त्वयि ॥ हुं तर्के स्यादुषा रात्रेरवसाने नमो नतौ ॥ १८ ॥ पुनरर्थेऽङ्ग निन्दायां दुष्ठु सुष्ठु प्रशंसने ॥ सायं साये प्रगे प्रातः प्रभाते निकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥

अस्ति यह अव्यय सत्व नाम होने अर्थमें वर्त्ते है यह एक अव्यय रुषोक्ति अर्थात् क्रोधपूर्वक कहनेमें वर्त्ते है ऊं यह अव्यय प्रश्नमें वर्त्ते है अयि यह एक अव्यय अनुनय नाम समुझानेमें वर्त्ते है हुं यह अव्यय तर्कमें वर्त्ते है. उषा यह एक

अव्यय रात्रिके अवसान नाम अन्तमें वर्त्ते है नमः यह एक अव्यय नति अर्थात् नम्रतामें वर्त्ते है ॥ १८ ॥ अग यह अव्यय पुनरर्थमें वर्त्ते है दुष्ठु यह अव्यय निंदाके विषैं वर्त्ते है सुष्ठु यह अव्यय प्रशसन अर्थात् बडाई करनेमें वर्त्ते है साय यह एक अव्यय साय नाम दिनके अन्तमें वर्त्ते है प्रगे प्रात यह दो अव्यय प्रभातकालमें वर्त्ते है निकषा यह अव्यय अंतिक नाम समीपार्थमें वर्त्ते है ॥ १९ ॥

परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति॥ अद्यात्राह्न्यथ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥ तथाऽधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ॥ उभयद्युश्चोभयेद्युः परे त्वह्नि परेद्यवि ॥२१॥

परुत् परारी ऐषम यह तीन अव्यय क्रमसें पूर्व अब्द अर्थात् वीतेहुए वर्षमें और पूर्वतर अब्द अर्थात् वीतेहुए वर्षसें जो पूर्व वर्ष है उसमें और यति अब्द अर्थात् वर्त्तमान वर्षमें होते हैं भाव यह है कि परुत् अव्यय व्यतीत वर्षमें वर्त्ते है और परारि अव्यय उस वीतेहुए वर्षसेंभी पूर्व वर्षमें वर्त्ते है और ऐषम अव्यय वर्त्तमान वर्षमें वर्त्ते है अद्य यह अव्यय अत्राह्नि याना इस दिनवाचक अर्थमें वर्त्ते है पूर्वेह्नि इत्यादि अर्थमें पूर्व तथा उत्तर तथा परशब्दसें ॥२०॥तथा अधर तथा अन्य तथा अन्यतर तथा इतर शब्दसें पूर्वेद्युः आदिक अव्यय होते हैं आदिशब्दसें क्रमसें उत्तरेद्यु अपरेद्यु अधरेद्युः अन्येद्यु अन्यतरेद्यु इतरेद्यु जानने भाव यह है कि पूर्वदिनके विषै पूर्वेद्यु और उत्तरदिनकेविषै उत्तरेद्यु और अपरदिनके विषै अपरेद्यु और अधर दिनके विषै अधरेद्युः और अन्यदिनके विषै अन्येद्यु और अन्यतर दिनकेविषैं अन्यतरेद्युः अव्यय वर्त्ते है और इतरदिनकेविषैं इतरेद्यु शब्द वर्त्ते है और उभयद्युः उभयेद्यु यह दो अव्यय उभय दिनकेविषै वर्त्ते है परेद्यवि यह एक अव्यय परदिनमें वर्त्ते है ॥ २१ ॥

ह्यो गते नागतेऽह्नि श्वः परश्वस्तु परेऽहनि ॥ तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २२ ॥ एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा ॥ दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

॥ इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

और गत अर्थात् वीतेहुएदिनमें ह्यः अव्यय वर्त्ते है और अनागत अर्थात् आनेवाले दिनकेविषै श्वः अव्यय वर्त्ते है और उससें परे जो दिन है उसमें परश्व अव्यय वर्त्ते है तदा तदानी यह दो अव्यय तिससमय इस अर्थमें वर्त्ते है युगपत् एकदा यह दो अव्यय एकसमय इस अर्थमें वर्त्ते हैं सर्वदा सदा यह दो अव्यय सबकाल इस अर्थमें वर्त्ते हैं ॥ २२ ॥ एतर्हि संप्रति इदानीं अधुना सांप्रत यह पाच अव्यय इससमय

इसअर्थमें वर्त्ते हैं. पूर्वादिक दिशा देशकालमें प्राक् उदक् प्रत्यक् आदिक अव्यय वर्त्ते हैं. आदिशब्दसें अवाक् आदिकाभी ग्रहण है. भाव यह है कि जो कि पूर्वसंबन्धी दिशा देशकाल है वह प्राक्संज्ञिक है. और जो कि उत्तर संबन्धी दिशा देश काल है वह उदक् संज्ञिक है और जो कि पश्चिमसंबन्धी दिशा देश काल है वह प्रत्यक् संज्ञिक है. और जो कि दक्षिणसंबन्धी दिशा देश काल है वह अवाक् संज्ञिक है. आदिशब्दसें इसीप्रकार उत्तरात् अधरात् दक्षिणात् उत्तरेण अधरेण दक्षिणेन दक्षिणा दक्षिणाहि दक्षिणतः उत्तरतः उपरि उपरिष्टात् इत्यादिक जानने ॥ २३ ॥

॥ इति अव्ययवर्गः ॥

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः ॥ अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

इसके अनन्तर लिंगसंग्रह वर्ग कहते हैं—सलिंगशास्त्र अर्थात् पाणिनी आदिक करकें कहे हुए लिंगशास्त्र सहित ऐसे जो पूर्व नहीं कहेहुए सन्नादि कृत्तद्धितसमासज शब्द अर्थात् सन्नादिक प्रत्ययोंसें उत्पन्न हुए शब्द तथा कृदन्तसें उत्पन्न हुए शब्द तथा तद्धितसें उत्पन्न हुए शब्द तथा समाससें उत्पन्न हुए शब्द तिन्होंकरके किये हुए इस संग्रहवर्गमें संकीर्ण वर्गकी समान लिंग जनानें. भाव यह है कि इस वर्गमें पाणिनी आदिकोंनें जो व्याकरण ग्रंथोंमें लिंगविधान किया है. उस लिंगविधान सहित पूर्व नहीं कहे हुए सन्नादि प्रत्यय कृदन्त तद्धित समाससें बनाये हुए शब्दोंका संग्रह किया है. परन्तु उस शब्दोंके संग्रहमें लिंग उसप्रकार जानाजाता है. जिसप्रकार कि संकीर्ण वर्गमें प्रकृति प्रत्ययादिकोंकर जानाजाताहै १

लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ॥ स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

सन्नादि कृत्तद्धित समाससें उत्पन्न हुए शब्दोंका विषय ऐसा जो पूर्व कहेहुए शब्द लिंगसें अन्यलिंग है वह लिंगशेष है. उसका विधि यदि विशेष यानी पूर्व कहे हुए तथा यहाँ कहे हुए विशेष विधियोंकर अबाधित अर्थात् बाधित न हो तो व्यापक होवै है. इसकरकें इस लिंगविशेष विधिके स्वर्गादिक वर्ग बाधक जानने योग्य हैं. तिन स्वर्गादिक वर्गोंमें पहिलें कहे हुए विशेषलिंगोंका विधान यहां पुनरुक्ति दोष प्रसंगसें तथा विस्तारके भयसें नहीं किया. जैसें कि—इस वर्गमें स्वर्गपर्याय पुंलिंगमें कहाजायगा उसका—द्योदिवौ द्वे । स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्—यह पूर्व कहाहुआ विधि बाधक है. और औरनी आदिक शब्दोंकी बाधकविधि—(कृतः कर्त्तरि) इत्यादिक कर कहाजायगा. यद्यपि पूर्वलिंग कहभी दिया है. तथापि अप्राप्तकी प्राप्तिरूप अर्थ

होनेसें लिंगानुशासन यहाँभी प्रधान है [स्त्रियां] यह अधिकार मसी शब्दपर्यन्त जानना ईकार वा ऊकार है अन्तमें जिसके ऐसा एक स्वरवाला शब्द स्त्रीलिंगमें होता है जैसें–धी श्री भू भ्रू शब्द जानने और नी इत्यादिमें [कृत कर्त्तरि] इसकर बाधित होनेसें वाच्यलिंगता है योनि नाम भग उसकरके सहित जो प्राणी हैं उनका नाम स्त्रीलिंगमें होताहै जैसें [माता दुहिता धेनु] इत्यादिक और दारशब्दादिमें–[दारा पुमान्नि] इत्यादिक बाधक विधि पहिले कहदियाहै ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम् ॥ अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

विद्युत् (विजुली) और निशा (रात्रि) और वल्ली (वेलि) और वीणा और दिशा और भू (पृथिवी) और नदी और ह्री (लज्जा) इन्होंका नाम स्त्रीलिंगमें होता है जैसे [विद्युत् तडित् निशा रात्रि रजनि वल्ली व्रतति वीरुध् वीणा विपची] इत्यादिक स्त्रीलिंग जानने अकार है अन्तमें जिनके ऐसे शब्दोंकर एकार्थ अर्थात् समाहारार्थवाला द्विगुसमास हे वह स्त्रीलिंगमें होताहै जैसें–[पचाना मूलाना समाहार]–पचमूलि और इसी प्रकार त्रिलोकी–षडध्यायी–और अकार है अन्तमें जिनके ऐसे पात्र युगादिक उत्तरपद शब्दोंकर एकार्थवाला द्विगुसमास है वह स्त्रीलिंगमें नही होताहै जैसें–[पचपात्र–चतुर्युग त्रिभुवन]इत्यादिक जानने ॥ ३ ॥

तल् वृन्दे येनिकट्यत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् ॥ स्त्रीभावादावनिक्तिण्ण्वुल्णच्ण्वुच्क्यप्युजिञ्ङ्निशाः॥४॥

जो कि भावादिक अर्थमें तल्प्रत्यय है वह स्त्रीलिंगमें होवैहै जैसें भावमें शुक्लता और कर्ममें ब्राह्मणता और समूहमें ग्रामता इत्यादिक जानने जो कि वृन्द नाम समूहमें य इनि कट्य त्र यह चार प्रत्यय हैं. वह स्त्रीलिंगमें होते है जैसें पाशोंका समूह पाश्या सज्ञिक है इसीप्रकार (वात्या खलिनी पद्मिनी रथकट्या गोत्रा) आदिक जानने और वैर मैथुनिकादिकके विषे जो वुन् प्रत्यय है वह स्त्रीलिंगमें होता है जैसें अश्व और महिषका जो वैर यानी विरोध है वह अश्वमहिषिका सज्ञिक है और अत्रि और भरद्वाजको जो मैथुनिका यानी विवाहरूप संबध है वह अत्रिभरद्वाजिका सज्ञिक है स्त्रीभावादि अर्थात् स्त्रीलिंगको अधिकार करके जो भावादिकके विषे अनि क्तिन् ण्वुल् णच् ण्वुच् क्यप् युच् इञ् अङ् नि श यह ग्यारह प्रत्यय है वह स्त्रीलिंगमें होवे हे अनि प्रत्यय जैसें अकरणि अजीवनि इत्यादिक और क्तिन् प्रत्यय जैसें कृति गति इत्यादिक और ण्वुल् प्रत्यय जैसें प्रच्छर्दिका प्रवाहिका इत्यादिक और णच् प्रत्यय जैसे व्यावक्रोशी इत्या-

दिक ण्वुच् प्रत्यय जैसें शायिका इक्षुभक्षिका इत्यादिक और क्यप्प्रत्यय जैसें व्रज्या इज्या और युच् प्रत्यय जैसें कारणा आसना इत्यादिक और इञ् प्रत्यय जैसें वापि वासि इत्यादिक और अङ् प्रत्यय जैसें पचा त्रपा भिदा इत्यादिक और निप्रत्यय जैसें ग्लानि हानि इत्यादिक और शप्रत्यय जैसें क्रिया इच्छा इत्यादिक ॥४॥

उणादिषु निरूरीश्च ङ्यावूङन्तं चलं स्थिरम् ॥ तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवा णदिक् ॥ ५ ॥

उणादिक गणोंके विषें जो (नि ऊ ई) यह तीन प्रत्यय हैं. वह स्त्रीलिंगमें होवे हैं. निकारान्त जैसें (श्रेणि श्रोणि द्रोणि) इत्यादिक और ऊकारान्त जैसें (चमू कर्षू) इत्यादिक और ईकारान्त जैसें (तंत्री तरी) इत्यादिक ङी और आप् और ऊङ् यह प्रत्यय हैं अन्तमें जिसके ऐसा चल नाम जंगम और स्थिर अर्थात् स्थावर वाचक शब्द स्त्रीलिंगमें होता है. जंगम जैसें (नारी शिवा ब्रह्मबधू) इत्यादिक और स्थावर जैसें (कदली माला कर्कन्धू) इत्यादिक तत् नाम मुष्ट्यादिक प्रहरण यानी प्रहार जो क्रीडाके विषें होवै तौ उस अर्थमें रचाहुआ ण प्रत्यय स्त्रीलिंगमें होताहै. जैसें (मौष्टा पाल्लवा) यह उदाहरण है. भाव यह है कि मुष्टिप्रहार हो जिस क्रीडाके विषें वह मौष्टा संज्ञिक है. और पाल्लव प्रहार हो जिस क्रीडाके विषें वह पाल्लवा संज्ञिक है ॥ ५॥

घञो ञः सा क्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी ॥ श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥६॥ स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि ॥लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥

जो घञ् प्रत्ययान्तवाच्य दण्डपातादिक क्रिया है वह जिस फाल्गुन्यादिक अर्थमें वर्त्तमान होवै तौ उस घञ् प्रत्ययान्त शब्दसें जो ञप्रत्यय होवै है वह स्त्रीलिंगकेविषें होवे है. जैसें [दाण्डपाता फाल्गुनी] अर्थात् दंडपात जिस फाल्गुनीके विषें होवे वह दांडपाता फाल्गुनी है. इसीप्रकार श्यैनंपाता मृगया और तैलंपाता स्वधा यह उदाहरण हैं ॥ ६ ॥ यदि अपचय अर्थात् अल्पतामें कहनेकी इच्छा होवै तौ कोईएक मृणाली आदिशकशब्द स्त्रीलिंग होते हैं. जैसें अल्प जो मृणाल है वह मृणाली संज्ञिक है. आदिशब्दसें वंशी कुंभी प्रणाली छत्री पटी तटी मठी इत्यादि इसीप्रकार जाननें. काचित् इसशब्द कहनेसें वृक्षक इत्यादिकशब्द स्त्रीलिंगमें नहीं होते हैं. इसके अनन्तर जो कान्तादिक शब्द हैं वह स्त्रीलिंगमें होते हैं. लंका राक्षसपुरी है. और शेफालिका पुष्पभेद वा वृक्षभेद है. इसकों निर्गुंडी कहते हैं. और टीका यह एक नाम

विषमपदकी व्याख्याका है और धातकी यह वृक्षभेदका नाम है इसकों आँवलाभी कहतेंहै पंजिका यह नाम समग्रपदकी व्याख्याका है आढकी यह नाम अरहरका है७॥

सिध्रका सारिका हिक्का माचिकोल्का पिपीलिका ॥ तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढयः ॥ ८ ॥ पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्चूर्णिःशाणी द्रुणी दरत् ॥ सातिः कन्था तथाऽऽसन्दीनाभी राजसभापि च ॥९॥

सिध्रका यह नाम वृक्षभेदका है सारिका यह नाम पक्षिभेदका है इसको मैना कहतं है हिक्का यह नाम स्वरभेदका है इसकों हिचकी कहते है माचिका यह नाम वनमक्षिकाका है उल्का यह नाम तेजसमूहका है पिपीलिका यह नाम कीटभेदका है इसकों चीटी कहते है तिन्दुकी यह नाम वृक्षभेदका है इसकों तेंदुआ कहते ह कणिका यह नाम परिमाणुका है. भंगि यह नाम कुटिलताके भेदका है सुरंगा यह नाम छिद्रभेदका है इसकों सुरंग बोलतेंहैं सूचि यह नाम सूईका है माढि यह नाम पत्तशिराका है ॥ ८ ॥ पिच्छा यह नाम शाल्मलि तथा निर्यास तथा भात आदिकके माडका है वितंडा यह नाम वादभेदका हे काकिणी यह नाम पणके चौथे भागका है चूर्णि यह नाम चूर्णिकाका है शाणी यह नाम शनके वस्त्रविशेषका है द्रुणी यह नाम कर्णजलौकाका है दरत् यह नाम म्लेच्छजातिका है साति यह नाम दानवा अन्तका है कंथा यह नाम कथरीका है आसदि यह नाम आसनभेदका है इसको वेत्रासन कहतेंहै नाभी यह नाम टूडीका है राजसभा यह नाम राजाओंकी सभाका है. इसकों कचहरी कहते है ॥ ९ ॥

झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला ॥ लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥

॥ इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ॥

झल्लरी यह नाम वाद्यभेदका है. चर्चरी यहनाम हाथोंके शब्दका वा हर्षक्रीडाका है पारी यह नाम हाथियोंके पाँवकी रस्सी का है होरा यह नाम लग्नका है वा राशिके अर्धभागका है लट्वा यह नाम ग्रामचटकका है सिध्मला यह नाम मछलीके विकारका है लाक्षा यह नाम लाखका है लिक्षा यह नाम यूकाडका है गडूषा यह नाम जलादिकसें मुख भरनेका है इसकों कुल्ला कहतेंहै गृध्रसी यह नाम वातरोगभेदका है चमसी यह नाम यज्ञके पात्रभेदका है और मसी यह नाम कज्जलका है यह कहे हुए समस्तशब्द स्त्रीलिंग है ॥ १० ॥

॥ इति स्त्रीलिंग संग्रह ॥

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ॥ स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः ॥ ११ ॥ करगण्डो-

ष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ॥ अह्वाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

इसके अनन्तर पुंलिंग संग्रह कहते हैं. पुंस्त्वे यह पतद्ग्रहशब्द पर्यन्त अधिकार है. भेद (तुषितसाध्यादिक) और अनुचर (सुनन्दादिक) तिनसहित सुरासुरनाम देवदैत्य पर्यायोंकरके सहित पुंलिंगमें होते हैं. परन्तु इनकाभी [दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्] इत्यादिक पूर्व कहाहुआ विधान बाधक है. स्वर्ग और याग नाम यज्ञ और अद्रिनाम पर्वत और मेघ तथा अब्धि (समुद्र) और द्रुनाम वृक्ष और काल (समय) और असिनाम खड्ग और शर (बाण) और अरि (शत्रु) ॥ ११ ॥ करनाम राजग्राह्य भाग वा हस्त वा किरण और गंड (कपोल) और ओष्ठ और दोस् नाम भुज और दन्त और कंठ और केश नाम बाल और नख और स्तन (कुच) यह स्वर्गादिक उन्नीश नाम भेद तथा पर्यायों सहित पुंलिंगमें होते हैं परन्तु इनकाभी [द्योदिवौद्वे स्त्रियां। क्लीबेत्रिविष्टपम्] इत्यादिक विधान बाधक है. अन्ह औ अहशब्द हैं अन्तमें जिनके ऐसे शब्दभी पुंलिंगमें होते हैं जैसें [पूर्वाह्ण अपराह्ण व्यहः] इत्यादिक जानने और क्ष्वेड भेद यानी विष विशेषभी पुंल्लिंगमें होते हैं. जैसें [सौराष्ट्रिकः] इत्यादिक जानने प्रागसंख्यक अर्थात् पूर्व नही हैं. संख्या वाचक शब्द जिनके ऐसे रात्रान्त शब्द पुंलिंगमें होते हैं जैसें [अहोरात्रः सर्वरात्रः पूर्वरात्र अपररात्रः] इत्यादिक और प्रागसंख्यक ऐसा विशेषण क्यों दिया जैसें [पंचरात्रं गणरात्रम् इत्यादिक ॥१२॥

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ॥ कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥ कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ॥ पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥ नाम्न्यकर्तरि भावे च घञजबूनङ्णघाथुचः ॥ ल्युः कर्तरीमनिज् भावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः ॥ १५ ॥

जो कि श्रीवेष्टादिक शब्द निर्यास अर्थात् द्रवसारवाचक हैं. वह पुंलिंगमें होते हैं. जैसें—[श्रीवेष्टः—सरलः—] इत्यादिक आदिशब्दसें श्रीवास वृक धूपादिक और चकारसें गुग्गुलु सिह्लकादिक जाननें. अस् और अन् यह दो हैं अन्त जिनके ऐसे शब्द कहेजानेवाले—[द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तम्] इत्यादिक बाधकविधान करके तथा—[अप्सरसः स्त्रियां] इत्यादिक पूर्व कहे हुए बाधक विधान करके जो बाधित न हों तो पुंलिंगमें होते हैं. जैसें—[अंगिराः—वेधाः—चंद्रमाः—कृष्णवर्मा—मघवा] इत्यादिक और अबाधित ऐसा विशेषण क्यों दिया कि—[वयः—लोम—] इत्यादिक पुंलिंग नहीं हैं.

तु और रु है विराम नाम अन्तमें जिनके ऐसे शब्द कसेरु तथा जतु तथा वस्तु इत्यादिक शब्दोंको त्यागिकर पुलिंगमें होते है जैसें—हेतु.—सेतु —धातु.—कुरुः-मेरु.-किशारुः इत्यादिक ॥१३॥ ककार और षकार और णकार और भकार और मकार और रकार यह छै वर्ण होवे उपान्त नाम अन्त्यवर्णके समीप जिनके ऐसे शब्द यदि अकारान्त होवें तो पुलिंगमें होते है जैसे—[अक — ओष —पाषाण —कौस्तुभ —होम.—झर्झर.—] इत्यादिक जानने पकार और थकार और यकार और सकार और टकार यह छै वर्ण है उपान्त (अन्त्यवर्णके समीप) जिनके ऐसे शब्द बाधक विधिसें बाधित न हों तो पुलिंगमें होते है जैसें (यूप वेपथु इनः आयः रस. पटः) इत्यादिक जानने गोत्र नाम वंशके विषें होवेहै आख्या अर्थात् नाम जिनका ऐसे गोत्राख्य ऋषि संज्ञिक गोत्रके आदिपुरुष और जो कि प्रवराध्याय करके पठित और जो कि अन्य अपत्य प्रत्ययके विना गोत्रवाची होनेसें लोकमें प्रसिद्ध है यह पुलिंगमें होते है जैसें (भरद्वाज. गोत्रम्) इसीप्रकार कश्यप वत्स आदिक जानने और चरणाह्वय नाम वेदकी शाखाके नाम पुलिंगमें होते है जैसें (कठ बह्वृच.) इत्यादिक ॥ १४ ॥ नाम संज्ञाके विषें अकर्त्ता अर्थात् कर्त्तावर्जित कारकके विषे और भाव मात्रके विषे (घञ् अच् अप् नङ् ण घ अथुच्) यह सात प्रत्यय है वह पुलिंगके विषे होवे है. चकारसें असंज्ञाके विषे घञ् प्रत्यय ग्रहण किया है घञ् प्रत्यय जैसें वेद प्रपात. इत्यादिक और अच् प्रत्यय जैसें जय. चय. इत्यादिक अप् प्रत्यय जैसें कर. गर. इत्यादिक नङ् प्रत्यय जैसें यज्ञ प्रश्न. इत्यादिक ण प्रत्यय जैसें न्याद इत्यादिक घप्रत्यय जैसें उरश्छद इत्यादिक अथुच् प्रत्यय जैसें वेपथु. इत्यादिक और जो कि कर्त्ताके विषे तुल्यप्रत्यय होवे है वह पुलिंगमें होताहै जैसें (नन्दनः रमण मधुसूदन) इत्यादिक और भावके विषें पृथ्वादिकसें जो इमनिच् प्रत्यय होवे है वह पुलिंगमें होताहै जैसें (पृथिमा महिमा) इत्यादिक और भावके विषे जो क—प्रत्यय होवे है वह पुलिंगमें होताहै जैसें (आखूत्थ प्रस्थ.) इत्यादिक यहाँ भावे यह शब्द देहलीदीपक न्यायकरके पूर्व तथा परमें संबद्ध है. प्रादिक उपसर्गसें वा अन्य अर्थात् नामसें परे जो घुसंज्ञिक यानी दाप् दैप्के विना दारूप और धारूप धातु है उससें जो—कि—प्रत्यय होवे है वह पुलिंगमें होताहै जैसें (प्रधि निधि आदि जलधि.) इत्यादिक ॥ १५ ॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते॥ कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयःपूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥ वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडङ्गक॥ पुङ्खो न्यूङ्ख. समुद्गश्च विटपट्टधटा. खटा.॥१७॥

द्वंद्व समासके विषें अश्व और वडवा यह दोनों शब्द पुंलिंगमें होते हैं. जैसें अश्ववडवाः यह उदाहरण है. परन्तु समाहृत अर्थात् समाहार अर्थवाले द्वंद्वसमासके विषें अश्व और वडवा शब्द पुंलिंग नहीं होते हैं. किन्तु नपुंसकलिंगमें होतेहैं. सूर्य और इन्दु नाम चंद्र इन दोनोंके पर्याय अर्थात् नाम हैं पूर्व जिसके और अयः नाम लोह इसके नाम हैं पूर्व जिसके ऐसा कान्त शब्द पुंलिंगमें होता है. जैसें (सूर्यकान्तः अर्ककान्तः चंद्रकान्तः इन्दुकान्तः अयस्कान्तः लोहकान्तः) इत्यादिक ॥ १६ ॥ इसके अनन्तर जो कि कान्तादिक शब्द हैं वह पुंलिंगमें होते हैं. वटक यह एक नाम पिष्टक भेदका है. इसकों बडा कहते हैं. अनुवाक यह नाम वेदके अंगका है. रल्लक यह नाम कंबलका है. कुडंगक यह नाम वृक्ष लताओंकर घनें वनका है. इसकों झाडी कहते हैं. पुंख यह नाम बाणके अंगका है. न्यूंख यह नाम सामवेदके विषें स्थितहुए ओंकारका है. समुद्र यह नाम संपुटकका है इसकों डिब्बा कहते हैं. विट यह नाम धूर्त्तका है. पट्ट यह नाम काष्ठादिककर बनाये हुए आसन विशेपका है. इसकों पट्टा कहते हैं. घट यह नाम तुलाका है. इसकों तराजू कहते हैं. खट यह नाम अन्धकूपादिककाहै. यह शब्द बहुवचन है १७

कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ॥ गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥ दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः ॥ कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ ॥ १९ ॥

कोट्ट यह नाम दुर्गपुरका है. इसकों कोट कहते हैं. अरघट्ट यह नाम कूपभेदका है. हट्ट यह नाम बाजारका है. पिंड यह नाम मिट्टी आदिकके समूहका है. इसकों पिंडही कहते हैं. गोंड यह नाम बढीहुई नाभिका है पिचण्ड यह नाम पेटका है. गडु यह नाम गलगंडका है. करंड यह नाम वांस आदिककर बनाये हुए बर्त्तनका है. इसकों पिटारा कहते हैं. लगुड यह नाम लाठीका है. वरंड यह नाम मुखरोगका है. किण यह नाम मांसके ग्रंथिभेदका है. यह कस्सी आदिकके दण्डादिकके संघर्षणसें हस्तादिकमें हो जाता है. और यह नाम घावके चिन्हकाभी है. घुण यह नाम काठके कीडेका है. इसकों घुन कहते हैं ॥ १८ ॥ दृति यह नाम मश्कका है. सीमन्त यह नाम केशवेशका है. हरित् यह नाम हरीरंगतका है. रोमन्थ यह नाम पशुओंके जुगारेके हैं. उद्गीथ यह नाम सामभेदका है. बुद्बुद यह नाम जलविकारका है. इसकों पानीका बबूला कहते हैं. कासमर्द यह नाम गुल्मभेदका है. अर्बुद यह नाम दश करोड़का है. कुंद यह नाम शिल्पमांडका है. फेन यह नाम जलविकारका है. स्तूप यह नाम वटकादिकका है. यूप यह नाम यज्ञखंबका है ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः ॥ पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥ वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ॥ कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

॥ इतिपुंलिंग शेषः ॥

आतप यह नाम घामका है और क्षत्रियकेविषे नाभि शब्द वर्त्ते है भाव यह है कि क्षत्रियवाची नाभिशब्द पुंलिगमें होताहै कुणप यह नाम मुर्देका है क्षुर यह नाम क्षुराका है केदर यह नाम व्यवहार पदार्थका है पूर यह नाम जलप्रवाहका है क्षुरप्र यह नाम बाणभेदका है. चुक्र यह नाम शाक भेदका है गोल यह नाम गोलपिंडका है हिंगुल यह नाम रागद्रव्यके भेदका है पुद्गल यह नाम आत्माका है ॥ २० ॥ वेताल यह नाम भूतविशेषका है भल्ल यह नाम रीछका है मल्ल यह नाम उसका है जो कि बाहुयुद्धमें चतुर होताहै पुरोडाश यह नाम यज्ञके हविभेदका है पट्टिश यह नाम अस्त्रभेदका है कुल्माष यह नाम काजीका है रभस यह नाम हर्ष वा वेगका है कटाहसहित पतद्ग्रह शब्द पुंलिंगमें होता है कटाह यह नाम घृततैलादिकके पकानेके पात्रका है इसको कढाई कहते है और पतद्ग्रह यह नाम पीकदानका है ॥ २१ ॥

॥ इति पुंलिंगसग्रह ॥

द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम् ॥ शीतोष्णमासरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥ फलहेमशुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम् ॥ जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

इसके अन तर नपुसकलिंग सग्रह कहतेहै द्विहीने नपुसके (यह अधिकार बाह्लिकशब्दपर्य त है) यह दो श्लोकोंमें प्रधानता कर दिखाये हुए खआदिक छब्बीश नाम पर्यायों सहित द्विहीन अर्थात् दोनों स्त्रीपुलिंगसें वर्जित नपुसकलिंगमे होते है परन्तु जो बाधकविधिसें अन्य हैं वह नपुसकलिंगमें होवे है न कि सब चकारसें यहा वस्त्राभरणादिकोंकाभी सग्रह है ख नाम आकाश वा इद्रिय और अरण्य नाम वन और पर्ण नाम पत्र और श्वभ्र नाम छिद्र और हिम नाम तुषार और उदक नाम जल और शीत और उष्ण और मास और रुधिर और मुख और अक्षि नाम नेत्र और द्रविण नाम धन और बल नाम पराक्रम वा सैन्य ॥ २२ ॥ फल नाम फलमात्र कपित्थादिक और हेम (सुवर्ण) और शुल्व नाम ताम्र आदिक और लोह और सुख और दुःख और शुभ नाम कल्याण और अशुभ नाम अकल्याण और जलपुष्प अर्थात् कमलादिक और लवण नाम सैन्धव आदिक और व्यजन नाम तेमन इत्यादिक और अनुलेपन

अर्थात् कुंकुमादिक यह छब्बीश नाम अपने पर्यायोंसहित नपुंसकलिंगमें होते हैं. परन्तु जो बाधक विधिसें अन्य होवे तौ बाधक विधि जैसें (आकाशो विहायाद्यौः अटवी अरण्यानी) इत्यादिकमें पुंलिंग तथा स्त्रीलिंगकी विधि नपुंसकलिंग विधिका बाधक है इस प्रकार और जगहभी जानना ॥ २३ ॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या वा लक्षा नियुतं च तत् ॥ द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥ त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्यया-न्वितम् ॥ पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगु-र्लक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥

कोटिशब्दसें जो कि अन्य शतादिक संख्या है. वह नपुंसलिंगमें होवे है जैसें (शतं सहस्रं अयुतं) और लक्ष शब्द विकल्पकरकें नपुंसक लिंगमें होता है. जैसें (लक्षा लक्षं) और जो कि नियुत शब्द लक्षसंज्ञिक है वहभी नपुंसकलिंगमें होता है. अस् तथा इस् तथा उस् तथा अन् यह है अन्तमें जिसके ऐसा जो द्व्यच्क यानी दो स्वरवाला शब्द है वह नपुंसकलिंगमें होवे है. जैसें (पयः सर्पिः वपुः चर्म) इत्यादिक और अन है अन्तमें जिसके ऐसा शब्द जो अकर्त्तरि अर्थात् कर्त्तासें भिन्न अर्थमें होवै तौ नपुंसकलिंगमें होवे है. जैसें (गमनं मरणं दानम्) इत्यादिक अकर्त्तरि ऐसा क्यों कहा कि (इध्मव्रश्चनः कुठारः नन्दनः रमणः) इत्यादिक नपुंसकलिंग नहीं होते ॥ २४ ॥ त्र है अन्तमें जिसके और सकार वा लकार है उपधा नाम अन्त्य वर्णसें पूर्व जिसके ऐसा शब्द शिष्ट अर्थात् पूर्व कहेहुए बाधकविधिसें व-चाहुआ हो तौ पुनपुंसकलिंगमें होता है. जैसें (पात्रं बिसं कुलं) इत्यादिक. शिष्ट यह विशेषण क्यों दिया कि पुत्रः हंसः शिला इत्यादिक नपुंसकलिंग नहीं होते. और जो कि पूर्वसंख्यायुक्त रात्रशब्द है वह नपुंसकलिंगमें होता है जैसें (त्रिरात्रं पंचरात्रं) इत्यादिक जाननें और अकार है अन्तमें जिनके ऐसे पात्रादिक शब्दोंकरकें एकार्थनाम समाहारार्थवाला जो द्विगुसमास है वह नपुंसकलिंगमें लक्ष्यानुसार अर्थात् शिष्टप्रयोगके अनुसारसें जानें. जैसें (पंचरात्रं) आदिशब्दसें (चतुर्युगम्) इत्यादिक. लक्ष्यानुसारतः यह क्यों कहा कि (पंचमूली त्रिलोकी) इत्यादिक नपुंसकलिंगमें नहीं होते हैं ॥ २५ ॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्या-व्ययात्परः ॥ षष्ठ्याश्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा ॥ २६ ॥ शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थाद-राजकात् ॥ दासीसभं नृपसभं रक्षः-सभमिमा दिशः ॥ २७ ॥

द्वंद्व समासका एक भाव और अव्ययीभाव समास यह दोनों नपुंसकलिंगमें होवे हैं जैसें द्वंद्वका एकभाव [पाणिपादम्.

शिरोग्रीवम्] और अव्ययीभाव जैसें [अधिस्त्रि उपगगम्] सख्यावाचक शब्द और अव्ययसें परे जो पथशब्द है सो नपुसकलिगमें होता है जैसें [द्विपथ चतुष्पथं विपथ कापथ] इत्यादिक (सख्याव्ययात्) ऐसा क्यों कहा कि [धर्मपथः कापथः] इत्यादिक नपुसकलिगमें नही होते समासके विषें षष्ठीविभक्तिसें अर्थात् षष्ठ्यन्त शब्दसें परे जो छाया शब्द है वह छाया यदि बहुतोंकि सबंधिनी हो तो नपुसकलिगमें होवे है जैसें विच्छाय उदाहरण है समासकेविषे षष्ठ्यन्त शब्दसें परें समूह अर्थमें जो सभाशब्द है वह नपुसलिगमें होता है जैसें दासीसभ इत्यादिक शालार्थी अर्थात् गृह अर्थवाला तथा अपिशब्दसें समूह अर्थवाला जो सभा शब्द है वह यदि अराजक अर्थात् राजशब्दसें वर्जित ऐसा जो राजपर्याय और अमनुष्यार्थ षष्ठ्यन्त शब्द उससें परे होवे तो नपुसकलिगमें होता है जैसें (नृपसभ रक्ष.सभ) यह उदाहरण है. और दासीसभ यह उदारहण समूह अर्थमें पहिलें दिखादिया अराजकात् ऐसा क्यों कहा कि राजसभा इत्यादिकमें नपुसकलिग नही होता और अमनुष्यार्थात् ऐसा क्यों कहा की चद्रगुप्तसभा इत्यादिकमें नपुसकलिंग नहींहोता ॥ २७ ॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने॥ कोपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥ भावे नणकचिद्भ्योऽन्ये समूहे भावकर्मणोः ॥ अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः॥२९॥

तत् नाम उपज्ञा और उपक्रमका आदित्व अर्थात् प्रथमताके प्रकाश करनेमें उपज्ञा वा उपक्रम है अन्तमें जिसके ऐसा समास नपुसकलिगमें होता है जैसें (कोपज्ञ प्रजा कोपक्रम लोकः) इत्यादिक (तदादित्व प्रकाशने) ऐसा क्यों कहा कि (देवदत्तोपज्ञाप्रमयः प्रकारः देवदत्तोपक्रमो रथः) इनमें नपुसक लिग नही होता उशीनरोंके नामोंके मध्यमें षष्ठ्यन्त शब्दसें परे जो कन्या शब्द होता है वह नपुसक लिगमें होता है जैसें सौशमिकथ और उशीनरसें अन्यत्र दाक्षिकथा होता है. नामसु ऐसा क्यों कहा कि वीरणकथा यह नपुसकलिग नहीं होता ॥ २८ ॥ न तथा ण तथा क तथा चित् अर्थात् जिसका कि चकार इत्नाम अनुबध होवे इनसें जो अन्य तव्यादिक अकारान्त धातुप्रत्यय भावमें रचे है वह नपुंसकलिंगमें होवे हैं तहाँ धातुप्रत्यय जैसें (भवितव्य भाव्यं सहित मुक्त इत्यादिक और समूह अर्थमें और भाव तथा कर्म इन दोनों अर्थोंमें जो कि अकारान्त तद्धितप्रत्यय है वह नपुसक लिगमें होवे है तहा समूह अर्थमें जैसें (भिक्षाणा समूहो भैक्ष) और भावअर्थमें जैसें (गोर्भाव. गोत्व) और कर्म अर्थमें जैसें (राज्ञ कर्म राज्यम्) इत्यादिक जाननें पुण्य तथा सुदिन शब्दोंसें परें

समासान्त अह शब्द है. वह नपुंसकलिंगमें होता है जैसें (पुण्याहं सुदिनाहं) ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतोटके ॥ चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म योजनम् ॥ ३० ॥ राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः॥ माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

क्रिया और अव्ययोंके भेदक नाम विशेषण नपुंसक लिंगमें तथा एकवचनमें होवे हैं. क्रियाविशेषण जैसें–(रम्यं पचति) इत्यादिक और अव्ययविशेषण जैसें (रम्यं स्वः–सुखदं प्रातः) इत्यादिक इसके अनन्तर जो कि उक्थादिक शब्द हैं. वह नपुंसकलिंगमें होते हैं. उक्थ यह नाम सामभेदका है. तोटक यह नाम छंदके भेदका है. चोच यह नाम भोगेहुए फलके बचे हुए भागका है. कोई आचार्य इसको तालफल वा कदलीका फल कहते हैं. पिच्छ यह नाम मोरपांखका है. गृहस्थूण यह नाम घरके थूनका है. तिरीट यह नाम वेष्टन वा शिरके आभूषणका है. मर्मन् यह नाम संधिस्थानका है. योजन यह नाम चारकोशका है. ॥ ३० ॥ राजसूय वाजपेय यह दो नाम यज्ञभेदके हैं. गद्य पद्य यह दोनों कविकी कृतिमें वर्त्ते हैं. माणिक्य यह नाम रत्नभेदका है. भाष्य[1] यह नाम पदके अर्थके खुलासा करनेका है. सिंदूर यहनाम सिन्दूरका है. चीर यह नाम वस्त्रभेदका है. चीवर यह नाम मुनियोंके वस्त्रका है. पिंजर यह नाम पींजराका है. ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलस्थालवाह्लिकम् ॥

॥ इति क्लीबसंग्रहः ॥

लोकायत यह नाम चार्वाक शास्त्रविशेषका है. हरिताल यह नाम हरतालका है. विदल यह नाम वांसके पत्रोंके वनाये हुए पात्रका है. स्थाल यह नाम थालका है. वाह्लिक यह नाम कुंकुमादिकका है.

॥ इतिनपुंसकसंग्रहः ॥

पुंनपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥ मोदकस्तण्डकटङ्कः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः ॥ पातकोद्योगचरकतमालामलकानडः ॥ ३३ ॥

इसके अनन्तर चिक्कसपर्यंन्त शब्द पुंलिंग तथा नपुंसकलिंगमें कहे जावेंगे. शेष अर्थात् कहेहुएसें जो अन्य है वह पुंनपुंसकलिंग दोनोंमें होता है. भाव यह है कि जैसें कि शंख और पद्म शब्द निधिवाचक पुंलिंगमें होते हैं. और कंबु और नलिन वाचक पुंनपुंसकलिंग दोनोंमें होते हैं. तैसेंही इस पुंनपुंसकसंग्रह वर्गका शब्दभी जिसपर्यायमें वाधित हो और वह यदि उसपर्यायसें

[1] भाष्यलक्षण कहते हैं—सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुकारिभिः ॥ स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥ १ ॥

भिन्न हो तौ पुनपुंसकलिंग दोनोंमें होता है अर्धर्च यह नाम ऋचाके अर्धभागका है पिण्याक यह नाम विनातेलवाले तिलके चूर्णका है इसकों खरि कहते है कटक यह नाम रोमहर्षादिकका है ॥ ३२ ॥ मोदक यह नाम लड्डूका है. तडक यह नाम उपताप विशेषका है टक यह नाम पत्थरके काटनेवाले शस्त्र विशेषका है इसकों टाकी कहते है. शाटक यह नाम वस्त्रभेदका है कर्पट यह नाम स्थानभेदका वा वस्त्रभेदका है अर्बुद यह नाम सख्याभेदका है पातक यह नाम ब्रह्महत्यादिकका है उद्योग यह नाम उत्साहका है. चरक यह नाम वैद्योंके शास्त्रभेदका है तमाल यह नाम वृक्षभेदका है आमलक यह नाम आँवलेके फलका है नड यह नाम तृणभेदका है ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमकुट्टिमम् ॥ संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम्॥३४॥कवियं कन्दकार्पासं पारावारं युगंधरम्॥यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूपं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

कुष्ठ यह नाम रोगभेदका है मुड यह नाम शिरका है शीधु यह नाम मदिराका है बुस्त यह नाम भ्रष्टमास वा पनसादिक फलके विनसारवाले भागका है क्ष्वेडित यह नाम चीराकर किये हुए सिंहनादका है क्षेम यह नाम कुशलका है कुट्टिम यह नाम फरसबन्दीका है सगम यह नाम सयोगका है शतमान यह नाम तोलभेदका है अर्म यह नेत्रोंके रोगभेदका है शबल यह नाम वर्णभेदका इसकों कबरा रँग कहते हैं अव्यय यह नाम स्वरादिनिपातवाचक है ताडव यह नाम नृत्यभेदका है ॥ ३४ ॥ कविय यह नाम लगामका है कद यह नाम कमल आदिककी जडका है कार्पास यह नाम कपासका है पारावार यह नाम नदी आदिकके दोनों किनारोंका है युगंधर यह नाम गाडी आदिकके अगभेदका है यूप यह यज्ञका अगभेद है प्रग्रीव यह नाम वृक्षके शिरका वा झरोखाओंका है. पात्रीव यह यज्ञका पात्रभेद है यूप यह नाम माँडका है. चमस चिक्कस यह दोनों पात्रभेद है ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ॥ तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् ॥ ३६ ॥

॥ इति पुंनपुंसकसंग्रहवर्गः ॥

जो कि घृतादिकोंकी पुंस्त्वाद्य अर्थात पुल्लिंगतादिक पाणिनी आदिकोंने कहाहै वह निश्चयही वैदिक है अर्थात् वेदमें प्रसिद्ध है इसकारण अर्धर्चादि पुनपुसक अधिकारवाले इसवर्गमें वह नहीं कहा और वह यदि लोकमेंभी होताहो तौ उसप्रकार हो जैसें कि शेष नाम कहे हुएसें जो अन्य है वह जिसप्रकार होता है भाव यह है कि जैसें शेष (शिष्ट) प्रयोगसें ग्रहण

कियाजाता है तैसें हीं वहभी शिष्टप्रयोगसें ग्रहण करने योग्य है ॥ ३६ ॥

॥ इति पुंनपुंसकसंग्रहवर्गः ॥

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः ॥ जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सहमल्लकः ॥ ३७ ॥

इसके अनन्तर स्त्रीपुंलिंगसंग्रहवर्ग कहतेहैं—अपत्य प्रत्यय हैं अन्तमें जिनके ऐसे शब्द स्त्रीपुंलिंगमें होवे हैं जैसें उपगुका अपत्य यदि पुमान् होवे तौ औपगवः संज्ञिक है. और स्त्रीलिंग हो तौ औपगवि संज्ञिक है. और द्विपद चतुष्पद षट्पदवाची तथा उरगवाची अर्थात् सर्पवाची जातिभेद स्त्रीपुंलिगमें होवै हैं. द्विपदजातिभेद जैसें—(मानुषः पुमान् मानुषी स्त्री) इत्यादिक और चतुष्पदजातिभेद जैसें (मृग मृगी) इत्यादिक और षट्पद जातिभेद जैसें (भृंगः—भृंगी) और सर्पजातिभेद जैसें (उरगः उरगी) इत्यादिक और स्त्रीयोगोंसहित पुमाख्य अर्थात् पुंनाम स्त्री पुंलिंगमें होवै हैं. जैसें (इंद्रः इंद्राणी) और जैसें (मातुलः पुमान् मातुली स्त्री) इत्यादिक यहांसें लेकर कुटीपर्यन्त मल्लकादिक शब्द स्त्रीपुंलिंगमें होते हैं. जैसें (मल्लकः मल्लिका) यह नाम चमेलीका है. ॥ ३७ ॥

ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ॥ मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटो कुटी ॥ ३८ ॥

ऊर्मि यह नाम तरंगका है. इसकों लहरी कहते हैं. वराटक वराटिका यह नाम कमलगट्टा वा रस्सीका है. स्वाति यह नाम स्वातिनक्षत्रका है. वर्णक वर्णिका यह नाम चन्दनका है. झाटलि यह नाम ढाकवृक्षकी सदृश वृक्षभेदका है. मनु यह नाम स्वायंभुवादिकका वा मंत्रका है. मूषन् यह नाम सुवर्णादिक तावनेकी घरियाका है. सृपाटी सृपाट यह नाम परिमाण भेदका है. कर्कन्धू यह नाम बदरीवृक्षका है. यष्टि यह नाम लाठीका है. शाटी शाट यह नाम वस्त्रभेदका है. कटी कट यह नाम देहके अंगका है. इसकों कमरि कहते हैं. कुटी कुट यह नाम सभागृहका है. ॥ ३८ ॥

॥ इति स्त्रीपुंसशेषसंग्रहवर्गः ॥

॥ इति स्त्रीपुंलिंगसंग्रहवर्गः ॥

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्यञ् क्वचिच्च वुञ् ॥ औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥

इसके अनन्तर स्त्री नपुंसकसंग्रहवर्ग कहते हैं.—भाव और क्रिया नाम कर्म इन दोनोंकेविषें वर्त्तमान ष्यञ् प्रत्यय और वुञ् प्रत्यय कहीं स्त्री नपुंसक लिंगमें होवै हैं. जैसें ष्यञ् प्रत्ययका उदाहरण देते हैं (औचित्यं औचिती मैत्री मैत्र्यं) इत्यादिक और वुञ् प्रत्यय (वैरमैथुनिकादि वुन्) इस प्रकार पहिलें स्त्रीलिंगसंग्रहमें उदाहृत किया है यानी दिखादियाहै. जैसें कि मिथुनका भाव वा कर्म मैथुनिका मैथुनक संज्ञिक है ॥ ३९ ॥

षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशाला-सुरानिशाः ॥ स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥ आबन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ॥ त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥

॥ इति स्त्रीनपुंसकशेषः ॥

षष्ठी विभक्ति है अन्तमें जिनके ऐसे शब्द है पूर्वपद जिनके ऐसे (सेना छाया शाला सुरा निशा) शब्द स्त्री तथा नपुंसक लिंगमें होवे हैं जैसें (नृसेन श्वनिश गोशाल) और विकल्पकरकें (नृसेना-श्वनिशा गोशाला) यह उदाहरण है और इसीप्रकार इतर नाम अन्यशब्दभी जानने योग्य है ॥ ४० ॥ आप्प्रत्ययान्त और अन्प्रत्ययान्त शब्द है उत्तरपद जिसके ऐसा द्विगुसमास अपुंसि अर्थात् पुंलिंगवर्जित स्त्रीनपुंसक लिंगके विषे हो और अन् प्रत्ययान्त उत्तरपद शब्दका जो अन्त्य नकार है उसका लोप हो जैसें (त्रिखट्व त्रिखट्वी त्रितक्ष त्रितक्षी) यह उदाहरण हैं (त्रितक्ष त्रितक्षी) इसमें तक्षन् शब्दका अन्त्य नकार लोप होगया है ॥ ४१ ॥

॥ इति स्त्रीनपुंसकसंग्रहवर्ग ॥

त्रिपु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदा-डिमौ ॥

॥ इति त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः ॥

इसके अनन्तर त्रिलिंगसंग्रहवर्ग कहते हैं पात्री आदिक दाडिमान्त शब्द तीनों लिंगमें होवे है. जैसे (पात्री पात्र.—पात्र) इसीप्रकार पुटी आदिक शब्द तीनों लिंगमें जाननें योग्य है पात्री यह नाम पात्रका है पुटी यह नाम मट्टीके पात्र विशेषका है वाटी यह नाम मार्गका है. इसकों वाट कहते हैं पेटी यह नाम पिटारीका है कुवल यह नाम बदरीफलका है. दाडिम यह नाम अनारका है

॥ इतित्रिलिंगसंग्रहवर्ग. ॥

परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२॥ अर्थान्ताः प्राप्तापन्नपूर्वा परोपगाः॥ तद्धितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥४३॥

स्वप्रधान नाम उभयपदप्रधान ऐसे इतरेतर संज्ञिक द्वंद्व समासकेविषैं और तत्पुरुष समासके विषै जो कि पर लिंग अर्थात् अगलेपदमें स्थित लिंग है वह ही लिंग होवे है तहाँ द्वंद्वके विषै जैसें (कुक्कुट मयूर्यौ इमे—मयूरीकु-क्कुटौ इमौ) और तत्पुरुषके विषै जैसे—(धान्येन अर्थ धान्यार्थ सर्पात् भीति. सर्पभीति) इत्यादिक जाननें ॥ ४२ ॥ कहे हुए तत्पुरुष लिंगका अपवाद कहते है तत्पुरुष समासके विषै अर्थ शब्द है अन्तमें जिनके ऐसे शब्द परोपग अर्थात् विशेष्यलिंग होतेहैं जैसें (द्विजार्थ. सूपः

द्विजार्था यवागूः द्विजार्थं पयः) इत्यादिक और आदि उपसर्ग और अलं शब्द और प्राप्त शब्द और आपन्न शब्द हैं पूर्व जिसके ऐसे शब्दभी परोपग अर्थात् विशेष्यलिंग होवे हैं. तहाँ प्रादि पूर्व जैसें (अतिमालो-हारः अतिमालेयं अतिमालमिदं) और अलंपूर्व जैसें (अलं कुमारिरियं अलंकुमा-रिरियं अलंकुमारि इदम्) और प्राप्तपूर्व जैसें (प्राप्तजीविको द्विजः प्राप्तजीविका स्त्री प्राप्तजीविकमिदम्) और आपन्नपूर्व जैसें (आपन्नजीविकः) इत्यादिक और तद्धितार्थ द्विगुसमास विशेष्यलिंग होवै है. जैसें (पंचकपालः पुरोडाशः पंचकपालं हविः) इत्यादिक जाननें. संख्या शब्द और सर्वनाम संज्ञिक और वहही संख्या शब्द और सर्वनाम संज्ञिक हैं अन्तमें जिनके ऐसे शब्द परगामी अर्थात् विशे-ष्यलिंग होवे हैं. तहां संख्याशब्द जैसें। एकः पुमान् एकं कुलं एका स्त्री) इत्यादिक संख्याके विषें विंशत्यादिक तथा शता-दिकका लिंग पीछें निर्णयकर चुके और सर्व नाम जैसें (सर्वो देशः सर्वा नदी सर्वं जलम्) इत्यादिक और संख्यांतक जैसें (ऊनत्रयः ऊनतिस्रः ऊनत्रीणि) इत्या-दिक और सर्वनामांतक जैसें (परमसर्वः परमसर्वा परमसर्वम्) इत्यादिक ॥ ४३ ॥

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृत-म् ॥ गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥ कृतः कर्त्रर्य-संज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि ॥ अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभे-दकाः ॥ ४५ ॥

अदिङ्नाम्नां अर्थात् दिक्शब्दसें वर्जित जो नाम हैं उनका जो बहुव्रीहिस-मास है वह विशेष्यलिंग होवे है. उसका उदाहरण स्वयंही संभावना करनेयोग्य है. जैसें (बहुधनः पुमान् बहुधना स्त्री बहुध-नमिदं कुलम्) इत्यादिक अदिङ्नाम्नाम् ऐसा क्यों कहाकि जैसें (दक्षिणपूर्वादिक् यह बहुव्रीहि विशेष्यलिंग नहीं होता किन्तु दिक्वाचक होनेंसें स्त्रीलिंग है. जैसें दक्षि-णपूर्वा दिक् गुणयोग और द्रव्ययोग और क्रियायोग इनकरके जो उपाधिनाम विशे-षण हैं वह विशेष्यके विषें प्रवृत्त होवैं तो परगामी अर्थात् विशेष्यलिंग होवैं हैं तहाँ गुणयोग करकें जैसें (गंधवती पृथ्वी गंधवानश्मा गंधवत्कुसुमम्) और द्रव्ययो-गकरकें जैसें (दण्डिनी स्त्री) इत्यादिक और क्रिया योगकरकें जैसें (पाचकः पुरुषः पाचिका स्त्री) इत्यादिक जाननें ॥ ४४ ॥ असंज्ञाके विषें कर्त्तामें जो कृत्प्रत्यय होवे हैं वहभी विशेष्यलिंग होवे हैं. जैसें (कर्त्ता पुमान् कर्तृ कलत्रम्) इत्यादिक असंज्ञायां ऐसा क्यों कहाकि प्रजा हरिः इत्यादिक संज्ञार्थमें तीनों लिंग नहीं होते. और कर्म और कर्त्ताके विषें वर्त्तमान हुए कृत्यप्रत्यय विशेष्यलिंग होवैं हैं तहाँ कर्त्ताके विषें जैसें (वास्तव्योयम् वास्तव्या सा—वास्तव्यं तव)

इत्यादिक और कर्मकेविषे जैसें (कर्त्तव्या भक्तिः कर्त्तव्यो धर्मस्त्वया) इत्यादिक जाननें प्रेन रक्तादिक अर्थके विषें जो कि अणादि तद्धित प्रत्ययान्त शब्द हैं वह अनेक अर्थोंके भेदक अर्थात् विशेषण हुए विशेष्यलिंग होवे हैं जैसें कुसुभकरकें रँगाहुआ वस्त्र कौसुभ संज्ञिक है. इसका उदाहरण यह है (कौसुभी शाटी कौसुभ पटः कौसुभ वास.) इत्यादिक रक्ताद्यर्थे इसमें जो आदिशब्द है उससें यह उदाहरण है कि मथुरासें आया हुआ माथुरसंज्ञिक है. जैसें (माथुरोऽय माथुरी इय) इत्यादिक जाननें ॥ ४५ ॥

पट्संज्ञकास्त्रिपु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् ॥ परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

॥ इति लिंगादिसंग्रहवर्गः ॥

षट्संज्ञक षान्त नान्त संख्या और कतिशब्द यह तीनों लिंगमें समानरूप है अर्थात् इन शब्दोंके रूप तीनों लिंगमें एकसे होते हैं और बहुवचन होते है जैसे (पंडिमे पंडिमा. पडिमानि पंचपुरुषा पंचस्त्रियः पंचकुलानि कतिपुरुषा. कतिस्त्रिय) इत्यादिक जाननें युष्मद् अस्मद् शब्द और तिङन्त शब्द और अव्यय यहभी तीनोंलिंगमें समानरूप होते हैं युष्मद् शब्द जैसें (त्व पुरुष त्व स्त्री त्व कलत्रम्) और अस्मद् शब्द जैसें (अह पुरुष अह स्त्री अह कलत्रम्) और तिङन्तशब्द जैसें (स्थाली भवति घटो भवति पात्रं भवति) और अव्यय जैस (उच्चैः दाराः उच्चै. स्त्री उच्चैः कलत्रम्) इत्यादिक जानें पूर्वका परसें विरोध होनेपर परलिंगविधि प्रवृत्त होवे है जैसें मानुषशब्दमें (कषणभमरोपान्ताः) इस पूर्वविधिसें पुलिंगता प्राप्त होवे है परंतु द्विचतु.षट्पदेति इस उत्तरविधान कर स्त्री पुलिंगता निश्चयकरने योग्य है जैसें (मानुषी इय मानुषोयम्) इत्यादिक और शेष अर्थात् इसग्रथमें नही कहाहुआ नाम लिंग शिष्ट नाम भाष्यकारादिक महाकवियोंके प्रयोगसें जाननें योग्य है ॥ ४६ ॥

॥ इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४७ ॥

तृतीयं काण्डं संपूर्णम् ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

इसप्रकार अमरसिंहकी कृति, नाम और लिंगोंके अनुशासन अर्थात् जतानेवाले शास्त्रमें तृतीय सामान्य नाम कांड अर्थात् वर्गसमूह अंगोंसहित निरूपण किया है ॥ ४७ ॥

संचिताऽमरसिंहेन नामलिंगस्वधाबुधाः ॥ तां पिबन्ति मयाद्याज्ञान् मत्वाक्षय्यां च पायिता ॥ १ ॥

इतिश्रीमदमरसिंहकृतौ श्रीपाठकमंगलसेनात्मजकाशिरामविरचितभाषाटीकायां तृतीयकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

श्लोक

सन्मंगलानुसृतमंगलसेनसूनुः कृष्णाप्रकाशितहृदंबुजकाशिरामः॥सत्पाठकान्वयहरिस्तवपाठको यो-ढाढौलिविप्रवरमौलिकृतप्रणामः॥१॥हरिप्रसादायहरिप्रसादाद्विवृत्य दत्ताऽमरकोशभाषा ॥ भुजेषु खंडेन्दुमितं हि संवन्नभस्य मासेसितविष्णुतिथ्याम्॥२॥

दोहा

सुजलरामगंगासरित, अरुसुरगंगापास॥शंभलपश्चिमदिशि निकट,ग्रामढढौलिनिवास ॥१॥ श्रीसन्मंगलमूर्तिमय, मंगलसेनसुजात ॥ श्रुतिपाठक पाठकसुकुल,काशिरामविख्यात॥२॥ हरिप्रसादहितविरचितिन, हरिप्रसादहितदीन ॥ अमरकोशभाषातिलक अमरकीर्तिछितिकीन ॥ ३ ॥ संवत् भुजशरअंकछिति, भाद्रमासउजियार ॥ हरितिथिहरिरिपुगुरुदिवस पूरणकरचौसुधार ॥ ४ ॥

हरिप्रसाद भगीरथजी.

ठि०—कालिकादेविरोड़ रामवाड़ी

मुम्बई.

श्रीः ।

अथमूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका

इत्यनुक्रमणिका ।

लघुसिद्धान्तकौमुदी-भाषाटीका.

यह ग्रंथ श्रीयुत् वरदराजका बनाया हुवा अति उत्तम है. कि ऐसी सरलरीतसे इसकी प्रक्रिया कही है, जिसके पढ़नेसे अतिशीघ्र बालकभी व्याकरणके पूर्ण ज्ञाता हो, व्याकरणशून्य उलूकोंको सूर्यसे अन्धे करते हुये सभावोंमे गर्जते हैं. परंतु संस्कृत होनेसे जल्दी नादान बालकोंके जेहनमें नहीं चढ़ताथा. इसलिये अनेक विद्यार्थिप्रतिपालकपुरुषोंकी प्रेरणासे इसकी भाषाटीका बेरीनिवासी श्रीयुतराजवैद्य रविदत्तशास्त्रीके द्वारा स्पष्टरीतसे करवायके तथा सुमेरपुरनिवासिविद्वद्वररामभद्रशास्त्रीसे शुद्ध करवायके छपकर तय्यार है. इसकी ऐसी सरल सुबोध भाषाटीका है, कि जिसके बांचनेहीसे विद्यार्थी लोग अर्थके ज्ञाता होंगे. विशेष प्रशंसा तो कहाँतक करैं.? व्याकरणकी इच्छावाले सुजनजनोंके दृष्टिगोचर होनेसे मालुम होगा

व्याकरणग्रन्थाः

नाम	किं०	डा०म०
सिद्धान्तकौमुदी अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानुशासन और सूत्रोंकी सूचीसहित अतिउत्तम जिल्द	२-४	०-६
लघुसिद्धान्तकौमुदी सटिप्पण तथा अकारादिसूत्रानुक्रमसहित	०-४	०-२
सिद्धान्तचन्द्रिका सुबोधिनी और तत्वदीपिका टीकासह संपूर्ण सुन्दर जिल्दबंद	४-०	०-८
सिद्धान्तचन्द्रिका सुबोधिनी और तत्वदीपिका टीका उत्तरार्ध	२-०	०-४
परिभाषेन्दुशेखर अम्बाकर्तृक टीकासह	१-८	०-२
अष्टाध्यायी पाणिनिकी	०-४	०-१
सारस्वतप्रसादटीका पूर्वार्ध	०-१४	०-२
सारस्वत मूल पूर्वार्धखुला	०-६	०-२
सारस्वत तीनो आवृत्ति अकारादिसूत्रानुक्रम तथा अष्टाध्यायीसूत्रपाठसहीत	०-१४	०-[illegible]
सारस्वतपूर्वार्द्ध गुटका सटिप्पण	०-६	०-[illegible]
धातुरूपावलि	०-३	०-[illegible]
शब्दरूपावलि एकाक्षरीकोशसहित	०-२	०-[illegible]
कातन्त्ररूपमालाव्याकरणम्	१-०	०-[illegible]
समासचक्र	०-१	०-[illegible]
रामचंद्रिकानामशब्दरूपावलिः	०-४	०-[illegible]
सूत्रपाठ, गणपाठ, धातुपाठ, लिङ्गानुशासनपाठ (पाठचतुष्टय)	१-०	०-[illegible]
सारस्वतचन्द्रकीर्तिटीकासहितपू० रफ कागद	१-०	०-३
" " ग्लेज कागद	१-४	०-[illegible]
मध्यसिद्धान्तकौमुदी टिप्पणीसहिता	१-०	०-३
संस्कृतशिक्षामंजरीप्रथमभागः	०-१॥	०-[illegible]
संस्कृतप्रवेशिनी	०-२	०-[illegible]
संस्कृतशिक्षामंजरी द्वितीयभागः	०-३	०-[illegible]